ब्रजभाषा सूर-कोश

(छठा खंड)

निर्देशक

डॉ० दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्०,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

संपादक

डॉ० प्रेमनारायण टंडन, पी-एच० डी०
प्राध्यापक, हिंदी-विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रकाशक

लखनऊ विश्वविद्यालय

छठे खंड की शब्द-संख्या—६२७४
छहों खंडों की शब्द-संख्या—३३८७५

मूल्य—साढ़े तीन रुपया

निबही—क्रि. अ. [हिं. निबाहना] (१) **निभी है, बीती है।** उ.—सुमिरन, ध्यान, कथा हरिजू की, यह एकौ न रही। लोभी, लपट, विषयिनि सौं हित, यौं तेरी निबही—१-३२४। (२) **निर्वाह किया, पालन किया, रक्षा की।** उ.—रही ठगी चेटक सौ लाग्यौ, परि गई प्रीति सही। ....। सूर स्याम पै ग्वालि सयानी सरबस दै निबही—१०-२८१।

निबहैगी—क्रि. अ. [हिं. निबहना] **निर्वाह हो जायगा।** उ.—हम जान्यौ ऐसेहिं निबहैगी उन कछु औरै ठानी - ३३५६।

निबहौं—क्रि. अ. [हिं. निबाहना, निबहना] **पार पाऊँगा, मुक्ति या छुटकारा पाऊँगा।** उ.—माधौ जू, सो अपराधी हौं। जनम पाइ कछु भलौ न कीन्हौ, कहौ सु क्यो निबहौं - १-१५१।

निबहौगे—क्रि. अ. [हिं. निबहना] **पार पाओगे, बचोगे, छुट्टी पाओगे, छुटकारा मिलेगा।** उ.—लरिकनि कौ तुम सब दिन झुठवत मोसौं कहा कहौगे। मैया मै माटी नहि खाई, मुख देखौं, निबहौगे—१०-२५३।

निबह्यौ—क्रि अ. [हिं. निबाहना] **निर्वाह किया, पूरा किया, पाला।** उ.—सूरदास धनि धनि वह प्रानी, जो हरि कौ व्रत लै निबह्यौ—२-८।

निबारयौ—क्रि. स. [हि. निवारना] **रोका, दूर किया, हटाया।** उ.—दुर्बासा कौ साप निवारयौ, अंबरीष-पति राखी—१-१०।

निबाह—सज्ञा पुं. [स. निर्वाह] (१) **निबाहने की क्रिया या भाव।** (२) **संबध, क्रम या परंपरा का निर्वाह।** उ—कीन्हे नेह-निबाह जीव जड ते इत उत नहि चाहत—१-२१०। (३) (**वचन आदि का**) **पालन या पूर्ति।** (४) **छुटकारे या बचाव का ढंग।**

निबाहक—वि. [स. निर्वाहक] **निबाह करनेवाला।** उ.—स्याम गरीबनि हू के गाहक। दीनानाथ हमारे ठाकुर, साँचे प्रीति-निबाहक—१-१९।

निबाहन—सज्ञा पु [हि निबाहना] (१) **निबाहने की क्रिया या भाव।** (२) **संबंध या परंपरा का निर्वाह।**

निबाहना—क्रि. स. [स. निर्वाहन] (१) **किसी बात, क्रम या संबंध को बनाये रखना।** (२) (**बात या वचन**) **पूरा या पालन करना।** (३) (**कार्य**) **करते रहना।**

निबाहि—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निभा देना।** उ०—करि हियाव, यह सौज लादि कै, हरि कै पुर लै जाहि। घाट-बाट कहूँ अटक होइ नहिं, सब कोउ देहि निबाहि—१-३१०।

निबाहु—संज्ञा पु. [सं. निर्वाह] **छुटकारे का ढंग, बचाव या रास्ता।** उ.—कोउ कहति अहि काम पठयौ, डसै जिनि यह काहु। स्याम-रोमावली की छबि, सूर नाहिं निबाहु—६३६।

निबाहे—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **व्यतीत किये, निभा दिये।** उ.—तीन्यौ पन मै ओर निबाहे, इहैं स्वाँग कौं काछे—१-१३६।

निबाहो—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह करो, संबंध की रक्षा करो।** उ.—निबाहौ बाँह गहे की लाज-१-२५५।

निबाहौं—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह करूँ, पालन करूँ।** उ.—यह परतिज्ञा जौ न निबाहौ तौ तनु अपनौ पावक दाहौं।

निबाह्यौ—क्रि. स. [हिं. निबाहना] **निर्वाह किया, पाला, चरितार्थ किया।** उ.—तीनौ पन भरि ओर निबाह्यौ तऊ न आयौ बाज—१-९६।

निबिड़—वि. [सं. निविड़] **घना, घनघोर।** उ.—बहुत निबिड तम देखि चक्र धरि धरेउ हाथ समुहायौ—सारा. ८५५।

निबुकना—क्रि. अ. [स. निर्मुक्त, प्रा. निम्मुक्त] (१) **बंधन से मुक्ति पाना।** (२) **बधन का ढीला होकर खिसकना।**

निबृत्त—वि. [सं. निवृत्त] **जिसे छुटकारा मिल चुका हो।**
क्रि. प्र.—निवृत्त कियौ—**छुटकारा दिलाया।** उ.—दुखित जानि दोउ सुत कुबेर के नारद-साप निबृत्त कियौ—१-२६।

निबेड़ना, निबेरना—क्रि स [स. निवृत्त, प्रा. निव्विड्ड] (१) (**बंधन आदि से**) **छुड़ाना।** (२) **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करना।** (३) **सुलझाना।** (४) **निर्णय करना।** (५) **दूर करना।** (६) **पूरा करना।**

निबेरहु—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **निर्णय करो।** उ.—सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु–३३६८।

निबेड़ा, निबेरा—सज्ञा पुं. [हिं. निबेड़ना] (१) **मुक्ति,**

छुटकारा। (२) **बचाव, उद्धार**। (३) **अलगाव**। (४) **सुलझाव**। (५) **भुगतान, समाप्ति**। (६) **निर्णय**।

निबेरि—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **अलग करके, छाँटकर, चुनकर**। उ.—बड़ौ भयौ अब दुहत रहौगो, अपनी धेनु निबेरि—४००।

निबेरी—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **मिली हुई वस्तुओं को अलग करना, छाँटना, चुनना**।

प्र. - सकै निबेरी—**छाँट या अलग कर सकता है**। उ.—ग्वालिनि घर गए जानि साँझ की अँधेरी। मंदिर मै गए समाइ, स्यामल तनु लखि न जाइ, देह गेह रूप, कहौ को सकै निबेरी—१०-२७५।

निबेरे—क्रि. स. [सं. निबेरना] **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करने या छाँटने से**। उ.—नैना भए पराये चेरे।.....। तउ मिलि गए दूध पानी ज्यो निबरत नाहिं निबेरे।

निबेरो, निबेरौ—क्रि. स. [हिं. निबेरना] **छाँट कर अलग करो, चुन लो, बिलगा लो**। उ.—न्यारौ जूथ हाँकि लै अपनौ न्यारी गाई निबेरौ—१०-२१६।

सज्ञा पुं.—(१) **छुटकारा, मुक्ति, उद्धार, बचाव**। उ.—ब्याकुल अति भवजाल बीच परि प्रभु के हाथ निबेरो। (२) **निर्णय, फैसला, निबटेरा**। उ.—जैसे बरत भवन तजि भजिए तैसहि गए फेरि नहि हेरयौ। सूर स्याम रस रसे रसीले अब को करै निबेरो ?

निबैहै—क्रि. स. [हि. निबाहना] **निबाह करेगा, छाँटेगा, चुनेगा**। उ.—गुननिधान तजि सूर साँवरे को गुनहोन निबैहै—३१०५।

निबौरी, निबौली—संज्ञा स्त्री. [हिं. निबकौरी] **नीम का फल या बीज**। उ.—दाख दाडिम छाँड़ि कै कटुक निब्रौरी को अपने मुख खैहै—३१०५।

निभ—सज्ञा पुं. [स०] **प्रभा, प्रकाश**।

वि.—**तुल्य, समान**।

निभना—क्रि. अ. [हिं. निबहना] (१) **बच निकलना, छुटकारा पाना**। (२) **निर्वाह होना**। (३) **गुजारा या निर्वाह होना**। (४) **चलना या पूरा होना**। (५) **क्रम, सबध या परपरा का पालन होना**।

निभरम—वि. [सं. निर्भ्रम] **भ्रम या शंकारहित**।

क्रि. वि.—**नि शंक, बेधड़क, बेखटके**।

निभरमा—वि. [सं. निर्भ्रम] **जिसकी मर्यादा या लज्जा न रह गयी हो, अविश्वस्त**।

निभरोस—वि. [हिं. नि+भरोसा] **हताश, निराश**।

निभरोसी—वि. [हिं. नि+भरोसा] (१) **हताश, निराश**। (२) **निराश्रित, निराधार**।

निभाउँ—वि. [सं निः+भाव] **भावहीन, भावनाहीन**। उ.—काकैं द्वार जाइ होउँ ठाढौ, देखत काहि सुहाउँ। असरन-सरन नाम तुम्हरौ, हौं कामी, कुटिल, निभाउँ—१-१२८।

निभागा—वि. [हिं. नि + भाग्य] **अभागा**।

निभाना—क्रि. स. [हिं निबाहना] (१) **संबंध, परंपरा या क्रम बनाये रखना**। (२) **(काम या प्रयत्न) करते चलना**। (३) **बात या वचन का पालन करना**।

निभाव—सज्ञा पुं [सं. निर्वाह] **निर्वाह, निबाह**।

निभूत—वि. [सं.] **बीता हुआ, व्यतीत**।

निभृत—वि. [सं.] (१) **रखा या धरा हुआ**। (२) **अटल, निश्चल**। (३) **छिपा हुआ**। (४) **बंद किया हुआ**। (५) **विनीत, नम्र**। (६) **शांत, धीर**। (७) **निर्जन, एकांत**। (८) **पूर्ण, युक्त**।

निभ्रांत—वि. [सं. निर्भ्रांत] **भ्रमरहित**।

निमंत्रण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बुलावा, आह्वान**। (२) **भोजन का बुलावा, न्योता**।

निमंत्रना—क्रि. स [स. निमत्रण] **न्योता देना**।

निमंत्रित—वि [स] **जिसे बुलाया गया हो**।

निम—संज्ञा पुं [स.] **शलाका, शंकु**।

संज्ञा पु. [सं. निमि] **राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का विदेह वंश चला माना गया है। इनका स्थान मनुष्य की पलकों पर माना गया है**। उ.—मै बिधना सों कहौ कछू नहिं नितप्रति निम को कोसौं—१४०७।

निमकौरी - संज्ञा स्त्री. [हिं. नीम+कौडी] **निबौली**।

निमग्न—वि. [सं.] (१) **डूबा हुआ**। (२) **तन्मय**।

निमज्जक—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्री गोताखोर**।

निमज्जन—संज्ञा पुं. [सं.] **गोता लगाकर या डुबकी मार कर किया जानेवाला स्नान, अवगाहन**।

निमज्जना—क्रि. अ. [सं. निमज्जन] **गोता लगाना।**

निमज्जित—वि. [सं.] (१) **डूबा हुआ।** (२) **नहाया हुआ।**

निमता—वि. [हिं. नि+मत्त] **जो उन्मत्त न हो।**

निमान—संज्ञा पुं [सं निम्न] (१) **गड्ढा।** (२) **जलाशय।**

निमाना—वि. [सं. निम्न] (१) **ढलुवाँ, ढाल।** (२) **सीधा-सादा, सरल, विनीत।** (३) **दब्बू।**

निमि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दत्तात्रेय के पुत्र, एक ऋषि।** (२) **राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का राजवंश चला माना गया है। इनका स्थान मनुष्य की पलकों पर कहा जाता है।** उ.—पलक वोट निमि पर अनखाती यह दुख कहा समाइ—३४४४। (३) **आँख का झपकना, निमेष।**

निमित—संज्ञा पु [सं. निमित्त] **के लिए, हेतु, कारण।** उ.—अस्व-निमित उत्तर दिसि कै पथ गमन धनंजय कीन्हौं—१-२९।

निमित्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हेतु, लिए, वास्ते, कारण।** उ.—(क) मेरौ बचन मानि तुम लेहु। सिव-निमित्त आहुति जनि देहु—४-५। (ख) वाहि निमित्त सकल तीर्थ स्नान करि पाप जो भयो सो सब नसाई—१० उ० ५८।

निमित्तक—वि. [सं.] **जनित, सहेतुक।**

निमिराज—संज्ञा पुं. [सं.] **निमिवंशी राजा जनक।**

निमिष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आँख मिचना या झपकना, निमेष।** (२) **क्षण भर का समय, पलक मारने भर का समय।** उ.—(क) सूरदास प्रभु आपु बाहुबल कियौ निमिष मैं कीर—९-१५८। (ख) सूर हरि की निरखि सोभा, मिमिख तजत न मात—१०-१००।

निमिषहूँ—संज्ञा पुं. [सं. निनिष+हूँ (प्रत्य.)] **पल भर भी, क्षण मात्र को भी।** उ.—बिमुख भए अकृपा न निमिषहूँ, फिर चितयौ तौ तैसै—१-८।

निमिषित—वि. [सं.] **मिचा या मुँदा हुआ।**

निमिषौ—संज्ञा पुं. [सं. निमिष] **पल भर को भी।** उ.—स्वाद पर्‌यो निमिषौ नाहि त्यागत ताही माँझ समाने—पृ० ३२८ (७२)।

निमीलन—संज्ञा पुं. [सं.] **पलक मारना, निमेष।**

निमीलिका—संज्ञा स्त्री. [सं०] **आँख की झपक।**

निमीलित—वि. [सं.] (१) **ढका हुआ।** (२) **मृत।**

निमुहाँ—वि. [हिं. नि+मुँह] **कम बोलनेवाला।**

निमेक, निमेख, निमेष—संज्ञा पुं. [सं. निमेष] (१) **पलक का गिरना, आँख का झपकना।** उ.—(क) सूर प्रभु की निरखि सोभा तजे नैन निमेष—६३५। (ख) सूर निरखि नारायन इकटक भूले नैन निमेक—पृ० ३४७ (५१)। (ग) मनहुँ तुम्हारे दरसन कारन भूले नैन निमेष—२५६१। (२) **पलक झपकने भर का समय।**

निमेषक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पलक।** (२) **जुगनूँ।**

निमेषण—संज्ञा पु. [सं.] **पलक गिरना, आँख मुँदना।**

निमेषै—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पलक झपकना भी, पलक गिरना तक।** उ.—अब इहि बिरह अगर जो करी हम बिसरी नैन निमेषै—३१९०।

निमोना—संज्ञा पुं. [सं. नवान्न] **चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों को हल्दी-मसाले के साथ घी में भूनकर बनाया हुआ रसदार व्यंजन।** उ.—बहुत मिरच दै किए निमोना। बेसन के दस-बीसक दोना—१०-३९६।

निमौनी—संज्ञा स्त्री. [सं. नवान्न] **वह दिन जब पहली बार ईख काटी जाती है।**

निम्न—वि. [सं.] (१) **नीचा।** (२) **तुच्छ।**

निम्नग—वि. [सं.] **नीचे जाने या बहनेवाला।**

निम्नगा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नदी।**

वि.—**नीचे की ओर जाने या बहनेवाली।**

निम्लोचनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वरुण की नगरी का नाम।**

निम्नोक्त—वि. [सं.] **नीचे कहा हुआ।**

नियंतव्य—वि. [सं.] **नियंत्रित होने योग्य।**

नियंता—संज्ञा पु. [सं. नियंतृ] (१) **नियामक, व्यवस्थापक।** (२) **कार्य-विधायक।** (३) **नियमानुसार चलानेवाला।** (४) **ईश्वर, परमात्मा।**

नियंत्रण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नियमित या व्यवस्थित करना।** (२) **देख-रेख में कार्य चलाना।**

नियंत्रित—वि. [सं.] (१) **जिस पर नियंत्रण हो।** (२) **जो नियमानुकूल हो, व्यवस्थित।**

नियत—वि. [सं.] (१) **नियमबद्ध।** (२) **स्थिर, निश्चित।** (३) **स्थापित, नियोजित।**

संज्ञा स्त्री. [अ नीयत] **भाव, उद्देश्य इच्छा।**

नियतात्मा—वि. [सं. नियतात्मन्] **संयमी, जितेंद्रिय।**

नियताप्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नाटक में सबको छोड़कर केवल एक ही उपाय से फल प्राप्ति का निश्चय।**

नियति—संज्ञा स्त्री. [स] (१) **निश्चित या बद्ध होने का भाव।** (२) **ठहराव, स्थिरता।** (३) **भाग्य, अदृष्ट।** (४) **अवश्य होनेवाली बात।**

नियतिवाद—सज्ञा पु. [स.] **एक सिद्धात जिसके अनुसार विश्वास किया जाता है कि जो कुछ ससार में घटित होता है, वह पूर्व निश्चित और अटल है।**

नियम—सज्ञा पु. [स.] (१) **प्रतिबध, नियत्रण।** (२) **दबाव, शासन।** (३) **बँधा हुआ क्रम या विधान, परंपरा।** (४) **निश्चित रीति या व्यवस्था।** (५) **शर्त, प्रतिबध।** (६) **एक अर्थालंकार।** (७) **योग के आठ नियमों में एक शौच, संतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान—इनका निर्वाह या पालन 'नियम' कहा जाता है।** उ.—अनुसूया के गर्भ प्रगट ह्वै कियौ योग आराधि। यम अरु नियम प्रान प्रत्याहार धारन ध्यान समाधि—सारा० ६०।

नियमत—क्रि. वि. [स.] **नियम के अनुसार।**

नियमन—सज्ञा पुं. [सं] (१) **क्रम, विधान या व्यवस्था बाँधना।** (२) **शासन, नियंत्रण।**

नियमबद्ध—वि [सं.] **नियमों से बँधा हुआ।**

नियमित—वि. [स.] (१) **क्रम, विधान या नियम से बद्ध।** (२) **नियम के अनुसार।**

नियमी—वि. [स] **नियम का निर्वाह करनेवाला।**

नियर—अव्य. [सं निकट, प्रा. निअड] **पास, समीप।**

नियराई—क्रि अ. [हिं नियरआना] **निकट पहुँची, पास आई।** उ.—(क) मरन-अवस्था जब नियराई—४-१२। (ख) प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल-अवधि नियराई—१०-५०।

नियराना—क्रि अ. [हिं नियर+आना (प्रत्य.)] **निकट, पास या समीप आना-पहुँचना।**

नियरानी—क्रि अ [हि नियराना] **निकट आ गयी, पास आ पहुँची।** उ.—अब तौ जरा निपट नियरानी, कर्‌यौ न कछुवै कान—१-५७।

नियरान्यो—क्रि. अ. [हि. नियराना] **निकट आ गया।** उ.—मधुबन ते चल्यो तबहिं गोकुल नियरान्यो—२९४६।

नियरे, नियरैं—अव्य. [हि. नियर] **समीप, पास।** उ.—(क) भक्ति पंथ मेरे अति नियरैं जब तब कीरति गाई—१-९३।(ख)भवसागर मैं पैरि न लीन्हौ।''' । अतिगंभीर, तीर नहि नियरै, किहि बिधि उतर्‌यौ जात—१-१७५।

नियाई—वि. [स न्यायी] **न्याय करनेवाला।**

नियाज—संज्ञा स्त्री. [फा] (१) **इच्छा।** (२) **दीनता।** (३) **बड़ों का प्रसाद।** (४) **बड़ों से भेंट।**

नियान—संज्ञा पुं. [स. निदान] **अंत, परिणाम।** अव्य.—**अंत में, आखिर।**

नियाम—सज्ञा पु [सं.] **नियम।**

नियामक—सज्ञा पु [स.](१)**नियम निश्चित करनेवाला।** (२) **विधान या व्यवस्था करनेवाला।**

नियामत—संज्ञा स्त्री. [अ. नेअमत] (१) **अलभ्य या दुर्लभ वस्तु।** (२) **उत्तम भोजन।** (३) **धन-सपत्ति।**

नियामिका—वि. स्त्री. [स.] **नियम, विधान या व्यवस्था बाँधनेवाली।**

नियारा—वि. [स. निर्निकट, प्रा. निन्निअड़] **अलग, भिन्न।**

नियारिया—सज्ञा पुं.[हिं. नियारा] (१) **मिली-जुली वस्तुओं को अलग करनेवाला।** (२) **चतुर व्यक्ति।**

नियारे—[हिं. न्यारा] (१) **जो निकट या समीप न हो, दूर।** उ.—इन अँखियनि आगैं तै मोहन, एकौ पल जनि होहु नियारे—१०-२९९। (२) **अलग, पृथक्, साथ न रहना।** उ.—पाँच-पचीस साथ अगवानी, सब मिलि काज बिगारे। सुनी तगीरो, बिसरि गई सुधि, मो तजि भए नियारे—१-१४३।

नियाव—सज्ञा पु. [स. न्याय] **न्याय।**

नियुक्त—वि. [स.] (१) **किसी काम में लगाया हुआ।** (२) **तत्पर किया हुआ, प्रेरित।** (३) **निश्चित या स्थिर किया हुआ।**

नियुक्ति—सज्ञा स्त्री. [स.] **नियुक्त होना, तैनाती।**

नियोक्ता—सज्ञा पु. [स नियोक्तृ] (१) **कार्य में लगाने या नियोजित करनेवाला।** (२) **नियोग करनेवाला।**

नियोग—सज्ञा पुं. [स.] (१) **किसी काम में लगाना।** (२) **एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार निसंतान स्त्री, देवर या पति के अन्य गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी।** (३) **आज्ञा।** (४) **निश्चय।**

नियोगी—वि. [सं.] **नियोग करनेवाला**।
नियोजक—वि. [सं.] **काम में लगानेवाला**।
नियोजन—संज्ञा पुं. [स.] **काम में लगाना**।
नियोजित—वि. [स.] **नियुक्त किया हुआ**।
निरंकार—सज्ञा पु. [स. निराकार](१) **ब्रह्म**।(२)**आकाश**।
निरंकुश, निरंकुस—वि. [स. निरंकुश] **जिस पर किसी का अंकुश, प्रतिबंध या दबाव न हो, स्वेच्छाचारी**। उ—माधौ जू, मन सबही बिधि पोच। अति उनमत्त, निरंकुस, मैगल, चिंतारहित, असोच—१-१०२।
निरंग—वि. [सं.] (१) **अंगरहित**। (२) **खाली, निरा, केवल**। (३) **रूपक अलकार का भेद**।
वि.—[हि. नि+रंग] (१) **बदरंग**। (२) **फीका**।
निरंजन—सज्ञा पुं [सं.] (१) **परमात्मा, ईश्वर**। उ-(क) आदि निरजन, निराकार, कोउ हुतौ न दूसर—२-३६। (ख) अलख निरंजन ही को लेखो-३४०८। (२) **शिव जी**।
वि.—(१) **बिना अंजन या काजल का**। (२) **दोष या कल्मष रहित**। (२) **माया से निर्लिप्त**।
निरंजनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **साधुओं का एक संप्रदाय**।
संज्ञा स्त्री. [सं. नीराजनी] **आरती**।
निरंतर—क्रि वि. [स.] **लगातार, सदा, बराबर**।
वि.—(१) **अंतररहित**। (२) **निबिड़, घना**। (३) **अविचल, स्थायी**। (४) **प्रत्यक्ष, प्रकट, जो अंतर्धान न हो**। उ.—निकसि खभ तै नाथ निरतर, निज जन राखि लियौ—१-३८।
संज्ञा पुं.—(१) **ब्रह्म, ईश्वर**। (२) **विष्णु**।
निरंध—वि [सं.] (१) **बिलकुल अंधा**। उ.—करि निरंध निबहै दे माई आँखिनि रथ-पद धूरि—२६६३। (२) **महामूर्ख**। (३) **घनघोर अंधकार**।
वि. [स. निरंधस्] **बिना अन्न का**।
निरंबु—वि. [स.] (१) **बिना पानी का, निर्जल**। (२) **बिना पानी या जल पिये**।
निरंभ—वि [स निरंभस्] (१) **निर्जल**। (२) **जिस (व्रत, साधना) मे बिना पानी पिये रहा जाय**।
निरंश, निरंस—वि. [सं.] **जिसे अपना प्राप्य भाग न मिला हो**। उ.-सेष सहसफन नाथिज्यो सुरपतिकरे निरस१११२।

निरअंतर—क्रि. वि. [सं. निरंतर] **लगातार, सदा**। उ.—उरझ्यौ बिबस कर्म निरअंतर, स्रमि सुख-सरनि चह्यौ—१-१६२।
निरउत्तर—वि. [सं. निरुत्तर] **जो उत्तर न दे सके। मौन, चुप**। उ.—निरउत्तर भई ग्वालि बहुरि कह कछू न आयो—१०७२।
निरक्षर—वि. [स.] (१) **अशिक्षित**। (२) **मूर्ख**।
निरखत—क्रि. स [हिं. निरखना] **ताकते या देखते हैं**। उ.—(क) जद्यपि बिद्यमान सब निरखत, दुःख सरीर भर्‍यौ—१-१००। (ख) दुष्ट-सभा पिसाच दुरजोधन, चाहत नगन करी। भीषम, द्रोन, करन, सब निरखत, इनतै कछु न सरी—१-२५४।
निरखना—क्रि. स [स. निरीक्षण] **देखना, ताकना**।
निरखनि—सज्ञा स्त्री. [हि. निरखना] **देखने की क्रिया या भाव**। उ.—सुंदर बदन तडाग रूपजल निरखनि पुट भरि पीवत—पृ. ३३५ (४६)।
निरखि—क्रि. स. [हिं. निरखना] **देखकर, देखदेख**। उ.—(क) इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर।......। त्यागति प्रान निरखि सायक धनु, गति-मति-बिकल-सरीर—१-२६। (ख) सुंदर बदन री सुख सदन स्याम के निरखि नैन-मन थाक्यो—२५४६।
निरखो, निरखौ—क्रि. स. [हिं. निरखना] (१) **देखो, निहारो**। उ—बिछुरन भेंट देहु ठाढे है निरखो घोष जन्म को खेरो—२५३२। (२) **सोचो, समझो, विचारो**। उ.—यह भावी कछु और काज है, को जो याकौ मेटन-हारौ। याकौ कहा परेखौ-निरखौ, मधु-छीलर, सरितापति खारौ—६-३६।
निरग—सज्ञा पुं. [सं. नृग] **राजा नृग**।
निरगुन—वि. पुं [स. निर्गुण] **सत्व, रज और तम-निश्चय रूप से जो इन तीनों गुणो से परे हो**। उ.—बेद-उपनिषद जासु कौ निरगुनहिं बतावै। सोइ सगुन है नंद की दाँवरी बँधावै—१-४।
निरगुनिया, निरगुनी—वि. [सं निर्गुण] **जिसमें गुण न हो, जो गुणी न हो, अनाड़ी**।
निरघात—संज्ञा पुं.[स. निर्घात] (१) **नाश**। (२) **आघात**।
निरचू—वि. [स. निश्चित] **जिसे छुट्टी मिल गयी हो**।

निरच्छ—वि. [सं. निरक्षि] **बिना आँख का, अंधा।**

निरच्छर—वि. [सं निरक्षर] **अपढ़, मूर्ख।**

निरजल—वि. [सं. निर्जल] (१) **जिसमें जल न हो।** (२) **जिस (व्रत आदि) में जल न ग्रहण किया जाय।**

निरजीव—वि. [स. निर्जीव] (१) **जीवरहित, मृतक, प्राणहीन।** उ.—(क) कस, केसि, चानूर, महाबल करि निरजीव जमुन-जल बोयौ—१-५४। (ख) पटक्यो सिला खरिक के आगे छिन निरजीव करायो—सारा. ४२६। (२) **अशक्त, उत्साहहीन।**

निरझर—संज्ञा पुं. [स. निर्झर] **झरना।**

निरझरनी—संज्ञा स्त्री [सं. निर्झरिणी] **नदी।**

निरझरी—संज्ञा स्त्री. [स. निर्झरी] **पहाड़ी नदी।**

निरत- वि. [सं.] **किसी काम में लीन।**

संज्ञा पु. [सं. नृत्य] **नाच, नृत्य।**

निरतत—क्रि. अ. [स. नर्त्तन] **नाचता है, नृत्य करते हैं।** उ.—(क) कोउ निरतत कोउ उघटि तार दै, जुरी ब्रज-बालक-सेनु—४४८। (ख) सूर स्याम काली पर निरतत, आवत है ब्रज ओक—५६५।

निरतना—क्रि. स. [सं. नर्त्तन] **नाचना, नृत्य करना।**

निरति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बहुत अधिक प्रीति या रति।** (२) **लीनता, लिप्तता।**

निरदइ, निरदई—वि. [सं. निर्दय] **दयाहीन, निष्ठुर।** उ.—(क) उलटे भुज बाँधि तिन्हैं लकुट लिए डाँटै। नैंकहुँ न थकत पानि, निरदई अहीरी—३४८। (ख) है निरदई, दया कछु नाहीं—३६१। (ग) को निरदई रहै तेरै घर—३६८।

निरदय, निरदै—वि. [स. निर्दय] **दयारहित, निष्ठुर।** उ.—(क) लघु अपराध देखि बहु सोचति, निरदय हृदय बज्र सम तोर—३५७। (ख) सब निरदै सुर असुर सैल सखि सायर सर्प समेत—२८५६।

निरदोष, निरदोषी—वि. [सं. निर्दोष] **जो दोषी न हो।**

निरधन—वि. [सं. निर्धन] **धनहीन, दरिद्र।** उ.—सोइ निरधन, सोइ कृपन दीन है, जिन मम चरन बिसारे—१-२४२।

निरधातु—वि. [सं. निर्धातु] **शक्तिहीन, निर्बल।**

निरधार—संज्ञा पुं. [स. निर्धारण] (१) **निश्चय करने का कार्य।** (२) **निश्चित करने का भाव।**

वि.—(१) **निश्चित, जो टल न सके।** स.—सप्तम दिन मरिबौ निरधार—१-२९०। (२) **निश्चय ही।** उ.—कह्यौ, आइहै हरि निरधार—१० उ.-३७।

निरधारना—क्रि. स. [स. निर्धारण] (१) **निश्चय या स्थिर करना।** (२)**मन मे समझना या धारण करना।**

निरनउ—संज्ञा पुं. [स. निर्णय] **निर्णय।**

निरनुनासिक—वि. [स.] **जिस वर्ण मे अनुस्वार न हो।**

निरनै—संज्ञा पुं. [स निर्णय] **फैसला, निर्णय।**

निरन्न—वि. [स.] (१) **अन्नरहित।** (२) **निराहार।**

निरन्ना—वि. [स. निरन्न] **जो अन्न न खाये हो।**

निरपना—वि. [हिं. निर+अपना] **जो अपना न हो।**

निरपराध—वि. [सं.] **जो अपराधी न हो।**

क्रि. वि.—**बिना अपराध के।**

निरपवाद—वि. [सं.] **जिसकी बुराई न हो।**

निरपेक्ष—वि. [स.] (१) **जिसे किसी बात की इच्छा न हो।** (२) **जो किसी पर निर्भर न हो।** (३) **तटस्थ।**

निरपेक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **इच्छा न होना।** (२) **तटस्थता।** (३) **अवज्ञा।** (४) **निराशा।**

निरपेक्षित—वि. [सं.] (१) **जिसकी इच्छा न की जाय।** (२) **जिससे संबंध न रखा जाय।**

निरपेक्षी—वि. [सं. निरपेक्षिन्] (१) **इच्छा न रखने वाला।** (२) **लगाव या संबंध न रखनेवाला।**

निरबंस- वि. [स. निर्वंश] **जिसके आगे वंश चलाने वाला कोई न हो।** उ.—मरौ वह कस, निरबस वाकौ होइ, कर्‌यौ यह गस तोकौ पठायौ—५५१।

निरबंसी—वि. [सं. निर्वंश] **जिसके संतान न हो।**

निरबर्ती—वि. [स. निवृत्त] **त्यागी, बिरागी।**

निरबल—वि. [सं. निर्बल] **कमजोर, शक्तिहीन।**

निरबहना—क्रि. अ. [हि. निभना] **निभ जाना।**

निरबहिऐ—क्रि. स. [हि. निबाहना] **निर्वाह कीजिए, निभाइए, बचाइए।** उ.—ऐसैं कहौ कहाँ लगि गुन-गन लिखत अत नहिं लहिऐ। कृपासिंधु उनही के लेखैं मम लज्जा निरबहिऐ—१-११२।

निरबान—संज्ञा पुं. [स. निर्वाण] **मोक्ष, मुक्ति।**

निरबाहत—क्रि. स. [सं. निर्बहना, हिं. निबाहना] **निबाह**

करते हैं, निभा लेते हैं, रक्षा कर लेते हैं। उ.—सूरदास हरि बोलि भक्त कौं, निरबाहत गहि बहियाँ—६-१६।

निरबाहु—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] **पालन, निर्वाह।** उ.—(क) हौ पुनि मानि कर्म कृत रेखा, करिहौं तात-बचन निरबाहु—६-३४। (ख) सूर सब दिन चोर को कहुँ होत है निरबाहु—१२८०।

निरबिकार—वि. [सं. निर्विकार] **दोष-रहित।**

निरबेद—संज्ञा पुं. [सं. निर्वेद] (१) **दुख।** (२) **वैराग्य।**

निरबेरा—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह](१)**मुक्ति।** (२) **उद्धार।**

निरभय—वि. [सं. निर्भय] **निर्भय, निडर।** उ.—बिबिध आयुध धरे, सुभट सेवत खरे, छत्र की छाहँ निरभय जनायौ—६-१२६।

निरभर—वि. [सं. निर्भर] **अवलंबित, आश्रित।**

निरभिमान—वि. [सं.] **अभिमान रहित।**

निरभिलाष—वि. [सं.] **अभिलाषा रहित।**

निरभैं—वि. [सं. निर्भय] **निर्भय, निडर।** उ.—होउँ बेगि मै सबल सबनि मै, सदा रहौ निरभैं री—१७६।

निरभ्र—वि. [सं.] **मेघशून्य, निर्मल।**

निरमना—क्रि. स. [स. निर्माण] **निर्माण करना।**

निरमर, निरमल—वि. [स. निर्मल] **स्वच्छ, निर्मल।** उ.—पूँगीफल-जुत जल निरमल धरि, आनी भरि कुंडी जो कनक की—६-२५।

निरमान—सज्ञा पुं. [सं. निर्माण] **रचना, निर्माण।** उ.—नख, अँगुरी, पग, जानु, जंघ, कटि, रचि कीन्हौ निरमान—६४३।

निरमाना—क्रि. स. [स. निर्माण] **निर्माण करना।**

निरमायल—सज्ञा पुं. [स. निर्माल्य] **देवार्पित वस्तु जो विसर्जन के पूर्व 'नैवेद्य' और पश्चात 'निर्माल्य' कहलाती है। शिव जी के अतिरिक्त सब देवताओं के निर्माल्य—पुष्प और मिष्ठान्न—ग्रहण किये जाते हैं।** उ.—(क) अब तौ सूर यहै बनि आई, हर कौ निज पद पाऊँ। ये दससीस ईस निरमायल, कैसै चरन छुवाऊँ—६-१३२। (ख) हरि के चलत भईं हम ऐसी मनहु कुसुम निरमायल दाम—२५३०।

निरमूल—वि. [स. निर्मूल] **जड़रहित, मूलरहित।**

निरमूलना—क्रि. स. [सं.निमूलन] (१) **जड़ से उखाड़ना।** (२) **नष्ट कर देना।**

निरमोल—वि. [सं. उप. निस्, निर+हि. मोल] (१) **अनमोल, अमूल्य।** (२) **बहुत बढ़िया।** उ.—ताहि कै हाथ निरमोल नग दीजियै, जोइ नीकै परखि ताहि जानै—१-२२३।

निरमोलक—वि. [हि. निरमोल] (१) **अमूल्य, अनमोल।** उ.—तुम्हरै भजन सबहि सिगार। जो कोउ प्रीति करै पद-अंबुज, उर मंडत निरमोलक हार—१-४१।

निरमोही—वि. [हिं. निर्मोही] **जिसमें मोह-ममता न हो, निर्दय, कठोर-हृदय।** उ.—ऐसी निरमोही माई महरि जसोदा भई बाँध्यौ है गोपाल लाल बाँहनि पसारि—३६२।

निरर्थ, निरर्थक—वि. [सं.] (१) **अर्थहीन।** (२) **व्यर्थ।** (३) **निष्फल।**

निरलज्ज—वि. [स. निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म।** उ.—तृष्ना बहिनि, दीनता सहचरि, अधिक प्रीतिबिस्तारी। अति निसंक, निरलज्ज, अभागिनि, घर घर फिरत न हारी—१-१७३।

निरवद्य—वि. [स.] **जिसे कोई बुरा न कहे।**

निरवधि—वि. [स.] (१) **असीम।** (२) **निरतर।**

निरवयव—वि. [सं.] **अंगरहित, निराकार।**

निरावलंब—वि. [स.] **आधार या आश्रय-रहित।**

निरवाना—क्रि.स.[हिं. निराना] **निराने को प्रेरित करना।**

निरवार—संज्ञा पुं. [हिं. निरवारना] (१) **मुक्ति, छुटकारा, बचाव।** उ.—यही सोच सब पगि रहे कहूँ नही निरवार। (२) **अलग करने, छुड़ाने या सुलझाने का काम।** (३) **निबटारा फैसला।**

निरवारना—सज्ञा पुं. [सं. निवारण] (१) **अलग-अलग करते हैं।** उ.—ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहिं बधायौ कस—३०४६। (२) **उलझी चीज को सुलझाते है।** उ.—कबहूँ कान्ह आपने कर सो केस-पास निरवारत। (३) **टालना, रोकना।** (४) **बधन से मुक्त करना।** (५) **त्यागना।** (६) **निर्णय या फैसला करना।**

निरवारि—क्रि. स. [हिं निरवारना] **बंधन खोलना, छुड़ाना, मुक्त करना।** उ.—कोउ कहति मै बाँधि

राखौ, को सकैं निरवारि—१०-२७३ ।

निरवारिहौं—क्रि. स. [हिं निरवारना] **मुक्त करूँगा । छुड़ाऊँगा** । उ —कस कौ मारिहौ, धरनि निरवारिहौं, अमर उद्धारिहौ, उरग-घरनी—५५१ ।

निरवारैं—क्रि स. [हि. निरवारना] **गाँठ आदि छुड़ाते है, सुलझाते हैं** । उ.—चोली छोरै हार उतारै । कर सौ सिथिल केस निरवारैं—७६६ ।

निरवारौ—सज्ञा पुं. [हिं निरवारना] **फैसला, निबटेरा, निर्णय** । उ.—कै हौ पतित रहौ पावन ह्वै, कै तुम बिरद छुड़ाऊँ । द्वै मै एक करौं निरवारौ, पतितनि-राव कहाऊँ—१-१७६ ।

निरवाहु—सज्ञा पुं. [स निर्वाह] **निबाह, पालन** ।

निरवाहना—क्रि. अ. [सं निर्वाह] **निभाना** ।

निरशन—संज्ञा पुं [सं] **लघन, उपवास** ।

वि.—**जिसने खाया न हो, जिसमें खाया न जाय** ।

निरसंक—वि. [सं निःशक] **भय, सकोच-रहित** ।

निरस—वि. [सं.] **(१) जिसमें रस न हो । (२) जिसमें स्वाद न हो । (३) सारहीन । (४) जिसमें आनंद न हो, शुष्क** । स.—ऊधौ प्रेमरहित जोग निरस काहे को गायो—३०५७ । **(५) दया-ममता-स्नेह-रहित** । उ. —संकित नंद निरस बानी सुनि बिलम करत कहा क्यों न चलैं—२६४७ । **(६) रूखा-सूखा, जिसमें जल या तरी न हो । (७) विरक्त** ।

निरसन—संज्ञा पुं [सं.] **(१) दूर करना, हटाना । (२) रद या अस्वीकार कर देना । (३) निराकरण** ।

निरस्त—वि [सं.] **(१) फेंका या छोड़ा हुआ (तीर आदि) । (१) त्यागा या अलग किया हुआ । (३) रद या अस्वीकार किया हुआ । (४) अस्पष्ट रूप से उच्चरित** ।

निरस्त्र—वि. [स] **अस्त्रहीन, निहत्था** ।

निरहार—वि. [सं. निराहार] **आहार रहित, जिसने भोजन न किया हो** । उ.— एकादसी करै निरहार—६-४ ।

निरा—वि. [स. निरालय, पू हिं. निराल] **(१) खालिस, शुद्ध । (२) केवल, एकमात्र । (३) निपट, बिलकुल** ।

निराई—संज्ञा स्त्री. [हिं निराना] **निराने का काम यादाम** ।

निराकरण—सज्ञा पुं. [स] **(१) छाँटकर अलग करना । (२) हटाकर दूर करना । (३) मिटाना, रद करना । (४) दोष का शमन या निवारण (५) युक्ति या तर्क का खंडन** ।

निराकांक्ष, निराकांक्षी—वि. [सं.] **जिसे आकांक्षा न हो** ।

निराकांक्षा—संज्ञा स्त्री [सं.] **इच्छा का अभाव** ।

निराकार—सज्ञा पुं. [स.] **ब्रह्म या ईश्वर जो आकार-रहित है** । उ.—आदि निरजन, निराकार, कोउ हुतौ न दूसर—२-३६ ।

वि.—**जिसका कोई आकार न हो** ।

निराकुल—वि. [सं.] **(१) जो आकुल या घबराया हुआ न हो । (२) बहुत आकुल या घबराया हुआ** ।

निराकृति—संज्ञा स्त्री. [स.] **आकृति रहित** ।

निराक्रंद—वि. [सं.] **जो रक्षा या सहायता न करे** ।

निराखर—वि. [स. निरक्षर] **(१) बिना अक्षर का । (२) मौन । (३) अपढ़, अशिक्षित** ।

निराट—वि. [हिं. निरा] **अकेला, एकमात्र** ।

निरातंक—वि. [सं.] **(१) निर्भय । (२) नीरोग** ।

निरातपा—सज्ञा स्त्री. [स.] **रात, रात्रि** ।

निरादर—संज्ञा पुं. [सं.] **अपमान, बेइज्जती** । उ.—यहै कहत ब्रज कौन उबारै सुरपति किए निरादर—६४६ ।

निराधार—वि. [सं.] **(१) आश्रय या आधार-रहित । (२) बेजड़-बुनियाद का । (३) बिना अन्न-जल के** ।

निरानंद—वि. [सं.] **आनंदरहित** ।

संज्ञा पुं.—**(१) आनद का अभाव । (२) दुख** ।

निराना—क्रि. स. [स निराकरण] **खेत से घास-फूस खोदकर दूर करना या निकालना** ।

निरापद—वि. [सं] **(१) हानि या आपदा से सुरक्षित । (२) जहाँ हानि या विपत्ति का भय न हो, सुरक्षित** ।

निरापन—वि. [हि. नि + अपना] **पराया, बेगाना** ।

निरामय—वि. [स] **जिसे कोई रोग न हो, नीरोग** ।

निरामिष—वि. [स.] **(१) जिसमें मांस न मिला हो । (२) जो मांस न खाय** ।

निरार, निरारा—वि. [हि. निराला] **निराला** ।

निरालंब—वि. [सं.] **(१) बिना किसी आधार के, निराधार । (२) बिना ठौर-ठिकाने के, निराश्रय** ।

निरालस, निरालस्य—वि. [हिं. नि + आलस्य] **फुर्तीला** ।

संज्ञा पुं.—**आलस्य का अभाव।**

निराला—संज्ञा पुं [स. निरालय] **एकांत या निर्जन स्थान।**
वि.—(१) **निर्जन।** (२) **अद्भुत।** (३) **अनोखा।**

निरावलंब—वि. [स] **बिना आश्रय या आधार का।**

निराश—वि. [हिं नि+आशा] **जिसे आशा न हो।**

निराशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आशा का अभाव।**

निराशी—वि. [स. निराशा] (१) **जिसे आशा न हो।** (२) **विरह, उदासीन।**

निराश्रय—वि. [सं.] (१) **आश्रय या आधार-रहित।** (२) **जिसे ठौर-ठिकाना न हो, अशरण।**

निरास—सज्ञा पुं. [स.] (१) **खंडन।** (२) **दूर करना।**
वि. [हिं. निराश] **निराश।** उ.—(क) ताकत नही तरनिजा के तट तरुवर महा निरास—सा. २६। तिपीपी पल माँझ कीनो निपट जीव निरास—सा. ३८। (ग) सात दिवस जल बरषि सिराने ताते भए निरास—६७४।

निरासन—वि. [सं.] **आसनरहित।**
सज्ञा पुं.-(१) **दूर करना, निराकरण।** (२) **खंडन।**

निरासा—संज्ञा स्त्री. [सं निराशा] **नाउम्मेदी, निराशा।**

निरासी—वि [स निराशा] (१) **हताश, नाउम्मेद।** (२) **उदासीन, विरक्त।** उ—आप काज कौन हमको तजि तब ते भए निरासी—पृ. ३२५ (४२)। (३) **जहाँ या जिसमें चित्त को आनंद न मिले, वेरौनक।** उ. —सूर स्याम बिनु यह बन सूने ससि बिनु रैनि निरासी—३४२२।

निराहार—वि. [स.] (१) **जो बिना भोजन किये हो।** (२) **जिस (व्रत आदि) में भोजन किया ही न जाय।**

निरिच्छ—वि. [स] **जिसे कोई इच्छा न हो।**

निरिच्छना—क्रि. स. [सं निरीक्षण] **देखना।**

निरी—वि. स्त्री. [हिं. निरा] (१) **विशुद्ध।** (२) **केवल।**

निरीक्षक—सज्ञा पु [स] **देखरेख करनेवाला।**

निरीक्षण—सज्ञा पुं [स.] (१ **देखरेख, निगरानी।** (२) **देखने की मुद्रा या रीति, चितवन।**

निरीक्षित—वि [स] **निरीक्षण किया हुआ।**

निरीश—वि. [सं.] (१) **अनाथ।** (२) **नास्तिक।**

निरीश्वरवाद—संज्ञा पुं [स.] **वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर का अस्तित्व न माना जाय।**

निरीश्वरवादी—सज्ञा पुं. [सं.] **ईश्वर का अस्तित्व न माननेवाला, नास्तिक।**

निरीह—वि. [सं.] (१) **जो इच्छा या चेष्टा न करे,** (२) **विरल।** (३) **तटस्थ।** (४) **शांतिप्रिय।**

निरुआर—संज्ञा पुं [हिं. निरुवार] **निर्णय, फैसला।**
उ.—साँच-झूठ होइहै निरुवार—१० उ०-४४।

निरुआरना—क्रि. स. [हिं निरुवारना] (१) **निर्णय करना।** (२) **सुलझाना,** (३) **मुक्त करना, छुड़ाना।**

निरुक्त—वि. [सं.] (१) **व्याख्या किया हुआ।** (२) **नियुक्त, स्थापित, प्रतिष्ठित।**
संज्ञा पुं —**छह वेदांगों में चौथा अंग।**
संज्ञा स्त्री —[सं निरुक्ति] **एक काव्यालंकार।**
उ.—यह निरुक्त की अवध बाम तू भइ 'सूर' हत सखी नवीन—सा. ६६।

निरुक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **शब्द की व्युत्पत्ति।**

निरुच्छ्वास—वि. [सं.] **सँकरा, संकीर्ण (स्थान)।**

निरुज—वि. [हिं. नीरुज] **नीरोग।**

निरुत्तर—वि [सं] (१) **जिसका कुछ उत्तर न दिया जा सके, लाजवाब।** (२) **जो उत्तर न दे सके।**

निरुत्साह—वि [स] **जिसमें उत्साह न हो।**

निरुत्सुक—वि. [स] **जो उत्सुक न हो।**

निरुद्ध—वि. [स] **रुका या बँधा हुआ।**
संज्ञा पुं [स.] **योग की पाँच मनोवृत्तियो क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध—में एक जिसमें चित्त अपनी प्रकृति में ही स्थिर हो जाता है।**

निरुद्देश्य—वि. [स] **उद्देश्यहीन।**
क्रि. वि —**बिना किसी उद्देश्य के।**

निरुद्यम—वि. [स.] **जिसके पास काम न हो।**

निरुद्यमी—वि [हि. निरुद्यम] **जो काम न करता हो।**

निरुद्योग—वि. [सं] **जिसके पास उद्योग न हो।**

निरुद्योगी—वि. [हि निरुद्योग] **जो उद्योग न करे।**

निरुपम—वि. [स.] **अनुपम, बेजोड़।**

निरुपयोगी—वि. [स] **जो उपयोग में न आ सके।**

निरुपाधि—वि [स] (१) **बाधारहित।** (२) **मायारहित।**
सज्ञा पुं—**ब्रह्म, ईश्वर।**

निरुपाय—वि. [सं] (१) **जिसका कोई उपाय न हो।** (२) **जो उपाय कर ही न सके।**

निरुवरना—क्रि. अ. [स. निवारण] **बाधा दूर होना।**

निरुवार—सज्ञा पुं. [स. निवारण] (१) **छुड़ाना या मुक्त करना।** (२) **बचाव, छुटकारा।** (३) **बाधा या झंझट दूर करना।** (४) **निबटाना।** (५) **निर्णय।**

निरुवारत—क्रि. स. [हिं. निरुवारना] **सुलझाकर अलग करना या हटाना।** उ. दीरघ लता अपने कर निरुवारत—२०६८।

निरुवारना—क्रि. स. [हिं. निरुवार] (१) **बधन आदि से मुक्त करना।** (२) **फँसी या उलझी वस्तुओं का सुलझाना।** (३) **निबटाना, निर्णय करना।**

निरुवारति—क्रि स. [हिं निरुवारना] **सुलझाती है, (फँसी या उलझी लटों को) अलग करती है।** उ.—जसुमति राधा कुवर सँवारति। बड़े बार सीमंत सीस के, प्रेम सहित निरुवारति —७०४।

निरूढ—वि. [स.] (१) **उत्पन्न।** (२) **प्रसिद्ध, विख्यात।** (३) **कुंआरा, अविवाहित।**

निरूढ़ा— वि. [स] **अविवाहिता, कुँआरी।**

निरूढि—सज्ञा स्त्री. [सं] **ख्याति, प्रसिद्ध, कीर्ति।**

निरूप—वि. [हिं. नि+रूप] (१) **रूप।** उ —मोहन माँग्यो अपनो रूप। यहि ब्रज बसत अँचै तुम बैठी ता बिन उहाँ निरूप—३१८२। (२) **कुरूप।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वायु।** (२) **आकाश।**

निरूपक—वि. [सं.] **विषय की विवेचना करनेवाला।**

निरूपण—सज्ञा पुं. [स.] (१) **आकाश।** (२) **विवेचन।**

निरूपना—क्रि. अ. [स. निरूपण] **निश्चित करना।**

निरूपम—वि. [स निरुपम] **अनुपम, बेजोड़।**

निरूपि—क्रि. अ. [हिं निरूपना] **निर्णय करके, ठहराकर, विचार करके, निश्चित करके।** उ —गर्ग निरूपि कह्यौ सब लच्छन, अबिगत है अबिनासी—१०-८७।

निरूपित—वि. [स.] **जिसकी विवेचना हो चुकी हो।**

निरूप्य—वि. [सं.] **जो विवेचन के योग्य हो।**

निरेखना—क्रि. स. [स. निरीक्षण] **देखना, निरखना।**

निरै—सज्ञा पुं [स. निरय] **नरक।** उ —औरौ सकल सुकृत श्रीपति हित, प्रति-फल-हित सुप्रीति। नाक निरै, सुख दुख, सूर नहिं, जेहि की भजन प्रतीति—२-१२।

निरैठा—वि. [स निर्+ईहा या इष्ट] **मस्त, मनमौजी।**

निरोग, निरोगी—वि [स. नीरोग] **रोगरहित।**

निरौठा—वि. [देश०] **कुरूप, बदसूरत।**

निरोध—सज्ञा पुं [स.] (१) **रोक, रुकावट।** (२) **घेरा।** (३) **नाश।** (४) **चित्त-वृत्ति का निग्रह।**

निरोधक –वि. [स] **रोकनेवाला।**

निरोधन—संज्ञा पु [स.] **रोक, बंधन, अवरोध।**

निरोधी—वि. [स. निरोधन] **रुकावट डालनेवाला।**

निर्ख—संज्ञा पुं [फा.] **भाव, दर।**

निर्खन—क्रि. स. [हि निरखना] **देखना।** उ —लटकि निर्खन लग्यो, मटक सब भूलि गयो—२६०६।

निर्गंध—वि. [सं.] **जिसमें गंध न हो।**

निर्गत—वि. [सं.] **निकला या बाहर आया हुआ।**

निर्गम—संज्ञा पुं. [स] **निकास।**

निर्गमन—सज्ञा पु. [स.] (१) **निकलना।** (२) **द्वार।**

निर्गमना—क्रि. अ. [स. निर्गमन] **बाहर निकलना।**

निर्गर्व—वि. [सं.] **जिसे गर्व न हो।**

निर्गुण, निर्गुन—संज्ञा पुं. [स. निर्गुण] **सत्व, रज, तम—इन तीनों गुणों से परे, परमेश्वर।**

वि.—(१) **जो सत्व, रज और तम नामक गुणों से परे हो।** (२) **जिसमें कोई गुण ही न हो।**

निर्गुणता, निर्गुनता—संज्ञा स्त्री. [स. निर्गुणता] **निर्गुण होने की क्रिया या भाव।**

निर्गुणिया, निर्गुनिया—वि [स निर्गुण+इया (प्रत्य.)] **वह जो निर्गुण ब्रह्म का उपासक हो।**

निर्गुणी, निर्गुनी—वि [स. निर्गुण] **गुणरहित।**

निर्गूढ—वि. [स.] **जो बहुत ही गूढ हो, अगम।**

निर्ग्रंथ—वि. [स.] (१) **निर्धन।** (२) **असहाय।**

निर्घंट—सज्ञा पुं. [स.] **शब्द या ग्रंथ-सूची।**

निर्घात—सज्ञा पु. [स.] (१) **विनाश।** (२) **आघात।**

निर्घिन—वि. [स. निर्घृण] **जिसे गंदी वस्तुओं और बुरे कामों से घृणा न हो।** उ —निर्घिन, नीच, कुलज, दुर्बुद्धी, भाडू, नित कौ रोऊ—१-१२६।

निर्घृण—वि. [स.] (१) **जिसे घृणा न हो।** (२) **जिसे लज्जा न हो।** (३) **अयोग्य।** (४) **निर्दय।**

निर्घोष—संज्ञा पुं. [सं.] शब्द, आवाज।
वि.—जिसमें शब्द या आवाज न हो।
निर्छल—वि. [सं. निश्छल] छल-कपट-रहित।
निर्जन—वि. [सं.] जहाँ कोई न हो सूनसान।
निर्जर—वि. [सं.] जो कभी बुड्ढा न हो।
संज्ञा पुं.—(१) देवता। (२) अमृत।
निर्जल—वि. [सं.] (१) जिसमें जल न हो। (२) (व्रत आदि) जिसमें जल भी न ग्रहण किया जाय।
निर्जित—वि. [सं.] पूरी तरह जीता हुआ।
निर्जीव—वि. [सं.] (१) प्राणहीन। (२)उत्साहहीन।
निर्ज्वाला—वि. [हिं. नि + ज्वाला] ज्वालारहित। उ.—मानहु काम अग्नि निर्ज्वाला भई—२३०८।
निर्भर—संज्ञा पुं. [सं.] झरना, सोता।
निर्झरिणी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नदी। (२) झरना।
निर्णय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) उचित अनुचित का निश्चय। (२) फैसला, निबटारा। (३) सिद्धांत से परिणाम निकालना।
निर्णायक—संज्ञा पुं. [सं.] निर्णय करनेवाला।
निर्णीत—वि. [सं.] जिसका निर्णय हो चुका हो।
निर्त—संज्ञा पुं. [सं. नृत्य] नाच, नृत्य।
निर्तक—संज्ञा पुं. [सं. नर्त्तक] नाचनेवाला, नट।
निर्तत—क्रि. अ. [हिं. निर्तना] नाचता है, नृत्य करता है। उ.—चलित कुंडल गंड-मंडल, मनहुँ निर्तत मैन—१-३०७।
निर्तना—क्रि. अ. [सं. नृत्य] नाचना, नृत्य करना।
निर्दंभ—वि. [सं.] जिसे दंभ या गर्व न हो।
निर्दई, निर्दय, निर्दयी—वि. [सं. निर्दय] निष्ठुर।
निर्दयता—संज्ञा स्त्री. [सं.] निष्ठुरता, कठोरता।
निर्दयपन—संज्ञा पुं. [हिं. निर्दय+पन] कठोरता।
निर्दहना—क्रि. स. [सं. दहन] जला देना।
निर्दिष्ट—वि. [सं.] (१) जो बताया जा चुका हो। (२) जो नियत या ठहराया जा चुका हो।
निर्देश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) आज्ञा। (२) कथन। (३) वर्णन। (४) निश्चित करना।
निर्देशक—संज्ञा पुं. [सं.] निर्देश करनेवाला।
निर्देशन—संज्ञा पुं. [सं.] निर्देश करने का भाव।
निर्दोष, निर्दोषी—वि. [सं. निर्दोष] (१) जिसमें कोई दोष न हो। (२) जो अपराधी न हो।
निर्दोषता—संज्ञा स्त्री. [सं. निर्दोष+ता (प्रत्य.)] दोष या दोषी न होने का भाव।
निर्द्वंद, निर्द्वंद्व—वि. [सं.] (१) जिसको रोक-टोक करनेवाला न हो। (२) राग द्वेष आदि से परे।
निर्धंधा—वि. [सं.] बेरोजगार।
निर्धन—वि. [सं.] धनहीन, कंगाल, दरिद्र।
निर्धनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] धनहीनता, दरिद्रता।
निर्धर्म—वि. [सं.] जो धर्म से रहित हो।
निर्धार, निर्धारण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) निश्चित या स्थिर करना। (२) निश्चय, निर्णय। (३) गुण कर्म आदि के विचार से छाँटना या अलग करना।
निर्धारक—संज्ञा पुं. [सं.] निश्चय करनेवाला।
निर्धारना—क्रि. स. [सं. निर्धारण] निश्चित करना।
निर्धारित—वि. [सं.] स्थिर या निश्चित किया हुआ।
निर्धूत—वि. [सं.] (१) धोया हुआ। (२) खंडित। (३) त्यक्त।
निर्धूम—वि. [हिं. निः+धूम] आग जिसमें धुआँ न हो। उ.—(क) नई दोहनी पोंछि पखारी धरि निर्धूम खीरनि पर तायो—११७६। (ख) मनहुँ धुईं निर्धूम अग्नि पर तप बैठे त्रिपुरारी—१६८६।
निर्निमेष—क्रि. वि. [सं.] बिना पलक झपकाये।
वि.—जो पलक न गिराये, जिसमें पलक न गिरे।
निर्पक्ष—वि. [सं. निष्पक्ष] पक्षपात-रहित।
निर्फल—वि. [सं. निष्फल] व्यर्थ, फलरहित।
निर्बंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रुकावट (२) हठ, आग्रह।
निर्बल—वि. [सं.] बलहीन, कमजोर।
निर्बलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] कमजोरी, शक्तिहीनता।
निर्बहना—क्रि. अ. [सं. निर्बहन] (१) पार या दूर होना। (२) क्रम निभना या उसका पालन होना।
निर्बाण, निर्बान—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाण] मुक्ति, मोक्ष। उ.—सोइ तुम उपदेशहू जा लहै पद निर्बान—२६२४।
निर्बाध, निर्बाधित—वि. [सं.] बाधारहित।
निर्बाह—संज्ञा पुं. [सं. निर्वाह] निश्चय के अनुसार किसी बात का पालन। उ.—भक्ति-भाव की जो तोहिं

चाह। तोसौं नहि ह्वैहै निर्बाह—४-९।

निर्बिष—वि. [सं. निर्विष] **विषरहित**। उ.—अति बल करि करि काली हार्‌यौ। लपटि गयौ सब अंग-अंग प्रति, निर्बिष कियौ सकल बल झार्‌यौ—५७४।

निर्बीर—वि. [सं. निर्वीर्य] **वीर्यहीन, निस्तेज**। उ.—जे जे जात, परत ते भूतल, ज्यौं ज्वाला-गत चीर। कौन सहाइ, जानियत नाहीं, होत बीर निर्बीर—१-२६६।

निर्बुद्धि—वि. [स.] **बुद्धिहीन, मूर्ख**।

निर्बेद—सज्ञा पु [सं. निर्वेद] **विरक्ति या वैराग्य नामक एक सचारी भाव**। उ.—सूरज प्रभु ते कियो चाहियत है निर्बेद बिसेषी—सा. ४६।

निर्बोध—वि [स.] **अनजान, अज्ञान**।

निर्भय—वि. [स.] **जिसे कोई डर न हो, निडर**।

निर्भयता—सज्ञा स्त्री. [स] **निडरता**।

निर्भर—वि. [सं.] (१) **भरा-पुरा, पूर्ण**। (२) **मिला हुआ**। (३) **अवलंबित, आश्रित**।

निर्भीक—वि. [स.] **निडर**।

निर्भीकता—सज्ञा स्त्री. [स.] **निडरता, निर्भरता**।

निर्भीत—वि. [स.] **निडर, निर्भय**।

निभ्रम—वि. [सं.] **भ्रम या शंकारहित**।

क्रि. वि.—**बेखटके, निसंकोच**। उ.—स्यामा स्याम सुभग जमुना-जल निर्भ्रम करत बिहार।

निर्भ्रांत—वि. [स.] **भ्रम या संदेहरहित**।

निर्मना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **रचना, बनाना**।

निर्मम—वि. [सं] **जिसे दया-ममता न हो**।

निर्मल—वि. [स] (१) **स्वच्छ**। (२) **शुद्ध, पवित्र**। (३) **निर्दोष, दोषरहित**। उ.—भक्तनि हाट बैठि अस्थिर ह्वै, हरि नग निर्मल लेहि—१-३१०।

निर्मलता—सज्ञा स्त्री. [स.] (१) **सफाई**। (२) **शुद्धता, पवित्रता**। (३) **निष्कलंकता**।

निर्माण—संज्ञा पुं. [स.] **रचना, बनावट**।

निर्माता—संज्ञा पुं. [सं] **रचने या बनानेवाला**।

निर्मान—संज्ञा पु [स. निर्माण] **रचने या बनाने की क्रिया**। उ.—सकर प्रगट भए भृकुटी ते करी सृष्टि निर्मान—सारा ६५।

निर्माना—क्रि. स. [सं. निर्माण] **रचना, बनाना**।

निर्मायक—सज्ञा पुं. [सं] **निर्माण करनेवाला**।

निर्माल्य, निर्मोल्य—संज्ञा पुं [सं निर्माल्य] **देवता पर चढ़ायी गयी वस्तु देवार्पित वस्तु; अर्पण के पूर्व 'नैवेद्य' और पश्चात् 'निर्माल्य' कही जाती है। शिव के अतिरिक्त सभी देवताओं का 'निर्माल्य' प्रसाद-रूप में ग्रहण किया जाता है**।

निर्मायौ—क्रि. स [हि निर्माना] **रचा, बनाया, उत्पन्न किया**। उ —ब्रह्म रिषि मरीचि निर्मायौ। रिषि मरीचि कस्यप उपजायौ—३-६।

निर्मित—वि. [स.] **बनाया या रचा हुआ**।

निर्मुक्त—वि [स] **जो मुक्त हो, स्वच्छंद**।

निर्मुक्ति—सज्ञा स्त्री [सं] (१) **छुटकारा**। (२) **मोक्ष**।

निर्मूल—वि [स] (१) **जिसमें जड़ न हो**। (२) **जिसकी जड तक न रह गयी हो**। (३) **जिसका आधार न हो**। (४) **जो सर्वथा नष्ट हो गया हो**।

निर्मूलन—सज्ञा पु [स.] **निर्मूल होना या करना**।

निर्मूल्यो—वि. [स.] **निर्मूल, नष्ट**। उ —मरै वह कस निर्बस बिधना करै, सूर कग्रोहूँ, होइ निर्मूल्यो—२६२५।

निर्मोल, निर्मोलि—वि. [हि. निः+मोल] **बहुत अधिक मूल्य का**। उ.—नैना लोभहिं लोभ भरे ·····। जोइ देखै सोइ सोइ निर्मोलै कर लै तहीं धरै।

निर्मोह, निर्मोहिया, निर्मोही—वि. [स. निर्मोह] **जिसके मन में मोह-ममता न हो**। उ — हरि निर्मोहिया सो प्रीति कीनी काहे न दुख होइ—२४०६।

निर्मोहिनी—वि स्त्री. [हि. निर्मोही+इनी (प्रत्य.)] **जिस (स्त्री) में मोह-ममता न हो, निर्दय**।

निर्यात—सज्ञा पुं [स.] (१) **वह जो कहीं से बाहर जाय**। (२) **देश से माल के बाहर जाने की क्रिया**।

निर्यास—सज्ञा पुं [स] (१) **वृक्षों से बहनेवाला रस**। (२) **बहना, झरना, क्षरण**।

निर्युक्तिक—वि [स.] **युक्तिरहित**।

निर्लज्ज—वि [स.] **जिसको लाज-शर्म न हो**।

निर्लज्जता—संज्ञा स्त्री. [स.] **बेशर्मी, बेहयाई**।

निर्लिप्त—वि. [स.] (१) **राग-द्वेष से मुक्त**। (२) **जो किसी से संबध न रखता हो**।

निर्लेप—वि. [स.] **संबंध न रखनेवाला, निर्लिप्त ।**
निर्लोभि, निर्लोभी—वि [स] **लोभ-लालच नकरनेवाला ।**
निर्वंश, निर्वंस—वि [स निर्वंश] **जिसके वंश में कोई न हो ।** उ —(क) करत है गग निर्वंश जाही—२५५६ । (ख) इनको कपट करै मथुरापति तौ ह्वै है निर्वंस—२५६७ ।
निर्वचन—संज्ञा पुं. [स.] (१) **निश्चित रूप से बात कहना ।** (२) **शब्द की रचना या व्युत्पत्ति-विवेचन ।**
निर्वसन—वि [स.] **नगा, वस्त्रहीन ।**
निर्वहण, निर्वहन—संज्ञा पु [सं निर्वाह] **निर्वाह ।**
निर्वहन —क्रि अ. [सं. निर्वहन] **निभना, पालन होना ।**
निर्वाक् वि [स.] **जो मौन या चुप हो ।**
निर्वाक्य—वि. [सं.] **जो बोल न सके, गूँगा ।**
निर्वाण, निर्वान—वि [सं. निर्वाण] (१) **बुझा हुआ ।** (२) **अस्त, डूबा हुआ ।** (३) **धीमा पड़ा हुआ ।** (४) **मरा हुआ ।**
 सज्ञा पुं. [सं. निर्वाण] (१) **बुझना ।** (२) **समाप्ति ।** (३) **अस्त, डूबना ।** (४) **शांति,** (५) **मुक्ति, मोक्ष ।** उ.—(क) यह मुनि कै तिहि उपज्यौ ज्ञान । पायौ पुनि तिहिं पद-निर्वान—४-१२ । (ख) सूर प्रभु परस लहि लह्यौ निर्वान तेहि सुरन आकास जै जैत यह धुनि सुनाई—२६०८ ।
निर्वासक सज्ञा पु [स.] **देशनिकाला देनेवाला ।**
निर्वासन--संज्ञा पु. [स.] (१) **वध** । (२) **देशनिकाला ।**
निर्वाह--सज्ञा पुं. [स.] (१) **क्रम या परंपरा का पालन ।** (२) (**वचन आदि का**) **निर्वाह** । (३) **समाप्ति ।**
निर्वाहक—वि. [स.] **निर्वाह करने या निभानेवाला ।**
निर्वाहना--क्रि अ. [स. निर्वाह] **निभाना ।**
निर्विकल्प—वि. [स] **स्थिर, निश्चित ।**
निर्विकार—वि. [स.] **जिसमें दोष या परिवर्तन न हो ।**
निर्विघ्न--वि. [स.] **जिसमें विघ्न न हो ।**
 क्रि. वि.—**बिना किसी विघ्न या बाधा के ।**
निर्विचार--वि. [स] **विचाररहित ।**
निर्विवाद—वि. [सं.] **बिना विवाद या झगड़े का ।**
निर्विष—वि. [स.] **जिसमें विष न हो ।**
निर्वीर्य—वि. [स.] **जिसमें बल और तेज न हो ।**
निर्वेद—संज्ञा पुं. [स.] (१) **अपमान** । (२) **वैराग्य ।** (३) **दुख, विषाद ।**
निर्वेदी—संज्ञा पु. [सं. निः+वेद] **वह (ब्रह्म) जो वेदों से भी परे है ।**
निर्व्यलीक—वि. [सं.] **छल-कपट-रहित ।**
निर्व्याज—वि. [सं] (१) **निष्कपट ।** (२) **बाधारहित ।**
निर्व्याधि—वि. [सं] **रोग या व्याधि से मुक्त ।**
निर्हरण—संज्ञा पु. [सं.] **शव जलाना ।**
निर्हेतु—वि. [सं.] **जिसमें हेतु या कारण न हो ।**
निलज—वि. [स. निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म ।** उ.—हौं तौ जाति गँवार, पतित हौ, निपट निलज,खिसिआनौ—१-१६६ ।
निलजइ, निलजई—संज्ञा स्त्री. [स. निर्लज+ई(प्रत्य.)] **निर्लज्जता, बेशर्मी, बेहयाई ।**
निलजता, निलजताई--सज्ञा स्त्री. [स. निर्लज्जता] **बेशर्मी, बेहयाई, निर्लज्जता ।**
निलजी—वि स्त्री [हिं निर्लज्ज] **लाजहीन (स्त्री)** ।
निलज्ज—वि. [स निर्लज्ज] **लज्जाहीन, बेशर्म ।** उ.—इनकै गृह रहि तुम सुख मानत । अति निलज्ज, कछु लाज न आनत--१-२८४ ।
निलय, निलै—संज्ञा पुं. [सं] (१) **घर** । उ.– नील निलै मिलि घटा बिबिधि दामिन मनो षोडस सृंगार सोभित हरि हीन - सा उ. ३८ । (२) **स्थान ।**
निवछरा, निवछरो, निवछरौ—वि.[स. निवृत्त](**ऐसासमय) जब बहुत काम-काज न हो, फुर्सत का या खाली (समय)** । उ.—अबहि निवछरौ समय, सुचित ह्वै, हम तौ निधरक कीजै—१-१६१ ।
निवरा—वि स्त्री. [स.] **जिसके वर न हो, कुमारी ।**
निवसथ – संज्ञा पुं. [स.] (१) **गांव** । (२) **सीमा** ।
निवसन—सज्ञा पुं. [सं. निस्+वसन](१) **घर** ।(२)**वस्त्र ।**
निवसना—क्रि. अ. [हि. निवास] **रहना, निवास करना ।**
निवह—सज्ञा पं. [सं.] (१) **समूह** । (२) **एक वायु-रूप ।**
निवाई—वि. [स. नव] (१) **नया, नवीन ।** (२) **अनोखा, अद्भुत ।** उ.—पुनि लक्ष्मी यो विनय सुनाई । डरौं रूप यह देखि निवाई ।
निवाज—वि. [फा. निवाज़] **अनुग्रह करनेवाला, कृपालु ।**

उ.— खंभ फारि हरनाकुस मार्‌यौ, जन प्रहलाद निवाज —१-२५५।

निवाजना— क्रि. स. [हिं. निवाज] **कृपा करना।**

निवाजिश—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कृपा, दया।**

निवाजै—वि. [हि. निवाजना] **अनुग्रह करें, कृपा करके अपना लें।** उ—जाकौ दीनानाथ निवाजै। भव-सागर मैं कबहूं न झूकै, अभय निसाने बाजै—१-३६।

निवाज्यो, निवाज्यौ—क्रि. स. [हि. निवाजना] **कृपा करके अपना लिया।** उ.—सकट तृना इनही सहारयौ काली इनहि निवाज्यो—२५८१।

निवाड़—सज्ञा स्त्री. [फ़ा. नवार] **मोटे सूत की बिनी पट्टी।**

निवान—संज्ञा पुं [स. निम्न] **झुकाना, नीचे करना।**

निवार— सज्ञा पु. [सं नीवार] **तिन्नी का धान, पसही।**

निवारक—संज्ञा पुं. [सं] (१) **रोकनेवाला।** (२) **मिटाने या नष्ट करनेवाला।**

निवारति—क्रि. स. [हिं निवारना] **दूर करती है, मिटाती है।** उ.—झझकि उठयौ सोवत हरि अबही, (जसुमति) कछु पढि पढ़ि तन-दोष निवारति—१०-२००।

निवारण, निवारन—संज्ञा पुं. [सं. निवारण] (१) **रोकने की क्रिया।** (२) **मिटाने, हटाने या दूर करने की क्रिया।** (३) **छुटकारा, निवृत्ति।** (४) **निवृत्ति या छुटकारा दिलानेवाला।** उ.—तीनि लोक के ताप-निवारन, सूर स्याम सेवक सुखकारी—१-३०। (५) **हटाने, दूर करने या मिटाने के उद्देश्य से।** उ.—अजिर चली पछितातिं छींक कौ दोष निवारन—५८६।

निवारना—क्रि. स. [सं. निवारण] (१) **रोकना, हटाना।** (२) **बचाना।** (३) **निषेध या मना करना।**

निवारहु— क्रि. स. [हिं निवारना] **रोको, दूर करो, हटाओ, छोड़ो।** उ.—लेहु मातु, सहिदानि मुद्रिका, दई प्रीति करि नाथ। सावधान ह्वै सोक निवारहु, ओड़हु दच्छिन हाथ—६-८३।

निवारि—क्रि. स. [हिं. निवारना] **छोड़कर, रोककर, त्यागकर।** उ.—अपनी रिस निवारि प्रभु, पितु मम अपराधी, सो परम गति पाई—७ ४।

निवारी—क्रि. स. [हिं. निवारना] (१) **हटायी, दूर की, नष्ट की।** उ.—(क) लाखा-गृह तैं, सत्रु-सैन तै, पाडव-बिपति निवारी—१-१७। (ख) सरनागत की ताप निवारी—१-२८। (१) **त्याग दी, छोड़ दी।** उ.— रावन हरन सिया कौ कीन्हो, सुनि नँदनदन नीद निवारी —१०-१६८।

प्र —सकै निवारी—**हटा सकता है, रोक सकता है।** उ —कबहूँ जुवाँ देहिं दुख भारी। तिनकौं सो नहि सकै निवारी—३-१३।

संज्ञा स्त्री [स. नेपाली] **जूही की जाति का एक पौधा या उसका फूल जो सफेद होता है।**

निवारे—क्रि. स [हि निवारना] (१) **दूर किये, नष्ट किये, हटाये।** उ.—सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे—१ १०। (२) **रोक दिये, काट दिये।** उ.— रुक्मिनी भय कियो स्याम धीरज दियो, बान से बान तिनके निवारे—१० उ०-२१।

निवारैं—क्रि. स. [हि निवारना] **रोकें, मना करें।** उ.—पुनि जब पष्ट बरष कौ होइ। इत-उत खेल्यौ चाहै सोइ। माता-पिता निवारैं जबही। मन मैं दुख पावै सो तबही— ३–१३।

निवारै—क्रि. स. [हिं. निवारना] **छोड़ती या त्यागती है।** उ.—जब तै गग परी हरि-पग ते बहिबो नहीं निवारै—३१८६।

निवारौं—क्रि. स. [हिं. निवारना] **दूर करूँ, हटाऊँ, नाश करूँ।** उ.—करौ तपस्या, पाप निवारौं—१-२६१।

निवारौ—क्रि स. [हिं निवारना] (१) **दूर करो।** उ.—प्रभु, मेरे गुन-अवगुन न बिचारौ। कीजै लाज सरन आए की, रवि-सुत त्रास निवारौ—१-१११। (२) **मिटाया, हटाया, दूर किया।** उ —(क) कियौ न कबहूँ बिलब कृपानिधि, सादर सोच निवारौ—१-१५७। (ख) अंबरीष कौ साप निवारौ—१-१७२।

निवार्‌यौ—क्रि. स. [हि निवारना] **मिटाया, हटाया, दूर किया।** उ.—भयौ प्रसाद जु अंबरीष कौ, दुरबासा कौ क्रोध निवार्‌यौ—१-१४। (२) **दूर किया, हटाया।** उ.—सतगुरु कौ उपदेस हृदय धरि, जिन भ्रम सकल निवार्‌यौ—१-३३६। (३) **बचाया, रक्षा की।** उ.—मेघ बारि तै हमै निवारयौ—३४०६।

निवाला—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **कौर, ग्रास।**

निवास—संज्ञा पुं. [सं.] **रहने की क्रिया या भाव।** (२) **वास-स्थान, गृह, घर।** उ.—सूरदास के प्रभु बहुरि, गए बैकुंठ-निवास—३-११। (३) **वस्त्र, कपड़ा।**

निवासित—वि [स निवास] **बसा या बसाया हुआ।**

निवासी—सज्ञा पुं. [स. निवासिन] **रहने-बसनेवाला।**

निवास्य—वि. [सं.] **रहने-बसने योग्य।**

निविड़—वि. [स.] (१) **घना।** (२) **गहरा।**

निविष्ट—वि. [सं.] (१) **एकाग्र।** (२) **एकाग्र चित्त-वाला।** (३) **घुसा हुआ।** (४) **स्थित।**

निवृत्त—वि. [स] **छूटा हुआ या अलग।** (२) **विरक्त।** (३) **जो छुट्टी पा चुका हो।**

निवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) **मुक्ति, छुटकारा।** (२) **विरक्ति, 'प्रवृत्ति' का विपरीतार्थक।**

निवेद्—सज्ञा पुं. [सं. नैवेद्य] **देवता का भोग।**

निवेदक—संज्ञा पुं. [सं.] **निवेदन करनेवाला, प्रार्थी।**

निवेदन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रार्थना।** (२) **समर्पण।**

निवेदना—क्रि. स. [हिं. निवेदन] (१) **बिनती या प्रार्थना करना।** (२) **समर्पण करना, नैवेद्य चढ़ाना।**

निवेदित—वि. [सं.] (१) **निवेदन किया हुआ।** (२) **चढ़ाया या अर्पित किया हुआ।**

निवेरत—क्रि. स. [हिं. निवेरना] **वसूल करना, लेना, संग्रह करना।** उ.—सूर मूर अक्रूर गयौ लै ब्याज निवेरत ऊधौ—३२७८।

निवेरना—क्रि. स. [हिं निवेडना] (१) **लेना, वसूलना।** (२) **निबटाना।** (३) **खत्म करना।** (४) **चुनना, छाँटना।** (५) **हटाना, दूर करना।**

निवेरा—वि. [हि निवेड़ना] (१) **चुना या छाँटा हुआ।** (२) **नया, अनोखा।**

निवेरि—क्रि. स. [हि निवेड़ना] **खत्म करके।**

प्र.—आए निवेरि—**खत्म कर आये।** उ.—सूरदास सब नातो ब्रज को आए नंद निवेरि—२८७५।

निवेरी—वि. [हि निवेरा] (१) **चुनी-छँटी हुई।** उ.—आजु भई कैसी गति तेरी ब्रज मे चतुर निवेरी। (२) **नयी, अनोखी।** उ.—मै कह आजु निवेरी आई? बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की कीजै पहुनाई।

निवेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विवाह।** (२) **घर, गृह।**

निशंक—वि. [सं. निःशंक] **निडर, निर्भय।** उ.—परम निशंक समर सरिता तट क्रीडत यादववीर–१०उ.-१०२।

निश, निशा—सज्ञा स्त्री. [सं. निशा] (१) **रात्रि, रात।** (२) **मेष, वृष, मिथुन आदि छह राशियाँ।**

निशांत—संज्ञा पुं. [स. निशा + अंत] **प्रभात।**

निशाकर—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

निशाचर—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **राक्षस।** (२) **उल्लू।** (३) **चोर।**

वि.—**जो रात में चले या विचरण करे।**

निशाचरी—सज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **राक्षसी।** (२) **कुलटा।**

निशाचारी—सज्ञा पुं. [सं. निशाचारिन्] (१) **शिव, महादेव।** (२) **राक्षस।** (३ **उल्लू।** (४) **चोर।**

निशान—संज्ञा पुं [फा.] (१) **चिह्न।** (२) **किसी पदार्थ से अंकित चिह्न।** (३) **प्राकृतिक चिह्न या दाग।** (४) **विगत घटना या वस्तु सूचक चिह्न।**

यौ.—नाम-निशान— (१) **शेष चिह्न।** (२) **शेषांश।**

(५) **पता-ठिकाना।** (६) **लक्ष्य, निशाना।** उ.—तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत—सारा १६०। (७) **ध्वजा, पताका, झंडा।**

निशापति—सज्ञा पुं. [सं] (१) **चंद्र।** (२) **कपूर।**

निशाना—सज्ञा पु [फा.] (१) **लक्ष्य।** (२) **वह जिसे लक्ष्य करके कोई व्यंग्य या आक्षेप किया जाय।**

निशानाथ—सज्ञा पुं. [स.] (१) **चंद्र।** (२) **कपूर।**

निशानी—संज्ञा स्त्री [फा.] (१) **चिह्न, निशान।** उ.—आपुहि हार तोरि चोली बँद उर नख घात बनाइ निशानी—१०५७। (२) **स्मृति-चिह्न, यादगार।** (३) **निशान, पहचान।**

निशापति—संज्ञा पुं. [सं.] **चंद्रमा।**

निशामुख—सज्ञा पुं. [स.] **संध्या का समय।**

निशावसान—संज्ञा पुं. [स.] **प्रभात, तड़का।**

निशास्ता—संज्ञा पु. [फा.] **भीगे गेहूँ का सत।**

निशि—संज्ञा स्त्री. [स.] **रात, रात्रि।** उ.—निशि दिन रहत सूर के प्रभु बिनु मरिबो तऊ न जात जियो—२५४५।

निशिकर—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा ।
निशिचर, निशिचारी—संज्ञा पुं. [सं. निशाचर] (१) राक्षस । (२) उल्लू । (३) चोर ।
निशित—वि. [सं.] सान पर चढ़ाया हुआ, तेज ।
निशिदिन—क्रि. वि. [सं.] (१) रातदिन । (२) सदा ।
निशिनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] चंद्रमा ।
निशिपाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) चंद्र । (२) एक छंद ।
निशिवासर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रातदिन । (२) सदा ।
निशीथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रात । (२) आधी रात ।
निशीथिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] रात, रात्रि ।
निशुंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वध, हिंसा । (२) एक असुर जो कश्यप की स्त्री दनु के गर्भ से जन्मा था । इसने इंद्र तक को जीत लिया था; पर दुर्गा के हाथ से मारा गया था ।
निशुंभन—संज्ञा पुं. [सं.] वध, मारना ।
निशुंभमर्दिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] दुर्गा ।
निश्चय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संदेहरहित धारणा । (२) विश्वास । (३) निर्णय । (४) दृढ़ विचार ।
निश्चयात्मक—वि. [सं.] जो बिलकुल निश्चित हो ।
निश्चल—वि. [सं.] (१) अचल । (२) स्थिर ।
निश्चलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] स्थिरता, दृढ़ता ।
निश्चिंत—वि. [सं.] चितारहित, बेफिक्र ।
निश्चितई, निश्चितता—संज्ञा स्त्री. [सं. निश्चितता] निश्चित होने का भाव, बेफिक्री ।
निश्चित—वि. [सं.] (१) तै किया हुआ । (२) दृढ़ ।
निश्चेष्ट—वि. [सं.] (१) अचेत । (२) अचल ।
निश्चै—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] (१) निश्चित धारणा । (२) विश्वास, यकीन । (३) निर्णय ।
निश्छल—वि. [सं.] छल-कपट-रहित ।
निश्रेयस—संज्ञा पुं. [सं. निःश्रेयस] (१) मोक्ष । (२) कष्ट अथवा दुख का पूर्ण अभाव । (३) व्यापार ।
निश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] नाक या मुँह से बाहर निकलने वाली श्वास या इसके बाहर निकलने का व्यापार ।
निश्शंक—वि. [सं.] (१) निडर । (२) शंकारहित ।
निश्शक्त—वि. [सं.] शक्तिहीन, निर्बल ।
निश्शेष—वि. [सं.] जिसमें कुछ बाकी न हो ।
निषंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) तरकश, तूणीर । (२) खड्ग । (३) एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता था ।
निषंगी—वि. [सं. निषंगिनि] तीर या खड्गधारी ।
निषद्—संज्ञा पुं. [सं.] निषाद स्वर (संगीत) ।
निषध—संज्ञा पुं. [सं.] संगीत का सातवाँ स्वर ।
निषाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) एक प्राचीन अनार्य जाति । (२) संगीत का सातवाँ स्वर जिसका संक्षिप्त रूप 'नि' है ।
निषादी—संज्ञा पुं. [सं. निषादिन्] हाथीवान, महावत ।
निषिद्ध—वि. [सं.] (१) जिसके लिए निषेध या मना किया जाय । (२) बुरा, दूषित ।
निषेक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) छिड़कना । (२) डुबाना । (३) अरक उतारना । (४) गर्भ धारण कराना ।
निषेध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मनाही । (२) बाधा ।
निषेधक—संज्ञा पुं. [सं.] मना करनेवाला ।
निषेधात्मक—वि. [सं.] नकारात्मक ।
निष्कंटक—वि. [सं.] जिसमें बाधा-झंझट न हो ।
निष्कंप—वि. [सं.] जिसमें कंप न हो, स्थिर ।
निष्कपट—वि. [सं.] छल-कपट-रहित, सीधा ।
निष्कपटता—संज्ञा स्त्री. [सं.] निश्छलता, सरलता ।
निष्कर्म, निष्कर्मा—वि. [सं. निष्कर्मन्] (१) जो काम में लीन न हो । (२) निकम्मा ।
निष्कर्मण्य—वि. [सं.] अयोग्य, निकम्मा ।
निष्कर्ष—संज्ञा पुं. [सं.] तत्व, सार, सारांश ।
निष्कलंक, निष्कलंकित निष्कलंकी—वि. [सं निष्कलंक] कलंक या दोषरहित ।
निष्कल—वि. [सं.] (१) कलाहीन । (२) अंगहीन । (३) वीर्यहीन, वृद्ध (४) सारा, समूचा ।
निष्काम—वि. [सं.] (१) कामनारहित, आसक्तिरहित, निस्वार्थ । उ.—यम, नियमासन, प्रानायाम । करि अभ्यास होइ निष्काम—२-२१ । (२) (काम) जो निस्वार्थ भाव से किया जाय ।
निष्कामता—संज्ञा स्त्री. [सं.] निष्काम होने का भाव ।
निष्कामी—वि. [सं. निष्कामिन्] व्यक्ति जो कामना या आसक्तिरहित हो । उ.—निष्कामी बैकुंठ सिधावै । जनम-मरन तिहि बहुरि न आवै—३-१३ ।

निष्काशन, निष्कासन—संज्ञा पुं. [सं.] **बहिष्कार।**
निष्काशित, निष्कासित—वि [सं.](१) **बाहर निकाला हुआ, बहिष्कृत।** (२) **जिसकी निंदा हो, निंदित।**
निष्क्रमण—संज्ञा पुं [सं.] (१) **बाहर निकालना।** (२) **हिंदू-बच्चे का वह संस्कार जिसमें चार महीने का होने पर उसे घर से बाहर लाकर सूर्य दर्शन कराया जाता है।**
निष्क्रय—सज्ञा पुं [सं.] (१) **वेतन।** (२) **बिक्री।**
निष्क्रिय—वि· [स.] **क्रिया या चेष्टा रहित।**
निष्क्रियता—सज्ञा स्त्री. [स] **निष्क्रिय होने का भाव।**
निष्ठ—वि. [सं.] (१) **स्थित।** (२) **तत्पर, सलग्न।**
निष्ठा—सज्ञा स्त्री [सं.] (१) **स्थिति, ठहराव।** (२) **चित्त जमना।** (३) **विश्वास।** (४) **श्रद्धा-भाव, पूज्य बुद्धि।** (५) **ज्ञान की अंतिम अवस्था जब ब्रह्म और आत्मा की एकता हो जाती है।**
निष्ठावान—वि. [सं. निष्ठा] **जिसमें श्रद्धा-भाव हो।**
निष्ठुर—वि [स] (१) **कड़ा।** (२) **कठोर, निर्दयी।**
निष्ठुरता—सज्ञा स्त्री. [सं](१) **कड़ापन।** (२) **निर्दयता।**
निष्ण, निष्णात्—वि. [सं.] **कुशल, दक्ष, चतुर।**
निष्पंद—वि. [स.] **जिसमें कंप या धड़कन न हो।**
निष्पक्ष—वि. [स.] **जो किसी के पक्ष मे न हो।**
निष्पक्षता—सज्ञा स्त्री. [सं.] **निष्पक्ष होने का भाव।**
निष्पत्ति—सज्ञा स्त्री. [स.] (१) **अंत, समाप्ति।** (२) **हठ योग मे नाद की अतिम अवस्था।** (३) **निश्चय।**
निष्पन्न—वि. [स] **जो पूरा या समाप्त हो चुका हो।**
निष्प्रभ—वि. [स.] **तेज या प्रभा से रहित।**
निष्प्रयोजन—वि [सं.] (१) **उद्देश्य या स्वार्थरहित।** (२) **व्यर्थ, निरर्थक।** (२) **जिससे कुछ लाभ न हो।**
निष्प्राण—वि. [स.] (१) **निर्जीव।** (२) **हताश।**
निष्प्रेही—वि. [स निस्पृह] **इच्छा न रखनेवाला।**
निष्फल—वि. [स] **व्यर्थ, निरर्थक।**
निसंक- वि. [स. निःशक, हिं. निशंक] **निर्भय, निडर।** उ.—(क) अति निसक, निरलज्ज, अभागिनि घर-घर फिरति बही—१-१७३। (ख) निपट निसक बिवादति सम्मुख, सुनि सुनि नद रिसात—१०-३२६।
निसंस—वि. [स. नृशंस] **क्रूर, निर्दय।**

निसंसना—क्रि. अ. [सं. निःश्वास] **हाँफना।**
निस—सज्ञा स्त्री. [सं निशि] **रात।**
निसक—वि. [सं. निःशक्त] **निर्बल, शक्तिहीन।**
निसकर—संज्ञा पुं. [स. निशाकर] **चद्रमा।**
निसचय—संज्ञा पुं. [सं निश्चय] **दृढ़ विचार या धारणा।**
निसत—वि. [सं. निसत्य] **असत्य, मिथ्या।**
निसतरना—क्रि. अ [स. निस्तार] **छुट्टी या मुक्ति पाना।**
निसतार—सज्ञा पुं. [स. निस्तार] **मुक्ति, छुटकारा।**
निसद्योस—क्रि. वि. [स. निशि + दिवस] **सदा, नित्य।**
निसरौंगी—क्रि. अ. [हिं. निसरना] **निकलोगी, बाहर आओगी।** उ.—गहि गहि बाँह सबनि करि ठाटी कैसेहूँ घर ते निसरौंगी—१२८६।
निसनेह, निसनेहा—वि. [हि नि + स्नेह] **निर्मोही।**
निसबत—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **संबध।** (२) **तुलना।**
निसमानी—वि. [हिं. निस = नहीं + मन] **जिसके होश-हवास ठिकाने न हों, विकल।**
निसरना—क्रि. अ. [सं. निःस्रवण] **बाहर निकलना।**
निसर्ग—सज्ञा पुं [स.] (१) **स्वभाव।** (२) **आकृति, रूप।** (३) **प्रकृति।** (४) **सृष्टि।**
निसवादिल—वि. [सं. निःस्वाद] **जिसमे स्वाद न हो।**
निसवासर—क्रि. वि [स. निशि + वासर] **सदा, नित्य।**
निसस—वि. [सं. निःश्वास] **अचेत, बेहोश।**
निसहाय—वि. [स निस्सहाय] **असहाय।**
निसाँक— वि. [सं निःशंक] **बेखटके, बेफिक्र।**
निसाँस, निसाँसा—संज्ञा पुं. [स निःश्वास] **ठंढी या लबी साँस।**
वि — **बेदम, मृतकप्राय, मरण-तुल्य।**
निसा—सज्ञा स्त्री. [स निशा] **रात, रात्रि।**
निसाकर—सज्ञा पुं. [सं. निशाकर] **चंद्रमा।**
निसाचर—संज्ञा पुं. [स निशाचर] **निशाचर।**
निसाचरि - संज्ञा स्त्री [सं निशाचरी] **राक्षसी, निशाचरी।** उ—रखवारी कौ बहुत निसाचरि, दीन्हीं तुरत पठाइ—९-६१।
निसाथा—वि. [हि. नि + साथ] **अकेला।**
निसान—सज्ञा पुं [फा. निशान] **नगाड़ा, धौंसा।** उ—(क) हरि, हौं सब पतितनि कौ राजा। निंदा पर-मुग्व

पूरि रह्यौ जग, यह निसान नित बाजा—१-१४४। (ख) धुरवा धुंधि बढी दसहूँ दिसि गर्जि निसान बजायो—२८१६।

निसानन—संज्ञा पु. [सं निशानन] **संध्या, प्रदोष काल।**

निसाना—संज्ञा पुं. [फा. निशाना] **लक्ष्य निशाना।**

निसानाथ—संज्ञा पुं. [सं निशानाथ] **चद्रमा।**

निसानी—संज्ञा स्त्री. [फा. निशानी] **(१) निशान। (२) स्मृतिचिह्न।**

निसाने—संज्ञा पुं. [फा] **नगाड़े, धौंसे।** उ—जाकौ दीनानाथ निवाजै। भव-सागर में कबहूँ न झुकै, अभय निसाने बाजै—१-३६।

निसापति—संज्ञा पु. [सं. निशापति] **चद्रमा।**

निसाफ—संज्ञा पुं [अं. इसाफ] **न्याय।**

निसार—संज्ञा पु. [अ.] **निछावर, उतारा।**
संज्ञा पुं. [सं.] **(१) समूह। (२) एक वृक्ष।**
वि. [सं निस्सार] **तत्व या साररहित।**

निसारना—क्रि. स. [सं. निःसरण] **निकालना।**

निसास—संज्ञा पुं. [सं. निःश्वास] **ठडी या लबी साँस।**
वि.—**अचेत, बेदम।** उ.—परनि परेवा प्रेम की, (रे) चित लै चढत अकास। तहँ चढि तीय जो देखई, (रे) भू पर परत निसास—१-३२५।

निसासी—वि [स निःश्वास] **बेदम, अचेत।**

निसि—संज्ञा स्त्री. [स. निशि] **रात।** उ—राका निसि केते अंतर ससि निमिष चकोर न लावत—१-२१०।

निसिअर—संज्ञा पुं. [स. निशाकर] **चद्रमा।**

निसिचर—संज्ञा पुं. [स. निशाचर] **राक्षस।** उ—जब देख्यौ दिव्यबान निसिचर कर तान्यौ। छाँड्यौ तब सूर हनू ब्रम्ह तेज मान्यौ—६-९६।

निसिचरी—संज्ञा स्त्री [सं. निशाचरी] **राक्षसी, निशाचरी।** उ.—तहँ इक अद्भुत देखि निसिचरी सुरसा-मुख-बिस्तार—६-७४।

निसिचारी—संज्ञा पुं. [स निशाचारी] **राक्षस।**

निसिदिन—क्रि वि. [स. निशिदिन] **(१) रात दिन, आठो पहर। (२) सदा-सर्वदा, नित्य।**

निसिनाथ, निसिनाह—संज्ञा पुं [सं. निशानाथ] **चंद्र।**

निसि निसि—संज्ञा स्त्री. [सं. निशि-निशि] **आधी रात।**

निसिपति—संज्ञा पुं. [सं. निशिपति] **चंद्रमा।** उ—बृष है लग्न, उच्च के निसिपति, तनहि बहुत सुख पैहै—१०-८६।

निसिपाल—संज्ञा पुं. [सं. निशिपाल] **चंद्रमा।**

निसिमनि—संज्ञा पु [निशामणि] **चंद्रमा।**

निसिमुख—संज्ञा पुं. [सं निशामुख] **संध्याकाल।**

निसियर—संज्ञा पुं. [सं निशाकर] **चंद्रमा।**

निसिबासर—क्रि वि. [स. निशि+वासर] **(१) रात दिन, आठो पहर, (२) सदा, सर्वदा, नित्य।**

निसीठा—वि. [सं निः+हि सीठा] **सारहीन, थोथा।**

निसीथ—संज्ञा पुं [सं निशीथ] **आधी रात।**

निसुंभ—संज्ञा पुं. [सं. निशुंभ] **'निशुंभ' नामक दैत्य।**

निसु—संज्ञा स्त्री [सं. निशि] **रात, रात्रि।**

निसुका—वि. [सं निस्वक्] **निर्धन, गरीब।**

निसूदक—वि [सं.] **हिंसा करनेवाला।**

निसूदन—संज्ञा पुं. [स.] **वध या हिंसा करना।**

निसृत वि. [स. नि.सृत] **निकला हुआ।**

निसृष्ट—वि. [सं.] **(१) जो छोड़ दिया गया हो। (२) मध्यस्थ। (३) भेजा हुआ। (४) दिया हुआ।**

निसेनी—संज्ञा स्त्री. [सं. निःश्रेणी] **सीढ़ी, जीना।**

निसेष—वि. [स. नि.शेष] **जिसमें कुछ शेष न हो।**

निसेस—संज्ञा पुं [सं निशेश] **चद्रमा।**

निसैनी—संज्ञा स्त्री. [हि निसेनी] **सीढ़ी, जीना।**

निसोग—वि. [स. नि.शोक] **शोक-चिंता-रहित।**

निसोच—वि. [स. निःशोच] **चितारहित, बेफिक्र।**

निसोत, निसोता—वि. [स निसयुक्त] **(१) जिसमें किसी चीज का मेल न हो, विशुद्ध। (२) असली, सच्चा।**

निसोध, निसोधु—संज्ञा स्त्री [हि सुध] **खबर, सदेश।**

निस्चय—संज्ञा पु [स निश्चय] **(१) दृढ विचार, अटल संकल्प। (२) पूर्ण विश्वास।** उ—तब लगि सेवा करि निस्चय सौं, जब लगि हरियर खेत—१-३२२।
प्र—निस्चय करि—**अवश्य ही।** उ.—ज्यों-त्यौं कोउ हरि-नाम उच्चरै। निस्चय करि सो तरै पै तरै—६-४।

निस्चै—संज्ञा पुं. [सं. निश्चय] **(१) पक्का विचार, दृढ़ संकल्प। (२) पूर्ण विश्वास, अटल विश्वास।** उ,—

जो जो जन निस्चै करि सेवै, हरि निज बिरद सँभारै। सूरदास प्रभु अपने जन कौ, उर तैं नैकु न टारै—१-२५७।

निस्तंतु—वि [स] **जिसके कोई संतान न हो।**

निस्तंद्र– वि [स] **जिसमें आलस्य न हो।**

निस्तत्व वि. [स.] **तत्व या सार-रहित।**

निस्तब्ध—वि. [सं] (१) **जिसमें गति या हलचल न हो।** (२) **जड़वत्।** (३) **शांत।**

निस्तब्धता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्तब्ध होने का भाव।** (२) **सन्नाटा, पूर्ण शांति।**

निस्तरंग—वि [स.] **जिसमे तरंग न हो, शांत।**

निस्तर, निस्तरण—संज्ञा पु [स.] (१) **छुटकारा, उद्धार, मुक्ति।** (२) **पार जाने या होने की क्रिया या भाव।**

निस्तरतौ—क्रि. अ [हि. निस्तरना] **निस्तार पाता, मुक्त होता, छूट जाता।** उ.—मोतैं कछू न उबरी हरि जू, आयौ चढत-उतरतौ। अजहूँ सूर पतित-पद तजतौ, जौ औरहु निस्तरतौ—१-२०३।

निस्तरना—क्रि. अ. [स. निस्तार] **छुटकारा पाना।**

निस्तरिहैं—क्रि. अ. [हिं. निस्तरना] **छुटकारा पायँगे, मुक्त होंगे, छूट जायँगे।** उ.—जो कहौ, कर्मयोग जब करिहैं। तब ये जीव सकल निस्तरिहैं—७-२।

निस्तरिहौं—क्रि. अ [हि निस्तरना] **पार जाऊँगा, मुक्त होऊँगा।** उ.—हौं तौ पतित सात पीढिन कौ, पतितैं ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

निस्तल—वि. [स.] (१) **जिसका तल न हो।** (२) **जिसके तल की थाह न हो, अथाह, गहरा।**

निस्तार—संज्ञा पु [स.] **छुटकारा, बचाव, मोक्ष उद्धार।** उ—(क) बिन हरि भजन नाहिं निस्तार—४ १२। (ख) बिना कृपा निस्तार न होइ—७-२।

निस्तारक—संज्ञा पु. [सं.] **बचाने या छुडानेवाला।**

निस्तारण—संज्ञा पुं [स.] (१) **बचाना, छुड़ाना, उद्धार करना।** (२) **पार करना।** (३) **जोतना।**

निस्तारत क्रि. स. [स. निस्तर+ना (प्रत्यय)] **छुड़ाते हो, मुक्त करते हो, उद्धारते हो।** उ. -मोसौ कोउ पतित नहि अनाथ-हीन-दीन। काहे न निस्तारत प्रभु, गुननि अंगनि-हीन—१-१८२।

निस्तारन—संज्ञा पुं [स. निस्तारण] (१) **निस्तार करने का भाव।** (२) **निस्तार करने या मुक्ति दिलाने वाला।**

उ.—बरन बिषाद नद-निस्तारन—६८२।

निस्तारना—क्रि. स. [हि. निस्तरना] **मुक्त करना।** (२) **पार करना।**

निस्तारा—क्रि स [हि. निस्तारना] **उद्धार किया, मुक्त किया।** उ.—अंध कूप ते काढि बहुरि तेहि दरसन दै निस्तारा—१० उ.-८०।

निस्तारो, निस्तारौ—क्रि. स. [हि निस्तारना] **उद्धार करो, मुक्ति प्रदान करो, छुड़ाओ।** उ.—कै प्रभु हार मानि कै बैठौ, कै अबही निस्तारौ—१-१३६।

निस्तीर्ण—वि. [सं.] **जिसका निस्तार हो चुका हो।**

निस्तेज –वि. [स निस्तेजस्] **तेजहीन, मलिन।**

निस्नेह—वि. [सं.] **जिसमें प्रेम न हो।**

निस्पंद—वि. [स.] **जिसमे कंप या धड़कन न हो।**

निस्पृह—वि [स.] **लोभ या इच्छारहित।**

निस्पृहता—संज्ञा स्त्री. [स.] **कामनारहित होने का भाव।**

निस्पृही—वि. [स. निस्पृह] **लोभ-लालसारहित।**

निस्राव—संज्ञा पु. [स.] **वह जो बहकर निकले।**

निस्वन, निस्वान—संज्ञा पु [सं.] **शब्द, रव, नाद।**

निस्वास—संज्ञा पु [सं. नि श्वास] **नाक या मुँह से बाहर आनेवाली साँस।**

निस्संकोच–वि [स.] **लज्जा या सकोचरहित।**

निस्संतान–वि [स] **जिसके संतान न हो।**

निस्संदेह—क्रि वि [स] **अवश्य, बेशक।**

वि.—**जिसमें शक-संदेह न हो।**

निस्संबल—वि [स.] **जिसके ठौर ठिकाना न हो।**

निस्सरण—संज्ञा पु. [स] (१) **निकलने का मार्ग।** (२) **निकलने का भाव या कार्य।**

निस्सहाय—वि. [स.] **असहाय, निरवलंब।**

निस्सरै—क्रि अ. [हि. निसरना] **निकलता है, बाहर आता है।** उ.—जा बन की नृप इच्छा करै। ताही द्वार होइ निस्सरै—४-१२।

निस्सार—वि. [स.] (१) **गूदा या साररहित।** (२) **तत्व या साररहित।**

निस्सीम—वि. [सं.] **बहुत अधिक, असीम।**

निस्सृत—संज्ञा पु. [सं.] **तलवार का एक हाथ।**

निस्वादु—वि. [सं.] **जिसमें स्वाद न हो।**

निस्वार्थ—वि. [सं.] **जिसमें स्वार्थ का भाव न हो।**

निहंग, निहंगम—संज्ञा पु. [सं. निःसंग] **साधु।**

वि.—**अकेला, एकाकी रहने-विचरनेवाला।**

निहंग-लाड़ला—वि. [हिं. निहंग+लाड़ला] **जो दुलार के कारण बहुत ढीठ हो गया हो।**

निहंता—वि. [सं. निहंतृ] **मारनेवाला, विनाशक।**

निहकरमा, निहकरमी, निहकर्मा, निहकर्मी—वि. [सं. निष्कर्मा] (१) **निकम्मा।** (२) **जो काम में लिप्त न हो।**

निहकलंक—वि. [सं. निष्कलंक] **निर्दोष, निष्कलंक।** उ.—लै उछंग उपसंग हुतासन, निहकलंक रघुराई—९-१६२।

निहकाम—वि. [सं. निष्कामी] (१) **जिसमें कामना न हो।** (२) **जो काम कामना से न किया जाय।**

निहकामी—वि. [सं. निष्कामी] **जिसमें कामना या आसक्ति न हो।** उ.—प्रभु हैं निरलोभी निहकामी—१००५।

निहचय—संज्ञा पु. [सं. निश्चय] **दृढ़ धारणा।**

निहचल—वि. [सं. निश्चल] **स्थिर, अचल।**

निहचिंत—वि. [सं. निश्चिंत] **निश्चिंत, चिंतारहित, बेफिक्र।** उ.—जदुपति कह्यौ बैर हौं आनौ, तुम जेंवहु निहचिंत भए—४३८।

निहचींत—वि. [सं. निश्चिंत] **चिंतारहित, चिंता से मुक्त।** उ.—गोबिंद गाढे दिन के मीत। गज अरु ब्रज प्रहलाद द्रौपदी, सुमिरत ही निहचींत—१-३१।

निहचै—संज्ञा पु. [सं. निश्चय] **दृढ़ विश्वास।** उ.—निहचै एक असल पै राखैं, टरै न कबहूँ टारैं—१-१४२।

निहत—वि. [सं.] (१) **फेंका हुआ।** (२) **हत, नष्ट।**

निहत्था—वि. [हिं. नि+हाथ] (१) **जिसके हाथ में अस्त्र-शस्त्र न हो।** (२) **जिसका हाथ खाली हो।**

निहनना—क्रि. स. [हिं. हनना] **मार डालना।**

निहपाप—वि. [सं. निष्पाप] **जो पापी न हो।**

निहफल—वि. [सं. निष्फल] **व्यर्थ, निरर्थक।**

निहाई—संज्ञा स्त्री. [सं. निघाति] **लोहे का एक औजार जिस पर रखकर कोई धातु कूटी पीटी जाती है।**

निहाउ—संज्ञा पु. [सं. निघाति] **लोहे का घन।**

निहायत—वि. [अ.] **बहुत अधिक।**

निहार—क्रि. स. [हिं. निहारना] (१) **देखकर, अवलोक कर।** उ.—तबहूँ गयौ न क्रोध-बिकार। महादेव हू फिरे निहार—७-२। (२) **बचाकर, सावधानी से बचकर।** उ.—भरत चलै पथ जीव निहार। चलै नहीं ज्यौं चलै कहार—५-४।

संज्ञा पु. [सं.] (१) **पाला।** (२) **ओस।** (३) **हिम।**

निहारत—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखती है, ताकती है।** उ.—झूठौ मन, झूठी सब काया, झूठी आरभटी। अरु झूठनि के बदन निहारत मारग फिरत लटी—१-९८।

निहारति—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखती-ताकती है।** उ.—नावसत साजि सिंगार बनी सुंदरि आतुर पथ निहारति—२५६२।

निहारना—क्रि. स. [सं. निभालन=देखना] **देखना।**

निहारनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. निहारना] **निहारने की क्रिया या भाव, चितवनि।**

निहारि—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखकर, देखदेख, ताककर।** उ.—काकौ बदन निहारि द्रौपदी दीन दुखी सभरिहै ?—१-२६।

निहारिका—संज्ञा स्त्री. [सं. नीहारिका] **आकाश में कुहरे-सी फैली हुई प्रकाश-रेखा।**

निहारी—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखा, निहारा, ताका।** उ.—अँधियारी आई तहँ भारी। दनुजसुता निहिन न निहारी—९-१७४।

निहारे—क्रि. स. [हिं. निहारना] **ध्यानपूर्वक देखा, दृष्टि डाली।** उ.—आइ निकट श्रीनाथ निहारे, परी तिलक पर दीठि—१-२७४।

निहारैं—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखते हैं, ताकते हैं।** उ.—दोऊ ताकी ओर निहारैं—६-४।

निहारै—क्रि. स. [हिं. निहारना] **निहारता है, ताकता है।** उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित षोड़स, षोड़स बरस निहारै—१-६०।

निहारौ—क्रि. स. [हिं. निहारना] **देखो, अवलोको।**

उ.—थाकौ सुंदर रूप निहारौ—७-७।

निहारयौ—क्रि स [हि. निहारना] (१) **देखा**। उ.—तोरि कोदंड मारि सब जोधा तब बल-भुजा निहारयौ—२५८६। (२) **देख-समझ सका**। उ —घँसि कै गरल लगाय उरोजन कपट न कोउ निहारचौ।

निहाल, निहाला—वि. [फा] **पूर्ण संतुष्ट और प्रसन्न**। उ.—(क) जैसैं रंक तनक धन पाए ताहि महा वह होत निहाल—१३२३। (ख) जन्म मरन तें रहि गयौ वह कियौ निहाला—२५७७।

निहाली—संज्ञा स्त्री. [फा.] **गद्दा, तोशक**।

निहाव—संज्ञा पु. [सं. निघाति] **लोहे का घन**।

निहिचय—सज्ञा पु [स निश्चय] **दृढ़ धारणा**।

निहिचित—वि. [स. निश्चिंत] **चितारहित**।

निहित—वि. [स.] **रखा, पड़ा या छिपा हुआ**।

निहितार्थ—सज्ञा पुं. [स.] **वाक्य का अर्थ जो महत्वपूर्ण तो हो, पर जल्दी न खुले**।

निहुँकना—क्रि. अ. [हिं. नि + झुकना] **झुकना**।

निहुड़ना, निहुरना—क्रि. अ. [हि. नि+होड़न] **झुकना**।

निहुड़ाना, निहुराना—क्रि. स. [हि. निहुरना] **झुकाना, नवाना, नीचे या नम्र करना**।

निहोर—संज्ञा पु [हि. निहोरा] (१) **अनुग्रह, कृतज्ञता**। (२) **विनती, प्रार्थना**। उ.—(क) प्रभु, मोहि राखियै इहि ठौर। केस गहत कलेस पाऊँ, करि दुसासन जोर। करन, भीषम, द्रोन मानत नाहि कोउ निहोर—१-२५३। (ख) चितै रघुनाथ बदन की ओर। रघुपति सौं अब नेम हमारौ बिधि सौं करति निहोर—६-२३। (ग) लाइ उरहि, बहाइ रिस जिय, तजहु प्रकृति कठोर। कछुक करुना करि जसोदा करति निपट निहोर—१०-३६४। (घ) माखन हेरि देति अपनै कर, कछु कहि बिधि सौं करति निहोर—१०-३६८। (३) **भरोसा, आसरा**।

क्रि. वि.—(१) **द्वारा, बदौलत**। (२) **वास्ते**।

निहोरना—क्रि. स. [हि. मनुहार] (१) **विनय या प्रार्थना करना**। (२)**मनौती करना, मनाना**। (३)**कृतज्ञ होना**।

निहोरा—संज्ञा पुं [हि. मनुहार] (१) **कृतज्ञता, उपकार**। (२) **बिनती, प्रार्थना**। (३) **भरोसा, आसरा**।

निहोरि—क्रि. स. [हि. निहोरना] **मनौती मानकर**। उ —ग्वालिन चली जमुना बहोरि। वाहि सब मिलि कहत आवहु कछू कहति निहोरि।

निहोरी—क्रि. स. [हिं. निहोरना] **प्रार्थना की, विनय की, खुशामद की**। उ.—मोहिं भयौ माखन पछितावौ रीती देखि कमोरी। जब गहि बाँह कुलाहल कीनी, तब गहि चरन निहोरी—१०-२८६।

संज्ञा पुं —**प्रशंसा, कृतज्ञता-प्रदर्शन**। उ.—दै मैया भौरा चक डोरी।······। मैया बिना और को राखै, बार-बार हरि करत निहोरी—१०-६६६।

निहोरे—संज्ञा पुं. [हि. निहोरा] **मनाने या बहलाने के लिए कहे गये वचन या किये गये कार्य**। उ.—बग कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरे।······। सूर स्याम कौ मधुर कौर दै कीन्हे तात निहोरे—१०-२२४।

निहोरो, निहारौ—सज्ञा पुं. [हि. निहोरा] **अनुग्रह, कृतज्ञता, एहसान, उपकार**। उ.—(क) गीध, ब्याध, गज, गौतम की तिय, उनकौ कौन निहोरौ। गनिका तरी आपनी करनी, नाम भयौ प्रभु तोरौ—१-१३२। (ख) बिप्र सुदामा कियौ अजाची, प्रीति पुरातन जानि। सूरदास सौं कहा निहोरौ, नैननि हूँ की हानि—१०-१३५। (ग) कह दाता जो द्रवै न दीनहि देखि दुखित ततकाल। सूर स्याम कौ कहा निहोरौ चलत बेद की चाल—१-१५६।

नींद—संज्ञा स्त्री. [सं निद्रा] **सोने की अवस्था, निद्रा**। उ.—गोबिंद गुन चित बिसारि, कौन नींद सोयौ—१-३३०।

मुहा.—नींद उचटना—**फिर नींद न आना**। नींद उचाटना—**नींद न आने देना**। नींद उचाट होना—**नींद टूटने पर फिर न आना**। नींद जाना—**नींद न आना**। नींद गई—**नींद आती ही नहीं**। उ.—कहा करौं चलत स्याम के पहिलेहि नींद गई दिन चार—२७६५। नींद पड़ना—**नींद आना**। नींद भरना—**पूरी नींद सोना**। नींद भर सोना—**जी भरकर सोना**। नींद लेना—**सो जाना**। नींद लीन्हीं—**सोयी**। उ.—जब ते प्रीति स्याम सो कीन्ही।

ता दिन तें मेरे इन नैननि नेंकहुँ नींद न लीन्हीं।
नींद सचारना—**नींद आना**। नींद हराम करना—**सोने न देना**। नींद हराम होना—**सो न सकना**।

नींदड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं नींद] **नींद, निद्रा**।

नींदति—क्रि स. [हिं निंदना] **निंदा करती है**। उ.—नींदति सैल उदधि पन्नग को श्रीपति कमठ कठोरहि —२८६२।

नींदना—क्रि. अ. [हिं. नींद] **नींद लेना, सोना**।
क्रि. स.—[हिं. निंदना] **निंदा करना**।

नींदरी—संज्ञा स्त्री [हिं नींद] **निंद, नींद्रा**।

नींदौ—सवि स्त्री सवि. [हिं नींद] **नींद भी**। उ—ता दिन ते नींदौ पुनि नासी चौंकि परति अधिकारें—३०४५।

नींब—संज्ञा पु. [सं. निंब] **नीम का पेड़**। उ.-(क) नींब लगाइ अब क्यों खावें—१०४२। (ख) ता ऊपर लिखि जोग पठावत खाहु नींब तजि दाख-३३२१।

नींव—संज्ञा स्त्री. [हिं. नींव] (१) **मकान आदि की नींव** (२) **कार्य का प्रारंभिक भाग**।

नीक—वि. [सं. निक्त=स्वच्छ, साफ, फा. नेक] (१) **ठीक, स्वस्थ**। उ.—घायल सबै नीक ह्वै गए —४-५। (२) **भला, सुंदर**।
संज्ञा पु.—**अच्छापन, उत्तमता**।

नीकन—संज्ञा पु. **नेत्र**। उ.—(क) सारँग सुत नीकन ते बिछुरत सर्प बेलि रस जाई—सा. १६। (ख) नीकन अधिक दिपत हुन तातें अन्तरिच्छ छबि भागी —सा० ५१।

नीका—वि. [हिं. नीक] **अच्छा, भला, उत्तम**।

नीकी—वि. स्त्री. [हिं नीका] **अच्छी, भली**। उ—(क) होरी खेलन की बिधि नीकी। (ख) माखन खाइ, निदरि नीकी बिधि यह तेरे सुत की घात—१०-३०६।

नीके—वि. [हिं. नीक] (१) **ठीक, स्वस्थ, सुचित्त**। उ.—लोग सकल नीके जब भए। नृप कन्या दै, गृह कौ गए—६-२। (२) **भले, अच्छे**। उ.—इतने काज किये हरि नीके—२६४३।
क्रि. वि—**अच्छी तरह, भली भाँति**। उ—हरि की भक्ति करो सुत नीके जो चाहो सुख पायो।

नीकैं—क्रि. वि. [हिं. नीक] **अच्छी तरह, भली भाँति**। उ.—नीकैं गाइ गुपालहि मन रे। जा गाए निर्भय पद पाए अपराधी अनगन रे—१-६६।

नीकौ वि. [हिं नीका] (१) **भला, अच्छा, श्रेष्ठ**। उ.—(क) कोउ न समरथ अघ करिबे कौ, खैंचि कहत हौं लीकौ। मरियत लाज सूर पतननि मैं, मोहूँ तैं को नीकौ—१-१३८। (ख) हम तै बिदुर कहा है नीकौ—१-२४३। (२) **अनुकूल, उत्तम**। उ.—यक ऐसेहि झकझोरति मोको पायो नीको दाउँ —१६१३।
मुहा.—दोष देन कौं नीकौ—**दोष देने को सदा तैयार, दूसरो के दोष निकालने मे तेज**। उ.—महा कठोर, सुन्न हिरदै कौ, दोष देन कौ नीको—१-१८६।

नीच—वि. [सं.] (१) **जाति, गुण, कर्म आदि में घट कर होना, क्षुद्र तुच्छ**। (२) **निम्न श्रेणी का, बुरा**।
संज्ञा पु—**नीच मनुष्य, क्षुद्र व्यक्ति**।

नीचता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नीचपन**। (२) **ओछापन**।

नीचा—वि. [सं. नीच] (१) **ऊँचे का उलटा। गहरा**। (२) **जो कम ऊँचा हो**। (३) **बहुत लटकता हुआ**। (४) **झुका हुआ, नत**। (५) **जो जोर का न हो, धीमा**। (६) **जो जाति, पद आदि में घटकर हो**।
मुहा—नीचा-ऊँचा—(१) **भला-बुरा**। (२) **हानि लाभ**। (३) **सुख-दुख**। नीचा खाना—(१) **अपमानित होना**। (२) **पराजित होना**। (३) **लज्जित होना**। नीचा दिखाना—(१) **अपमानित करना**। (२) **पराजित करना**। (३) **लज्जित करना**। (४) **घमंड चूर करना**। नीचा देखना—(१) **अपमानित होना**। (२) **लज्जित होना**। (३) **घमंड चूर होना**। नीची दृष्टि करना— (**लज्जा-संकोच से**) **सिर झुकाना**। नीची दृष्टि से देखना—**तुच्छ या छोटा समझना**।

नीचाशय—वि. [सं.] **ओछे या क्षुद्र विचार का**।

नीचि—क्रि वि [हिं. नीचा] **नीचे की ओर**। उ.—समुझि निज अपराध करनी नारि नावति नीचि-३४७५।

नीचू—क्रि. वि. [हिं. नीचा] **नीचे की ओर**।

नीचे ,नीचैं—क्रि वि [हि नीचा] **नीचे की ओर।** उ —(क) (कह्यौ) उहाँ अब गयौ न जाइ। बैठि गई सिर नीचै नाइ—४-५। (ख) सुरपति-कर तब नीचे आयौ—६-३। (ग) सुनि ऊधौ के बचन नीचे कै तारे—३४४३।

मुहा.—नीचे ऊपर-(१) **एक पर एक, तले ऊपर।** (२) **उलट-पलट अस्त-व्यस्त।** नीचे गिरना—(१) **मान-मर्यादा खोना।** (२) **पतित होना।** (२) **कुश्ती में हारना।** नीचे डालना—(१) **फेंकना।** (२) **पराजित करना।** नीचे लाना—**कुश्ती मे हराना।** ऊपर से नीचे तक—(१) **सब भागो मे।** (२) **सिर से पैर तक।**

(२) **घटकर, कम।** (३) **अधीनता में, मातहत।**

नीच्यो—क्रि वि. [हि. नीचा] **नीचे की ओर।** उ.—सूर सीस नीच्यो क्यो नावत अब काहे नहिं बोलत—३१२१।

नीजन—वि [स निर्जन] **निर्जन, जनशून्य।**

सज्ञा पु — **वह स्थान जहाँ कोई न हो।**

नीझर—संज्ञा पुं. [स. निर्झर] **झरना, सोता।**

नीठ, नीठि—क्रि. वि. [हि. नीठि] **ज्यो-त्यों करके।** उ.—तेई कमल सूर नित चितवत नीठ निरतर सग—सा. ३४४। (२) **बड़ी कठिनता से।**

नीठि—सज्ञा स्त्री [स. अनिष्टि, प्रा अनिट्ठि] **अनिच्छा।**

क्रि. वि.—(१) **जैसे-तैसे।** (२) **कठिनता से।**

नीठो—वि. [हि. नीठि] **न सुहाने या भानेवाला।** उ.—छेक उक्त जहँ दुमिल समझ केका समुझावत नीठो। मिसिरी सूर न भावन घर की चोरी को गुड मीठो—सा० ६०।

नीड़—सज्ञा पु [स.] (१) **बैठने या ठहरने का स्थान।** (२) **चिड़ियो के रहने का घोंसला।** उ.– नूपुर कलरव मनु हसनि सुत रचे नीड, दै बाहँ बसाए—१०-१०४।

नीड़क, नीड़ज—सज्ञा पुं [स] **पक्षी, चिड़िया।**

नीत—वि. [स.] (१) **लाया या पहुँचाया हुआ।** (२) **स्थापित।** (३) **प्राप्त।** (४) **ग्रहण किया हुआ।** उ.—किधौं मद गरजनि जलधर की पग नूपुर रव नीत।

नीतन—संज्ञा पुं. [हि नीति=नीत=नय+न=नयन] **नेत्र, नयन।** उ —लगे फरकन अतिहि अनूप नीतन रंग—सा ७५।

नीति—सज्ञा स्त्री [स.] **व्यवहार की सामाजिक रीति।** उ.—गुरु-सुत-ग्रह बिनु बोलेहु जैऐ। है यह नीति नाहि सकुचैऐ—४-५। (२) **ले जाने-चलने की क्रिया या भाव।** (३) **व्यवहार की रीति।** (४) **आचार-व्यवहार, सदाचार।** (५) **राज रक्षा की विधि।** (६) **युक्ति उपाय।**

नीतिज्ञ—वि [स.] **नीति-कुशल, नीति-चतुर।**

नीत्यो—सज्ञा स्त्री. [सं. नीति] **नीति-व्यवहार-पद्धति।** उ – है नृप लरत जाइ इन्द्रीगन कहा सूर को नीत्यो – २८६८।

नीदना—क्रि. स [स निदन] **निंदा करना।**

नीधन, नीधना—वि. [स निर्धन] **दरिद्र, धनहीन।**

नीप—सज्ञा पुं. [स] (१) **कदंब।** उ.—एक घरी धीरज धरौ, बैठौ सब तर नीप—५८६। (२) **अशोक।**

नीबर—वि. [सं. निर्बल] **दुर्बल, शक्तिहीन।**

नीबी—संज्ञा स्त्री [स. नीवि] **कटि बध, फुफुंदी, नारा।** उ —नीबी ललित गही जदुराइ—६८२।

नीबू—संज्ञा पु [स. निंबुक] **एक खट्टा फल।**

नीम—सज्ञा पुं. [स निम्ब] **एक प्रसिद्ध पेड़।**

नीमन—वि [स निर्मल] (१) **नीरोग, स्वस्थ, भला-चगा।** उ.—जानि लेहु हारि इतने ही मे कहा करै नीमन को बैद। (२) **अच्छा, सुदर।**

नीमर—वि [हि. निर्बल] **दुर्बल, शक्तिहीन।**

नीमषार, नीमषारण्य, नीमषारन— सज्ञा पुं. [सं. नैमिषारण्य] **अवध के सीतापुर जिले मे स्थित एक प्राचीन वन जो हिंदुओं का एक तीर्थस्थान माना जाता है।**

नीमा—सज्ञा पुं [फा.] **जामे के नीचे का एक पहनावा।**

नीमावत— सज्ञा पु. [सं. निंब] **निबंकाचार्य का अनुयायी।**

नीयत— सज्ञा स्त्री. [अ.] **भाव, आशय, मशा।**

मुहा.—नीयत डिगना— **मन मे दोष या स्वार्थ आ जाना।** नीयत बद होना— **मन मे बुराई आना।** नीयत बदल जाना—(१) **इच्छा या विचार कुछ का कुछ हो जाना।** (२) **भले से बुरा विचार हो जाना।**

नीयत बाँधना—**इरादा करना**। नीयत बिगड़ना—(१) **इच्छा या विचार कुछ का कुछ हो जाना**। (२) **भले से बुरा विचार हो जाना**। नीयत भरना—**इच्छा पूरी होना, जी भरना**। नीयत में फर्क आना—**भला विचार बुरे में बदल जाना**। नीयत लगी रहना—**जी ललचाता रहना**।

नीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पानी, जल**।

मुहा.—नीर ढलना—**मरते समय आँसू बहना**।

(२) **आत्माभिमान की भावना**। उ.—कहँ वह नीर, कहाँ वह सोभा कहँ रँग-रूप दिखैहै—१-८२।

मुहा.—किसी का नीर ढल जाना—**आत्माभिमान की भावना का न रह जाना, निर्लज्ज या बेहया हो जाना**।

(३) **द्रव पदार्थ या रस**। (४) **फोड़े-फफोले का चेप**।

नीरज—संज्ञा पुं. [सं. नीर+ज] (१) **जल में उत्पन्न वस्तु**। (२) **कमल**। (३) **मोती, मुक्ता**।

नीरद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जलदाता**। (२) **बादल**।

वि. [सं. निः+रद] **जिसके दाँत न हों**।

नीरधर—संज्ञा पुं. [सं.] **बादल, मेघ**।

नीरधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र**। उ.—पसुपति मंडल मध्य मनो मनि छीरधि नीरधि नीर के—२५६६।

नीरना—क्रि. स. [देश.] **बिखेरना, छिटकाना**।

नीरनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र**।

नीरपति—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण देवता**।

नीरव—वि. [सं.] (१) **जिसमें शब्द न हो, निःशब्द**। (२) **जो बोलता न हो, चुप**।

नीरस—वि. [सं.] (१) **रसहीन**। (२) **शुष्क**। (३) **आनंदरहित**। उ.—(क) पिउ पद-कमल कौ मकरंद। मलिन मति मन मधुप, परिहरि, बिषय नीरस मद—६-१०। (ख) जीवै तो राजसुख भोग पावै जगत मुए निर्वान नीरस तुम्हारो—१० उ०-५७। (४) **जल-रहित**। उ.—सूरदास क्यों नीर चुवत हैं नीरस बचन निचोयो—३४८२।

नीरांजन—संज्ञा पुं. [सं.] **आरती, दीपदान**।

नीरांजना—क्रि. अ. [सं. नीराजन] **आरती करना**।

नीरांजनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आरती**।

नीरा—क्रि. वि. [हिं. नियर] **पास, समीप**।

संज्ञा स्त्री. [सं. नीर] **ताड़ के वृक्ष का बहुत स्वादिष्ट, गुणकारी और मस्त कर देनेवाला रस**।

नीराजन—संज्ञा पुं. [सं. नीराजन] **देवता की आरती**।

नीराजना—क्रि. अ. [हिं. नीराजना] **आरती करना**।

नीरे—क्रि. वि. [हिं. नियरे] **पास, समीप**। उ.—तुम इक कहत सकल घट ब्यापक अरु सबही ते नीरे—३१९८।

नीरोग—वि. [सं.] **जो रोगी न हो, स्वस्थ**।

नीलंगु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भौंरा**। (२) **फल**।

नील—वि. [सं.] **नीले या गहरे आसमानी रंग का**।

संज्ञा पुं.—(१) **नीला या गहरा आसमानी रंग**। (२) **एक पौधा जिससे यह रंग निकाला जाता है**।

मुहा.—नील का टीका लगना—**कलंक लगना**। नील का टीका लगाना—**कलंकी सिद्ध कर देना**। नील कौ खेत—**कलंक का स्थान**। उ.—सेवा नहि भगवंत चरन की, भवन नील कौ खेत—२-१५। नील की सलाई फिरवाना—**आँखें फुड़वा देना**। नील घोटना—**किसी बात को लेकर बहुत देर तक उलझना**। नील जलाना—**पानी बरसाने के लिए नील जलाने का टोटका करना**। नील बिगड़ना—(१) **चरित्र बिगड़ना**। (२) **चेहरे की आकृति बिगड़ना**। (३) **कलंक की बात फैलना**। (४) **बुद्धि ठिकाने न रहना**। (५) **दुर्दशा होना**। (६) **दिवाला निकलना**।

(३) **शरीर पर पड़नेवाला चोट का नीला निशान**।

मुहा.—नील डालना—**इतना मारना कि शरीर पर मार के नीले काले निशान बन जायँ**।

(४) **कलंक, लांछन**। (५) **राम की सेना का एक बंदर**। उ.—सीय-सुधि सुनत रघुबीर धाए। चले तब लखन, सुग्रीव, अंगद, हनू, जामवंत, नील, नल, सबै आए-९-१०६। (६) **नव निधियों में एक**। (७) **नीलम**। (८) **विष**। (९) **माहिष्मती का एक राजा**। (१०) **एक संख्या जो दस हजार अरब की होती है**। उ.—सिर पर धरि न चलैगौ कोऊ, जो जतननि करि माया जोरी। राजपाट सिंहासन बैठो, नील पदुम हूँ सौं कहै थोरी १-३०३।

नीलकंठ—वि. [सं.] **जिसका कंठ नीला हो।**
संज्ञा—पुं—(१) **मयूर, मोर।** (२) **एक पक्षी।** (३) **शिव जी।**
नीलकांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विष्णु।** (२) **नीलम।**
नीलगाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. नील+गाय] **एक बड़ा हिरन।**
नीलगिरि—संज्ञा पु [सं.] **दक्षिण का एक पर्वत।**
नीलग्रीव—संज्ञा पुं [सं.] **शिव जी, महादेव।**
नीलम—संज्ञा पुं [फा., स. नीलमणि] **नीले रंग का रत्न, नीलमणि, इंद्रनील नामक मणि।**
नीलमणि-संज्ञा पुं. [स] **नीलम, इंद्रनील।**
नीलवसन—संज्ञा पुं [स.] **नीला या काला वस्त्र।**
वि.—**नीला या काला वस्त्र धारण करनेवाला।**
संज्ञा पुं.—(१) **शनि देव।** (२) **बलराम।**
नीलांबर—संज्ञा पुं. [सं. नील+अंबर=वस्त्र] **नीले रंग का (प्राय: रेशमी) वस्त्र।** उ.—दाऊ जू, कहि स्याम पुकार्‌यौ। नीलांबर कर ऐंचि लियौ हरि, मनु बादर तै चंद उजार्‌यौ—४०७।
वि.—**नीले या काले वस्त्र धारण करनेवाला।**
संज्ञा पुं.—(१) **बलराम।** (२) **शनि देव।**
नीलांबरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक रागिनी।**
नीलांबुज—संज्ञा पुं. [स.] **नील कमल।**
नीला—वि. [स नील] **नील के रंग का।**
मुहा.—नीला करना—**इतना मारना कि शरीर पर नीले दाग पड़ जायँ।** नीला-पीला होना—**क्रोध दिखाना।** नीले हाथ-पाँव हों—**मर जाय।** चेहरा नीला पड़ जाना—(१) **लज्जा, संकोच या भय से चेहरे का रंग फीका पड़ना।** (२) **मृत्यु के पश्चात् आकृति बिगड़ जाना।**
संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम।** उ.—अमला अबला कंजा मुकुता हीरा नीला प्यारि-१५८०।
नीलाक्ष—वि. [सं.] **नीली आँखवाला।**
नीलाचल—संज्ञा पु [स.] **नीलगिरि पर्वत।**
नीलाब्ज—संज्ञा पुं. [सं.] **नीला कमल।**
नीलाम—संज्ञा पुं [पुर्त० लीलाम] **बोली बोलकर बेचना।**
नीलावती—संज्ञा स्त्री. [सं. नीलवती] **एक प्रकार का चावल।** उ.—नीलावती चावल दिव-दुर्लभ। भात परोस्यौ माता सुरलभ—**३९६।**
नीलिमा—संज्ञा स्त्री. [सं. नीलिमन्] (१) **नीलापन, श्यामता।** (२) **स्याही, मसि।**
नीली—वि. स्त्री. [हिं. नीला] **नीले-काले रंग की।**
नीलोत्पल—संज्ञा पुं. [सं.] **नील कमल।**
नींव—संज्ञा स्त्री. [स. नेमि, प्रा. नेंइ] (१) **घर की दीवार उठाने के लिए गहरा किया हुआ स्थान।**
मुहा.—नींव देना—**घर उठाना प्रारंभ करना।**
(२) **दीवार की जड़ या आधार।**
मुहा.—नींव का पत्थर—**मकान बनाने के लिए रखा जानेवाला पहला पत्थर।** नींव जमाना (डालना, देना)—**दीवार की जड़ जमाना।** नींव पड़ना—**घर बनना आरंभ होना।**
(३) **जड़, मूल, आधार।**
मुहा.—नींव देना—**कार्यारंभ करना।** नींव का पत्थर—**कार्यारंभ का प्रथम चरण।** नींव जमाना—**जड़ या स्थिति मजबूत कर लेना।** नींव डालना—**कार्यारंभ करना।** नींव पड़ना—**कार्यारंभ होना।**
नीवि, नीवी—संज्ञा स्त्री. [सं. नीवि] **नारा, इजारबंद।**
नीसक—वि. [सं. निःशक्त] **निर्बल, कमजोर।**
नीसान—संज्ञा पुं. [फा. निशान] **नगाड़ा, धौंसा।** उ.—(क) है हरि-भजन कौ परमान। नीच पावै ऊँच पदवी, बाजते नीसान—१-२३५। (ख) देवलोक नीसान बजाये बरषत सुमन सुधारे—पृ० ३४४ (३१)।
नीहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कुहरा।** (२) **पाला, तुषार।**
नीहारिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आकाश में कुहरे सा फैला प्रकाश-पुंज जो रात में एक धुँधली सफेद धारी-सा दिखायी पड़ता है।**
नुकता—संज्ञा पुं. [अ. नुकतः] (१) **बिंदी।** (२) **चुभती हुई उक्ति, फबती।** (३) **ऐब, दोष।**
नुकताचीनी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **दोष निकालना।**
नुकसान—संज्ञा पु. [अ.] (१) **कमी, घटी।** (२) **हानि, घाटा।** (३) **खराबी, दोष, अवगुण।**
नुकीला—वि. [हिं. नोक+ईला] **नोकदार।**
नुक्कड़—संज्ञा पुं. [हिं. नोक] (१) **नोक।** (२) **सिरा, छोर, अंत।** (३) **निकला हुआ कोना।**

नुक्स—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **दोष** । (२) **त्रुटि, कसर** ।

नुचना—क्रि. अ. [सं. लुंचन] (१) **झटके से या खिंचकर उखड़ना** । (२) **नाखून आदि से छिलना या खरुचना** ।

नुचवाना—क्रि. स. [हिं. नोचना] **नोचने को प्रवृत्त करना** ।

नुनाई—संज्ञा स्त्री. [हि. लोनाई] **सलोनापन, सुंदरता** ।

नुमाइंदा—सज्ञा पुं. [फा.] प्रतिनिधि ।

नुमाइश—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **दिखावट** । (२) **तड़क-भड़क, सजधज** । (३) **अद्‌भुत वस्तुओं का सग्रह-स्थान या प्रदर्शनी** ।

नुमाइशी—वि. [हि. नुमाइश] (१) **दिखाऊ, दिखौआ** । (२)**ऊपरी तड़क-भड़कवाला, वास्तव में (निस्सार)** ।

नुसखा—सज्ञा पुं [अ.] **औषधि-पत्र** ।

नूत, नूतन—वि. [सं.] (१) **नया, नवीन** । उ.—(क) गौरि-कंत पूजत जहँ नूतन जल आनी—६-६६ । (ख) अरुन नूत पल्लव धरे रँगभीजी ग्वालिनी । (२) **अनूठा, अनोखा** । उ.—किसलै कुसुम नव नूत दसहु दिसि मधुकर मदन दोहाई—२७८४ । (३) **ताजा** ।

नूतनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नयापन, नवीनता** ।

नूतनत्व—संज्ञा पुं. [स.] **नयापन, नवीनता** ।

नून—सज्ञा पुं. [सं. लवण, हिं. लोन] **नमक** ।

वि. [सं. न्यून] **कम, न्यून** ।

नूनताई—सज्ञा स्त्री. [सं. न्यूनता] **कमी, न्यूनता** ।

नूना—वि, [स. न्यून] (१) **कम** । (२) **घटकर** ।

नूपुर—संज्ञा पुं. [स] **पैर में पहनने का बच्चो और स्त्रियों का एक गहना, घुंघरू, पंजनी** । उ.—रुनुक-झुनुक चलत पाइ नूपुर-धुनि बाजै—१०-१४६ ।

नूर—सज्ञा पुं. [अ.] (१)**ज्योति, प्रकाश** । (२) **श्री, कांति, शोभा** । (३) **ईश्वर का एक नाम (सूफी)** ।

नूरा—वि. [हि. नूर] **नूरवाला, तेजस्वी** ।

नृ—संज्ञा पुं. [स.] **नर, मनुष्य** ।

नृ-केशरी—सज्ञा पु. [सं. नृकेशरिन्] **नृसिंहावतार** ।

नृग—संज्ञा पुं. [स.] **एक दानी राजा जिन्होने अनजाने ही एक ब्राह्मण की गाय अपनी सहस्र गौओ के साथ दूसरे ब्राह्मण को दान में दे दी । गाय हरण के पाप का फल भोगने के लिए राजा नृग को सहस्र वर्ष के लिए गिरगिट होकर कुएँ में रहना पड़ा । इस योनि से श्रीकृष्ण ने उनका उद्धार किया** ।

नृघ्न—वि. [सं.] **नरघातक** ।

नृतक—संज्ञा पुं. [सं. नर्तक] **नाचनेवाला** ।

नृतकारी—संज्ञा स्त्री [सं. नृत्य + हिं. कारी = कला] **नृत्य-कला, नृत्यकौशल** । उ —इंद्रसभा थकित भई, लगी जब करारी । रंभा कौ मान मिट्यौ, भूली नृतकारी—६४६ ।

नृतत—क्रि. अ. [हि नृतना] **नृत्य करता है** । उ —कटि पितंबर बेष नटवर नृतत फन प्रति डोल ५६३ ।

नृतना—क्रि. अ [स. नृत्य] **नृत्य करना, नाचना** ।

नृति—संज्ञा स्त्री. [स.] **नाच, नृत्य** ।

नृत्त—संज्ञा पुं. [स.] **सुसंस्कृत अभिनय** ।

नृत्तना—क्रि. अ. [स. नृत] **नृत्य करना, नाचना** ।

नृत्य—संज्ञा पुं. [स.] **नाच, नर्त्तन** । उ.—जब अप्सरा नृत्य करि रही । तब राजा ब्रह्मा सौं कही—६-४ ।

नृत्यक—संज्ञा पुं. [सं. नर्तक] **नाचनेवाला, नर्तक** । उ.—मानहु नृत्यक भाव दिखावत गति लिय नायक मैन—२३२४ ।

नृत्यकी—संज्ञा स्त्री. [हि. नर्तकी] **नाचनेवाली, नर्तकी** ।

नृत्यत—क्रि. अ. [हिं. नृत्यना] **नृत्य करता है, नाचता है** । उ.—(क) नृत्यत मदन फूले, फूली रति अँग-अँग, मन के मनोज फूले हलधर वर के—१०-३४ । (ख) कुंडल लोल तिलक मृगमद रचि गावत नृत्यत नटवर बेस—३२२५ ।

नृत्यना—क्रि अ. [स नृत्य] **नाचना, नृत्य करना** ।

नृत्यशाला—संज्ञा स्त्री. [स] **नाचघर** ।

नृदेव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **राजा** । (२) **ब्राह्मण** ।

नृप—संज्ञा पुं [स] **राजा, नरपति** ।

नृप-कुल—सज्ञा पुं. [स. नृप + कुल] **राजाओं का समूह** । उ.—जरासध बदी कटै, नृप-कुल जस गावै—१-४ ।

नृपता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **राजापन** ।

नृपति—संज्ञा पुं. [स.] **राजा, नरपति** ।

नृप-रिषि—संज्ञा पुं [सं. नृप + ऋषि] **राजर्षि** ।

नृपराई, नृपराउ, नृपराय, नृपराव—संज्ञा पुं. [सं. नृपराज] **सम्राट, राजाओं में श्रेष्ठ** ।

नृपाल—सज्ञा पुं [स.] **राजा, नरपति** ।

नृलोक—संज्ञा पुं. [स.] **नरलोक, मर्त्यलोक ।**

नृशंस—वि. [सं.] (१) **निर्दय** (२) **अत्याचारी ।**

नृशंसता—संज्ञा स्त्री. [स.] **निर्दयता, क्रूरता ।**

नृसिंह—संज्ञा पुं. [स.] **भगवान विष्णु का चौथा अवतार जिसका आधा शरीर मनुष्य का और आधा सिंह का था । हिरण्यकशिपु को मारने के लिए यह अवतार धारण किया गया था ।**

नृसिंह चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री. [स.] **वैशाख शुक्ल चतुर्दशी जब नृसिंहावतार हुआ था ।**

नृहरि—संज्ञा पुं [स.] **नृसिंह ।**

ने—प्रत्य. [स प्रत्य टा—एण] **भूतकालिक सकर्मक क्रिया के कर्ता की विभक्ति ।**

नेउछाउरि—संज्ञा स्त्री. [हि. न्योछावर] **निछावर ।**

नेउतना—क्रि. स. [हि. न्योतना] **न्योता देना ।**

नेउता—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **न्योता, निमंत्रण ।**

नेक—वि. [फा.] (१) **भला, अच्छा ।** (२) **सज्जन ।**

क्रि. वि. [हि. न+एक] **थोड़ा, तनिक, कुछ, किंचित ।** उ.—(क) नरक कूपनि जाइ जमपुर परयौ बार अनेक । थके किंकर जूथ जमके, टरत टारैं न नेक १-१०६ । (ख) ढाकति कहा प्रेमहित सुंदरि सारँग नेक उघारि—२२२० ।

वि.—**थोड़ा, तनिक, कुछ भी, किंचित ।** उ.—सात दिन भरि ब्रज पर गई नेक न झार—९७३ ।

नेकी—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **भलाई ।** (२) **सज्जनता ।** (३) **उपकार ।**

मुहा.—नेकी और पूछ पूछ—**किसी का उपकार करने में पूछने की जरूरत क्या है ?**

नेकु, नेको, नेकौ—वि. [हिं. नेक] **जरा भी ।** उ.—तुम बिनु नँदनंदन ब्रजभूषन होत न नेको चैन—सा. ८ ।

क्रि. वि.—**तनिक, कुछ, थोड़ा ।**

नेग—संज्ञा पुं. [सं. नैयमिक, हि. नेवग] (१) **शुभ अथवा प्रसन्नता के अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों आदि को कुछ देने का नियम ।** (२) **वह धन, वस्तु आदि जो शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों आदि को दिया जाता है, बँधा हुआ पुरस्कार ।** उ.—लाख टका अरु झूमका (देहु) सारी दाइ कौ नेग—१०-४० ।

मुहा.—नेग लगना—(१) **पुरस्कार आदि देना आवश्यक होना ।** (२) **सार्थक या सफल होना ।**

नेगचार, नेगजोग—संज्ञा पु. [हिं. नेग+आचार, जोग] (१) **शुभ अवसर पर संबंधियों, आश्रितों आदि को भेंट, उपहार आदि देने की रीति ।** (२) **वह वस्तु, उपहार या धन जो ऐसे अवसर पर दिया जाय ।**

नेगटी—संज्ञा पुं [हि नेग+टा (प्रत्य.)] **नेग की रीति या दस्तूर का निर्वाह करनेवाला ।**

नेगी—संज्ञा पुं. [हि. नेग] **नेग का अधिकारी ।**

नेगीजोगी—संज्ञा पु [हि नेगजोग] **नेग का हकदार ।**

नेछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं निछावर] **निछावर ।**

नेजा—संज्ञा पुं. [फा.] **भाला, बरछा ।** उ—हँसमि दुज चमक करिवर निलैहैन झलक नखन छत घात नेजा सँभारै—१७०० ।

नेजाबरदार—संज्ञा पुं. [फा.] **भाला लेकर चलनेवाला ।**

नेजाल—संज्ञा पुं. [फा. नेजा] **भाला, बरछा ।**

नेड़े—क्रि. वि. [स. निकट, प्रा निअड़] **पास, निकट ।**

नेत—संज्ञा पुं. [सं. नियति=ठहराव] (१) **किसी बात की स्थिरता या ठहराव ।** (२) **निश्चय, संकल्प ।** उ.—आजु न जान देहुँ री ग्वालिनि बहुत दिननि को नेत—१०३५ । (३) **प्रबंध, व्यवस्था ।**

संज्ञा पुं. [सं. नेत्र] **मथानी की रस्सी ।** उ.—को उठि प्रात होत लै माखन को कर नेत गहै—२७११ ।

संज्ञा पुं. [देश.] **एक गहना ।** उ.—कहुँ कंकन कहुँ गिरी मुद्रिका कहुँ ताटक कहूँ नेत—३४५६ ।

नेतक—संज्ञा स्त्री. [देश.] **चूनर, चुँदरी ।**

नेता—संज्ञा पुं. [स. नेतृ] (१) **अगुआ, नायक ।** (२) **प्रभु, स्वामी ।** (३) **प्रवर्तक, निर्वाहक, संचालक ।**

संज्ञा पुं. [सं. नेत्र] **मथानी की रस्सी ।**

नेति—वाक्य [सं. न इति] **'इति (अंत) नहीं है' । यह वाक्य ब्रह्म की अनंतता सूचित करने के लिए लिखा जाता है ।** उ—सोई जस सनकादिक गावत नेति नेति कहि मानि—२-३७ ।

संज्ञा स्त्री—[स. नेत्र] **वह रस्सी जिसे मथानी में लपेट कर दूध-दही मथा जाता है ।** उ.—कह्यौ

भगवान अब बासुकी ल्याइयै, जाइ तिन बासुकी सौं सुनायौ। मानि भगवंत-आज्ञा सो आयौ तहाँ, नेति करि अचल कौ सिंधु नायौ—८-८।

नेती—संज्ञा स्त्री. [सं. नेत्र, हि. नेता] **मथानी की रस्सी।**

नेती धोती—संज्ञा स्त्री. [हि. नेती+धोती] **हठयोग की क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में पहुँचाकर आँतें साफ करते है।**

नेतृत्व—संज्ञा पु. [सं.] **नेता होने का भाव, कार्य या पद, सरदारी, नेतागीरी।**

नेत्र—संज्ञा पुं. [सं] (१) **आँख।** (२) **मथानी की रस्सी।** (३) **दो की संख्या सूचक शब्द।**

नेत्रकनीनिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आँख का तारा।**

नेत्रज, नेत्रजल—संज्ञा पु [सं.] **आँसू।**

नेत्रपिंड—संज्ञा पु [सं] **आँख का ढेला।**

नेत्रबंध—संज्ञा पु. [सं.] **आँखमिचौनी का खेल।**

नेत्ररंजन—संज्ञा पुं [सं.] **काजल, कज्जल।**

नेत्ररोम—संज्ञा पुं. [सं. नेत्ररोमन्] **आँख की बरौनी।**

नेत्रस्तंभ—संज्ञा पुं. [सं.] **पलकों का स्थिर हो जाना।**

नेत्री—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **अनुगामिनी नारी।** (२) **मार्ग-प्रदर्शिका।** (३) **स्वामिनी।** (४) **लक्ष्मी।**

नेनुआ, नेनुवा—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरकारी।**

नेपथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साज सज्जा, सजावट।** (२) **नृत्य अभिनय या नाटक में नर-नारी या अभिनेताओं के सजने का स्थान।** (३) **नाच रंग का स्थान।**

नेब—संज्ञा पुं [फा. नायब] **मंत्री, दीवान, सहायक।** उ.—आए नँदनंदन के नेब। गोकुल माँझ जोग बिस्तारयौ भली तुम्हरी जेब।

नेम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समय।** (२) **खंड।** (३) **दीवार।** (४) **छल।** (५) **आधार** (६) **गड्ढा।**

संज्ञा पुं. [सं. नियम] (१) **नियम।** (२) **अटल या निश्चित बात।** (३) **रीति।** (४) **धर्म या पुण्य की दृष्टि से व्रत, उपवास आदि का पालन।** उ.—(क) नौमी-नेम भली बिधि करै-६-५। (ख) जा सुख कौ सिव-गौरि मनाई, तिय व्रत-नेम अनेक करी—१०-८०। (ग) नेम-धर्म-तप-साधन कीजै।·· ··। बर्ष-दिवस कौ नेम लेइ सब—७६६।

यौ०—नेम धरम—**पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि।**

नेमि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **घेरा।** (२) **कुएँ की जगत।**

नेमी—वि. [हि नेम] (१) **नियमों का पालन करने वाला।** (२) **पूजा पाठ, व्रत-उपवास करनेवाला।**

यौ०—नेमी-धरमी—**पूजा-पाठ में लगा रहनेवाला।**

नेरा—क्रि. वि. [हिं नियर] **कुछ भी, जरा भी।**

वि.—**जो निकट हो, समीप का।**

नेर, नेरे—क्रि. वि. [हि. नियर] **निकट, पास, समीप।** उ.-(क) बिपति परी तब सब सँग छाँडे, कोउ न आवै नेरे—१ ७६। (ख) सूरस्याम निन अंतकाल मैं कोउ न आवत नेरे—१-८५।

नेरै—क्रि. वि [हि. नियर, नेरे] **निकट, पास।** उ.—तुम तौ दोष लगावन कौं सिर, बैठे देखत नेरै—१-२०६।

नेवछावर, नेवछावरि—संज्ञा स्त्री. [हि. निछावर] **निछावर।** उ.—हरकर पाट बंध नेवछावरि करत रतन पट सारी—२६३०।

नेवज—संज्ञा पुं. [सं. नैवेद्य] **देवता को अर्पित करने की वस्तु, भोग।** उ.—(क) बरस दिवस को दिवस हमारो घर घर नेवज करौ चँडाई—६१०। (ख) बहुत भाँति सब करे पकवान। नेवज करि धरि साँझ बिहाने—१००८।

नेवत—संज्ञा पुं. [हि. न्योता] **न्योता, निमंत्रण।**

नेवतना—क्रि. स. [सं. निमन्त्रण] **नेवता भेजना।**

नेवतहरी—संज्ञा पुं. [हिं. न्योतहरी] **निमंत्रित व्यक्ति।**

नेवता—संज्ञा पु. [हि. न्योता] **निमंत्रण।**

नेवति—क्रि. स. [हिं. नेवतना] **निमंत्रण देकर, नेवता भेजकर।** उ.—सुर-गधर्व जे नेवति बुलाए। ते सब बधुनि सहित तहँ आए—४-५।

नेवना—क्रि. अ [सं नमन] **झुकना।**

नेवर—संज्ञा पुं [सं. नूपुर] **पैर का एक गहना, नूपुर।**

वि. [सं न+वर=अच्छा] **बुरा, खराब।**

नेवला—संज्ञा पुं. [सं. नकुल, प्रा. नाल] **नकुल नामक जंतु।**

नेवाज—वि. [हि. निवाज] **कृपा करनेवाला।**

नेवाजना—क्रि. स. [हिं. निवाजना] **कृपा करना।**

नेवाजी—क्रि. स. [हि. निवाजना] **कृपा की।** उ.—कहियत कुबिजा कृपा नेवाजी—३०६४।

नेवाना—क्रि. स. [सं नमन] **झुकाना।**

नेवारी—संज्ञा स्त्री. [स. नेपाली] **जूही या चमेली की जाति का, सफेद फूलवाला एक पौधा।**

नेसुक—वि. [हि. नेकु] **जरा सा, तनक, थोड़ा सा।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनक, किंचित।**

नेस्त—वि. [फ़ा.] (१) **जो न हो।** (२) **नष्ट।**

नेस्ती—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **न होना।** (२) **नाश।**

नेह, नेहरा—संज्ञा स्त्री. [स स्नेह] (१) **स्नेह।** (२) **तेल, घी।**

नेही—वि. [हि नेह] **स्नेह करनेवाला, प्रेमी।**

नैंकु—वि. [हि न + एक = नेक] **थोड़ा, तनिक, किंचित।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनिक।** उ.—कोपि कौरव गहे केस जब सभा मैं, पाडु की बधू जस नैंकु गायौ। लाज के साज मैं हुती ज्यौं द्रौपदी, बढ्यौ तन-चीर नहिं अंत पायौ—१-५।

नैंकहु—क्रि. वि. [हि, न+एक+हु (प्रत्य.) **जरा भी, थोड़ी भी।** उ.—हरि, हौं महापतित, अभिमानी। परमारथ सौं बिरत, विषय-रत, भाव-भगति नहि नैंकहु जानी—१-१४६।

नैंसुक—वि. [हि. नेकु] (१) **छोटी, जरा सी।** उ.—स्याम, तुम्हरी मदन-मुरलिका नैंसुक-सी जग मोह्यौ—६५६। (२) **तनक, थोड़ा।**

क्रि. वि.—**थोड़ा, जरा, तनक।**

नै—संज्ञा स्त्री. [स. नय] **नीति।**

संज्ञा स्त्री. [स. नदी प्रा. णई] **नदी, सरिता।**

प्रत्य. [हि. ने] **भूतकालिक सकर्मक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।** उ.—दियौ सिरपाव नृपराव नै महर कौ आपु पहिरावने सब दिखाए—५८७।

नैक, नैकु—वि. [हि. न+एक] **थोड़ा, कुछ।**

नैकट्य—संज्ञा पुं [सं.] **निकट होने का भाव।**

नैंको, नैंकौ—वि. [हिं. नैक] **जरा भी, थोड़ा, कुछ।** उ.—कहा मल्ल चाणूर कुबलिया अब जिय त्रास नही तिन नैंको—२५५८।

नैतिक—वि [सं.] (१) **नीति संबधी, नीतियुक्त।** (२) **आचरण-सबंधी, चारित्रिक।**

नैत्यिक—वि. [स.] **नित्य का।**

नैत्रिक—वि. [स.] **नेत्रो का, नेत्र-संबंधी।**

नैन—संज्ञा पुं [सं. नयन] **नेत्र।** उ.—सबनि मूँदे नैन, ताहि चितये सैन, तृषा ज्यौं नीर दव अँचै लीन्हौ—५९७।

यौ—मतवाले नैन—**मद भरे नैन।** रस भरे या रसीले नैन—**नैन जिनमें रसिकता का भाव हो।**

मुहा.—नैन उठाना-(१) **निगाह सामने करना।** (२) **बुरा व्यवहार करना।** नैन न उघारना—**लज्जा या संकोच से आँख न खोलना।** नैन न जात उघारे—**लज्जा या सकोच के कारण आँख खोलकर सामने न कर पाना।** उ—दुरलभ भयौ दरस दसरथ कौ सो अपराध हमारे। सूरदास स्वामी करुनामय नैन न जात उघारे—६-५२। नैन चढाना—**झुँझलाहट, अनख या क्रोध से देखना।** नैन चढाए डोलत—**अनख या क्रोध से देखती घूमती है।** उ.—कापर नैन चढाए डोलत व्रज मे तिनुका तोर—१०-३१०। नैन चलाना—(१) **आँख मटकाकर संकेत करना।** (२) **अनख या क्रोध से देखना।** नैन चलावै—**आँख चमकाकर या मटकाकर सकेत करती है।** उ.—सखियनि बीच भरयौ घट सिर पर तापर नैन चलावै—८७५। नैन चलावति—**अनख या क्रोध से देखती हुई।** उ.—का पर नैन चलावति आवति जाति न तिनका तोर—१० ३२०। नैन जुडाना—**आँखें शीतल होना, तृप्ति होना।** नैन जुडाने—**नेत्र शीतल हुए, तृप्ति हुई।** उ—अँचवत तब नैन जुडाने—१०-१८३। नैन भर आना—**आँख में आँसू आना।** नैन भरि आए—**नेत्रों में आँसू आ गये।** उ.—देखत गमन नैन भरि आए गात गह्यौ ज्यौं केत—६-३६। नैन भरि जोवना—**खूब अच्छी तरह तृप्त होकर देखना।** नैन भरि जोवै—**खूब अच्छी तरह देख ले।** उ.—चाहति नैकु नैन भरि जोवै—१०-३। नैन लगाना—**टकटकी बाँधकर देखना।** नैन रहे लगाइ—**टकटकी बाँधकर देखते रह गये।** उ.—मथति ग्वालि

हरि देखी जाइ। गए हुते माखन की चोरी, देखत छवि रहे नैन लगाइ—१०-२६८। नैन सिराना—**नेत्रों को परम तृप्ति मिलना**। नैन सिराए—**आँखें ठंढी हुई, बहुत सुख मिला**। उ.—सिया-राम-लछिमन मुख निरखत सूरदास के नैन सिराए—९-१६८।

संज्ञा पुं. [सं. नय+न] **अनीति, अन्याय**।

संज्ञा पुं. [सं. नवनीत] **माखन**।

नैन-अमीन—संज्ञा पुं. [सं. नयन+अ. अमीन] **नेत्र रूपी अदालती या राजकीय कर्मचारी**। उ.—नैन अमीन, अधर्मिनि कै बस, जहँ कौ तहाँ छयौ—१-६४।

नैननि—संज्ञा पु. [सं. नयन + नि (प्रत्य)] **नेत्रों में, आँखों में**। उ.—सुत कुबेर के मत्त-मगन भए विषै-रस नैननि छाए (हो)—१-७।

नैन-पटी—संज्ञा स्त्री. [सं. नयन+हि. पट्टी] **आँख पर बाँधने की कपड़े की पट्टी**। उ.—अपनी रुचि जित ही जित ऐंचति इन्द्रिय-कर्म-गटी। हौ तित हीं उठि चलत कपट लगि, बाँधे नैन-पटी—१ ६८।

नैनसुख—संज्ञा पुं. [हि. नैन+सुख] **एक सूती कपड़ा**।

नैना—संज्ञा पुं [सं. नयन] **नेत्र, आँखें**। उ.—(क) सूरदास उमँगे दोउ नैना, सिंधु-प्रवाह बह्यौ—१-२४७। (ख) नैना तेरे जलज जीत है, खजन तै अति नाचै—१०-७१८।

संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम**। उ.—दर्वा, रंभा, कृष्ना, ध्याना मैना नैना रूप—१५८०।

क्रि. अ. [हिं. नवना] **झुकना**।

क्रि. स. [हिं. नवाना] **झुकाना**।

नैनी—वि. [हि. नैन] **नयनवाली**। उ.—जा जल-शुद्ध निरखि सन्मुख ह्वै, सुन्दर सरसिज नैनी—९-११।

नैनूँ, नैनू—संज्ञा पुं [सं. नवनीत] **मक्खन**।

नैपुण्य—संज्ञा पुं. [सं.] **दक्षता, निपुणता**।

नैमित्तिक—वि. [सं.] **जो निमित्तवश किया जाय**।

नैमिष—संज्ञा पुं. [स.] **नैमिषारण्य तीर्थ**।

नैमिषारण्य—संज्ञा पुं. [सं.] **सीतापुर का एक तीर्थ**।

नैया—संज्ञा स्त्री [हि नाव] **नाव, नौका**।

नैर—संज्ञा पुं. [स. नगर] (१) **नगर**। (२) **जनपद**।

नैरी—संज्ञा पु. [स. नगर, हि. नैर] **नगरी, देश, जनपद**। उ.—जाके घर की हानि होति नित, सो नहि आनि कहै री। जाति-पाँति के लोग न देखति, और बसैहै नैरी—१०-३२४।

नैराश्य—संज्ञा पुं. [स.] **निराशा का भाव**।

नैऋत—वि. [सं.] **नैऋति संबंधी**।

संज्ञा पुं.—**पश्चिम-दक्षिण-कोण का स्वामी**।

नैऋति—संज्ञा स्त्री. [स] **पश्चिम और दक्षिण दिशाओं के बीच का कोण**।

नैवेद्य—संज्ञा पुं [सं.] **देव-अर्पित भोग**। उ.- धूप-दीप-नैवेद्य साजि कै मगल करैं बिहारी—२५८७।

नैष्ठिक—वि. [सं] **निष्ठावान**।

नैसर्गिक—वि [स] **प्राकृतिक, स्वाभाविक**।

नैसा—वि. [सं. अनिष्ट] **बुरा, खराब**।

नैसिक, नैसुक—वि. [हि नेक] **थोड़ा, जरा सा**।

नैसे—वि. [सं. अनिष्ट] **अनैसा, बुरा, खराब**। उ.—(क) जो जिहि भाव भजै, प्रभु तैसे। प्रेम बस्य दुष्टनि कौ नैसे—१०-३६१। (ख) कहु राधा हरि कैसे है? तेरे मन भाए की नाहीं, की सुंदर की नैसे है—१३०७

नैहर—संज्ञा पुं. [सं. ज्ञाति, प्रा. णाति णाई=पिता + घर] **माता-पिता का घर, मायका, पीहर**।

नैहौं—क्रि स [हिं. नाना] (१) **डालना, छोडना**। (२) **पहनाना**। उ.—और हार चौकी हमेल अब तेरे कंठ न नैहौं—१५५०।

नोआ—संज्ञा पु [हि. नोवना] **दुहते समय गाय के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, बधी**।

नोइनी, नोई—संज्ञा स्त्री [हि नोवना] **दुहते समय गाय के पैर में बाँधने की रस्सी, बधी**।

नोक—संज्ञा स्त्री. [फा] **बहुत पतला छोर**।

नोक-झोंक—संज्ञा स्त्री. [हि. नोक+झोंक] (१) **ठाट-बाट**। (२) **दर्प, आतंक**। (३) **व्यंग्य, ताना**। (४) **छेड़छाड़, झपट**।

नोकत—क्रि. स. [हिं. नोकना] **लुब्धते हैं**। उ —रीझि रहे उत हरि इत राधा अरस परस दोउ नोकत हैं।

नोकना—क्रि. स.– **ललचना, गीधना, लुब्धना।**
नोखा—वि. [हिं. अनोखा] **अनूठा, विचित्र।**
नोखी—वि. स्त्री. [हि. नोखी] **अनूठी, विचित्र।** उ.—कैसी बुद्धि रची है नोखी देखी सुनी न होइ— पृ० ३१३ (३०)।
नोखे—वि. [हि. अनोखा] **अनोखे, अद्भुत, विचित्र।** उ.—तब वृषभानु-सुता हँसि बोली, हम पै नाहि कन्हाइ। काहे कौ भकझोरत नोखे, चलहु न देउँ बताइ—६८२।
नोच—संज्ञा स्त्री [हिं. नोचना] **लूट, खसोट।**
नोचना—क्रि स. [सं. लुंचन] (१) **उखाड़ना।** (२) **नाखून से खरोंचना।** (३) **तंग करके ले लेना।**
नोचै—क्रि. स. [हिं नोचना] **नोचता खरोंचता है।** उ—सत्य जानि जिय, चित चेत आनि, तू अब नख क्यौ तन नोचै—१०३०-१०२।
नोचू—वि. [हिं. नोचना] (१) **नोचने-खसोटनेवाला।** (२) **माँग माँग कर या लेकर तंग करनेवाला।**
नोदन—संज्ञा पुं [सं.] (१) **प्रेरणा।** (२) **बैलों को हांकने की छड़ी, औगी।** (३) **खंडन।**
नोन—संज्ञा पु [स. लवण, हि लोन] **नमक।**
नोनचा—संज्ञा पु [हि नोन+छार] **लोनी जमीन।**
नोनहरामी—संज्ञा स्त्री. [हि लोन=नोन (फा. नमक) +अ. हराम+ई (प्रत्य.)] **नमक हरामपन, कृतघ्नता।**
वि.—**नमकहराम कृतघ्न।** उ.—जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोनहरामी—१-१४८।
नोना, नोनो—संज्ञा पुं. [सं. लवण, हि नोन] **लोना।**
वि.—(१) **नमकीन, खारा।** (२) **सलोना, सुंदर।**
नोनिया—वि. [हि. नोन] **नमक बनानेवाला।**
नोनी—संज्ञा स्त्री. [हिं नोना] **लोनी मिट्टी।**
वि. स्त्री — (१) **नमकीन, खारी।** (२) **सलोनी।**
नोर, नोल—वि. [सं नवल] **नया, नवीन।**
नोवत—क्रि. स. [हि. नोवना] **दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बाँधते है।** उ.—बछरा छोरि खरिक कौ दीन्हौ, आपु कान्ह तन-सुधि बिसराई। नोवत वृषभ निकसि गैयाँ गई, हँसतसखाकहदुहत कन्हाई—७२०।
नोवना—क्रि. स. [सं. नद्ध, हि. नहना] **दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बांधना।**
नोवै—क्रि. स, [हिं. नोवना] **दुहते समय रस्सी से गाय का पैर बांधता है, नोवता है।** उ—ग्वाल कहै धनि जननि हमारी, सुकर सुरभि नित नोवैं—३४७।
नोहर, नोहरा—वि. [हि. मनोहर] **अनोखा, अद्भुत।**
नौधरई, नौधराई, नौधरी—संज्ञा स्त्री. [हि नामधराई] **बदनामी, निंदा, अपकीर्ति, बुराई।**
नौ—वि [स. नव] **जो दस से एक कम हो।**
मुहा.—नौ दो ग्यारह होना—**देखते-देखते भाग जाना।** नौ तेरह बताना—**टालटूल करना।**
वि.—**नया, नवीन।** उ—जब लगि नहि बरषत ब्रज ऊपर नौ घन श्याम सरीर—२७७१।
नौआ—संज्ञा पु. [हि नाऊ] **नाऊ, नाई, नापित।** उ.—रोवत देखि जननि अकुलानी दियौ तुरत नौआ कौं घुरकी—१०-१८०।
नौकर—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **चाकर, दास, टहलुआ।** (२) **वैतनिक कर्मचारी।**
नौकरनी, नौकरानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. नौकर] **दासी।**
नौकरी—संज्ञा स्त्री. [हि. नौकर] **चाकरी, सेवा।**
नौका—संज्ञा स्त्री. [स.] **नाव।** उ मेरी नौका जनि चढौ त्रिभुवनपति राई—९-४२।
नौग्रही—संज्ञा स्त्री. [स नवग्रह] **हाथ का एक गहना जिसमें नौ रत्न जड़े रहते हैं।**
नौज—अव्य. [स. नवद्य, प्रा. नवज्ज] (१) **ईश्वर न करे, ऐसा न हो।** (२) **न सही।**
नौजवान—वि. [फा.] **नवयुवक।**
नौजवानी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **युवावस्था।**
नौजा—संज्ञा पुं [फा.लौज](१) **बादाम।** (२) **चिलगोजा।**
नौटंकी—संज्ञा स्त्री. [देश] **नगाड़े के साथ चौबोले गाकर होनेवाला अभिनय।**
नौतन—वि. [सं. नूतन] **नया, नवीन।** उ.—नए गोपाल नई कुबिजा बनी नौतन नेह ठयौ—३३४७।
नौतम—वि. [सं. नवतम] (१) **बिलकुल नया।** (२) **ताजा।**
संज्ञा पं. [स. नम्रता] **विनय, नम्रता।**

नौध—संज्ञा पुं. [सं. नव+हिं. पौधा] **नया पौधा** ।

नौधा—वि. [सं नवधा] **नौ प्रकार की** । उ.—नौधा भक्ति दास रति मानै—३४४२ ।

नौनगा—संज्ञा पुं. [हिं. नौ+नग] **बाहु का एक गहना जिसमें नौ तरह के नग जड़े होते हैं** ।

नौना—क्रि. अ. [हिं. नवना] **झुकना, नवना** ।

नौबढ, नौबढ़िया, नौबढ़वा—वि. [स. नव + हि. बढना] **जिसने हाल ही में उन्नति की हो** ।

नौबत—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **बारी, पारी** । (२) **गति, दशा** । (३) **संयोग** । (४) **वैभव, उत्सव या मंगल-सूचक वाद्य (शहनाई और नगाड़े) जो पहर-पहर भर बजते हैं, समय-समय पर बजनेवाले बाजे** ।

मुहा.—नौबत झड़ना (बजना)—(१) **आनंदोत्सव होना** । (२) **प्रताप की घोषणा होना** । नौबत बजावत—(१) **खुशी मनाता है** । उ.—निंदा जग उपहास करत, मग बंदीजन जस गावत । हठ, अन्याय अधर्म, सूर नित नौबत द्वार बजावत—१-१४१ । (२) **प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा करता है** । नौबत बजाकर (की टकोर)—**डंके की चोट पर, खुल्लमखुल्ला** ।

नौबती—संज्ञा पुं. [हि. नौबत] **नौबत बजानेवाला** ।

नौमासा—संज्ञा पुं. [सं. नवमास] **गर्भ का नवाँ महीना** ।

नौमि—पद [सं. नमामि] **मैं नमस्कार करता हूँ** ।

नौमी—संज्ञा स्त्री. [स. नवमी] **दोनों पक्षों की नवीं तिथि** । उ.—(क) नौमी-नेम भली बिधि करै—९-५ । (ख) नौमी नवसत साजिकै हरि होरी है—२४११ ।

नौरंग—संज्ञा पुं.—[हिं. औरंग](**औरंगजेब) का रूपांतर** ।

नौरतन—संज्ञा पुं [सं. नवरत्न] **'नौनगा' नामक गहना** ।

संज्ञा स्त्री.—**नौ मसालों की चटनी** ।

नौरोज—संज्ञा पुं [फा.] (१) **पारसियों के नव वर्ष का नया दिन** । (२) **त्योहार या उत्सव का दिन** ।

नौल—वि. [सं. नवल] **नया, नूतन** ।

नौलक्खा, नौलखा—वि. [हि. नौ+लाख] **नौलाख का** ।

नौलासी—वि. [देश.] **कोमल, मुलायम** ।

नौशा—संज्ञा पुं. [फा.] **दूल्हा, बर** ।

नौशी—संज्ञा स्त्री. [फा] **दुलहिन, नववधू** ।

नौसत—संज्ञा पुं. [हिं. नौ+सात] **सोलह श्रृंगार** । उ.—नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजन हेत ।

नौसर, नौसरा—संज्ञा पुं. [हिं नौ+सर] **नौलड़ा हार** ।

नौसिख, नौसिखिया, नौसिखुवा—वि. [सं. नवशिक्षित] **जिसने नया-नया ही कोई काम सीखा हो** ।

नौहड़—संज्ञा पुं. [स. नव + हि. हाँडी] **नयी हाड़ी** ।

न्यवछावार, न्यवछावरि, न्यवछावरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] (१) **निछावर, वारा फेरा** ।

मुहा.—न्यवछावर करति—**उत्सर्ग करती हैं, वारती हैं** । उ.—सूरदास प्रभु की छबि ब्रज ललना निरखि थकित तन-मन न्यवछावरि करति आनंद बर ते—२३५३ । (२) **निछावर या वाराफेरा की वस्तु** । उ.—मुक्ति-मुक्ति न्यवछावरी पाई सूर सुजान—१० उ० ८ । (३) **इनाम, नेग** ।

न्यस्त—वि. [स.] (१) **रखा हुआ** । (२) **छोड़ा-त्यागा हुआ** ।

संज्ञा पु.—**धरोहर या अमानत रूप में रखा हुआ** ।

न्याइ, न्याउ—संज्ञा पु. [सं. न्याय] (१) **उचित या नियमानुकूल बात, नीति** । उ.—सूरदास वह न्याउ निबेरहु हम तुम दोऊ साहु—३३६८ । (२) **दो पक्षों के बीच निर्णय, निष्पक्ष निश्चय** । उ.—कौन करनी घाटि मोसौं, सो करौ फिरि काँधि । न्याय कै नहिं खुनुस कीजै, चूक पल्लै बाँधि—१-१९९ ।

न्याति—संज्ञा स्त्री. [स. ज्ञाति, प्रा णाति] (१) **रीति, प्रणाली, ढंग** । उ.—बैठे नद करत हरि पूजा, बिधिवत् औ बहु भाँति । सूर स्याम खेलत तै आए, देखत पूजा न्याति—१०-२६० । (२) **जाति** । उ०—मधुकर कहा कारे की न्याति । ज्यौ जलमीन कमल मधुपन कौ छिन नहिं प्रीति खटाति—३१६८ ।

न्यान, न्याना—वि [सं. अज्ञान] **नासमझ** ।

न्याय—संज्ञा पुं. [स.] (१) **नीतियुक्त या उचित बात** । (२) **सत्-असत् का ज्ञान** । (३) **प्रमाण या तर्कयुक्त वाक्य** ।

वि.—**न्यायी, नीतियुक्त व्यवहार करनेवाला** । उ.—तुम न्याय कहावत कमलनैन—१९७७ ।

न्यायकर्त्ता—संज्ञा पुं. [सं.] **न्याय करनेवाला** ।

न्यायतः—क्रि. वि. [सं.] (१) **न्यायानुसार**। (२) **ठीक-ठीक**।

न्याय-परता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **न्यायी होने का भाव**।

न्यायसंगत—वि. [सं.] **उचित, ठीक**।

न्यायाधीश—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रधान न्यायकर्ता**।

न्यायालय—संज्ञा पुं [सं.] **अदालत, कचहरी**।

न्यायी—संज्ञा पुं. [सं. न्यायिन्] **न्याय शील**।

न्यायोचित—वि. [सं.] **उचित, ठीक**।

न्यार, न्यारा—वि [सं. निर्निकट, प्रा. निन्निअड़, निन्नियर, पू. हिं. निन्यार, हिं. न्यारा] (१) **अलग, पृथक्, जो साथ न हो**। उ.—·······नाम स्रमिष्ठा तासु कुमारी। तासु देवयानी सौं प्यार। रहै न तासौं पल भर न्यार—६-१७४। (२) **जो पास न हो**। (३) **भिन्न, अन्य**। (४) **निराला, अनोखा**।

न्यारी—वि. [हिं. न्यारा] (१) **निराली, विलक्षण, अनोखी**। उ.—परम रुचिर मनि-कंठ किरनि-गन, कुंडल-मुकुट प्रभा न्यारी—१-६६। (२) **और ही, भिन्न, अन्य**। उ.—दूध बरा उत्तम दधिबाटी, गाल-मसूरी की रुचि न्यारी—१०-२२७। (३) **अलग, पृथक**। उ.—एक ही संग हम तुम सदा रहति, आजु ही चटकि तू भई न्यारी—१२००।

न्यारे—क्रि. वि. [हिं. न्यारा] (१) **दूर, अलग**। उ.—क्यौं दासी सुत कैं पग धारे ?······। सुनियत हीन, दीन, बृषली-सुत, जाति-पाँति तैं न्यारे—१-२४२। (२) **और ही, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न**। उ.—(क) बहुत भाँति मेवा सब मेरे षटरस ब्यंजन न्यारे—४६४। (ख) मथुरा के द्रुम देखियत न्यारे-२७८१।

न्यारो, न्यारौ—क्रि. वि. [हि. न्यारा] (१) **दूर, पास नहीं**। उ.—न्यारो करि गयंद तू अजहूँ—२५८६। (२) **अलग, पृथक्**। उ.—पतित-समूह सबै तुम तारे, हुतौ जु लोक भरयौ। हौ उनतै न्यारौ करि डारयौ, इहिं दुख जात मरयौ—१-१५। (३) **साथ में नहीं**। उ.—जाति-पाँति कुलहू तैं न्यारौ, है दासी कौ जायौ—२१-२४४। (४) **निराला, अनोखा**। उ.—कमल नैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात—२५३६।

न्याव—संज्ञा पुं. [सं. न्याय] (१) **आचरण नीति**। उ.—ऊधो, ताको न्याव है जाहि न सूझै नैन। (२) **उचित बात**। (३) **सत्-असत् -बुद्धि**। (४) **विवाद का निर्णय**।

न्यास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रखना, स्थापना**। (२) **यथाक्रम लगाना, सजाना या प्रस्तुत करना**। (३) **धरोहर, थाती**। (४) **त्याग**। (५) **संन्यास**। (६) **देव-अंगों पर विशेष वर्णों का स्थापन**। उ.—मुद्रा न्यास अंग अँग भूषन पति ब्रत ते न टरौं—३०२७। (७) **रोग-बाधा-शान्ति के लिए अंगों पर हाथ रख कर मंत्र पढ़ना**।

न्यून—वि. [सं.] (१) **कम**। (२) **घट कर**। (३) **नीच**।

न्यूनता—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **कमी**। (२) **हीनता**।

न्योछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर**।

न्योतना—क्रि. स. [हिं. न्योता] **निमन्त्रित करना**।

न्योतनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. न्योतना] **खाना-पीना, दावत**।

न्योतहरी—संज्ञा पुं. [हिं. न्योता] **निमंत्रित व्यक्ति**।

न्योता—संज्ञा पुं. [सं. निमंत्रण] (१) **बुलावा**। (२) **भोजन का निमत्रण**, (३) **दावत**। (४) **न्योते में दिया जाने वाला धन**।

न्योली—संज्ञा स्त्री. [स. नली] **पेट के नलों को पानी से साफ करने की हठयोगियों की क्रिया**।

न्यौछावर—संज्ञा स्त्री. [हिं. निछावर] **निछावर, उत्सर्ग, वारा-फेरा, उतारा**। उ.—सूर कहा न्यौछावर करियै अपनैं लाल ललित लरखर पर—१०-६३।

न्यौति—क्रि. स. [हिं. न्योतना] **निमंत्रण देकर, बुलाकर**। उ.—जग्य-पुरुष गए बैकुंठ धामहिं जबै, न्यौति नृप प्रजा कौ तब हँकारयौ—४-११।

न्यौत्यौ—क्रि. स. [हिं. न्योतना] **न्योता दिया, निमंत्रित किया**। उ.—इच्छा करि मै बाम्हन न्यौत्यौ, ताकौं स्याम खिझावै—१०-२४६।

न्हवाइ—क्रि. स. [हिं. नहलाना] **नहलाकर, स्नान करा कर**। उ.—जननी उबटि न्हवाइ (सिसु) क्रम सौं लीन्हे गोद—१०-४२।

न्हवायौ—क्रि. स. [हि. नहलाना] **नहलाया, स्नान कराया**। उ.—जज्ञ कराइ प्रयाग न्हवायौ—६-८।

न्हवावत—क्रि. वि. [हिं. नहाना] **नहाते समय।** उ.—मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी। ....। काढत-गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुई लोटी—१०-१७५।

न्हाइ—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहा कर, स्नान करके।** उ —रिषि कह्यौ, आवत हौ मै न्हाइ—६-५।

न्हाउ—क्रि. अ. [हि. नहाना] **नहाओ, स्नान करो।** उ.-ग्रीषम कमल-बदन कुम्हिलैहै, तजि सर निकट दूरि कित न्हाउ—६-३४।

न्हाऐं—क्रि. अ. सवि. [हिं. नहाना] **नहाने से, स्नान करने से।** उ.—जो सुख होत गुपालहि गाऐं। सो सुख होत न जप तप कीन्हैं, कोटिक तीरथ न्हाऐं—२-६।

न्हात—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **स्नान करते-करते, नहाते नहाते।** उ.—दुरबासा दुरजोधन पठयौ पाडव-अहित बिचारी। साकपत्र लै सबै अघाए, न्हात भजे कुस डारी—१-१२२।

न्हान—सज्ञा पुं. [हिं. नहाना] **स्नान, नहान।** उ.—गौतम लख्यौ, प्रात है भयौ। न्हान काज सो सरिता गयौ—६-८।

न्हाना—क्रि. अ. [हि. नहाना] **स्नान करना।**

न्हावन—सज्ञा पुं. [हिं. नहाना] **स्नान, नहाना।** उ.—एक बार ताके मन आई। न्हावन काज तड़ाग सिधाई —६-१७४।

न्हावै—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाता है।** उ.—मानसरोवर छाँड़ि हस तट काग-सरोवर न्हावै—२-१३।

न्हाहिं—क्रि. अ. [हि न्हाना] **नहाते हैं।** उ.—हंस उजल पख निर्मल अग मलि-मलि न्हाहि—१-३३८।

न्हैये—क्रि. अ. [हिं. नहाना] **नहाइए।** उ.—चलौ सबै कुरुक्षेत्र तहाँ मिलि न्हैये जाई—१० उ.—१०५।

प

प—**पवर्ग का पहला और हिंदी का इक्कीसवाँ व्यंजन; वह स्पर्श ओष्ठ्य वर्ण है।**

पंक—सज्ञा पुं. [सं] (१) **कीच, कीचड़।** उ.—कुंभकरन-तन पंक लगाई, लंक बिभीषन पाइ—६-८३। (२) **सुगंधित लेप।** उ.—स्याम अग चदन की आभा नागरि केसरि अग। मलयज पंक कुमकुमा मिलि कै जल-जमुना इक रंग।

पंकज—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल।**

वि.— **कीचड़ से उत्पन्न होनेवाला।**

पंकजराग—संज्ञा पुं. [स.] **पद्मराग मणि।**

पंकजासन—संज्ञा पुं. [सं] **ब्रह्मा।**

पंकजिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कमलिनी।**

पंकरुह, पंकेरुह—संज्ञा पुं. [सं] **कमल।** उ.—मनो मुख मृदुल पानि पंकेरुह गुरुगति मनहुँ मराल बिहंगा—१६०५।

पंकिल—वि. [सं.] **जिसमें कीचड़ हो।**

पंक्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पाँती, कतार।** (२) **भोज में साथ साथ खानेवालों की पाँती।**

पंक्तिच्युत—वि. [स.] **बिरादरी से निकाला हुआ।**

पंख—संज्ञा पुं. [स. पक्ष, प्रा. पक्ख] **पर, डैना, पक्ष।** उ.—हंस उज्जल पंख निर्मल अग मलि मलि न्हाहिं—१-३३८।

मुहा.—पख जमना—(१) **भाग जाने के लक्षण दीख पड़ना।** (२) **बुरे रास्ते पर जाने के रंग-ढंग दीख पड़ना।** (३) **अत समय आया जान पड़ना।** पख लगना—**बहुत वेगवान होना।**

पंखड़ी—संज्ञा स्त्री. [स. पद्म] **फूल का दल।**

पंखा—सज्ञा पुं [हि. पंख] **बेना, बिजना।**

पँखिया—संज्ञा स्त्री. [हि. पंख] **फूल का दल, पंखुड़ी।**

पंखि, पंखी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी, पा. पक्खी, हिं. पंखी]

(१) **पक्षी, चिड़िया।** उ.—(क) हौ तौ मोहन के

बिरह जरी रे तू कन जारत रे पापी, तू पंखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधराति पुकारन—२८४६। (ख) पंखी पति सबही सकुचाने चातक अनँग भरयो—२८६५।

(२) **पतिंगा**। (३) **पंखुड़ी**

सज्ञा स्त्री. [हिं. पंखा] **छोटा पंखा**।

पंखुड़ा—सज्ञा पुं. [स. पक्ष] **कधे और बाँह का जोड़**।

पँखुड़ी, पंखुड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंख] **फूल का दल**।

पंग—वि. [सं पंगु] (१) **लँगड़ा**। उ.—(क) पछी एक सुहृद जानत हौ, करयौ निसाचर भग। तातै बिरमि रहे रघुनंदन, करि मनसा गति पग—६-८३। (ख) छोभित सिंधु, सेष सिर कपित पवन भयौ गति पग—६-१५८। (ग) सूर हरि की निरखि सोभा भई मनसा पंग- ६२७। (घ) भई गिरा-गति पंग—६४०। (२) **स्तब्ध, बेकाम**। उ०—नखसिख रूप देखि हरि जू के होत नयन-गति पंग—३०७६।

पंगत, पंगति—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ति] **श्रेणी, पाँती, पंक्ति, कतार**। उ.—(क) कनक मनि मेखला राजत, सुभग स्यामल अंग। मनौ हंस अकास-पंगति, नारि-बालक-संग—६३३। (ख) कोउ कहति अलि-बाल-पंगति जुरी एक सँजोग—६३६। (ग) मनौ इंद्रबधून पंगति सोभा लागति भारि—६२१। (घ) चपला चमचमाति आयुध बग-पंगति ध्वजा अकार—२८२६। (२) (२) **साथ भोजन करनेवालों की पंक्ति**। (३) **भोज**। (४) **सभा, समाज**।

पंगल, पँगला—वि. [हि. पग] **लूला-लँगड़ा**।

पंगा—वि. [हिं. पग] (१) **लंगड़ा**। (२) **बेकाम**।

पंगु, पंगुल— वि. [स.] **जो पैर से चल न सकता हो, लँगड़ा**। उ.—जाकी कृपा पगु गिरि लघै—१-१।

संज्ञा पुं. [सं] **शनिदेव**।

पंच—वि. [सं.] **पाँच, चार और एक**।

संज्ञा पुं—(१) **पाँच या अधिक व्यक्तियों का समाज, जनता**।

मुहा.-पंच की भीख—**सर्वसाधारण का आशीर्वाद, जनता की कृपा**। उ.—(क) मै-मेरी कबहूँ नहिं कीजै, कीजै पच-सुहातौ—१-३०२। (ख) राज करै वे धेनु तुम्हारी, नंदहिं कहति सुनाई। पंच की भीख सूर बलि मोहन कहति जसोदा माई—४५५। पंच की दुहाई—**समाज से धर्म या न्याय करने की पुकार**। पंच-परमेश्वर—**समाज का मत ईश्वर का वाक्य है**।

(२) **किसी बात का न्याय करने के लिए चुने गये पाँच या अधिक आदमी**।

पंचक—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाँच का समूह**। (२) **पाँच नक्षत्र जिनमें नये कार्य का करना मना है**।

पंचकन्या—सज्ञा स्त्री. [स.] **पाँच नारियाँ जो विवाहादि होने पर भी कन्यावत् मान्य है—अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मदोदरी**।

पंचकवल—सज्ञा पुं. [स.] **पाँच ग्रास जो भोजन के पूर्व निकाल दिये जाते है**।

पंचकाम—संज्ञा पुं. [स] **कामदेव के पाँच रूप—काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु**।

पंचकोण—वि. [स.] **जिसमें पाँच कोने हों, पँचकोना**।

पंचकोस, पंचकोश—सज्ञा पुं. [सं.] **काशी जो पाँच कोस लबी-चौड़ी भूमि में बसी है**।

पंचकोसी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पंचकोस] **काशी की परिक्रमा**।

पंचगव्य—संज्ञा पुं. [स.] **गाय से प्राप्त पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर, और गोमूत्र**।

पंचगीत—सज्ञा पुं. [सं.] **श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के पाँच प्रकरण - वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषी गीत**।

पंचजन—संज्ञा पुं. [स] **एक असुर जो श्रीकृष्ण के गुरु सदीपन का पुत्र चुरा ले गया था। श्रीकृष्ण ने इसे मारा था और इसी की हड्डियों से उनका 'पांचजन्य' शंख बना था**।

पंचतत्व—सज्ञा पुं [सं.] (१) **पाँच तत्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश**। (२) **मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन (वाम मार्ग)**।

पंचतपा वि. [सं. पचतपस्] **पचाग्नि तापनेवाला**।

पंचतरु—सज्ञा पु. [स.] **मदार, परिजात, सतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन**।

पंचता—सज्ञा स्त्री. [सं] **मृत्यु**।

पँचतोलिया—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच+तोला] **एक तरह का बहुत महीन या झीना कपड़ा ।**

पंचत्व—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पाँच का भाव ।** (२) **मृत्यु ।**
मुहा.—पंचत्व (को) प्राप्त होना—**मृत्यु होना ।**

पंचदश—वि. [सं.] **दस और पाँच, पन्द्रह ।**

पंचदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **पाँच प्रधान देवता—आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी ।**

पंचन—संज्ञा पुं. बहु [स पंच+हि. न, नि] **पंचों में ।**
उ.—साँची की झूठी करि डारैं, पंचन मै मर्यादा जाइ —१३१६ ।

पंचनद—संज्ञा पु [सं.] (१) **पंजाब की पाँच प्रधान नदियाँ—सतजल, व्यास, रावी, चनाब और झेलम ।** (२) **उक्त नदियों का प्रदेश ।** (३) **काशी का 'पंच गगा' नामक तीर्थ ।**

पंचनाथ—संज्ञा पु. [स.] **बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रगनाथ और श्रीनाथ ।**

पंचनामा—संज्ञा पुं. [हि. पंच+नाम] **पंचों का निर्णय ।**

पंचपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पूजा का एक पात्र ।**

पंचप्राण—संज्ञा पुं. [स.] **पाँच प्राण या वायु—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान ।**

पंचबटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंचवटी] **दंडकारण्य का वह स्थान जहाँ सीता-हरण हुआ था ।**

पंचबाण, पंचबान—संज्ञा पुं. [स. पंचबाण] **कामदेव के पाँच बाण ।**

पंचभूत—संज्ञा पुं. [सं.] **आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी—ये पाँच प्रधान तत्व जिनसे सृष्टि की उत्पत्ति हुई है ।**

पंचम—वि. [सं.] (१) **पाँचवाँ ।** (२) **सुंदर ।** (३) **निपुण ।**
संज्ञा पुं. (१) **सगीत के सात स्वरों में पाँचवाँ ।** (२) **एक राग ।**

पंच मकार—संज्ञा पुं. [सं.] **मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन (वाम-मार्ग) ।**

पंचमी—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) **किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि ।** (२) **एक रागिनी ।** (३) **अपादान कारक ।**

पंचमुख—संज्ञा पुं. [स.] (१) **शिव ।** (२) **सिंह ।**

पंचमुखी—वि. [सं. पचमुखिन्] **पाँच मुखवाला ।**

पँचमेल—वि. [हिं. पाँच+मेल] (१) **पाँच या अधिक तरह की ।** (२) **मिली-जुली ।** (३) **साधारण ।**

पँचरंग, पंचरंगा-वि. [हिं. पाँच+रंग] (१) **पाँच रंग का ।**
उ.-(क) पँचरग सारी मँगाइ, बधू जननि पैहराइ—१०-६५ । (ख) पगनि जेहरि लाल लहँगा अंग पँचरग सारि—पृ. ३४४ (२६) । (२) **रंग-बिरंगा ।**

पंच रत्न—संज्ञा पुं [सं.] **पाँच रत्न—सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती ।**

पंचलड़ा—वि. [हि. पाँच+लड़] **पाँच लड़ों का ।**

पँचलड़ी, पंचलरी—संज्ञा स्त्री. [हि. पाँच+लड़ी] **पाँच लड़ों की माला ।**

पंचवटी—संज्ञा पुं. [सं.] **दडकारण्य का वह स्थान जहाँ श्रीराम वनवास-काल में रहे थे और जहाँ से सीता-हरण हुआ था ।**

पंचबाण—संज्ञा पु [स.] (१) **काम के पाँच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद ।** (२) **काम के पाँच पुष्पबाण—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल ।** (३) **कामदेव ।**

पंचशब्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मगलोत्सव में बजनेवाले पाँच बाजे—तत्री, ताल, झाँझ नगारा और तुरही ।** (२) **पाँच प्रकार की ध्वनि—वेदध्वनि, बंदीध्वनि, जयध्वनि, शखध्वनि और निशानध्वनि ।**

पंचशर—संज्ञा पुं. [स.] **कामदेव ।**

पंचांग—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पाँच अंग ।** (२) **तिथिपत्र ।**

पंचाक्षर—वि. [स] **जिसमें पाँच अक्षर हों ।**
संज्ञा पुं.— **एक शिव-मत्र—ॐ नमः शिवाय ।**

पंचाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक तप जिसमें चारों ओर आग जलाकर धूप में बैठा जाता है ।**

पंचानन—वि. [सं.] **जिसके पाँच मुख हों ।**
संज्ञा पुं.—(१) **शिव जी ।** (२) **सिंह ।**

पंचामृत—संज्ञा पुं. [सं.] **दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर बनाया गया पेय जिससे देवता को स्नान कराया जाता है ।**

पंचायत—संज्ञा स्त्री. [स. पंचायतन] (१) **पंचों की सभा ।** (२) **पचों का वाद-विवाद ।** (३) **लोगों की बकवास ।**

पंचायतन—संज्ञा पुं. [सं.] **पाँच देव-मूर्तियों का समूह ।**

पंचायती—वि. [हिं. पंचायत] (१) **पंचायत का, पंचायत संबंधी (२) साझे का। (३) सब लोगों का।**

पंचाल—संज्ञा पुं. [सं.] **एक प्राचीन देश, द्रौपदी यहीं के राजा की पुत्री थी।**

पंचाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पांचाली, द्रौपदी।**

पंचाशिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पचास छंदवाला ग्रंथ।**

पंचौवर—वि. [हिं. पाँच + स आवर्त] **पाँच तहवाला।**

पंछाला—संज्ञा पुं. [हिं. पानी + छाला] (१) **छाला, फफोला। (२) छाले या फफोले का पानी।**

पंछी—संज्ञा पुं. [स पक्षी] **पक्षी, चिड़िया, खग।** उ.—जा दिन मन-पंछी उडि जैहै। ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहै—१-८६।

पंज—वि. [हिं. पाँच] **पाँच।**

पंछिनिपति—संज्ञा पुं. [स. पक्षीपति] **पक्षियों का राजा, गरुड़।** उ.—सोई हरि काँधे कामरि, काछ किए नाँगे पाइनि गाइनि टहल करै। त्रिभुवनपति दिसिपति नर-नारी-पति पछिनिपति, रबि ससि जाहि डरै—४५३।

पंजर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शरीर की हड्डियों का ढाँचा, ठठरी, कंकाल।** (२) **शरीर।** (३) **पिंजड़ा।** (४) **घेरा।** उ.—जब सुत भयो कहेउ ब्राह्मन ते अर्जुन गये गृह ताइ। सर-रोप्यो चहुँ दिसि ते जहाँ पवन नहिं जाइ—सारा. ८५१।

पँजरना—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **जलना-बलना।**

पँजरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंजर] **अर्थी, टिकठी।**

पंजा—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **पाँच का समूह।** (२) **हाथ की पाँचों उँगलियों का समूह।**

मुहा—पंजा फैलाना (बढाना)—**लेने का डौल लगाना।** पंजा मारना—**झपट्टा मारना।** पंजे झाड़कर चिपटना या पीछे पड़ना—**जी-जान से जुट जाना।**

(३) **हथेली का संपुट, चंगुल।** (४) **जूते का अगला भाग।** (५) **जुए का एक दाँव।**

मुहा.—छक्का-पंजा—**दाँव-पेच, चालाकी।**

पँजीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँच + जीरा] **भुने आटे की मिठाई जो प्रसाद-रूप में बाँटी जाती है।**

पंडर, पंडल—वि. [सं. पाडुर] **पीला, पांडु वर्ण का।** संज्ञा पं. [सं. पिंड] **पिंड, शरीर।**

पंडा—संज्ञा पुं. [सं. पंडित] (१) **तीर्थ या मंदिर का पुजारी।** (२) **घाटिया।** (३) **रोटी बनानेवाला।**

पंडाल—संज्ञा पुं. [?] **सभा-मंडप।**

पंडित—वि [सं.] (१) **विद्वान।** (२) **कुशल, चतुर।**

पंडिता—वि. स्त्री. [सं.] **विदुषी।**

पंडिताइन—संज्ञा स्त्री. [सं पडित] **पंडितानी।**

पंडिताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पडित + आई] (१) **विद्वता, पांडित्य।** (२) **चालाकी, कुशलता (व्यंग्य)।**

पंडिताऊ वि. [हि पडित] **पंडितो के ढंग का।**

पंडितानी—संज्ञा स्त्री. [हिं पडित] **पंडित की स्त्री।**

पंडु—वि. [स] (१) **पीला।** (२) **सफेद।**

पंडुक—संज्ञा. स्त्री. [सं. पाडु] **पिड़की, फाख्ता।**

पंडौ—संज्ञा पुं. [सं. पाडव] **पाँचों पांडव।**

पंथ—संज्ञा पुं [स. पथ] (१) **मार्ग, रास्ता, राह।** उ—(क) मोंकौं पंथ बतायौ सोई नरक कि सरग लहौं—१-१५१। (ख) चलत पंथ कोउ था क्यो होई—३-१३। (२) **आचार-व्यवहार की रीति।** उ.—नहिं रुचि पथ पयादि डरनि छकि पंच एकादस ठानै—१-६०।

मुहा—.पंथ गहना—(१) **चलने के लिए राह पर होना।** (२) **विशेष प्रकार का आचरण करना।** पंथ गहौ—**चलो, जाओ।** उ.—बिछुरत प्रान पयान करेंगे, रहौ आजु पुनि पंथ गहौ—६-३३। पंथ दिखाना—(१) **मार्ग बताना।** (२) **धर्माचरण की रीति बताना या तत्संबंधी उपदेश देना।** पंथ देखना (निहारना)—**बाट जोहना, प्रतीक्षा करना।** पंथ निहारौ—**प्रतीक्षा करता हूँ, बाट जोहती हूँ।** उ.—(क) तुमरो पथ निहारौ स्वामी। कबहिं मिलौगे अंतर्यामी। (ख) मै बैठी तुम पंथ निहारौं। आवौ तुम पै तन मन वारौं। पथ में (पर) पाँव देना—(१) **चलना।** (२) **विशेष आचरण करना।** पंथ परं लगना—**रास्ते पर होना, चाल चलना।** किसी के पंथ लगना—(१) **किसी का अनुयायी होना।** (२) **किसी को तंग करना।** पंथ पर लाना (लगाना)—(१) **ठीक मार्ग पर लाना।** (२) **अच्छी चाल सिखाना।** (३) **अनुयायी बनाना।** पंथ सेना—

बाट जोहना, आसरा देखना। एक पंथ द्वै काज—**एक कार्य करके अथवा एक रीति-नीति का निर्वाह करने से दोहरा लाभ होना**। उ.—ज्ञान बुझाइ खबरि दै आवहु एक पथ द्वै काजु—२६२५।

(३) **धर्म-मार्ग, संप्रदाय**।

मुहा.—पथ लेना—**अनुयायी बनना**। पंथ पर लाना (लगाना,—**अनुयायी बनाना**।

संज्ञा पुं. [स. पथ्य] **रोगी का हल्का भोजन**।

पंथकि, पंथकी, पंथि,पंथिक, पंथी—संज्ञा पुं. [सं. पथिक] **राही, पथिक**। उ.—बीर बटाऊ पथी हो तुम कौन देश तें आए—२६८३।

पंथान, पंथाना—संज्ञा पुं. [स. पथ] **मार्ग**।

पंथी—संज्ञा पुं. [सं. पंथिन्] **किसी मत का अनुयायी**।

पंद—सज्ञा स्त्री. [फा] **सीख, उपदेश**

पंधलाना—क्रि. स [देश.] **बहलाना, फुसलाना**।

पंपा—सज्ञा स्त्री. [सं.] **दक्षिण की एक नदी और उसका निकटवर्ती ताल**।

पंपासर—संज्ञा पुं. [सं.] **दक्षिण की पंपानदी का निकटवर्ती ताल**।

पँबर—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] **खड़ाऊँ, पाँवरी**।

पँवरना—क्रि. अ. [स. प्लव] (१) **तैरना, पैरना** (२) **थाह लेना**।

पँवरि—सज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **प्रवेशद्वार, ड्योढ़ी**। उ.—आतुर जाइ पँवरि भयो ठाढो—२४६५।

पँवरिआ, पँवरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरी] **द्वारपाल, दरबान**। उ.—(क) आतुर जाइ पँवरि भयौ ठाढो कहो पँवरिआ जाइ—२४६५। (ख) सकल खग गन पैक पायक पँवरिया प्रतिहार—२७५५।(२) **याचक**।

पँवरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] **खड़ाऊँ, पाँवरी**।

पँवाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर] **खूबबढ़ा-चढ़ाकर कही हुई कहानी। या बात**।

पँवारना—क्रि. स. [सं. पवारण] **हटाना, फेंकना**।

पँवारे—क्रि. स. [हि. पँवारना] **हटाये, दूर किये**। उ.—(क) बिंब पँवारे लाजही दामिनि द्युति थोरी-१८२१। (ख) बिंब पँवारे लाजहीं हरषत बरसत फूल—२०६५।

पंसारी—संज्ञा पुं. [सं. पण्यशाली] **मसाला बेचनेवाला**।

पंसासार—संज्ञा पुं [स. पाशक+सारि] **पासे का खेल**।

पइअत—क्रि. स. [हि पाना] **पाता है**। उ.—जाको कहूँ थाह नहि पइअत अगम अपार अगाधै—३२८४।

पइग—संज्ञा पुं. [हि. पग] **डग, कदम**।

पइज—संज्ञा स्त्री. [हि. पैज] (१) **प्रतिज्ञा** (२) **हठ**।

पइठ—संज्ञा स्त्री. [हि. पैठ] (१) **प्रवेश**। (२) **गति, पहुँच**।

पइठना—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **प्रवेश करना, घुसना**।

पइयै—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाइए, प्राप्त कीजिए**। उ.—ऊधौ, चलौ बिदुर कैं जइयै। दुरजोधन कैं कौन काज जहँ आदर-भाव न पइयैं—१-२३६।

पइसना—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **प्रवेश करना, घुसना**।

पइसार—संज्ञा पुं. [हि. पइसना] **प्रवेश, पैठ**।

पईठि—क्रि. अ. [हि. पैठना] **पैठकर**। उ.—हारेहू नहिं हरत अमित बल बदन पयोठि पईठि—पृ. ३३४ (३६)।

पउँरि, पउँरी—संज्ञा स्त्री [हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार**।

पकड़—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रकृष्ट, प्रा. पक्कड] (१) **धरने, पकड़ने या ग्रहण करने का काम**। (२) **पकड़ने का ढंग**। (३) **हाथापाई**। (४) **दोष, भूल आदि निकालने की क्रिया**।

पकड़ना—क्रि. स. [हिं पकड़] (१) **किसी चीज को धरना, थामना या ग्रहण करना**। (२) **बंदी बनाना**। (३) **कुछ करने न देना**। (४) **पता लगाना**। (५) **टोंकना, रोकना**। (६) **आगे बढ़े हुए के बराबर हो जाना**। (७) **लगकर फैलना**। (८) **धारण करना**। (९) **घेरना, छोपना, ग्रसना**।

पकड़वाना—क्रि. स. [हिं. पकडना] **ग्रहण कराना**।

पकड़ाना—क्रि. स. [हिं पकड़ना] **थमाना, ग्रहण कराना**।

पकना—क्रि. अ. [स. पक्व, हि. पक्का+ना] (१) **कच्चा न रह जाना**। (२) **आँच से सीझना या चरना**। (३) **फोड़े-फुंसी का मवाद से भरना**। (४)**चौसर की गोटी का सब घर पार कर लेना**। (५) **सौदा पटना**।

पकरन—क्रि. स. [हिं पकड़ना] **पकड़ना, थामना, रोकना, छूना**। उ.—कबहूँ निरखि हरि आपु छाहँ कौं, कर सौ पकरन चाहत—१०-११०।

पकरना—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ना।**

पकराए—क्रि. स. [हिं. पकड़ाना] **पकड़ने को प्रेरित किया, पकड़ाया।** उ.—मोहन प्यारी सैन दे हलधर पकराए —२४४६।

पकरावै—क्रि. स. [हिं पकड़वाना (प्रे.)] **पकड़वाता है, (दूसरे से) बंदी बनवाता है।** उ.—द्रुपद-सुताहिं दुष्ट दुरजोधन सभा माहिं पकरावै—१-१२२।

पकरि—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़कर, थामकर, हाथ में लेकर।** उ.—मिथ्याबाद आप-जस सुनि-सुनि, मूछहिं पकरि अकरतौ—१-८०३।

पकरिबे—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ने (के लिए) गहने या ग्रहण करने (के उद्देश्य से)।** उ.—मुख प्रतिबिंब पकरिबे कारन हुलसि घुटुरुवनि धावत—१०-१०२।

पकरिबै—क्रि. स [हिं. पकड़ना] **पकड़ने को।** उ.—मनिमय कनक नंद कै आँगन बिब पकरिबै धावत—१०-११०।

पकरिया—संज्ञा स्त्री. [हि. पाकर] **'पाकर' नामक वृक्ष।**

पकरी—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पकड़ना] (१) **धारण की, अपनायी, पकड़ी।** उ.—अधम समूह-उधारन-कारन तुम जिय जक पकरी—१-१३०। (२) **इस तरह पकड़ी कि छूट न सके।** उ.—(क) दुस्सासन अति दारुन रिस करि, केसनि करि पकरी—१-२५४। (ख) मन-क्रम बचन नंदनदन उर यह दृढ करि पकरी—३३६०।

पकरै—क्रि. स. [हिं पकड़ना] **पकड़ता है, (हाथ में) लेता है, ग्रहण करता है।** उ.—जद्यपि मलय-बृच्छ जड़ काटै, कर कुठार पकरै। तऊ सुभाव न सीतल छाँड़ै, रिपु-तन-ताप हरै—१-११७।

पकरैगौ—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ेगा, थामेगा, गहेगा।** उ.—जो हरि-ब्रत निज उर न धरैगौ। तो को अस माता जु अपुन करि करे कुठाँव पकरैगौ—१-७५।

पकरयौ—क्रि. स. [हिं. पकड़ना] **पकड़ लिया, अधिकार में किया, बंदी बनाया।** उ.—रिस भरि गए परम किंकर तब, पकरयौ छूटि न सकौं—१-१५१।

पकवान—संज्ञा पुं [स. पक्कान्न] **घी मे तलकर बनाये गये खाद्य पदार्थ जो कई दिन तक खाये जा सकते है।**

पकवाना—क्रि. स. [हिं. पकाना] **पकानें का काम कराना, पकाने को प्रवृत्त करना।**

पकवान्ह—संज्ञा पुं. [हि. पकवान] **पकवान।** उ.—अन्न-कूट बिधि करत लोग सब नेम सहित करि पकवान्ह—९१०।

पकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं पकाना] **पकाने की क्रिया, भाव या वेतन।**

पकाए—क्रि. स. [हिं. पकाना] **आँच से तपा कर पका दिये।** उ.—बिधि-कुलाल कीने काचे घट ते तुम आनि पकाए—३१६१

पकाना—क्रि. स. [हिं. पकाना] (१) **कच्चे फल आदि को पुष्ट या तैयार करना।** (२) **आँच या गरमी से सिझाना या पक्का करना।**

मुहा.—कलेजा पकाना—**जी जलाना।**

(३) **फोड़े-फुंसी आदि को तैयार करना।** (४) **सौदा कराना।**

पकाव—संज्ञा पुं. [हिं. पकना] **पकने का भाव।**

पकौड़ा, पकौरा, पक्कौड़ा,—संज्ञा पुं [हिं. पकौड़ा=पका+बरी, बड़ी] **घी या तेल में तली बेसन या पीठी की बड़ी।** उ.—मूँग पकौरा पनौ पतबरा। इक कोरे इक भिजे गुरबरा—३९६।

पकौड़ी, पकौरी, पक्कौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पकौड़ा] **छोटा पकौड़ा।** उ.—दधि, दूध, बरा, दहिरौरी। सो खात अमृत पक्कौरी—१०-१८३।

पक्का—वि. [स. पक्व] (१) **पका हुआ।** (२) **पूरा, पूर्णता को प्राप्त।** (३) **पुष्ट, प्रौढ़।** (४) **साफ और ठीक।** (५) **कड़ा और मजबूत।** (६) **मँजा हुआ, अभ्यस्त।** (७) **अनुभव प्राप्त, दक्ष।** (८) **आँच पर पका हुआ।** (९) **टिकाऊ, दृढ़।** (१०) **निश्चित, अटल।** (११) **प्रमाणों से पुष्ट।** (१२) **टकसाली, प्रामाणिक मानवाला।**

पक्खर—वि. [सं. पक्क] **पक्का, पुख्ता।**

पक्व—वि. [सं.] **पका हुआ, पक्का।**

पक्वान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **पकवान।**

पक्ष—संज्ञा पु. [सं.] (१) **ओर, तरफ।** (२) **भिन्न अंग, पहलू।** (३) **भिन्न मत या विचार।** (४) **अनकूल**

प्रवृत्ति या स्थिति । (५) लगाव, संबंध । (६) सेना, फौज । (७) साथ का समूह । (८) सहायक, साथी (९) विवादियों का समूह । (१०) पक्षी का पंख । (११) तीर में लगा पंख । (१२) चाँद मास के दो अर्द्ध विभाग । (१३) घर, गृह ।

पच्छपात—संज्ञा पुं. [सं.] **तरफदारी ।**

पच्छपाती—संज्ञा पुं. [स.] **तरफदार ।**

पच्छिराज—संज्ञा पुं. [सं.] **गरुड़ ।**

पच्छी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिड़िया । (२) तरफदार ।**

पच्छम—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष्मन्] **बरौनी ।**

पखंड—संज्ञा पुं. [सं. पाखंड] **आडंबर, ढकोसला ।**

पखंडी—वि. [हिं. पखंड] **आडंबर रचनेवाला ।**

पख—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ष, प्रा. पक्खु] (१) **व्यर्थ की बढ़ाई हुई बात । (२) बाधक शर्त या नियम । (३) झगड़ा-बखेड़ा । (४) दोष, त्रुटि ।**

पखड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पद्म] **फूलों की पंखुड़ी ।**

पखराइ—क्रि. स. [हिं पखराना] **धुलवाकर** । उ.—चरन पखराइ कै सुभग आसन दियौ—२४९३ ।

पखराना—क्रि. स. [हिं. पखारना] **धुलवाना ।**

पखरायौ—क्रि. स. [हिं. पखराना] **धुलवाया** । उ०—उत्तम बिधि सौं मुख पखरायौ—६०९ ।

पखरी—संज्ञा स्त्री. [हिं पंखुड़ी] **फूलों की पंखुड़ी ।**

पखवाड़ा, पखवारा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष+वार, हिं. पखवारा] (१) **चाँद-मास के दो विभागों में एक । (२) पंद्रह दिन का समय ।**

पखा—संज्ञा पुं. [हिं. पंखा] **पक्ष, पंख पर ।**

पखाउज—संज्ञा पुं. हिं. पखावज] **पखावज नामक बाजा ।** उ.—बीना झाँझ-पखाउज-आउज और राजसी भोग —९-७५ ।

पखान—संज्ञा पुं. [स. पाषाण] **पत्थर ।**

पखना, पखानो—संज्ञा पुं. [सं. उपाख्यान] **कहावत, कहनावत** । उ.—बालापन तें निकट रहत ही सुन्यौ न एक पखानो—३३६३ ।

पखारत—क्रि. स. [हि. पखारना] **धोते हैं, (जल से) स्वच्छ करते हैं** । उ.—अपनौ मुख मसि-मलिन मंद मति, देखत दर्पन माहीं । ता कालिमा मेटिबे कारन, पचत पखारत छाहीं—२-२५ ।

पखारना—क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पक्खाड़न] **धोना ।**

पखारि—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोकर ।** उ.—चरन पखारि लियो चरनोदक धनि-धान कहि दैत्यारी —२५८७ ।

पखारी—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोयी ।** उ.—(क) अरु अँचयो जल बदन पखारी—१०-२४१ । (ख) नई दोहनी पोंछि-पखारी—११७९ ।

पखारे—क्रि. स. [हिं. पखारना] **जल से धोये ।** उ.—स्यामहिं ल्याई महरि जसोदा तुरतहिं पाइँ पखारे—१०-२३७ ।

पखावज—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्ष+वाद्य] **एक बाजा ।**

पखावजी—संज्ञा पुं. [हिं. पखावज] **पखावज बजानेवाला ।**

पखिया—वि. [हिं. पख] **झगड़ालू, बखेड़िया ।**

पखी, पखीरी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी] **पक्षी** । उ.—की सुक सीपज की बग पगति की मयूर की पीड पखीरी —१६२७ ।

पखुड़ी, पखुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पखड़ी] **फूल की पंखुड़ी ।**

पखेरुआ, पकेरुवा, पखेरू—संज्ञा पुं. [सं. पक्षालु, प्रा० पक्खाडु, हिं. पखेरू] **पक्षी, चिड़िया** । उ.—ससा सियार अरु बन के पखेरू धृग धृग सबन करी —२७४१ ।

पखौआ, पखौवा, पखौटा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख ।** उ.—(क) मुख मुरली सिर मोर पखौआ बन-बन धेनु चराई—२६८४ । (ख) मुख मुरली सिर मोर पखौआ गर घुँघुचीन को हार—१० उ०-११९ ।

पखौड़ा, पखौरा—संज्ञा पुं [सं. पक्ष] **कंधे की हड्डी ।**

पग—संज्ञा पुं. [सं. पदक, प्रा. पअक, पक] **पैर, पाँव, डग ।**

मुहा—पग धारे—**आये** । उ. (क) गरुड़ छाँड़ि प्रभु पाँय पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५ । (ख) ध्रुव निज पुर को पुनि पग धारे—४-९ । (ग) सूर तुरत मधुवन पग धारे धरनी के हितकारी—२५३३ । पग पग पर—**जरा-जरा सी दूर पर, हर स्थान पर, जहाँ जाय वहीं** । उ.—दीन जन क्यौं करि आवै सरनु ?······ । पग पग परत कर्म-तम-कूपहिं, को करि कृपा बचावै—१-४८ । फूँकि पग धारौ—**बहुत समझ-**

बूझकर और सतर्कता से आओ। उ.—फूँकि फूँकि धरनी पग धारौ अब लागीं तुम करन अयोग—१४६७।

पगडंडी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग+डंडी] **मैदान में लोगों के चलने से बन जानेवाला पतला मार्ग।**

पगडोरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग+डोरी] **पैर का बंधन।** उ.—जनु उड़ि चले बिहंगम को गन कटी कठिन पग डोरी—१० उ०-५२।

पगड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पटक, हि. पाग+ड़ी] **सिर में बाँधने की पाग, साफा।**

मुहा.—पगड़ी अटकना—**मुकाबला होना।** पगड़ी उछलना—**दुर्गति होना।** पगड़ी उछालना—(१) **दुर्गति बनाना।** (२) **हँसी उड़ाना।** पगड़ी उतरना—**अपमान होना।** पगड़ी उतारना—**अपमान करना।** पगड़ी बँधना—(१) **उत्तराधिकार मिलना।** (२) **अधिकार मिलना।** (३) **आदर मिलना।** पगड़ी बदलना—**मित्रता या नाता करना।** (किसी की) पगड़ी रखना—**इज्जत बचाना।** (किसी के आगे या सामने) पगड़ी रखना—**बहुत गिड़गिड़ाना।**

पगतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पग+तल] **जूता।**

पगदासी—संज्ञा स्त्री. [हि पग+दासी] **जूता, खड़ाऊँ।**

पगन—संज्ञा पुं. बहु. [हि. पग] **पैर।** उ.—नगन पगन ता पाछै गयौ—६-२।

पगना—क्रि. अ. [सं. पाक] (१) **रस या चासनी लिपटना या सनना।** (२) **किसी के प्रेम में डूबना।**

पगनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं.पग] **जूती।**

पगरा—संज्ञा पुं. [हि. पग+रा] **डग, कदम।**

संज्ञा पु [फा पगाह=सबेरा] **प्रभात, सबेरा।**

पगरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पगड़ी] **पाग, पगड़ी।**

पगरो—संज्ञा पुं. [हि. पगरा], **पग, डग, कदम।** उ.—सूर सनेह ग्वारि मन अटक्यौ छाँड़हु दिए परत नहि पगरो—१०३१।

पगला—वि पुं. [हि. पागल] **पागल।**

पगहा—संज्ञा पुं. [स. प्रग्रह, पा. पग्गह] **पघा, गिराँव।**

पगा—संज्ञा पुं. [हिं पाग] **पटका, दुपट्टा।** उ—झँगा, पगा अरु पाग पिछौरी दाढिन को पहिराए।

संज्ञा पुं. [सं. प्रग्रह, हि पघा] (१) **चौपायों के बाँधने का रस्सा, मोटी रस्सी** (२)। **अधीनता-सूचक बंधन।** उ.—तृन दसननि लै मिलु दसकंधर कंठहि मेलि पगा—६-११४।

संज्ञा पुं. [हिं. पगरा] **डग, कदम।**

पगाना—क्रि. स. [सं. पक्व या हिं. पाक] (१) **पागने का काम कराना।** (२) **प्रेम में मग्न कराना।**

पगार, पगारु—संज्ञा पुं [सं. प्रकार] **गढ़, प्रासाद आदि के रक्षार्थ बनी चहारदीवारी।**

संज्ञा पुं [हि. पग+गारना] (१) **वस्तु जो पैरों से कुचली जाय।** (२) **पैरों से कुचली मिट्टी या गारा** (३) **वह पानी या छिछली नदी जिसे पैदल ही चलकर पार किया जा सके।**

पगाह—संज्ञा स्त्री. [फा.] **प्रभात, तड़का।**

पगि—क्रि. अ. [हिं. पगना] (१) **अनुरक्त हुआ, प्रेम में डूबा, मग्न हुआ।** उ.—बिषय-भोग ही मैं पगि रह्यौ। जान्यौ मोहिं और कहुँ गयौ—४-१२। (२) **लीन हुए।** उ.—इही सोच सब पगि रहे, कहूँ नही निरबार—५८६।

पगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पगड़ी] **पगड़ी।** उ.—(क) एते पर अँखियाँ रससानी अरु पगिया लपटानी—१६६७। (ख) सिर पगिया बीरा मुख सोहै सरस रसीले बोल—२४१४।

पगु—संज्ञा पुं. [हिं. पग] **डग, कदम।**

पगुराना—क्रि. अ. [हि पागुर] **पागुर करना।**

पगे—क्रि. अ. [हिं. पगना] **अनुरक्त हुए।** उ—अंग अंग अवलोकन कीन्हों कौन अग पर रहे पगे—१३१८।

पघा—संज्ञा पुं. [सं. प्रग्रह] **पशु बाँधने की रस्सी।**

पघिलना—क्रि. अ. [हिं पिघलना] **पिघलना।**

पघिलाना—क्रि. स. [हि पिघलना] **पिघलाना।**

पघिलि—क्रि. अ. [हिं पिघलना] **पिघलकर।** उ.—धोए छूटत नही यह कैसेहु मिलै पघिलि ह्वै मैन—पृ. ३२३ (११)।

पचएँ—वि. [हि. पाँचवाँ] **पाँचवें, पाँचवें स्थान पर।** उ.—पचएँ बुध कन्या कौ जौ है, पुत्रनि बहुत बढ़ै हैं—१०-८६।

पचगुना—वि. [स. पंचगुण] **पाँच बार अधिक।**

पचड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. प्रपंच+ड़ा] (१) **झंझट, बखेड़ा, प्रपंच**। (२) **एक तरह का गीत**।

पचत—क्रि. अ. [हि. पचना] **दुखी होता है, हैरान होता है**। उ.—अपनौ मुख मसि-मलिन मंदमति, देखत दर्पन माही। ता कालिमा मेटिबे कारन, पचत पखारत छाहीं—२-२५।

पचतूरा—संज्ञा पुं. [देश.] **एक तरह का बाजा**।

पचतोलिया—वि. [हिं. पाँच+तोला] **पाँच तोले का**।

पचन—संज्ञा पुं [सं.] (१) **पकने या पकाने की क्रिया या भाव**। (२) **अग्नि**।

पचना—क्रि. अ. [सं. पचन] (१) **हजम होना**। (२) **नष्ट होना**। (३) **हैरान होना**। (४) **लीन होना**।

पचपचाना—क्रि. अ. [अनु. पच] **पचपच करना**।

पचमेल—वि. [हिं. पाँच+मेल] **कई तरह के मेल का**।

पचरंग—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच+रंग] **चौक पूरने की सामग्री – अबीर, हल्दी, बुक्का आदि**।

पचरंग, पचरंगा—वि. [हिं. पाँच+रंग] (१) **कई रंगों का**। (२) **कई रंग के सूतों का**। (३) **कई रंगों से रँगा हुआ**।

पचलड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँच+लड़ी] **पाँच लड़ियों की माला**।

पचहरा—वि. [हिं. पाँच+हरा] (१) **पंचगुना**। (२) **पाँच तह का**।

पचाना—क्रि. स. [हिं पचना] (१) **आँच पर गलाना**। (२) **हजम करना**। (३) **नष्ट करना**। (४) **अवैध उपाय से ली वस्तु काम में लाना**। (५) **एक चीज को दूसरी में खपाना**।

पचारना—क्रि. स. [स. प्रचारण] **ललकारना**।

पचास—वि. [सं. पचाशत, प्रा. पंचासा] **चालीस और दस**। उ.—सहज पचास पुत्र उपजाएँ—६-८।

पचासक—वि [हिं. पचास+एक] **लगभग पचास, पचासों**। उ.—कोई कहे बात बनाई पचासक, उनकी बात जु एक – ३४६४।

पचासा—संज्ञा पुं. [हिं. पचास] **पचास का समूह**।

पचासों—वि. [हिं. पचास] (१) **कई पचास**। (२) **पचास से ज्यादा**।

पचि—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान होकर, दुख सहकर**।

मुहा.—रचि-पचि—**बड़ी कठिनाई से, हैरान होकर**। उ.—एक अधार साधु-संगति कौ, रचि पचि गति सचरी। याहू सौंज संचि नहिं राखी, अपनी धरनि धरी—१-१३०।

संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पाचन**। (२) **अग्नि**।

पचित—वि. [सं.] **जड़ा हुआ, पच्ची किया हुआ**। उ.—हीरा लाल प्रबाल पिरोजा पंगति बहु मणि पचित पचावनो—२२८०।

पचिबौ—संज्ञा स्त्री. [हि. पचना] **सूखना या क्षीण होना, दुखी होना, हैरान होना**। उ.—रे मन छाँड़ि विषय कौ रँचिबो। कत तू सुवा होत सेमर कौ, अंतहिं कपट न बचिबौ। अतर गहत कनक-कामिनि कौं, हाथ रहैगौ पचिबौ—१-५६।

पचिहौ—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान होगे, कष्ट सहोगे, परेशानी होगी**। उ.—मोकौं मुक्ति विचारत हौ प्रभु, पचिहौ पहर-घरी। स्रम तैं तुम्है पसीना ऐहै, कत यह टेक करी?—१-१३०।

पची—क्रि. अ. [हिं. पचना] **हैरान हो गयी, दुखी हुई**। उ.—बाँधि पची डोरी नहि पूरै। बार-बार खीझै, रिस झूरै—३९१।

संज्ञा स्त्री. [हि. पच्ची] **जड़ाव, जमावट, पच्ची**। उ.—(क) बिद्रुम फटिक पची परदा छबि लाल रंध्र की रेख—२५६१। (ख) बिद्रुम स्फटिक पची कचन खचि मनिमय मंदिर बने बनावत—१० उ-५।

पचीसी—संज्ञा स्त्री. [हि पचीस] (१) **पचीस का समूह**। (२) **चौसर का एक खेल**। (३) **चौसर की बिसात**।

पचौनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाचन] **पाचक, पाचन**।

पचौर, पचौली—संज्ञा पुं. [हिं पंच] **मुखिया, सरदार**।

पच्चड़, पच्चर—संज्ञा पुं. [हि. पच्ची] **काठ का पेबंद**।

मुहा—पच्चर अड़ाना—**बाधा डालना**। पच्चर ठोंकना—**खूब तंग करना**। पच्चर मारना—**बनती बात पर भाँजी मारना**।

पच्ची—संज्ञा स्त्री. [सं. पचित] (१) **ऐसी जड़ावट कि जड़ी गयी चीज तल से बिलकुल मिल जाय**। (२) **धातु के पदार्थ पर अन्य धातु के पत्तर की जड़ावट**।

मुहा.—पच्ची हो जाना—**लीन हो जाना ।**

पच्चीकारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पच्ची+फ़ा. कारी] **जड़ने या जमावट करने की क्रिया या भाव ।**

पच्छ—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] (१) **चिड़ियों या पक्षियों का डैना, पंख या पर ।** उ.—(क) अद्‌भुत राम-नाम के अंक।·····। मुनि-मन-हंस-पच्छ-जुग, जाकै बल उड़ि ऊरध जात—१-६० । (ख) मानौ पच्छ सुमेरहिं लागे उड्यौ अकासहिं जात—६-७४ । (२) **पक्ष, पखवारा ।** उ.—(क) आठै कृष्न पच्छ भादौ, महर के दधिकाँदौ —१०-३१ । (ख) कृष्न पच्छ रोहिनी अर्द्ध निसि हर्षन जोग उदार—१०-८६ ।

पच्छता, पच्छताई—संज्ञा स्त्री. [सं. पक्षपात] **तरफदारी ।**

पच्छि, पच्छी—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी] **चिड़िया, पक्षी ।** उ.—मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै । जैसै उड़ि जहाज कौ पच्छी फिरि जहाज पर आवै—१-१६८ ।

पच्छिराज—संज्ञा पुं. [सं. पक्षी+राजा] **गरुड़ ।**

पच्यौ—क्रि. अ. [हिं. पचना] **कष्ट सहा, हैरान हुआ ।** उ.—मोसौ पतित न और गुसाईं । अवगुन मोपैं अजहुँ न छूटत, बहुत पच्यौ अब ताईं—१-१४७ ।

मुहा.—मरत पच्यौ—**हैरान होता है, जी तोड़ मेहनत करता है ।** उ.—जौ रीझत नहिं नाथ गुसाईं तौ कत जात जँच्यौ । इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहैं मरत पच्यौ—१-१७४ ।

पछ—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पंख ।** उ.—सिखी वह नहिं, सिर मुकुट श्रीखड पछ तड़ित नहिं पीत पट छबि रसाला —१६३१ ।

पछटी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **तलवार ।**

पछड़ना—क्रि. अ. [हिं. पाछा] (१) **पछाड़ा जाना, हार जाना ।** (२) **पिछड़ जाना, पीछे रह जाना ।**

पछताती—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करती ।** उ.—जो तब साधि दीजतो कोऊ तो अब कत पछताती—३४१८ ।

पछताना—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करना ।**

पछतानि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पछताना] **पछतावा ।**

पछताव—संज्ञा पुं. [हिं. पछतावा] **पछतावा ।**

पछतावना—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछतावा करना ।**

पछतावा—संज्ञा पुं. [सं. पश्चाताप, पा. पच्छाताव] **कोई बुरा या अनुचित काम करने के बाद होनेवाला दुख, अनुताप ।**

पछमन, पछमनौ—क्रि. वि. [हि. पीछे] **पीछे की ओर ।** उ.—धरि न सकत पग पछमनौ, सर सनमुख उर लाग —१-३२५ ।

पछरिहौ—क्रि. स. [हिं. पछाड़ना] **पछाड़ दूँगा, हराऊँगा ।** उ.—केस गहे अरि कंस पछरिहौ—१०६१ ।

पछवाँ—वि [सं. पश्चिम] **पश्चिम का ।**

पछाँह—संज्ञा पुं. [सं पश्चिम] **पश्चिम का देश ।**

पछाड़, पछार—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाछा, पछाड़] **मूर्छित होकर गिरना ।**

मुहा.—परयौ खाइ पछार—**अचानक गिर पड़ना, बेसुध होकर खड़े से गिरना ।** उ.—(क) अर्जुन स्रवत नैंन जल धार । परयो धरनि पर खाइ पछार—१-२८६ । (ख) परति पछार खाइ छिन ही छिन अति आतुर ह्वै दीन—३४२१ ।

पछाड़ना, पछारना—क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाडन] **साफ करने के लिए कपड़े को पटकना ।**

क्रि. स. [हिं. पाछा] **कुश्ती में पछाड़ना ।**

पछारि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पछाड़] **मूर्छित होकर गिरना ।**

मुहा.—परी खाइ पछारि—**बेसुध होकर गिर पड़ना ।** उ.—दासी बालक मृतक निहारि । परी धरनि पर खाइ पछारि—६-५ ।

पछारी—क्रि. स. [हिं. पछाडना] (१) **पटक-पटक कर ।** उ.—सूरदास प्रभु सूर सुखदायक मारयौ नाग पछारी—२५६४ । (२) **मार दिया, बध किया ।** उ.—सूरस्याम पूतना पछारी, यह सुनि जिय डरप्यौ नृपराई—१०-५१ ।

वि. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाड़ना, हिं. पछोरना, पछोड़ना] **सूप आदि में रखकर और फटककर साफ की हुई, फटकी हुई ।** उ.—मूँग, मसूर, उरद, चनदारी । कनक-फटक धरि फटकि पछारी—३९६ ।

पछारै—क्रि. स. [हिं पछाड़ना] **मार दे, बध करे ।** उ.—खड्‌ग धरे आवै तुव देखत, अपनैं कर छिन माँह पछारै—१०-१० ।

पछारौ—क्रि. स. [हिं पछाड़ना] **मार डालूं**। उ.—(क) कहौ तौ सचिव-सबंधु सकल अरि एकहिं एक पछारौ—६-१०८। (ख) रंगभूमि मै कंस पछारौ, घीसि बहाऊं बैरी—१०-१७६।

पछार्यौ—क्रि. स. [हिं पछाडना] (१) **पटक दिया, गिराया**। उ.—हिरनाकुस प्रहलाद भक्त कौ बहुत सासना जार्यौ। रहि न सके, नरसिंह रूप धरि, गहि कर असुर पछार्यौ—१-१०६। (२) **मारा, वध किया**। उ.—(क) जोधा सुभट सँहारि मल्ल कुवलया पछार्यो—२६२५। (ख) भ्रुम अरु केसी इहाँ पछार्यौ—३४०६।

पछावर, पछावरि—संज्ञा स्त्री. [देश.] (१) **एक तरह का पकवान**। (२) **छाछ का बना एक पेय**।

पछाहीं—वि. [हिं. पछाह] **पश्चिम देश का**।

पछिआना—क्रि. स. [हिं पीछे+आना] **पीछा करना**।

पछिताइ—क्रि. अ. [हिं. पछतावा] **पश्चाताप करके, पछता कर**। उ.—सूरदास भगवंत-भजन बिनु, चल्यौ पछिताइ, नयन जल ढारौ—१-८०।

पछिताएँ—क्रि. अ. [हिं. पछताना।] **पछताने से, पश्चाताप करने से**। उ.—होत कहा अबके पछिताएँ, बहुत बेर बितई—१-२६६।

पछितात—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताती है**। उ.—चलत न फेंट गही मोहन की अब ठाढी पछितात—२५४१।

पछितान—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताना, पश्चाताप करना**।

प्र.—लाग्यौ पछितान—(क) **पछताने लगा, पश्चाताप करने लगा**। उ.-अब लाग्यौ पछितान पाइ दुख, दीन, दई को मार्यौ—१-१०१। (ख) सुरपति अब लाग्यौ पछितान—६-५। लागी पछितान—**पछताने लगीं**। उ.—रिस ही मै मोकौ गहि दीन्हौ, अब लागी पछितान—३५५।

पछिताना—क्रि. अ. [हिं पछताना] **पछतावा करना**।

पछितानी—क्रि. अ. [हिं. पछिताना] **पछताने लगीं**। उ.—(क) रोहिनि चितै रही जसुमति तन, सिर धुनि धुनि पछतानी—३६५। (ख) मधुकर प्रीति किए पछतानी—३३५६।

पछितानैं—क्रि. अ. [हिं पछताना] **पछताने से, पश्चाताप करने से**। उ.- सुंगी यह कीन्हौ बिनु जानै। होत कहा अब के पछितानैं—१-२९०।

पछितानौ, पछितान्यौ—क्रि. अ [हिं पछताना] **पछताया, पश्चाताप किया**। उ—(क) बिरध भएँ कफ कंठ बिरोध्यौ, सिर धुनि धुनि पछितान्यौ। १-३२६। (ख) मथुरापति जिय अतिहिं डरान्यौ। सभा माँझ असुरनि के आगै, सिर धुनि धुनि पछितान्यौ—१०-६०।

पछितायौ—क्रि. अ. [हि पछताना] **पछताया, पश्चाताप किया**। उ.– रसमय जानि सुवा सेमर कौ चोंच घालि पछितायौ—१-५८।

संज्ञा पुं.—**पश्चाताप, पछतावा**। उ—रह्यौ मन सुमिरन कौ पछितायौ—१-६७।

पछिताव—संज्ञा पुं. [हिं. पछितावा] **पश्चाताप**।

पछितावहि—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताती है**। उ.—पावति नही स्याम बलरामहिं, ब्याकुल है पछतावति—४५६।

पछितावन—संज्ञा पुं. [हिं पछतावा] **पछतावा**।

प्र०—लागी पछितावन—**पछताने लगीं, पश्चाताप करने लगी**। उ.– पिछली चूक समुझि उर अंतर अब लागी पछितावन—३१०१।

पछितावा—संज्ञा पुं. [हिं. पछितावा] **पछतावा, पश्चाताप**। उ.—मोहिं भयौ माखन पछितावौ, रीती देखि कमोरि—१०-२८६।

पछितैए—क्रि अ. [हिं. पछिताना] **पश्चाताप कीजिए**। उ.—कीजै कहा कहत नहिं आवै सोचि हृदय पछितैए—३२६८।

पछितैया—क्रि. अ. [हिं. पछिताना] **पछताते हैं**। उ.—सूरदास प्रभु की यह लीला हम कत जिय पछितैया—४२८।

पछितैहौ—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पछताओगे, पश्चाताप करोगे**। उ—सूरदास अवसर के चूकैं, फिरि पछितैहौ देखि उघारी—१-२४८।

पछियाव—संज्ञा पुं. [सं. पश्चिम+हिं. आना] **पश्चिम से आनेवाली हवा, पछुआ हवा।**

पछिला—वि. [हिं. पिछला] **पीछे का, पिछला।**

पछिले—वि. [हिं. पिछला] **पिछले, पहले के, विगत, पूर्व के।** उ.—पछिले कर्म सम्हारत नाही, करत नही कछु आगे—१-६१।

पछेलना—क्रि. स. [हिं. पीछे] **पीछे छोड़ देना।**

पछेला – संज्ञा पु. [हि पाछ+एला] **हाथ का एक गहना।**

पछेलिया, पछेली—संज्ञा स्त्री. [हि पुं पछेला] **हाथ का एक गहना।**

पछोड़ना, पछोरना क्रि. स. [सं. प्रक्षालन, प्रा. पच्छाड़न, हिं. पछोड़ना] **सूप आदि से फटककर अनाज इत्यादि साफ करना।**

मुहा.—फटकना-पछोड़ना – **अच्छी तरह परीक्षा करना।**

पछोड़ी, पछोरी—क्रि. स. [हिं. पछोड़ना] **सूप में रखकर और फटककर साफ की।**

मुहा.—फटकि पछोरी—**अच्छी तरह परीक्षा की।** उ.—सूर जहाँ लौ स्याम गात है, देखे फटकि पछोरी।

पछोड़े, पछोरे—क्रि. स. [हिं. पछोड़ना] **सूप में फटककर साफ किये।** उ.—कहौ कौन पै कढ़ै कनूका भुस की रास पछोरे।

मुहा.—फटकि पछोरे—**अच्छी तरह परीक्षा की।** उ.—तुम मधुकर निर्गुन निज नीके देखे फटकि पछोरे—३१००।

पछ्यावर – संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की शिखरन।**

पजर—संज्ञा पुं. [सं. प्रक्षरण] **चूने-टपकने की क्रिया।**

पजरत—क्रि. अ. [हि. पजरना] **जलता है, दहकता है, सुलगता है।** उ. – भयौ पलायमान दानवकुल, ब्याकुल, सायक-त्रास। पजरत धुजा, पताक, छत्र, रथ, मनिमय कनक-अवास—६-८३।

पजरना—क्रि. स. [स. प्रज्वलन] **दहकना, सुलगना।**

पजरि—क्रि अ. [हिं. पजरना] **दहक या सुलग कर।** उ.—पजरि पजरि तनु अधिक दहत है सुनत तिहारे बैन।

पजरे—क्रि. अ. [हिं. पजरना] **जले, दहके, सुलगे।**

त्रि.—**जले हुए।** उ.—बचन दुसह लागत अति तेरे ज्यो पजरे पर लौन—३१२२।

पजारना—क्रि. स. [हि. पजरना] **दहकाना, सुलगाना।**

पजारे—क्रि. स. [हिं. पजारना] **जलाया, फूँक दिया।** उ.—बिन आज्ञा मै भवन पजारे, अपजस करिहै लोइ—६-६६।

पटंबर—संज्ञा पुं. [स. पाटंबर] **रेशमी वस्त्र।** उ—किंकिन नूपुर पाट पटंबर, मनौ लिये फिरै घर-बार—१-४१।

पट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वस्त्र, कपड़ा।** उ.—(क) हम तन हेरि चितै अपनौ पट देखि पसारहि लात—३२८३। (ख) भरि भरि नैन ढारति है सजल करति अति कचुकि के पट—३४६२। (२) **परदा।** (३) **कागज, लकड़ी या धातु का टुकड़ा।**

संज्ञा पुं. [स. पट्ट] (१) **द्वार का किवाड़।** (२) **सिंहासन।**

संज्ञा पुं. [देश.] **टाँग।**

वि.—**चित का उल्टा, औंधा।**

क्रि. वि.— **तुरंत, फौरन।**

[अनु.] **टप-टप की ध्वनि।**

पटक—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पटकने की क्रिया या भाव।** (२) **डंडी, छड़ी।**

पटकत—क्रि. अ. [हि. पटकना] **'पट' शब्द के साथ चटकता है।** उ.—(क) पटकत बाँस, काँस, कुस ताल—५६४। (ख) पटकत बाँस, काँस कुस चटकत—६१५।

क्रि. वि.—**पटकते ही**—पटकत सिला गई आकासहिं—१०-४।

पटकन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पटकने की क्रिया या भाव।** (२) **छड़ी।** (३) **चपत, तमाचा।**

पटकना—क्रि. स. [स पतन+करण] (१) **जोर से गिराना।** (२) **दे मारना।**

क्रि अ.—(१) **सूजन कम होना।** (२) **गेहूँ, चने आदि का भीगने के बाद सूखकर सिकुड़ना।** (३) **'पट' शब्द के साथ फटना या दरकना।**

पटकनिया, पटकनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटकना] (१) **पट-**

कने या पटके जाने की क्रिया या भाव। (२) पछाड़।

पटका—संज्ञा पुं. [सं. पट्टक] **दुपट्टा, कमरबंद।**

पटकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जुलाहा।** (२) **चित्रकार।**

पटकि—क्रि. स. [हिं पटकना] (१) **पटककर, जोर से गिराकर।** उ.—भई पैज अब हीन हमारी, जिय मैं कहै बिचारि। पटकि पूँछ, माथौ धुनि लोटै, लखी न राघव-नारि—६-७५। (२) **झुकाकर।** उ.—ज्यों कुलवारि रस बीधि हारि गथु सोचतु पटकि चिती—१० उ.—१०३।

पटके—क्रि. स. [हिं. पटकना] **झटका देकर गिराये, पटक-पटक कर मारे।** उ.—कंस सौंह दै पूछिये जिन पटके सात—११३७।

पटक्यो—क्रि. स. [हिं. पटकना] **दे मारा, जोर से गिराया।** उ.—पटक्यो भूमि फेरि नहि मटक्यो लीन्हे दंत उपारी—२५६४।

पटच्चर—संज्ञा पुं. [सं.] **पुराना वस्त्र या कपड़ा।**

पटड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पटरा] **पटरा।**

पटड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरा] **पटरी।**

पटतर—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट=पटरी+तल=पटरी के समान चौरस=बराबर] (१) **समता, तुलना, बराबरी, समानता।** उ.—केसर-तिलक-रेख अति सोहै। ताकी पटतर कौ जग को है—३-१३। (२) **उपमा, सादृश्य।** उ.—श्रीवकर परसि पग पीठि तापर दियो उर्बसी रूप पटतरहिं दीन्ही—२५८८।

वि.—(१) **तुल्य, सदृश, बराबर।** उ.—खंजन मीन मृगज चपलाई नहिं पटतर एक सैन—१३४६। (२) **चौरस, समतल।**

पटतरना—क्रि. अ. [हिं. पटतर] **उपमा देना।**

पटतारना—क्रि. स. [हिं. पटा+तारना] **वार करने के लिए भाले आदि को सँभालना।**

क्रि. स. [हिं. पटतर] **जमीन चौरस करना।**

पटतारा—क्रि. स. [हिं. पटतारना] **वार करने को हथियार सँभाला।** उ.—रथ तैं उतरि, केस गहि राजा, कियौ खड्ग पटतारा—१०-४।

पटताल—संज्ञा पुं. [सं. पट्ट+ताल] **मृदंग का एक ताल।**

पटधारी—वि. [सं.] **जो कपड़ा पहने हो।**

संज्ञा पुं.—**तोशाखाने का अधिकारी।**

पटना—क्रि. अ. [हिं पट] (१) **गड्ढे आदि का भरना।** (२) **खूब भर जाना।** (३) **खुली जगह पर छत बनना।** (४) **विचार या मन मिलना।** (५) **सौदा तय हो जाना।** (६) **(ऋण) चुकता होना।**

पटपट—संज्ञा स्त्री. [अनु. पट] **'पट' शब्द होना।**

क्रि. वि.—**'पट' ध्वनि करता हुआ।**

पटपटात—क्रि अ. [हि. पटपटाना (अनु)] **पटपटाकर, 'पटपट' की ध्वनि करके।** उ.—जबहिं स्याम तन अति बिस्तार्यौ। पटपटात टूटत अँग जान्यौ, सरन-सरन सु पुकार्यौ—५५६।

पटपटाना—क्रि. अ. [हि पटकना] (१) **बुरा हाल होना।** (२) **'पटपट' ध्वनि होना।** (३) **शोक करना।**

क्रि. स.—**'पटपट' शब्द उत्पन्न करना।**

पटपर—वि. [हिं. पट+पर] **चौरस, समतल।**

पटबीजना—संज्ञा पुं. [हिं. पट+बिजु] **जुगनू, खद्योत।**

पटरा—संज्ञा पुं. [सं. पटल] **काठ का सलोतर तख्ता।**

मुहा.—पटरा कर देना—(१) **मार-काटकर बिछा देना।** (२) **चौपट या तबाह कर देना।** पटरा होना—**नष्ट हो जाना।**

पटरानि, पटरानी—संज्ञा स्त्री. [सं. पट्ट+रानी] **मुख्य रानी जो सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो।** उ.—जा रानी कौ तू यह दैहै। ता रानी सैंती सुत ह्वैहै। पटरानी कौ सो नृप दियौ—६-५।

पटरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरा] (१) **काठ का छोटा सलोतर टुकड़ा।**

मुहा.—पटरी बैठना—(१) **मन मिलना, मित्रता होना।**

(२) **लिखने की पाटी।** (३) **सुनहरे-रुपहले तारों का फीता।** (४) **चौड़ी चूड़ी।** (५) **चौकी, ताबीज।**

पटल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **छान, छप्पर।** (२) **पर्दा।** (३) **तह, परत।** (४) **लकड़ी का चौरस टुकड़ा।** (५) **टीका।** (६) **समूह, ढेर।**

पटली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पटरो] **पटरी।** उ.—पटली बिन बिद्रुम लगे हीरा लाल खचावनो—२२८०।

पटका—संज्ञा पुं. [सं. पाट] **रेशम या सूत के फुँदने आदि गूँथने वाला, पटहार।**

पटवाद्य—संज्ञा पुं. [सं.] **एक तरह का बाजा।**

पटवाना—क्रि. स. [हिं. पटना] (१) **पाटने को प्रवृत्त करना।** (२) **सिंचवाना।** (३) **चुकता करा देना।**

क्रि. स.—**पीड़ा या कष्ट मिटाना।**

पटवारी—संज्ञा पुं [सं. पट्ट+हिं. वार] **जमीन के लगान का हिसाब रखनेवाला कर्मचारी।**

संज्ञा स्त्री. [स. पट+वारी] **कपड़े पहनानेवाली दासी।**

पटवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **तंबू, खेमा।** (२) **वस्त्र को सुगंधित करनेवाली वस्तु।** (३) **लहँगा।**

पटह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगाड़ा।** उ.—डिमडिमी पटह ढोल डफ बीना मृदग उपंग चंग तार—२४४६। (२) **बड़ा ढोल।**

पटा—संज्ञा पुं. [सं. पट] **लोहे की लंबी पट्टी जिससे तलवार के वार की काट सीखी जाती है।**

संज्ञा पुं. [सं. पट्ट] (१) **पीढ़ा, पटरा।**

मुहा—पटाफेर—**विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू के आसन बदल दिये जाते हैं।** पटा बँधाना—**पटरानी बनाना।** उ.—चौदह सहस तिया मै तोकौं पटा बँधाऊँ आजु—६-७६।

(२) **सनद, अधिकारपत्र, पट्टा।**

संज्ञा पुं. [हिं. पटना] **लेन-देन, सौदा।**

पटाक—[अनु.] **छोटी चीज के गिरने का शब्द।**

पटाका, पटाखा—संज्ञा पुं. [हिं. पट] (१) **पट या पटाक शब्द।** (२) **एक तरह की आतिशबाजी।**

पटाक्षेप—सज्ञा पु. [सं.] (१ **नाटक में दृश्य की समाप्ति पर गिरनेवाला परदा।** (२) **घटना की समाप्ति।**

पटाना—क्रि. स [हिं पट] (१) **पाटने का काम कराना।** (२) **छत आदि बनवाना।** (३) **ऋण अदा करना।** (४ **मूल्य तय करना।**

क्रि अ.—**शांत होकर बैठ रहना।**

पटापट—क्रि. वि. [अनु] **'पटपट' ध्वनि के साथ।**

पटापटी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **चित्र-विचित्र वस्तु।**

पटाव—संज्ञा पुं. [हिं पाटना] (१) **पाटने की क्रिया या भाव।** (२) **पटा हुआ स्थान।**

पटिआ, पटिया—सज्ञा स्त्री. [स. पट्टिका] (१) **चपटा और चौरस पत्थर।** (२) **खाट या पलँग की पाटी।** (३) **माँग-पट्टी।** उ.—(क)मुँडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि—३०२६। (ख) वे मोरे सिर पटिया पारै कथा काहि उढाऊँ—३४६६। (४) **लिखने की पट्टी, तख्ती।**

पटी—संज्ञा स्त्री. [हि. पट्टी] (१) **पट्टी, कपड़े की धज्जी जो घाव या अन्य किसी स्थान पर बाँधी जाय।** उ—अपनी रुचि जित ही जित ऐंचति इंद्रिय-कर्म-गटी। हौ तित ही उठि चलति कपटि लगि बाँधे नैन-पटी—१-६८। (२) **पटका, कमरबंद।** (३) **परदा।** (४) **नाटक का परदा।** (५) **लिखने की पट्टी, तख्ती।** उ.—यह चतुराई अधिकाई कहाँ पाई स्याम वाके प्रेम की गढि पढे हौ पटी—२००८।

पटीर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चंदन।** (२) **बटवृक्ष।**

पटीलना—क्रि. अ. [हिं. पटाना] (१) **समझा-बुझाकर अपने ढंग पर लाना।** (२) **प्राप्त करना।** (३) **ठगना।** (४, **मारना-पीटना।** (५) **नीचा दिखाना।** (६) **पूर्ण या समाप्त करना।**

पटु—वि. [सं.] (१) **चतुर।** (२) **कुशल।** (३) **छली-फरेबी।** (४) **निष्ठुर।** (५) **सुंदर।**

पटुआ—सज्ञा पुं [स. पाट] (१) **पटसन।** (२) **पटुहार।**

पटुका—संज्ञा पु. [सं पटिका] (१)**कमरबंद।** (२)**चादर।**

पटुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दक्षता।** (२) **चालाकी।**

पटुली—सज्ञा स्त्री [स. पट्ट] (१) **झूला झूलने की पटरी।** उ.—पटुली लगे नग नाग बहुरग बनी डाडी चारि—२२७८। (२) **चौकी।**

पटूका—संज्ञा पुं. [हिं. पटका] **दुपट्टा, कमरबंद।**

पटेबाज—संज्ञा पुं.[हिं. पटा+फा बाज] **पटा खेलनेवाला।**

पटेल—संज्ञा पुं. [हिं पट्टा+वाला] **चौधरी, मुखिया।**

पटेलना—क्रि. स. [हिं पटीलना] **पटीलना।**

पटोर—संज्ञा पुं. [स. पटोल] **रेशमी वस्त्र।**

पटोरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाट+ओरी (प्रत्य.)] **रेशमी साड़ी।** उ.—(क) अंग मरगजी पटोरी राजति छबि

निरखत रीझत ठाढे हरि—१२३२। (ख) जाइ श्रीदामा लै आवत तब दै मानिनि बहु भाँति पटोरी—२४४५।

पटोल—संज्ञा पुं. [स.] **रेशमी कपड़ा।**

पटोलक—संज्ञा पुं. [सं.] **सीपी, सुक्ति।**

पटोलै—संज्ञा पुं. सवि. [स. पटोल] **रेशमी वस्त्र से।** उ.—जाकै मीत नंदनंदन से, ढकि लइ पीत पटोलै। सूरदास ताकौ डर काकौ, हरि गिरिधर के ओलै—१-२५६।

पटौनी—संज्ञा पुं. [देश] **मल्लाह, माँझी।**

संज्ञा स्त्री. [हिं पटना] **पटने का भाव या कार्य।**

पट्ट—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पटरा, पाटा।** (२) **पट्टी, तख्ती** (३) **किसी वस्तु या धातु की चिपटी पट्टी।** (४) **कपड़े की धज्जी।**

वि. [सं.] **मुख्य, प्रधान।**

पट्टदेवी—संज्ञा पुं. [स] **पटरानी।**

पट्टन—संज्ञा पुं. [स] **बड़ा नगर।**

पट्टमहिषी—सज्ञा स्त्री. [स.] **पटरानी।**

पट्टराज्ञी—संज्ञा स्त्री. [स] **पटरानी।**

पट्टा—संज्ञा पुं. [सं] (१) **अधिकार पत्र।** (२) **चमड़े की धज्जी या पट्टी** (३) **हाथ का एक गहना।**

पट्टी—संज्ञा स्त्री [सं. पट्टिका] (१) **तख्ती, पटिया।** (२) **उपदेश।** (३) **भुलावा,** (४) **धातु, कागज या कपड़े की धज्जी।** (५) **एक मिठाई।** (६) **पंक्ति, कतार।** (७) **माँग के दोनों ओर की पटियाँ।** (८) **भाग, हिस्सा।**

पट्टू—संज्ञा पुं. [हिं. पट्टी] **एक मोटा ऊनी कपड़ा।**

पट्ठमान—वि. [सं. पठ्यमान] **पढ़ने योग्य।**

पट्ठा—संज्ञा पुं. [सं. पुष्ट, प्रा. पुट्ठ] (१) **जवान, तरुण।** (२) **सिखाया हुआ नया कुश्तीबाज।** (३) **सुनहरा-रुपहला गोटा।**

पठई—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजी, पठाई।** उ.—(क) घर पठई प्यारी अंकम भरि—१२३२। (ख) अतिहिं निठुर पतियाँ नहिं पठई काहू हाथ सँदेस २७५३।

पठए—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजे।** उ.- मेरी देह छुटत जम पठए जितक दूत घर मौ—१-१५१।

पठक—संज्ञा पुं. [सं] **पढ़नेवाला।**

पठन—संज्ञा पुं. [सं.] **पढ़ना, पढ़ने की क्रिया।**

पठनीय—वि. [सं.] **पढ़ने योग्य।**

पठनेटा—संज्ञा पुं. [हि. पठान+एटा] **पठान का बेटा।**

पठयौ—क्रि. स. [हिं. पठाना] **पठाया, भेजा।** उ.—(क) परतिज्ञा राखी मन-मोहन, फिरि तापै पठयौ—१-३८। (ख) दुरबासा दुरजोधन पठयौ पांडव-अहित बिचारी—१-१२२।

पठवत—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजते हैं।** उ.—काहे को लिखि पठवत कागर—२६८०।

पठवन—क्रि. स.[हिं. पठाना] **भेजना, पठावा।** उ—कहत पठवन बदरिका मोहिं, गूढ ज्ञान सिखाइ—३-३

पठवना—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजना, पठाना।**

पठवहु—क्रि. स. [हिं.पठाना] **भेजो, प्रस्थान कराओ, पठाओ।** उ—मेरी बेर क्यों रहे सोचि? काटि कै अघ-फाँस पठवहु, ज्यौं दियौ गज मोचि—१-१९९।

पठवाना- क्रि. स. [हिं. पठाना] **भिजवाना।**

पठवै—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजेगा, पठावेगा।** उ.—कंसहिं कमल पठाइहै, काली पठवै दीप—५८६।

पठाइहै—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजेगा, पठावेगा।** उ.—कंसहिं कमल पठाइहै, काली पठवै दी—५८६।

पठाईं—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पठाना] **भेजीं, भेज दीं।** उ.—मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्यौसार पठाईं—९-१२४।

पठाई—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजी, पहुँचा दी।** उ.—बकी कपट करि मारन आई, सो हरि जू बैकुंठ पठाई—१-३।

पठाए—क्रि. स. [हि. पठाना] **भेजे।** उ.—सहस सकट भरि ब्याल पठाए—५८६।

पठान—संज्ञा पुं. [पश्तो पुख्ताना] **एक मुसलमान जाति।**

पठाना—क्रि. स. [सं प्रस्थान, प्रा. पट्ठान] **भेजना।**

पठानिन, पठानी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पठान] **पठान स्त्री।**

पठायौ—क्रि. स. [हिं. पठाना] **भेजा, प्रस्थान कराया।** उ.—सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपानिधि धर्मा—१-१०४।

पठावत—क्रि. स [हिं. पठाना] **भेजते हो।** उ.—काके पति-सुत-मोह कौन को घर है, कहाँ पठावत—पृ.३४१ (७)।

पठावन, पठावनो—संज्ञा पुं [हिं. पठाना] **दूत, संदेश-वाहक।** उ.—मनौ सुरपुर तेहि सुरपति पठइ दियौ पठावनो—२२८० ।

पठावनि, पठावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं, पठाना] (१) **कोई वस्तु या संदेश भेजने का भाव।** (२) **वह वस्तु जो भेजी जाय।**

पठित—वि. [सं] (१) **पढ़ा हुआ (ग्रंथ)** । (२) **शिक्षित।**

पठै—क्रि. स. [हिं पठाना] **भेजकर।** उ.—कान्हहिं पठै, महरि कौं कहति है पाइनि परि—७५२।

पठौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पठाना] (१) **कोई वस्तु या संदेश भेजना।** (२) **किसी के भेजने से जाना।**

पड़ता—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ना] **लागत, कीमत।**

पड़ताल—संज्ञा स्त्री. [सं. परितोलन] **देख-भाल, जाँच।**

पड़तालना—क्रि. स [हिं. पड़ताल] **छानबीन करना।**

पड़ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ना] **बिना जुती भूमि।**

पड़ना—क्रि. अ. [सं. पतन, प्रा. पडन] (१) **गिरकर या उछलकर पहुँचना।** (२) **(घटना) घटित होना** (३) **बिछाया या फैलाया जाना**; (४) **छोड़ा या डाला जाना।** (५) **बीच में दखल देना।** (६) **ठहरना, टिकना।** (७) **आराम करना।** (८) **बीमार होना।** (९) **प्राप्त होना।** (१०) **आमदनी होना।** (११) **मार्ग में मिलना।** (१२) **पैदा होना।** (१३) **स्थित होना।** (१४) **प्रसंग में आना।** (१५) **जाँच में ठहरना** (१६) **बदल जाना।** (१७) **होना।**

पड़पड़—संज्ञा स्त्री. [अनु] **'पड़' का शब्द होना।**

पड़पड़ाना—क्रि. अ. [अनु]. **'पड़-पड़' होना।**

पड़वा—संज्ञा स्त्री. [सं प्रतिपदा, प्रा. पड़िवआ] **चाँद मास के प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।**

पड़ाना—क्रि स. [हिं. पड़ना] **गिराना, झुकाना।**

पड़ाव—संज्ञा पुं [हिं पड़ना+आव] (१) **यात्री के ठहरने का भाव।** (२) **वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हो, चट्टी टिकान।**

पड़ोस—संज्ञा पुं [सं प्रतिवेश या प्रतिवास, प्रा. पड़िबेस, पड़िवास] **आसपास का घर या स्थान।**

पड़ोसी—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ोस] **जो पड़ोस में रहता हो।**

पढ़ंत—संज्ञा स्त्री. [हिं. पढना] **पढ़ने का भाव।**

पढ़ना—क्रि. स, [सं. पठन] (१) **लिखा हुआ बाँचना।** (२) **उच्चारण करना।** (३) **रटना।** (४) **मंत्र फूँकना।** (५) **नया सबक लेना।**

पढ़वाना—क्रि. स. [हिं. पढना] (१) **बँचवाना।** (२) **शिक्षा दिलाना।**

पढ़वैया—वि. [हिं. पढना] **पढ़नेवाला, शिक्षार्थी।**

पढ़ाई—संज्ञा स्त्री. [हिं पढना+आई] (१) **पठन, अध्ययन।** (२) **पढ़ने का भाव।** (३) **धन जो पढ़ने के बदले में दिया जाय।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पढ़ाना+आई] (१) **अध्यापन।** (२) **पढ़ने का भाव।** (३) **पढ़ाने की रीति।** (४) **धन जो पढ़ाने के बदले में दिया जाय।**

पढ़ाऊँ—क्रि. स. [हिं. पढाना] **सिखाता हूँ, शिक्षा देता हूँ।** उ.—सूर सकल षट दरसन वै, हौं बारहखरी पढाऊँ—३४६६।

पढ़ाना—क्रि. स [हिं. पढना] (१) **शिक्षा देना, अध्यापन करना।** (२) **कोई कला या गुन सिखाना।** (३) **पक्षियों को मनुष्य की भाषा सिखाना।** (४) **समझाना।**

पढ़ायो, पढ़ायौ—क्रि स. [हिं. पढाना] **गुन सिखाया।** उ.—(क) नंद घरनि सुत भलौ पढायौ—१०-३४०। (ख) भलौ काम है सुतहिं पढायौ—३६१। (ग) बारे ते जेहि यहै पढायो बुधि-बल-कल बिधि चोरी।

पढ़ावत—क्रि. स. [हिं. पढाना] **पढ़ाती है, पढ़ाती हुई।** उ.- (क) कीर पढावत गनिका तारी, ब्याध परम पद पायौ—१-६७। (ख) सुवा पढावत, जीभ लडावति, ताहि बिमान पठायौ—१-१८८। (ग) चातक मोर चकोर बदत पिक मनहुँ मदन चटसार पढ़ावत—१०-३०५।

पढ़ावै—कि. स. [हिं पढाना (प्रे)] (१) **शिक्षा देती है, अध्यापन करती है।** (२) **पक्षियों को बोलना सिखाती हैं।** उ.—(क) गनिका किए कौन ब्रत-संजम, सुक-हित नाम पढावै—१-१२२। (ख) आपन ही रँग रगी साँवरी सुक ज्यौ बैठि पढ़ावै—३०८८।

पढ़ि—कि. स. [हिं. पढना] (१) **सीख समझ कर।** उ.—मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढि अगमति देह बढाऊँ—१०-४६। (२) **मंत्रादि उच्चारण करके या फूँककर।**

उ.—जसुमति मन-मन यहै बिचारति। झझकि उठ्यौ सोवत हरि अबही कछु पढ़ि-पढ़ि तन-दोष निवारति—१०-२००। (३) **पढ़कर, शिक्षा ग्रहण करके**। उ.—कुबिजा सौं पढ़ि तुमहिं पठाए नागर नवल हरी—३३७०।

पढ़िबे—संज्ञा पुं. [हिं. पढ़ना] (१) **पढ़ना** (२) **उच्चारण करने की क्रिया कहना**। उ.—जब तैं रसना राम कह्यौ। मानौ धर्म साधि सब बैठ्यौ, पढिबे मै धौ कहा रह्यौ—२-८।

पढ़ीं—कि. स. [हिं. पढना] **उच्चारित कीं**। उ.—(द्विजनि अनेक) हरषि असीस पढ़ीं—१०-१४।

पढ़ी—कि. स. [हिं. पढना] **सीखी, समझी**। उ.—(क) जेहि गोपाल मेरे बस होते सो विद्या न पढ़ी—२७६४। (ख) तै अलि कहा पढी यह नीति—३२७०।

पढ़ेलना—कि. स. [हिं. धकेलना] **धकेलना, ठुकराना**।

पढ़ैया—वि. [हिं. पढना] **पढ़नेवाला पाठक**।

पढ़ैलो, पढ़ैलौ—वि. [हिं. पढेलना] **ठुकराया हुआ**। चुगुल, ज्वारि, निर्दय, अपराधी, झूठौ, खोटौ-खूटा। लोमी, लौंद, मुकरवा, झगरू, बड़ौ पढैलौ, लूटा—१-१८५।

पढ़ौ—कि. स. [हिं. पढ़ना] **पढ़ो, रटो**। उ.—पढौ भाई राम-मुकुंद-मुरारि—७-३।

पण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जूआ, द्यूत**। (२) **प्रतिज्ञा, शर्त**। (३) **मोल, कीमत**। (४) **शुल्क**। (५) **धन-संपत्ति**। (६) **व्यापार**। (७) **स्तुति, प्रशंसा**।

पणबंध—संज्ञा पुं. [सं.] **शर्त या बाजी लगाना**।

पणव—संज्ञा पुं. [सं.] **छोटा ढोल या नगाड़ा**। उ.—गर्जनि पणव निसान सख रव हय गय हीस चिकार—१० उ.—२।

पणी—संज्ञा पुं. [सं. पणिन्] **क्रय-विक्रय करनेवाला**।

पण्य—वि. [सं] **खरीदने बेचने योग्य**।

संज्ञा पुं.—(१) **सौदा**। (२) **व्यापार**। (३) **बाजार**। (४) **दूकान**।

पतंग—संज्ञा पुं. [सं] (१) **पक्षी**। (२) **शलभ**। उ.—दीपक पीर न जानई (रे) पावक परत पतंग—१-३२५। (३) **सूर्य**। (४) **चिनगारी**। (५) **चंग, गुड्डी**।

पतंगा—संज्ञा पुं [सं. पतंग] (१) **शलभ**। (२) **चिनगारी**।

पतंगेंद्र—संज्ञा पुं. [सं.] **पक्षिराज गरुड़**।

पतंजलि—संज्ञा पु. [स.] (१) **'योगशास्त्र' के रचयिता एक ऋषि**। (२) **'महाभाष्य' के रचयिता एक मुनि**।

पत—संज्ञा पुं [सं पति] (१) **पति**। (२) **स्वामी**।

संज्ञा स्त्री. [स प्रतिष्ठा] (१) **लज्जा**। (२) **प्रतिष्ठा**।

मुहा.—पत उतारना (लेना)—**बेइज्जती करना**। पत रखना—**इज्जत बचाना**।

पतखोवन—वि. [हिं. पत+खोना] **मान की रक्षा न कर सकनेवाला**।

पतझड़, पतझर, पतझल, पतझाड़, पतझार—संज्ञा पुं. [हिं. पत=पत्ता+झड़ना] (१) **वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं**। (२) **अवनतिकाल**।

पतझड़ना, पतझरना—कि अ. [हि. पत्ता+झड़ना] **वृक्षों के पत्ते झडना**।

पतझरै—कि अ. [हिं पतझड़] **पत्ते गिरते हैं, पतझड़ होता है**। उ.—तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहिं पाइ—१-२६५।

पतन—संज्ञा पुं [स] (१) **गिरने का भाव**। (२) **बैठना, डूबना**। (३) **अवनति**। (४) **नाश**। (५) **पाप**।

पतना—क्रि. अ. [स. पतन] **गिरना**।

पतनोन्मुख—वि. [स] **जो पतन की ओर बढ़ रहा हो**।

पतबरा—संज्ञा पुं [हि. पतला+बड़ा] **पतले-पतले 'बड़े' (एक व्यजन या खाद्य)**। उ.—मूँग-पकौरा, पनौ पतबरा। इक कोरे, इक भिजे गुरबरा—१०-३६६।

पतर, पतरा—वि. [स. पत्र] (१) **पत्ता**। (२) **पत्तल**।

पतर, पतरा, पतला—वि. [हिं. पतला] (१) **जो कम मोटा हो**। (२) **दुबला, पतला, कृश**। (३) **झीना**। (४) **जो गाढ़ा न हो**। (५) **निर्बल**।

पतवर—क्रि. वि. [हिं. पाँती+वार] **पंक्तिक्रम से**।

पतवार, पतवारी, पतवाल—संज्ञा स्त्री. [स. पत्रवाल, पात्रपाल, प्रा. पात्रवाड] **नाव का 'करण' जिससे उसे मोड़ते और घुमाते हैं**।

पता—संज्ञा पुं. [स. प्रत्यय, प्रा. पत्तय] (१) **स्थान-परिचय**। (२) **खोज, सुराग, टोह**। (३) **जानकारी, खबर**। (४) **रहस्य, भेद**।

पताक, पताका—संज्ञा स्त्री. [स. पताका] (१) **झंडा।** उ.—(क) पजरत, धुज', पताक, छत्र, रथ, मनिमय कनक-अवास—९-८३। (ख) स्वेत छत्र फहरात सीस पर ध्वज पताक बहुवान—२३७७। (ग) पवन न पताका अंबर भई न रथ के अग—२५४०। (२) **डंडा जिसमें पताका पहनायी जाती है।** (३) **नाटक का वह स्थल जहाँ पात्र की चिंता आदि का समर्थन आगंतुक भाव से हो।**

पताकिनी—संज्ञा स्त्री [स] **सेना।**

पताकी—संज्ञा पु [सं. पताकिन्] **पताकाधारी।**

पतार—संज्ञा पुं. [स. पाताल] (१) **पाताल।** (२) **जगल।**

पतारी—संज्ञा. पुं [सं. पाताल] **पाताल लोक।** उ.—सूरदास बलि सरबस दीन्हौ, पायौ राज पतारी- ८-१४

पतारौ संज्ञा पुं. [स. पाताल] **पाताल लोक।** उ.—कहौ तौ सैना चारु रचौं कपि, धरनी-व्योम पतारौ —९-१०८।

पताल—संज्ञा पुं. [सं. पाताल] **पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से अंतिम जहाँ बलि को विष्णु ने भेजा था।** उ.—सो छलि बाँधि पताल पठायौ, कौन कृपा-विधि, धर्मा—१-१०४।

पतावर—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **सूखे हुए पत्ते।**

पति—संज्ञा पुं. [स] (१) **किसी वस्तु का मालिक, स्वामी, अधिपति।** (२) **किसी स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, कांत।** उ.—देखहु हरि जैसे पति आगम सजति सिंगार धनी।—३४६१। (३) **मर्यादा, प्रतिष्ठा, लज्जा, साख,** उ.—(क) रिपु कच गहत द्रुपद-तनया जब सरन-सरन कहि भाषी। बढ़ै दुकूल-कोट अंबर लौं, सभा-माँझ पति राखी—१-२७। (ख) सभा-माँझ द्रौपदि पति राख, पति पानिप कुल ताकौ—१-११३। (ग) हमहिं खिझाइ आपु पति खोवत यामैं कहा तुम पावहु—३२६६। (घ) ज्यो क्योहूँ पति जात बडे की मुख न देखावत लाजन—३६६।

पतिआँ—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] **चिट्ठी, पत्र।** उ.—जो पतिआँ हो तुम पठवत लिखि बीच समुझि सब पाउ —३४७२।

पतिआइ—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करो, सत्य मानो।** उ—सूरदास सपदा-आपदा जिनि कोऊ पति-आइ—१-२६५।

पतिआना—क्रि. स. [सं प्रत्यय, प्रा. पत्तय+आना] **विश्वास करना।**

पतिआर, पतिआरो, पतिआरौ—संज्ञा पुं [हिं. पतिआना] **विश्वास, साख।** उ.—कहा परदेसी को पतिआरो —२७३२।

पतिघातिनी—संज्ञा स्त्री [स.] (१) **पति की हत्या करने वाली।** (२) **वैधव्य योगवाली स्त्री।**

पतित—वि. [स] (१) **समाज से बहिष्कृत, जातिच्युत।** उ.—जज्ञ-भाग नहिं लियौ हेत सौं रिषिपति पतित बिचारे—१-२५। (२) **महापापी अतिपातकी।** उ.—(क) नद-बरुन-बधन-भय-मोचन सूर पतित सरनाई —१-२७। (ख) सूर पतित तुम पतित-उधारन, गहौ बिरद की लाज—१-१०२। (३) **गिरा हुआ।** (४) **आचार या नीतिभ्रष्ट।** (५ **अधम, नीच।**

पतित-उधारन—वि [सं. पतित+उधारना] **पतितों का उद्धार करनेवाला।**

संज्ञा पुं—(१) **ईश्वर।** (२) **ब्रह्म का अवतार।**

पतितता—संज्ञा स्त्री [स.] (१) **पतित होने का भाव।** (२) **नीचता, अधमता।** (३) **अपवित्रता।**

पतितपावन—वि. [सं.] **पतित को शुद्ध करनेवाला।**

संज्ञा पुं.—(१) **ईश्वर** (२) **ब्रह्म का अवतार।**

पतितेस—वि. [सं. पतित+ईश] **बड़ा पतित, पतितों में सबसे बढ़कर।** उ.—हरिहौ सब पतितनि-पतितेस—१-१४०।

पतितै—वि. सवि. [सं. पतित] **पापी ही रहकर, पातकी ही रहकर।** उ.—हौ तौ पतित सात पीढिनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

पतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्नी] **विवाहिता स्त्री, पत्नी।** उ.—(क) गौतम की पतिनी तुम तारी, देव, दवानल कौ अँचयौ—१-२६। (ख) चरन-कमल परसत रिषि पतिनी, तजि पषान, पद पायौ—१-१८८।

पतिबरत—संज्ञा पु. [सं. पतिव्रत] **पति में स्त्री की पूर्ण**

प्रीति और भक्ति। उ.—सूर स्याम सों सोच पारिहौं यह पतिब्रत सुनहु नँदनंदन—१२२० ।

पतिया—सती स्त्री. [हिं. पत्र] **चिट्ठी** । उ.—इतनी बिनती सुनहु हमारी बारक हूँ पतिया लिखि दीजै—२७२७ ।

पतियाई— क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास किया** । उ.—यह बानी बृषभानु-घरनि कही तब जसुमति पतियाई—७५६ ।

पतियाति—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करती है।** उ.—सूर मिली ढरि नंदनंदन को अनत नहीं पतियाति—पृ० ३३७ (६५) ।

पतियाना—क्रि. स. [सं. प्रत्यय+हिं. आना] **विश्वास करना।**

पतियानी—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास किया।** उ.—कौन भाँति हरि को पतियानी—१० उ०-३७ ।

पतियार, पतियारा, पतिआरो—संज्ञा पुं [हिं. पतियाना] **विश्वास, यकीन।** उ.—(क) कहा परदेसी को पतियारो—२७३८ । (ख) कुँवरि पतियारो तब कियो जब रथ देख्यो नैन—१० उ.-८ ।

पतिव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] **पति में अनन्य प्रीति।**

पतिव्रता—वि. [सं.] **पति में अनन्य प्रीति रखनेवाली।**

पती—संज्ञा पुं. [सं पति] (१) **पति** । (२) **स्वामी।**

पतीजत—क्रि. अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करता है।** उ.—ओढियत है की डसिअत है कीधौ कहिअत कीधौ जु पतीजत—३३४१ ।

पतीजना—क्रि. अ. [हिं. प्रतीत+ना] **विश्वास करना, पतियाना।**

पतीजै—क्रि. अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करे, भरोसा करो।** उ.—(क) आवत देखि बान रघुपति के, तेरौ मन न पतीजै—९-१२६ । (ख) तब देवकी दीन ह्वै भाष्यौ, नृप कौ नाहि पतीजै । (ग) मनसा, बाचा, कहत कर्मना नृप कबहूँ न पतीजै—१०९ । (घ) तिनहि न पतीजै री जे कृतहिं न मानैं—२९८९ ।

पतीजौ—क्रि अ. [हिं. पतीजना] **विश्वास करो, पतियाओ।** उ.—जसुमति कह्यौ अकेली हौं मैं तुमहूँ संग मोहिं दीजौ । सूर हँसतिं ब्रजनारि महरि सौं, ऐहैं साँच पतीजौ—८१३ ।

पतीनना—क्रि. स. [हिं. प्रतीत+ना] **विश्वास करना।**

पतीनी—क्रि. स. [हिं. पतीनना] **विश्वास किया।** उ.—देवकी-गर्भ भई है कन्या, राइ न बात पतीनी—१०-४ ।

पतीर—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] **कतार, पाँती।**

पतीली—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली] **देगची।**

पतुकी—संज्ञा स्त्री. [सं. पातिली] **हांडी।**

पतुरिया—संज्ञा स्त्री [सं. पातिली] **वेश्या।**

पतुली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कलाई का एक गहना।**

पतैहैं—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करेंगे।** उ.—दरसन ते धीरज जब रैहै तब हम तोहि पतैहैं—१२७७ ।

पतूख, पतूखी, पतोखी– संज्ञा स्त्री. [हिं. पतोखा] **पत्ते का दोना।** उ.—(क) बारक वह मुख आनि देखावहु दुहि पै पिवत पतूखी—३०२९ । (ख) एक बेर बहुरौ ब्रज आवहु दूध पतूखी खाहु—३४३७ ।

पतोखा—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **पत्ते का दोना।**

पतोह, पतोहू—संज्ञा स्त्री. [सं. पुत्रवधू, प्रा. पुत्रवहू] **बेटे की बहू, पुत्रवधू।**

पतौआ—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता] **पत्ता, पर्ण।**

पतौषी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पतोखा] **पत्तों की दुनिया, छोटा दोना।** उ.—छीर समुद्र सयन सतत जिहिं, माँगत दूध पतौषी दै भरि—३९२ ।

पत्त—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] **पत्र, चिठ्ठी।** उ.—अब हम लिखि पठयो चाहति है, उहा पत्र नहिं पैहैं—३४६० ।

पत्तन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगर।** (२) **मृदंग।**

पत्तर—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] **धातु का चौरस टुकड़ा।**

पत्तल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्ता] (१) **पत्तों का बना पात्र जिसमें भोजन परसा जाता है।**

मुहा.— एक पत्तल के खानेवाले— (१) **संबंधी।** (२) **घनिष्ठ मित्र।** जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना—**जिससे लाभ उठाना या जिसका अन्न खाना उसी को हानि पहुँचाना।**

(२) **पत्तल में परसा हुआ भोजन।**

पत्ता—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] (१) **पत्र, पत्रक, पर्ण।** उ.—धरनि पत्ता गिरि परे तै फिरि न लागै डार—१-८८ ।

मुहा.— पत्ता खड़कना— **(१) खटका या आहट होना।** (२) **आशंका होना।** पत्ता तोड़कर भागना— **तेजी से भागना।** पत्ता न हिलना—**जरा भी हवा न चलना।** पत्ता हो जाना— **तेजी से दौड़कर अदृश्य हो जाना।**

(१) **कान का एक गहना।** (२) **धातु का पत्तर।**

पत्ति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पैदल सिपाही।** (२) **योद्धा।**

पत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्ता] (१) **छोटा पत्ता।** (२) **साझे का भाग।** (३) **फूल की पखुड़ी।**

पत्थर—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्तर, प्रा. पत्थर] (१) **पाषाण।**

मुहा.—पत्थर का कलेजा (दिल, हृदय)—**जिसमें दया-ममता न हो।** पत्थर की छाती— **हिम्मती और मजबूत दिल वाला।** पत्थर की लकीर—**सदा बनी रहने वाली चीज।** पत्थर को (मे) जोंक लगना—**असभव बात होना।** पत्थर चटाना—**पत्थर पर रगड़ कर तेज करना।** पत्थर निचोड़ना—**कंजूस से दान ले लेना।** पत्थर पर दूब जमना—**असभव और अनहोनी बात होना।** पत्थर पसीजना (पिघलना)—**कठोर दिल वाले में दया-ममता आना।** पत्थर सा खीच (फेंक) मारना—**बहुत कड़ी बात कहना।** पत्थर से सिर फोड़ना (मारना) —**असभव बात की सफलता का प्रयत्न करना।**

(२) **ओला, इद्रोपल।**

पत्थर पड़ना— **चौपट हो जाना।** पत्थर पड़ जाय (पड़े)— **चौपट हो जाय।** पत्थर-पानी का समय— **आँधी पानी का समय।**

(३) **(हीरा, जवाहर आदि) रत्न।** (४) **कुछ भी नहीं, व्यर्थ की चीज।**

पत्नी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विवाहिता स्त्री।**

पत्नीव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] **पत्नी के प्रति पूर्ण प्रीति।**

पत्य—संज्ञा पुं. [सं.] **पति होने का भाव।**

पत्याउ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करो, प्रतीति हो।** उ.— चारि भुज जिहि चारि आयुध निरखि कै न पत्याउ—१०-५।

पत्याऊँ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करूँ, सच मानूँ।** उ.—मोहिं अपनैं बाबा की सौंहै, कान्हहिं, अब न पत्याऊँ—३४५।

पत्याति—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करती हूँ।** उ.— (क) अब तुमको पिय मै पत्याति हौं—१८७०। (ख) कहा कहत री मै पत्याति नहिं—३००७।

पत्याना—क्रि. स. [हिं. पतियाना] **विश्वास करना।**

पत्यानी— क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास हुआ, प्रतीति की।** उ.—सूरस्याम संगति की महिमा काहू को नैंकहु न पत्यानी—१२८४।

पत्याने, पत्यान्यो, पत्यान्यौ–क्रि. स. [हिं पत्याना] **विश्वास किया।** उ.—(क) तुम देखत भोजन सब कीनो अब तुम मोहिं पत्याने—९१९ (ख) सूरदास प्रभु इनहिं पत्याने आखिर बडे निकामी री—पृ० ३२३ (१९)। (ग) सूरदास तहाँ नैन बसाए और न कहूँ पत्यान्यो—१८५७।

पत्याहि—क्रि. स. [हिं पत्याना] **विश्वास करो।** उ.— जौन पत्याहि पूछि बलदाउहि—५१०।

पत्याहु—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करो।** उ.— जौ न पत्याहु चलौ सँग जसुमति, देखौ नैन निहारि— १० २९२।

पत्यारी—संज्ञा पुं. [हिं. पतियारा] **विश्वास, प्रतीति।**

पत्यारी—संज्ञा स्त्री. [सं. पंक्ति] **कतार, पाँती।**

पत्यैए—क्रि. स. [हिं पत्याना] **विश्वास कीजिए।** उ.— राँचेहु विरचे सुख नाही भूलि न कबहुँ पत्यैए— २२७५।

पत्यैहै—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करेगा।** उ.— सूरस्याम को कौन पत्यैहै कुटिल गात तनु कारे— ३१६७।

पत्यैहौ—क्रि. स. [हिं. पत्याना] **विश्वास करूँगी।** उ.— सुनि राधा, अब तोहिं न पत्यैहौ—१५५०।

पत्र संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वृक्ष या बेल का पत्ता, पत्ती, दल, पर्ण।** उ.—(क) लाखागृह पाडवनि उबारे, साकपत्र मुख नाए—१-३१। (ख) साकपत्र लैं सबै अघाए न्हात भजे कुस डारी—१-१२२। (ग) हरि कह्यौ, साग पत्र मोहि अति प्रिय, अम्रित ता सम नाही —१-२४१। (२) **वह वस्तु जिस पर कुछ लिखा जाय।** उ.—पुहुमि पत्र कार सिंधु मसानी गिरि मसि कौं लै डारै—१-१८३। (३) **वह कागज जिस पर**

वान प्रतिज्ञा आदि की बात लिखी हो। (४) वह लेख जिस पर किसी व्यवहार, घटना आदि का प्रामाणिक विवरण दिया हो। (५) चिट्ठी, पत्र। (६) समाचारपत्र। (७) पृष्ठ सफा। (८) धातु का पत्तर। (९) तीर या पक्षी का पंख।

पत्र-पुष्प –संज्ञा पुं. [स.] **साधारण भेंट।**

पत्र-वाहक—संज्ञा पुं. [स.] **पत्र ले जानेवाला।**

पत्रा—संज्ञा पुं. [स. पत्र] **पचांग, जंत्री, तिथिपत्र।**

पत्रावलि, पत्र वली—संज्ञा स्त्री. [सं पत्र+अवली] (१) **पत्ते।** (२) **पत्तों की बनी पत्तल।** उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे, बहुत बने वहि पाक। अपनी पत्रावलि सब देखत, जहँ तहँ फेनि पिराक—४६४ (३) **वे बेल-बूटे या रेखाएँ जो सजावट या शोभा-वृद्धि के लिए स्त्रियाँ माथे पर बना लेती हैं।**

पत्रिका—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) **चिट्ठी, पत्र।** (२) **छोटा लेख।** (३) **सामयिक पत्र या पुस्तक।**

पत्री—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) **चिट्ठी, पत्र।** उ.—स्याम कर पत्री लिखी बनाइ—२६२६। (२) **जन्मपत्री।**

पथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मार्ग रास्ता।** (२) **रीति।**

पथगामी—संज्ञा पुं. [सं. पथगामिन्] **पथिक।**

पथचारी – संज्ञा पुं [सं. पथचारिन्] **पथिक।**

पथदर्शक, पदप्रदर्शक—संज्ञा पुं [सं.] **मार्ग बतानेवाला।**

पथरना—क्रि. स. [हिं. पत्थर] **पत्थर पर रगड़कर तेज या पैना करना।**

पथराना—क्रि. अ. [हि. पत्थर] (१) **पत्थर की तरह नीरस और कठोर होना।** (२) **स्तब्ध या जड़ हो जाना।**

पथरी—संज्ञा स्त्री. [हिं पत्थर] **पत्थर का छोटा पात्र।**

पथरीला—वि. [हि. पत्थर] **जिसमें बहुत पत्थर हों**

पथरौटा—संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्थर] **पत्थर का पात्र, कूँड़ी।**

पथिक—संज्ञा पुं. [सं.] **यात्री, राहगीर।**

पथी—संज्ञा पुं. [सं. पथिन्] **यात्री, पथिक।**

पथु—संज्ञा पुं. [सं.] **पथ, मार्ग।**

पथ्य—संज्ञा पुं. [सं.] **रोगी का हलका आहार।**

पद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **काम।** (२) **स्थान, दर्जा।** उ.—अबहिं अभै पद दियौ मुरारी—१-७८। (३) **चिन्ह।** (४) **पैर।** (५) **शब्द।** (६) **छंद का चतुर्थांश।** (७) **उपाधि।** (८) **मोक्ष** (९) **गीत, भजन।** उ.—सूरदास सोई कहै पद भाषा करि गाइ—१-२२५।

पदक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक गहना।** (२) **किसी धातु का गोल टुकड़ा जो विशेष कार्य करने पर पुरस्कार-स्वरूप दिया जाता है।**

पदचर—संज्ञा पुं. [स.] **पैदल, प्यादा।**

पदचारी—वि [स.] **पैदल चलनेवाला।**

पदचिन्ह—संज्ञा पु. [स] **चरणचिन्ह।**

पदच्युत - वि [स] **पद से हटा या गिरा हुआ।**

पदज—संज्ञा पुं [स] (१) **शूद्र।** (२) **पैर की उँगली।** वि० – **जो पैर से उत्पन्न हो।**

पदतल—संज्ञा पुं. [सं.] **पैर का तलवा।**

पदत्राण, पदत्रान—संज्ञा पु [स पदत्राण] **पैरो की रक्षा करनेवाला, जूता।** उ.—जहँ जहँ जात तहीं तहि त्रासत, अस्म, लकुट, पदत्रान—१-१०३।

पददलित—वि. [स.] (१) **पैरों से कुचला हुआ।** (२) **बहुत दबाया या सताया हुआ।**

पदन्यास—संज्ञा पुं. [सं] (१) **चलना, पैर रखना।** उ.—मृदु पदन्यास मंद मलयानिल बिगलत सीस निचोल। (२) **चलने की रीति।** (३) **चलन, रीति।** (४) **पद-रचना।**

पदम—संज्ञा पुं. [सं. पद्म] **कमल।**

पदमनाभ - संज्ञा पुं [सं पद्मनाभ] **विष्णु।**

पदमाकर—संज्ञा पुं. [सं पद्माकर] **तालाब।**

पदमासन—संज्ञा पुं. [स. पद्मासन] **ब्रह्मा।** उ.–नाभि-सरोज प्रगट पदमासन उतरि नाल पछितावै—१०-६५।

पदमूल—संज्ञा पु [सं.] **पैर का तलवा।**

पदमैत्री –संज्ञा स्त्री. [सं.] **अनुप्रास, वर्ण-मैत्री।**

पदयोजना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पद बनाने को शब्द जोड़ना।**

पदरिपु—संज्ञा पुं. [सं. पद+रिपु] **काँटा, कंटक।** उ.—पद-रिपु पद अटक्यौ न सम्हारति, उलट न पलट खरी—६५६।

पदवी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थान, पद, ओहदा, दर्जा।** उ.—(क) अंबरीष, प्रहलाद, नृपति बलि, महा ऊँच पदवी तिन पाई—१-२४। (ख) कहा भयो जु भए

नँद-नंदन अब इह पदवी पाई—३२०८। २) **पंथ।** (३) **परिपाटी।** (४) **उपाधि, खिताब।**

पदांक—संज्ञा पं. [सं] **चरण-चिह्न।**

पदात, पदाति, पदातिक—संज्ञा पं. [स. पदाति, पदातिक] (१) **पैदल सिपाही।** २) **प्यादा।** (३) **नौकर।**

पदादिका—संज्ञा पु. [स. पदातिक] **पैदल सेना।**

पदाधिकारी—संज्ञा पुं. [सं.] **ओहदेदार, अफसर।**

पदानुग—संज्ञा पु. [स.] **अनुयायी।**

पदार—संज्ञा पुं. [स.] **पैरो की धल, पद रज।**

पदारथ—संज्ञा पु. [स. पदार्थ] (१) **धर्म अर्थ, काम, मोक्ष।** उ.—अर्थ, धर्म अरु काम, मोच्छ फल, चारि पदारथ देत गनी—१-३६। (२) **मूल्यवान वस्तु।** उ.—जनम तौ ऐसेहिं बीति गयौ। जैसे रक पदारथ पाए, लोभ बिसाहि लियौ—१-७८।

पदार्घ्य—संज्ञा पुं. [सं.] **जल जो पूज्य या अतिथि के चरण धोने को दिया जाय।**

पदार्थ—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पद का अर्थ या विषय।** (२) **दर्शन का विषय-विशेष।** (३ **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।** (४) **चीज, वस्तु।**

पदार्थवाद—संज्ञा पु. [सं.] **वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों का ही विशेष मान हो, आत्मा या ईश्वर का अस्तित्व तक न माना जाय।**

पदार्थवादी—वि. [सं.] **पदार्थवाद का समर्थक।**

पदार्पण—संज्ञा पुं. [स] **जाने की क्रिया या भाव।**

पदानवत—वि. [सं.] **नम्र, विनीत।**

पदावली—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पद-संग्रह।**

पदिक - संज्ञा पुं. [सं. पदक] (१) **गले में पहनने का एक गहना जिस पर प्राय: किसी देवता का चरण अंकित रहता है।** उ. (क) पहुची करनि, पदिक उर हरि-नख, कठुला कंठ मजु गजमनियाँ—१०-१०६। (ख) उर पर पदिक कुसुम बनमाला, अंगद खरे बिराजै—४५१। (२) **रत्न,** (३) **पदक।**

संज्ञा पुं.—**पैदल सेना, पदाति।**

पदी—संज्ञा पुं. [सं. पद] **पैदल, प्यादा।**

पदु—संज्ञा पुं. [सं. पद] **चरण पैर।**

पदुम—संज्ञा पु. [सं. पद्म] (१) **कमल।** उ.—उरग-इन्द्र उनमान सुभग भुज, पानि पदुम आयुध राजै—१-६६। (२) **सौ नील की संख्या जो १ के बाद पंद्रह शून्य देकर लिखी जाती है।** उ.—राजपाट सिंहासन बैठो, नील पदुम हूँ सौं कहै थोरी—१ ३०३।

पदुमनी—संज्ञा स्त्री. [स. पद्मिनी] **कमलिनी।**

पदोदक—संज्ञा पुं. [सं.] **चरणामृत।**

पद्धटिका—संज्ञा पुं. [स.] **एक छंद।**

पद्धति—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **रीति, परिपाटी, चाल।** उ.—सिव-पूजा जिहिं भाँति करी है, सोइ पद्धति पर-तच्छ दिखैहौं—६-१५७। (२) **कार्यप्रणाली, विधि-विधान।** उ.—यकटक रहै पलक नाहिं लागै पद्धति नई चलाऊँ—१४८५। (३) **पथ मार्ग।** (४) **पंक्ति, कतार।** (५) **पुस्तक जिसमें कोई विधि लिखी हो।**

पद्धरि, पद्धरी—संज्ञा पुं. [सं. पद्धटिका] **एक छंद।**

पद्म—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कमल।** (२) **विष्णु का एक आयुध।** (३) **नौ निधियो में एक।** (४) **गले का एक गहना** (५) **सौ नील की संख्या जो १ के साथ १५ शून्य देकर लिखी जाती है।**

पद्मकोश—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल का छत्ता या संपुट।**

पद्मनाभ, पद्मनाभि—संज्ञा पुं. [सं] **विष्णु।**

पद्मनाल—संज्ञा स्त्री. [सं] **कमल की कोमल नाल।** उ.—जिहिं गयंद बाँध्यो, सुन मधुकर, पद्मनाल के काँचे सूते—३३०५।

पद्मनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **नौ निधियो में एक।**

पद्मराग—संज्ञा पुं. [स.] **'माणिक' वा 'लाल' रत्न।**

पद्मा—संज्ञा स्त्री. [स] **लक्ष्मी।**

पद्माकर—संज्ञा पुं [सं.] (१) **तालाब जिसमें कमल हों।** (२) **हिन्दी के रीतिकालीन एक प्रसिद्ध कवि।**

पद्माक्ष—संज्ञा पुं. [स.] (१) **कमलगट्टा।** (२) **विष्णु।**

पद्मालय—संज्ञा पु. [सं.] **ब्रह्मा।**

पद्मासन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **योग का एक आसन।** (२) **ब्रह्मा।**

पद्मिनी—संज्ञा स्त्री [स.] (१) **कमलिनी।** (२) **चित्तौर की एक रानी जो अपने जौहर के कारण अमर है।**

पद्य—संज्ञा पु [स] **छंदबद्ध कविता।**

पद्यात्मक—वि. [सं.] **जो छंदबद्ध हो।**

पधरना—क्रि. अ. [हिं. पधारना] **मान्य व्यक्ति का आना।**

पधराना—क्रि. [सं. प्र+धारण] **(१) सम्मान से ले जाना या बैठाना। (२) प्रतिष्ठा या स्थापित करना।**

पधारना—क्रि. अ. [हिं. पग+धारना] **(१) जाना, गमन करना। (२) आना या पहुँचना। (३) चलना।**

क्रि. स.—**सम्मान से बैठाना, प्रतिष्ठित करना।**

पधारे—क्रि. अ. [हिं. पधारना] **चले गये, गमन किया।** उ.—गो कह्यौ, हरि बैकुंठ सिधारे। सम-दम उनहीं संग पधारे—१-२९०।

पन—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **प्रतिज्ञा, संकल्प, निश्चय।** उ.—(क) धर्मपुत्र जब जज्ञ उपायौ द्विज मुख ह्वै पन लीन्हौं—२-२६। (ख) गाए सूर कौन नहिं उबर्यौ, हरि परिपालन पन रे—१-६६।

संज्ञा पुं. [सं. पर्वन्=विशेष अवस्था] **आयु के चार भागों (बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था) में से एक।** उ.—(क) तीनौ पन ऐसैं ही खाए, समय गए पर जाग्यौ। (ख) तीन्यौ पन मैं ओर निबाहे इहै स्वाँग कौं काछे—१-१३६ (ग) तीनौं पन ऐसैं ही खोए, केस भए सिर सेत—१-२८६। (घ) तीनौपन ऐसैं ही जाइ—७-२।

पनघट—संज्ञा पुं. [हिं. पानी+घाट] **वह घाट जहाँ पानी भरा जाता हो।**

पनच—संज्ञा स्त्री. [सं. पतंचिका] **धनुष की डोरी।** उ.—उतरी पनच अब काम के कमान की—पृ. ३०० (६)।

पनपना—क्रि. अ. [सं. पर्णय=हरा होना] **(१) पानी पाकर फिर हरा भरा हो जाना। (२) पुनः स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट होना।**

पनव—संज्ञा पु. [स. प्रणव] **ऊँकार मंत्र।**

पनवाँ - संज्ञा पु. [हिं पान+वाँ] **हमेल आदि में लगी पान के आकार की चौकी, टिकड़ा।**

पनवाड़ी, पनवारी—संज्ञा स्त्री [हिं. पान+वाड़ी] **पान का खेत।**

संज्ञा पुं. [हिं. पान+वार] **पान बेचनेवाला, तम्बोली**

पनवारा—संज्ञा पुं. [हिं. पान+वार] **(१) पत्तल। (२) पत्तल भर भोजन।**

पनवारे—संज्ञा पुं. [हिं. पनवारा] **(१) पत्तों की बनी हुई पत्तल।** उ.—महर गोप सबही मिलि बैठे, पनवारे परसाए—१०-८६। **(२) परसी या भोजन से सजी पत्तल।** उ.—(क) ग्वारनि के पनवारे चुनि चुनि उदर भरीजै सीथिनि—४६०। (ख) कर कौ कौर डारि पनवारे नागर सूर आपु चले अति चौंड़े—१५५७।

पनवारौ—संज्ञा पुं. [हिं पनवारा] **(१) पत्तो की बनी पत्तल।** उ.—पहिले पनवारौ परसायौ—२३२१। **(२) पत्तल भर भोजन।** उ.—तब तमोल रचि तुमहिं खवावौं। सूरदास पनवारौ पावौं—१०-२११।

पनसूर—संज्ञा पु. [देश] **एक तरह का बाजा।**

पनहा—संज्ञा पुं. [स. परिणाह=चौड़ाई] **(१) दीवार आदि की चौड़ाई। (२) गूढ़ाशय, तात्पर्य।**

संज्ञा पुं—**(१) चोरी का पता लगानेवाला। (२) ऐसे व्यक्ति को दिया जानेवाला पुरस्कार।**

पनहारा—संज्ञा पु. [हिं. पानी+हारा] **पानी भरनेवाला।**

पनहियाँ, पनहिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पनही] **छोटा जूता, जूती, पनही।** उ.—खेलत फिरत कनकमय आँगन, पहिरे लाल पनहियाँ—६-१६।

पनही—संज्ञा स्त्री. [सं. उपानह] **जूता।**

पना—संज्ञा पुं. [सं. पानीय] **आम आदि का पन्ना।**

पनार, पनारा, पनाला—संज्ञा पुं. [हिं. परनाला] **गंदे जल का प्रवाह, परनाला।** उ—(क) जैसे अंधौ अंध कूप मैं गनत न खाला-पनार। तैसेहि सूर बहुत उपदेसै सुनि-सुनि गे कै बार—१८४। (ख) तेरौ नीर सुची जो अब लौं, खार पनार कहावै—५६१।

पनारी, पनाली—संज्ञा स्त्री. [हिं परनाली] **(१) गंदे जल की धारा, परनाली। (२) धार, धारा।** उ.—(क) रुदन जल नदी सम बहि चल्यो उरज बीच मनोगिरी फोरि सरिता पनारी—पृ. ३४१ (५)। (ख) मानो दामिनि धरनि परी की सुधर पनारी—१८२३। (ग) तट बारू उपचार चूर जलं परी प्रस्वेद पनारी—२७२८

पनारे, पनाले—संज्ञा पुं. बहु [हिं. परनाले] **अनेक प्रवाह।** उ.—(क) कचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे—२७६३। (ख) चहूँ दिसि कान्ह कान्ह करि टेरत अँसुवनि बहत पनारे—३४४६।

पनासना—क्रि. स. [सं. पानाशन] **पालना-पोसना ।**

पनाह—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **त्राण, बचाव ।**

मुहा.—पनाह माँगना—**बचने की इच्छा करना ।**

(२) **रक्षा का स्थान, शरण, आड़ ।**

पनिघट—संज्ञा पुं. [हिं. पनघट] **घाट जहाँ पानी भरा जाता हो ।** उ.—जब तें पनिघट जाऊँ सखी री वा यमुना के तीर—२७६८ ।

पनियाँ, पनिया—वि [हि पानी] **पानी में रहनेवाला ।**

पनियाना—क्रि. अ. [हि पानी + आना] **पानी बहना, पसीजना, प्रवाहित होना ।**

क्रि. स—(१) **सींचना, तर करना ।** (२) **तंग या परेशान करना ।**

पनिहा—वि. [हि. पानी] **पानी में रहनेवाला ।**

पनिहार, पनिहारा—संज्ञा पुं [हिं. पनहरा] **पानी भरने वाला ।**

पनिहारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पनहार] **पानी भरने वाली ।** उ.—हौं गोधन लै गयौ जमुन-तट, तहाँ हुती पनिहारी—६६३ ।

पनी—वि. [सं. प्रण] **प्रण करनेवाला ।**

पनीर—संज्ञा पुं [फा] **छेना ।**

पनीला—वि. [हि. पानी + इला] **पानी मिला हुआ ।**

पनेथी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पानी + पोथी] **मोटी रोटी ।**

पनौ—वि. [हिं. पन्ना] **इमली आदि के पने में भीगे हुए ।** उ.—मूँग पकौरा पनौ पतबरा । इक कोरे इक भिजे गुरबरा—३९६ ।

पनौआ—संज्ञा पुं. [हिं. पान+ओआ] **एक पकवान ।**

पनौटी—संज्ञा स्त्री. [हि. पान+औटी] **पान की डिबिया ।**

पन्न—वि. [सं.] (१) **गिरा-पड़ा ।** (२) **नष्ट ।**

संज्ञा पुं.—**रेंग या सरककर चलने की क्रिया ।**

पन्नई—वि. [हिं. पन्ना] **पन्ने की तरह हलके हरे रंग का ।**

पन्नग—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप, सर्प ।** उ.—पन्नग-रूप गिले सिसु गो-सुत, इहिं सब साथ उबार्‍यौ—४३३ ।

संज्ञा पुं. [हिं. पन्ना] **पन्ना, मरकत ।**

पन्नगारि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गरुड़ ।** (२) **मयूर ।**

पन्नगिनि, पन्नगी—संज्ञा स्त्री. [सं. पन्नगी] **नागिनि, सर्पिणी ।** उ.—(क) मनहुँ पन्नगिनि उतरि गगन ते दल पर फल परसावत—१३४५ । (ख) मनो पन्नगी निकसि ता बिच रही हाटक गिरि लपटाई—पृ. ३१८ (७१) । (ग) खंजरीट मनो ग्रसित पन्नगी यह उपमा कछु आवै—२०६७ ।

पन्ना—संज्ञा पुं. [सं. पर्ण ?] **मरकत रत्न ।** उ.—पन्ना पिरोजा लागे बिच-बिच १० उ०-२४ ।

संज्ञा पुं. [हिं. पात्र] **पुस्तक का पृष्ठ ।**

संज्ञा पुं. [हिं. पना] **आम, इमली आदि का पानी मिला पतला रस ।**

पन्नी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पन्ना = पृष्ठ] **रुपहला, सुनहरा, रंगीन या चमकदार कागज ।**

संज्ञा स्त्री [हिं. पना] **एक भोज्य पदार्थ ।**

संज्ञा स्त्री. [देश] **बारूद की एक तौल ।**

पन्हाना—क्रि. अ. [हिं. पहनाना] **पहनाना ।**

पन्हैयाँ, पन्हैया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पनही] **जूता ।**

पपड़ा, पपरा—संज्ञा पुं. [सं. पर्पट] (१) **लकड़ी, चूने आदि का पतला छिलका, चिप्पड़ ।** (२) **रोटी का बक्कल ।**

पपड़िआना, पपरिआना—क्रि. अ. [हिं. पपड़ी + आना] (१) **सूखकर सिकुड़ना ।** (२) **इतना सूखना कि पपड़ी पड़ जाय ।**

पपड़ी, पपरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पपड़ा] (१) **सूखी और सिकुड़ी हुई छाल या परत ।** (२) **घाव की खुरंड, छोटा पापड़ ।** (३) **सोहन पपड़ी नामक मिठाई ।** (४) **छोटा पापड़ ।**

पपिहा, पपीहरा, पपीहा—संज्ञा पुं [देश. पपीहा] (१) **चातक नामक पक्षी जो वसंत और वर्षा में बहुत सुरीली ध्वनि से बोलता है ।** (२) **सितार के छः तारों में एक जो लोहे का होता है ।**

पपीता—संज्ञा पुं. [देश] एक वृक्ष ।

पपीलि—संज्ञा स्त्री. [सं. पिपीलिका] **चींटी ।**

पपोटा—संज्ञा पुं. [सं. प्र+पट] **पलक, दृगंचल ।**

पपोरना—क्रि. स. [देश.] **(बल के गर्व से) बाहें ऐंठना ।**

पपोलना—क्रि. अ. [हिं. पोपला] **पोपला मुँह चलाना ।**

पबारना—क्रि. स. [हिं. फेंकना] **फेंकना ।**

पबि—संज्ञा पुं [सं. पवि] **वज्र ।**

पब्बय—संज्ञा पु. [स. पर्वत] **पहाड़, पर्वत ।**

पव्वि—संज्ञा पुं. [सं. पवि] **वज्र ।**

पमाना—क्रि. अ. [?] **डींग हाँकना ।**

पय—संज्ञा पुं [सं. पयस्] (१) **दूध ।** उ.—जिनि पहले पलना पौढे पय पीवत पूतना घाली—२५६७। (२) **जल, पानी ।** (३) **अन्न ।**

पयज—संज्ञा स्त्री. [सं. पैज] **प्रण, प्रतिज्ञा ।**

पयद्—संज्ञा पुं [सं. पयोद] **बादल, मेघ ।**

पयधि—संज्ञा पुं. [सं. पयोधि] **सागर, समुद्र ।**

पयनिधि—संज्ञा पुं. [सं. पयोनिधि] **सागर, समुद्र ।** उ.—(क) मनु पयनिधि सुर मथत फेन फटि, दयौ दिखाई चंद—१०-२०३। (ख) मानहुँ पयनिधि मथत, फेन फटि चंद उजारयौ—४३१।

पयस्वती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नदी, सरिता ।**

पयस्विनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गाय ।** (२) **नदी ।**

पयहारी—वि. [हिं. पय+आहारी] **सिर्फ दूध पीकर ही रहनेवाला ।**

पयादि—संज्ञा पुं. [हिं. प्यादा] **पैदल, प्यादा ।**

पयान, पयानो—संज्ञा पुं [सं. प्रयाण] **गमन, प्रस्थान, जाना, यात्रा ।** उ.—(क) बिछुरत प्रान पयान करैंगे, रहौ आजु पुनि पंथ गहौ (हो)—९-३३। (ख) आजु रघुनाथ पयानो देत। बिह्वल भए स्त्रवन सुनि पुरजन, पुत्र-पिता कौ हेतु—९-३६।

पयार, पयाल—संज्ञा पुं. [सं पलाल, हिं. पयाल] **धान, कोदों आदि के सूखे डंठल ।** उ.—(क) धान को गाँव पयार ते जानौ ज्ञान विषय रस भोरे। (ख) उनके गुन कैसे कहि आवै सूर पयारहिं झारत—पृ. ३२७ (६८)।

मुहा.—पयार गाहना—**व्यर्थ का श्रम करना।** उ.—(क) फिरि-फिरि कहा पयारहिं गाहे। (ख) झारि झूरि मन तो तू लै गयो, बहुरि पयारहिं गाहत—३०६५।

पयोघन—संज्ञा पुं. [सं.] **ओला ।**

पयोद्—संज्ञा पु. [सं.] **बादल, मेघ ।**

पयोदन—संज्ञा पुं. [सं. पयस्+ओदन] **दूध-भात ।**

पयोधर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **थन ।** उ.—मनौ धेनु तृन छाँडि बच्छ हित, प्रेम-द्रवित चित स्त्रवत पयोधर—१०-१२४। (२) **स्त्री के स्तन ।** उ.—पीन पयोधर सघन उन्नत अति तापर रोमावली लसी री—२३८४। (३) **बादल ।** (४) **तालाब ।**

पयोधि, पयोनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र ।**

पयोमुख—वि. [सं.] **दुधमुहाँ या दूधपीता ।**

पयोवाह—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल ।**

पयोव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक व्रत जिसमें केवल जल पीकर रहा जाता है ।** (२) **श्रीकृष्ण का एक व्रत जिसमें बारह दिन तक केवल दूध पीकर उनका ध्यान किया जाता है ।**

पयौ—संज्ञा पुं. [हिं. पय] **दूध ।** उ.—पसु-पंछी तृन-कन त्याग्यौ, अरु बालक पियौ न पयौ—९-४६।

पयौसार—संज्ञा पुं. [सं. पितृशाला] **स्त्री के पिता का घर, मायका, पीहर, नैहर ।** उ.—परत फिराइ पयोनिधि भीतर, सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्यौसार पठाई—९-१२४।

परंच—अव्य. [सं.] (१) **और भी ।** (२) **तो भी ।**

परंजय—संज्ञा पुं. [सं] **शत्रु को जीतनेवाला ।**

परंतप—वि. [सं.] (१) **शत्रु को चैन न लेने देनेवाला ।** (२) **जितेंद्रिय ।**

परंतु—अव्य. [सं. परं+तु] **पर, तोभी, किन्तु ।**

परंपरा—संज्ञा स्त्री. [सं.](१) **क्रम, पूर्वापर क्रम ।** उ.—यह तो परंपरा चलि आई सुख दुख लाभ अरु हानि—२६५८। (२) **वंश या संतति-क्रम ।** (३) **रीति ।**

परंपरागत—वि. [सं.] **परम्परा से होता आनेवाला ।**

पर—वि. [सं.] (१) **दूसरा, अन्य ।** (२) **पराया, दूसरे का ।** (३) **भिन्न, पृथक् ।** (४) **बाद का ।** (५) **दूर, सीमा के बाहर ।** (६) **सबसे ऊपर, श्रेष्ठ ।** (७) **लीन ।**

प्रत्य. [सं. उपरि] **अधिकरण की विभक्ति ।** उ.—(क) कर-नख पर गोबर्धन धारी—१-२२। (ख) ऐकै चीर हुतौ मेरे पर—१-२४७।

संज्ञा पुं.— (१) **शत्रु ।** (२) **शिव ।** (३) **मोक्ष ।**

अव्य. [सं. परम्] (१) **पीछे, पश्चात् ।** (२) **किन्तु, परन्तु ।**

संज्ञा पुं. [फा.] **पक्षी के पंख, पक्ष ।**

मुहा.—पर कट जाना—**बल । शक्ति का आधार न रह जाना ।** पर काट देना—**बल या शक्ति का**

आधार नष्ट कर देना। पर जमाना—**सीधे-सादे व्यक्ति में भी चालाकी या धूर्तता आना**। पर न मारना (मार सकना)—**पास न फटक सकना**।

परई—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **पड़ता है, पतित होता है, गिरता है**। उ.—डोलै गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलटि जग परई—६-७८। (२) (**नींद**) **पड़ती है**। उ.—बिधु बैरी सिर पर बसै निसि नींद न परई—२८६१।

संज्ञा स्त्री. [सं. पार] **मिट्टी का बड़ा कटोरा**।

परक—संज्ञा स्त्री. [हिं परकना] **परकने की क्रिया**।

परकट—वि. [सं. प्रकट] **उत्पन्न**। उ.—मत्त्य के उदर ते बाल परकट भयो—१० उ.-२५।

परकटा—[हिं पर+कटना] **जिसके पंख कटे हों**।

परकना—क्रि. अ. [हिं. परचना] (१) **हिल-मिल जाना**। (२) **धड़क खुलना, चस्का पड़ना**।

परकसना—क्रि. अ. [हिं. परकासना] (१) **प्रकट या उत्पन्न होना**। (२) **प्रकाशित होना, जगमगाना**।

परकाजी—वि. [हि. पर+काज] **परोपकारी**।

परकाना—क्रि. स. [हिं. परकना] (१) **हिलाना-मिलाना**। (२) **धड़क खोलना, चस्का डालना**।

परकार—सज्ञा पुं. [स. प्रकार] (१) **भेद, किस्म**। (२) **रीति, ढंग, प्रकार**। उ—(क) भयौ भागवत जा परकार। कहौं, सुनौ सो अब चित धार—१-२३०। (ख) चारिहूँ जुग करी कृपा परकार जेहि सूरहू पर करौ तेहि सुभाई—८-९।

परकारी—संज्ञा स्त्री [सं. प्रकार] **रीति, ढंग**। उ.—बूझत है पूजा परकारी—१०२१।

परकाला—संज्ञा पुं. [फ़ा. परगाल] (१) **सीढ़ी**। (२) **दहलीज**। (३) **टुकड़ा**। (४) **चिनगारी**।

मुहा.—आफत का परकाला—**बहुत उपद्रवी**।

परकाश, परकास—संज्ञा पुं [सं. प्रकाश] **प्रकाश**।

परकाशत, परकासत—क्रि. स. [हिं. प्रकाशना] **प्रकट करता है, उच्चरित करता है**। उ.—गदगद मुख बानी परकासत देह दसा बिसरी—१४७८।

परकाशना, परकासना—क्रि. स. [स. प्रकाशन] (१) **प्रकाशित करना** (२) **प्रकट करना**।

परकाशित, परकासित—वि. [हिं. प्रकाशना] **चमकता हुआ, प्रकाशयुक्त, कांतियुक्त**। उ.—कोटि किरनि-मनि मुख प्रकासित, उडुपति कोटि लजावत—४७६।

परकाशी, परकासी—क्रि स. [हिं. प्रकाशना] **प्रकट की, उच्चरित की**। उ.—सिंधु मध्य बाणी परकाशी—२४५९।

परकिति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रकृति] **प्रकृति**।

परकीय—वि. [सं.] **पराया, दूसरे का**।

परकीया—सज्ञा स्त्री [स.] **उपपति से प्रेम करनेवाली**।

परकीरति—संज्ञा स्त्री [स. प्रकृति] **प्रकृति**।

परकृत—संज्ञा स्त्री. [स. प्रकृति] **स्वभाव, प्रकृति**। उ.—परकृत एक नाम है दोऊ किधौं पुरुष, किधौं नारि—२२२०।

परकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दूसरे की कृति या रचना**।

परकोटा—संज्ञा पुं. [स. परिकोट] (१) **चहारदीवारी**। (२) **पानी आदि को रोकने का धुस या बाँध**।

परख—संज्ञा स्त्री. [सं. परीक्षा, प्रा. परिक्ख] (१) **जाँच, परीक्षा**। (२) **गुण-दोष-विवेचक वृत्ति**।

परखना—क्रि. स. [सं. परीक्षण, प्रा. परीक्खण] (१) **जाँच या परीक्षा करना**। (२) **भला-बुरा जांचना**।

क्रि. स. [हि. परेखना] **प्रतीक्षा या इन्तजार करना**।

परखाइ—क्रि. स. [हिं. परखना] **जाँचकर**। उ.—हम सौं लीजै दान के दाम सबै परखाइ—१०१७।

परखाई—सज्ञा स्त्री. [हिं परख] **परखने की क्रिया, भाव या मजदूरी**।

परखाना—क्रि. स. [हिं. परखना] (१) **जँचवाना**। (२) **सौंपाना**।

परखि—क्रि. स. [हिं. परखना] (१) **परखकर, जाँच करके, गुण-दोष की परीक्षा करके**। उ.—ताहि कैं हाथ निरमोल नग दीजिए, जोइ नीकै परखि ताहि जानै—१-२२३। (२) **देख लिया, निगाह डाल ली**। उ.—परखि लिए पाछेन को तेऊ सब आए—२५७५।

परखी—क्रि. स. [हिं. परखना] **जाँची, देखी-भाली**।

संज्ञा पुं. [हिं. पारखी] **परखनेवाला**।

परखैया—संज्ञा पुं. [सं.] **परखनेवाला**।

परग—संज्ञा पुं. [सं. पदक] **डग, कदम**। उ.—वामन रूप धर्यौ बलि छलि कै, तीनि परग बसुधाऊ—१०-२२१।

परगट—वि. [सं. प्रकट] (१) **अंकित, चिन्हित**। उ.—अंकुस-कुलिस-बज्र ध्वज परगट तरुनी-मन भरमाए—६३१। (२) **उत्पन्न**।

प्रा०—कियौ परगट—**प्रकट किया, बताया**। उ.—सुपनौ परगट कियौ कन्हाई—५४४।

परगटना—क्रि. अ. [हिं. प्रगट] **प्रगट होना, खुलना**।

क्रि. स.—**प्रकट करना, खोलना**।

परगन, परगना—संज्ञा पुं. [फा परगना] **भू-भाग जिसमें कई ग्राम हों**। उ.—ब्रज-परगन-सिकदार महर, तू ताकी करत नन्हाई—१०-३२६।

परगसना—क्रि. अ. [सं. प्रकाशन] **प्रकाशित होना**।

परगाढ़—वि. [सं. प्रगाढ] **बहुत गाढ़ा, गहरा**।

परगास—संज्ञा पुं. [सं. प्रकाश] **प्रकाश**। उ.—अविनाशी बिनसै नही सहज ज्योति परगास—३४४३।

वि०—**प्रकट**। उ.—उदधि मथि नग प्रगट कीन्हो श्री सुधा परगास—१३५६।

परगासना—क्रि. अ. [सं. प्रकाशन] **प्रकाशित होना**।

क्रि. स.—**प्रकाशित करना**।

परगासा—वि. [सं. प्रकाश] **प्रकाशित**। उ.—बिनु पर-पानि करै परगासा—१०-३।

क्रि. स.—**प्रकट या उत्पन्न किया**। उ.—सूरज चंद्र धरनि परगासा—२६४३।

परघट—वि. [सं. प्रकट] **उत्पन्न, प्रकट**।

परचंड—वि. [स. प्रचंड] **भयंकर, प्रचंड**।

परचत—संज्ञा स्त्री. [सं. परिचित] **जान पहचान, जानकारी**। उ.—सुरति-सरित भ्रम भँवर तन मन परचत न लह्यौ।

परचना—क्रि. अ. [सं. परिचयन] (१) **हिलना-मिलना**। (२) **धड़क खुलना, चस्का लगना**।

परचा—संज्ञा पुं. [फ़ा] (१) **कागज की चिट**। (२) **चिट्ठी**।

संज्ञा पुं. [सं. परिचय] (१) **परख**। (२) **परिचय**।

परचाना—क्रि. स. [हिं. परचना] (१) **हिलाना-मिलाना**। (२) **धड़क खोलना, चस्का लगाना**।

परचून—संज्ञा पुं. [सं. पर+चूर्ण] **दाल-चावल आदि**।

परचै—संज्ञा पुं. [सं. परिचय] **जान-पहचान**।

परचो, परचौ—संज्ञा पुं. [हिं. परचा] **परिचय, परख, परीक्षा**। उ.—काहू लियो प्रेम परचो, वह चतुर नारि है सोई—२२७५।

परच्यौ—संज्ञा स्त्री. [हि. परचो] **सीमा, अंत**। उ.—चंदन अंग सखनि कै चरच्यौ। जसुमति के सुख कौ नहिं परच्यौ—३९६।

परछत्ती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पर+छत] **हलका छाजन**।

परछन—संज्ञा स्त्री. [स. परि+अर्चन] **विवाह की एक रीति**।

परछना—क्रि. स [हिं. परछन] **विवाह में वर के आने पर आरती आदि करना**।

परछा—संज्ञा पुं. [सं. परिच्छेद] (१) **भीड़ की कमी**। (२) **समाप्ति**।

परछाई—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिच्छाया] (१) **प्रतिबिंब**। (२) **छायाकृति**।

परछाया—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतिच्छाया] **परिछाईं, छाया**। उ.—मंदिर की परछाया बैठ्यौ, कर मीजै पछिताइ—९-७५।

परछहिंआँ, परछाँह—संज्ञा स्त्री. [हिं. परछाईं] **छाया, प्रतिबिम्ब**। उ.—(क) निरखि अपनो रूप आपुही बिबस भई सूर परछाँह को नैन जोरै—पृ. ३१६ (५८)। (ख) मनो मोर नाचत सँग डोलत मुकुट की परिछहिंआँ—३४५।

परजंत—अव्य. [सं. पर्यंत] **तक, लौं**।

परजन—संज्ञा पुं. [सं परिजन] **सेवक, अनुचर**।

परजरना—क्रि. अ. [स. प्रज्वलन] (१) **जलना, सुलगना**। (२) **कुढ़ना, क्रुद्ध होना**। (३) **ईर्ष्या या डाह करना**।

परजन्य—संज्ञा पुं. [स. पर्जन्य] (१) **बादल**। (२) **इंद्र**।

परजरना, परजलना—क्रि. अ. [स. प्रज्वलन] **सुलगना**।

परजर—वि. [सं. प्रज्वलित] **जलता हुआ**।

परजर्यौ—क्रि. अ. [हिं. परजरना] **क्रुद्ध हुआ, कुढ़ गया**। उ.—सुनि अरे अंध दसकंध, लै सीय मिलि, सेतु करि बध रघुबीर आयौ। यह सुनत परजर्यौ, बचन नहिं मन धर्यौ, कह्यौ तै राम सौं मोहिं डरायौ—९-१२८।

परजा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रजा] (१) **राज्य-निवासी, प्रजा**। उ.—(क) परजा सकल धर्म-रत देखी—१-२९०।

(ख) रिषभराज परजा सुख पायौ—५-२ । (२) **आश्रितजन ।**

परजारना, परजालना—क्रि स [हि. परजरना] **जलाना ।**

परण—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **प्रण, प्रतिज्ञा ।** उ —ताको पिता परण यह कीन्हो—१० उ —२८ ।

परणना—क्रि. स. [सं. परिणयन्] **विवाह करना ।**

परणाम—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाम] **प्रणाम, नमस्कार ।** उ.—तब परिणाम कियौ अति रुचि सो अरु सबही कर जोरे—२६७१ ।

परतंचा—संज्ञा स्त्री. [हि प्रत्यंचा] **धनुष की डोरी ।**

परतंत्र—वि. [सं] **परवश, पराधीन ।**

परतः—अव्य. [सं. परतस्] (१) **पीछे ।** (२) **आगे ।**

परत—क्रि. अ [हि. पडना] (१) **पड़ता है, गिरता है, जाता है ।** उ.—पग-पग परत कर्म-तम-कूपहिं, को करि कृपा बचावै—१-४८ । (२) **स्थित है, उपस्थित होता है, स्थान पाता है ।** उ.—सूरदास कौ यहे बड़ौ दुख, परत सबनि के पाछे—१-१३६ । (३) (**युद्ध क्षेत्र) में मरकर गिरता है ।** उ.—इत भगदत्त, द्रोन, भूरिश्रव, तुम सेनापति धीर । जे जे जात, परत ते भूतल, ज्यौं ज्वाला-गत चीर—१-२६६ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पत्तर] (१) **तह, स्तर ।** (२) **तह, मोड़ ।**

परतक्ष, परतच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] **प्रकट, प्रत्यक्ष ।** उ.—(क) सिव-पूजा जिहिं भाँति करी है, सोइ पद्धति परतच्छ दिखैहौं—६-१५७ । (ख) कनक तुम परतच्छ देखहु सजे नवसत अग—११३२ ।

परतर—वि. [स.] **बाद या पीछे का ।**

परताप—संज्ञा पुं. [सं. प्रताप] (१) **पौरुष, वीरता ।** उ.—यह अपनो परताप नंद जसुमतिहिं सुनैहौ—११४० । (२) **तेज ।** (३) **महिमा, महत्व, प्रताप ।** उ.—भजन कौ परताप ऐसौ जल तरै पाषान—१-२३५

परताल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ताल] **जाँच, खोज-खबर ।**

परतिंचा—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रत्यंचा] **धनुष की डोरी ।**

परति—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **पड़ता है, गिरता है ।** (२) **मिलता है, प्राप्त होता है ।** उ.—पलित केस, कफ कंठ बिरुंध्यौ, कल न परति दिन-राती—१-११८ । (३) **फाँसती है, बाँधती है ।** उ.—मैं-मेरी करि जन्म गँवावत, जब लगि नाहिं परति जम डोरी—१-३०३ ।

परतिग्या, परतिज्ञा—संज्ञा स्त्री [सं. प्रतिज्ञा] **प्रतिज्ञा, व्रत, संकल्प ।** उ.—ऐसे जन परतिज्ञा राखत जुद्ध प्रगट करि जोरे—१-३१ ।

परती—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **गिरती ।** उ.—सुत सनेह समुझति सु सूर प्रभु फिरि फिरि जसुमति परती धरनी —३३३० ।

संज्ञा स्त्री—**जमीन जो जोती-बोई न जाय ।**

परतीत, परतीति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतीति] **विश्वास ।** उ —(क) कत अपनी परतीति नसावत, मैं पायौ हरि हीरा—१-१३४ । (ख) बिछुरे श्रीब्रजराज आजु तौ नैननि ते परतीति गई—२५३७ ।

परतेजना—क्रि. स [सं. परित्यजन] **छोड़ना, त्यागना ।**

परतेजी—क्रि स. [हिं. परतेजना] **छोड़ा, त्यागा ।** उ.—जैसे उन मोको परतेजी कबहूँ फिरि न निहारत है ।

परतौ—क्रि. अ. [हि. पड़ना] **प्रसिद्ध होता, ख्यात होता, (नाम) पड़ता या होता ।** उ.—जौ तू राम-नाम-धन धरतौ······। जम कौ त्रास सबै मिटि जातौ, भक्त नाम तेरौ परतौ—१-२६७ ।

परत्व—संज्ञा पुं. [सं] **पहले या पूर्व होने का भाव ।**

परदच्छिणा, परदच्छिना—संज्ञा स्त्री. [सं प्रदक्षिणा] **परिक्रमा, प्रदक्षिणा ।** उ.—बहुरि बलभद्र परनाम करि रिषिन्ह को पृथ्वी परदच्छिणा को सिधाये—१० उ०-५८ ।

परदा—संज्ञा पुं [सं] (१) **आड़ करने का कपड़ा ।**

मुहा.—परदा खोलना—**छिपी बात प्रकट करना ।** परदा डालना—**बात छिपाना ।** आँख पर परदा पडना —**दिखायी न देना ।** बुद्धि पर परदा पड़ना—**समझ में न आना ।** परदा रखना—**प्रतिष्ठा बनी रहने देना ।** राखत परदा तेरो—**तेरी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहती है ।** उ.—मधुकर, जाहि कहौ सुनि मेरौ । पीत बसन तन स्याम जानि कै राखत परदा तेरौ —३२७१ ।

(२) **आड़ करने की चीज ।** (३) **आड़, ओट, ओझल ।** (४) **ओट, छिपाव ।**

मुहा.—परदा रखना—(१) **सामने न आना**। (२) **छिपाव रखना**। परदा होना—**दुराव-छिपाव होना**। उ.—सुनहु सूर हमसौं कहा परदा हम कर दीन्ही साट सई—१२६७।

(५) **स्त्रियों को ओट में रखना**। (६) **तह, परत**। (७) **चमड़े की झिल्ली**।

परदेश, परदेस—वि. [सं. परदेश] **दूसरा देश, विदेश**। उ.—तिनको कठिन करेजो सखी री, जिनको पिय परदेश—२७५३।

परदेशिनि, परदेसिनि—वि. स्त्री. [स. पुं. परदेशी] **विदेश की रहनेवाली, अन्य देशवासिनी**। उ.—मै परदेसिनि नारि अकेली—६-६४।

परदेशी, परदेसी—वि. [सं परदेशी] **विदेशी**।

संज्ञा पुं.—**विदेश में रहनेवाला व्यक्ति**। उ.—कहा परदेशी को पतियारो—२७३१।

परदोष—संज्ञा पुं. [सं. प्रदोष] (१) **सध्याकाल**। (२) **त्रयोदशी को शिवजी का व्रत**।

परधान—वि. [सं. प्रधान] **मुख्य, प्रधान**।

संज्ञा पुं. [सं. परिधान] **वस्त्र**। उ.—दान-मान-परधान पूरन काम किए।

परधान्यौ—क्रि. स. [सं. प्रधान] **प्रधान समझा, सबसे आवश्यक माना**। उ.—यहै मंत्र सबही परधान्यौ, सेतु बंध प्रभु कीजै। सब दल उतरि होई पारंगत, ज्यौ न कोउ इक छीजै—६-१२१।

परधाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परलोक**। (२) **ईश्वर**।

परन—संज्ञा पुं. [सं. प्रण] **टेक, प्रतिज्ञा**।

संज्ञा स्त्री [हिं. पड़ना] **बान, आदत**। उ.—राखौ हटकि उतै को धावै उनकी वैसिय परन परी री—१६६४।

क्रि. अ.—**पड़ना, पड़ जाना**।

प्र०—परन न दीनौ— **पड़ने नहीं दिया**। उ.—सभा मॉझ द्रौपदि-पति राखी, पति पानिप कुल ताकौ। बसन ओट करि कोट बिसंभर, परन न दीन्हौ झॉकौ—१-११३।

परनकुटी—संज्ञा स्त्री [सं. पर्ण+कुटी] **पत्तों से बनी कुटी, पर्णकुटी, पर्णशाला**। उ.—तीनि पैड़ बसुधा हौ चाहौं, परकुटी कौं छावन—८-१३।

परन-पुटी—संज्ञा स्त्री [सं. पर्ण+पुट] **पत्तों का दोना**।

परना—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ना**।

परनाम—सज्ञा पुं [हिं. प्रणाम] **नमस्कार, प्रणाम**।

परनाला—संज्ञा पुं. [सं. प्रणाली] **पनाला, मोहरी**।

परनि—संज्ञा स्त्री. [हि. पड़ना] **चढ़ाई, धावा**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पड़ना] (१) **बान, आदत, देव, टेक, दृढ़ता**। उ.—(क) परनि परेवा प्रेम की, (रे) चित लै चढत अकास। तहँ चढि तीय जो देखई, (रे) भू पर परत निसास—१-३२५। (ख) सूरदास तैसहि ये लोचन का धौ परनि परी। (ग) ऐसी परनि परी, री! जाको लाज कहा ह्वै है तिनको। (घ) राखौ हटकि उतै को धावै उनकी वैसिय परनि परी री—१६६४। (ङ) मनहुँ प्रेम की परनि परेवा याही से पढ़ि लीनी—२६०६। (२) **रट, रटना**।

परनौत—संज्ञा स्त्री. [हि. पर+नवना] **प्रणाम, नमस्कार**। उ.—ताते तुमको करै दँडौत। अरु सब नरहूँ को परनौत—५-४।

परपंच—संज्ञा पुं. [सं. प्रपंच] (१) **दुनिया का जंजाल**। (२) **झगड़ा-बखेड़ा**। (३) **ढोंग, आडंबर**। (४) **छल-कपट**। उ.—सोई परपंच करै सखि, अबला ज्यों बरई—२८६१।

परपंचक—वि. [सं. प्रपंचक] **बखेड़िया, झगड़ालू**।

परपंची—वि. [स. प्रपंची] (१) **बखेड़िया, झगड़ालू**। (२) **धूर्त, कांइयाँ**। उ.—सब दल होहु हुस्यार चलहु अब घेरहिं जाई। परपंची है कान्ह कछू मति करै ढिढाई—१० उ.-८।

परपराना—क्रि. अ. [देश] **मिर्च आदि का तीक्ष्ण लगना**।

परपार—सज्ञा पुं. [हिं. पर+पार] **दूसरी ओर का तट**।

परपीड़क, परपीरक—संज्ञा पुं. [सं] (१) **दूसरे को कष्ट देनेवाला**। (२) **दूसरे के कष्ट को समझने और उससे मुक्त करानेवाला**। उ.—मागध हति राजा सब छोरे ऐसे प्रभु पर-पीरक।

परपूठा—वि. [सं. परिपुष्ट, प्रा. परिपुट्ठ] **पक्का**।

परफुल्ल, परफुल्लित—वि. [सं. प्रफुल्ल, हिं. प्रफुल्लित]

प्रफुल्लित, आनंदित । उ.—धन्य पिता जापर परफुल्लित राघव-भुजा अनूप । वा प्रतापि की मधुर बिलोकनि पर वारौ सब भूप—६-१३४ ।

परबंध—संज्ञा पुं. [सं. प्रबंध] **व्यवस्था, प्रबंध** ।

परब—संज्ञा पुं. [स. पर्व] **त्योहार, उत्सव** । उ.—आजु परब हँसि खेलो हो मिलि सँग नंदकुमार—२४०२ ।

परबत—संज्ञा पुं. [सं पर्वत] (१) **पहाड़, पर्वत** । (२) **बड़ा ढेर** । उ.—अति आनंद नद रस भीने । परबत सात रतन के दीने—१०-३२ ।

परबल—वि. [सं. प्रबल] **सशक्त, बली** ।

परबस—वि. [सं. पर=दूसरा+वश] **जो स्वतंत्र न हो, पराधीन** । उ.—परबस भयौ प्रभू ज्यौं रजु-बस, भज्यौ न श्रीपति रानौ—१-४७ ।

परबसता, परबसताई—संज्ञा स्त्री. [सं परवश्यता] **पराधीनता, परतंत्रता** ।

परबाल—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] (१) **मूँगा** । (२) **कोंपल** ।

परबाह—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाह] **धारा, प्रवाह** । उ.—उरकलिंद तैं धँसि जल-धारा उदर-धरनि परबाह—६३७ ।

परबी—संज्ञा स्त्री. [हिं. परब] **पर्व या उत्सव का दिन** ।

परबीन, परबीने, परबीनो—वि.[स. प्रवीण]**दक्ष, कुशल** । उ.—बिबिध बिलार-कला-रम की बिधि उभै अग परबीनो—२२७५ ।

परबेश, परबेशा—संज्ञा पुं. [सं. प्रवेश] **पैठ, प्रवेश** । उ.—धरत नलिनी बूँद ज्यौं जल बचन नहिं परबेश—३४७६ ।

परबो—संज्ञा पुं. [हिं. पड़ना] **पड़ने की क्रिया या भाव** । उ.—जामें बीती सोई जानै कठिन सुप्रेम पाश को परबो—२८६० ।

परबोध—संज्ञा पुं. [सं. प्रबोध] **बोध, ज्ञान** । उ.—होइ ज्यो परबोध उनको मेरी पति जिन जाइ—१६१४ ।

परबोधत—क्रि. स. [हिं. परबोधना] **समझता या दिलासा देता है** । उ.—पुनि यह कहा मोहिं परबोधत धरनि गिरी मुरझैया ।

परबोधन—संज्ञा पुं. [हिं. परबोधना] **समझाने या दिलासा देने की क्रिया, भाव या उद्देश्य** । उ.—(क) गोपिनि को परबोधन कारन जैहै सुनत तुरंत—२६१३ । (ख) हमको परबोधन हरि तौ नहिं पठए—३२६७ ।

परबोधना—क्रि. स. [सं. प्रबोधना] (१) **जगाना** । (२) **ज्ञान का उपदेश करना** । (३) **सांत्वना देना, दिलासा देना** ।

परबोधि—क्रि. स. [हिं. परबोधना] **समझा-बुझाकर, दिलासा देकर** । उ.—(क) रानिनि परबोधि स्याम महल द्वारे आए—२६१६ । (ख) सूर नन्द परबोधि पठावत निठुर ठगोरी लाई—२६५४ ।

परबोधो, परबोधौ—क्रि स. [हिं. परबोधना] **ज्ञान का उपदेश दो** । उ.—जो तुम कोटि भाँति परबोधौ जोग-ज्ञान की रीति—३२११ ।

परब्रह्म—संज्ञा पुं. [सं.] **ब्रह्म जो जगत से परे है** ।

परभव—संज्ञा पु. [स.] **दूसरा जन्म** ।

परभा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा] **प्रकाश, आभा, कांति** ।

परभाई, परभाउ, परभाऊ—संज्ञा पुं. [सं. प्रभाव] **फल, परिणाम, असर** । उ.—यह सब कलयुग कौ परभाउ । जो नृप कै मन भयउ कुभाउ—१-२६० ।

परभात—संज्ञा पुं. [सं. प्रभात] **प्रातःकाल, प्रभात, सबेरा** । उ.—(क) सुनि सीता, सपने की बात । रामचन्द्र लछिमन मै देखे, ऐसी बिधि परभात—६-८२ । (ख) रथ आरूढ होत परभात—६-८२ । (ख) रथ-आरूढ होत बलि गई होइ आयो परभात—२५३१ ।

परभाती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभाती] **प्रात.कालीन गीत** ।

परम—वि. [स.] (१) **सबसे बढ़ा-चढ़ा** । (२) **उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, महान्** । उ.—परम गंग कौ छाँड़ि महातम और देव कौं ध्यावै—१-१५८ । (३) **प्रधान** ।

परमगति—संज्ञा स्त्री [सं.] **मोक्ष, मुक्ति** ।

परमतत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मूल तत्व या सत्ता जिससे सारी सृष्टि का विकास माना जाता है** । (२) **ब्रह्म** ।

परमधाम—संज्ञा पुं. [सं.] **बैकुंठ** ।

परमपद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ पद** । (२) **मुक्ति** ।

परमपिता, परमपुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] **परमेश्वर** ।

परमफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ फल** । (२) **मुक्ति** ।

परम भट्टारक—संज्ञा पुं [सं.] **एकछत्र राजा की उपाधि** ।

परमहंस—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **ज्ञान की चरमावस्था को**

पहुँचा हुआ संन्यासी। (२) **परमात्मा**। उ.—परमहंस तब बचन उचारे—१० उ.-१०६।

परमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **छवि, सुंदरता**।

परमाणु—संज्ञा पुं. [सं.] **अत्यंत सूक्ष्म अणु**।

परमाणुवाद—संज्ञा पुं. [सं.] **परमाणुओं से सृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धांत**।

परमाणुवादी—वि. [सं.] **परमाणवाद का पोषक**।

परमातम—संज्ञा पुं. [हिं. परमात्मा] **परब्रह्म, ईश्वर**। उ.—तन स्थूल अरु दूबर होइ। परमातम कौ ये नहि होइ—५-४।

वि.—**अत्यंत घनिष्ठ**। उ.—ता नृप कौ परमातम मित्र। इक छिन रहत न सो अन्यत्र—४-१२।

परमातमा, परमात्मा—संज्ञा पुं. [सं. परमात्मन्, हिं. परमात्मा] **परब्रह्म, ईश्वर**।

परमानंद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अत्यंत सुख**। (२) **ब्रह्म के साक्षात् का सुख, ब्रह्मानंद**। (३) **आनदस्वरूप ब्रह्म**।

वि.—[सं. परम + आनन्द] **जो आनदस्वरूप हो**। उ.—तुम अनादि, अविगत, अनतगुन पूरन परमानंद—१-१६३।

परमान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) **प्रमाण, सबूत**। (२) **सत्य बात**। (३) **सीमा, फैलाव, हद**। उ.—द्वादश कोश रास परमान—१८१६।

वि.—(१) **सत्य, प्रमाणित**। उ.—ऊधौ, बेद बचन परमान—३३६६। (२) **पूर्ण**। उ.—(क) रिषि कह्यौ ताहि दान-रति देहि। मैं बर देहुँ तोहि सो लेहि। सत्यवती सराप भय मान। रिषि कौ बचन कियौ परमान—१-२२९। (ख) सिव कौ बचन कियौ परमान—४-५। (३) **स्वीकार, मान्य**। उ.—कह्यौ, जो कहौ सो हमै परमान है—८-८।

परमानना—क्रि. स. [सं. प्रमाण] (१) **सत्य या प्रमाण समझना** (२) **स्वीकारना, सकारना**।

परमाने—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] **प्रमाण**। उ.—अब तुम प्रगट भए बसुदेव सुन गर्ग बचन परमाने—२६५०।

परमान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **खीर, पायस**।

परमारथ—संज्ञा पुं. [सं. परमार्थ] **सारवस्तु, वास्तव सत्ता, यथार्थ तत्व**। उ.—हरि, हौं महापतित अभिमानी। परमारथ सौं बिरत, बिषय रत, भाव-भगति नहिं नैकहुँ जानी—१-१४६।

परमार्थ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ वस्तु**। (२) **यथार्थ तत्व या सत्ता**। (३) **मोक्ष**। (४) **पूर्ण सुख**।

परमार्थवादी—वि. [सं. परमार्थवादिन्] **ज्ञानी**।

परमार्थी—वि. [सं. परमार्थिन्] (१) **यथार्थ तत्व का अन्वेषक या जिज्ञासु**। (२) **मुक्ति चाहनेवाला, मुमुक्षु**।

परमिति—संज्ञा स्त्री. [सं. परिमिति] (१) **नाप, तौल, सीमा**। उ.—सुनि परमिति पिय प्रेम की (रे) चातक चितवन पारि। घन-आसा सब दुख सहै, (पै) अनत न जाँचै बारि—१-३२५। (२) **मर्यादा**। उ.—(क) पाँचै परमिति परिहरै हरि होरी है—२४५५। (ख) जुरयौ सनेह नँदनदन सों तजि परमिति कुलकानि—३२१४। (ग) परमिति गए लाज तुम्हीं को हंसिनि ब्याहि काग लै जाहि—१० उ-१०। (३) **परिधि, घेरा, सीमा, विस्तार**। उ.—(क) कोश द्वादश राज परमिति रच्यो नंदकुमार—१८३७। (ख) उमँग्यौ प्रेम समुद्र दशहूँ दिशि परमिति कही न जाय—१० उ-११२।

परमुख—वि. [सं. पराङ्मुख] **विमुख, विरुद्ध**।

परमेश, परमेश्वर, परमेसर, परमेसुर, परमेस्वर—संज्ञा पुं. [सं.] **सगुण ब्रह्म**।

परमेश्वरी, परमेसरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **दुर्गा, देवी**।

परमोद—संज्ञा पुं. [सं. प्रमोद] **आनद, प्रमोद**।

परमोदना—क्रि. स. [सं. प्रमोद] **बहलाना, फुसलाना**।

परमोधत—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **धीरज देता है, प्रबोधता है, ढाढ़स बँधाता है**। उ.—धीरज धरहु, नैकु तुम देखहु, यह सुनि लेति बलैया। पुनि यह कहति मोहिं परमोधति, धरनि गिरी मुरझैया—५६०।

परमोधना—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **धीरज देना**।

परमोधि—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **समझा बुझाकर**।

उ.—माता कौं परमोधि दुहुँनि धीरज धरवायौ—५८९।

परयंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] **पलँग**।

परयौ—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ा हुआ हूँ, टहरा हूँ, स्थित हूँ**। उ.—किए प्रन हौ परयौ द्वारैं, लाज प्रन की तोहि—१-१०६।

परयौ—क्रि. अ. [हि. पड़ना](१) **पड़ा, गया, पहुँचा, डाला गया।** उ.—नरक कूपन जाइ जमपुर परयौ बार अनेक —१-१०६। (२) **इच्छा हुई, (हठ) ठाना, धुन लगी।** उ.—माधौ जू, मन हठ कठिन परयौ। जद्यपि बिद्य-मान सब निरखत, दु:ख सरीर भरयौ—१-१००। (३) **मूर्छित होकर या मरकर गिरा, पतित हुआ।** उ.—भीषम सर-सज्या पर परयौ—१-२७६।

परलउ, परलय—सज्ञा स्त्री. [सं. प्रलय] **सृष्टि का नाश।** उ.—(क) रान होइ तब परलय होइ।

परला—वि. [हिं. पर+ला] **दूसरी ओर का।**

परली—वि. स्त्री. [हिं. परला] **उस ओर की, दूसरी तरफ की।** उ—तुव प्रताप परली दिसि पहुँच्यौ, कौन बढावै बात—६-१०४।

परलै—सज्ञा पुं. [सं. प्रलय] **प्रलय, सृष्टि-नाश।** उ—चतुरमुख कह्यौ, सॅख असुर स्रुति लै गयौ, सत्यव्रत कह्यौ, परलै दिखायौ—८-१६।

परलोक—संज्ञा पुं [सं.] (१) **दूसरा लोक जैसे स्वर्ग, बैकुंठ।** उ.—राजा कौ परलोक सॅवारौ, जुग-जुग यह चलि आयौ—६-५०। (२) **मृत आत्मा की अन्य स्थिति प्राप्ति।**

परवर—सज्ञा पुं [स. पटोल] **परवल (तरकारी)।** उ.—पोई परवल फाँग फरी चुनि—२३२१।

वि.—**श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान।**

परवरदिगार—सज्ञा पु. [फा] (१) **पालक।** (२) **ईश्वर।**

परवरिश—संज्ञा स्त्री. [फा] **पालन-पोषण।**

परवर्त—संज्ञा पुं [सं. प्रवर्त] **आरंभ, प्रचार।** उ.—विष्नु की भक्ति परवर्त जग मै करी, प्रजा कौ सुख सकल भाँति दीन्हौ—४-११।

परवल—संज्ञा पुं. [सं. पटोल] **एक साग या तरकारी।**

परवश, परवश्य—वि. [सं.] **पराधीन।**

परवा, परवाई—सज्ञा पुं. [हिं. पुर, पुरवा] **मिट्टी का कटोरे की तरह का एक पात्र।**

सज्ञा स्त्री. [स. प्रतिपदा, प्रा. पडिवा] **प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि, पड़वा, पड़िवा।**

संज्ञा स्त्री. [फ़ा] (१) **चिंता, ख्याल।** (२) **भरोसा।**

परवान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) **प्रमाण।** (२) **सत्य या यथार्थ बात।** उ—ऐसे होहु ज्ञु रावरे हम जानति परवान—१०१६। (३) **सीमा, अवधि।**

मुहा.—परवान चढना—**सब सुख भोगना।**

परवानगी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **आज्ञा, अनुमति।**

परवाना—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **आज्ञापत्र।** (२) **पतिंगा।**

परवाल—संज्ञा पु. [सं. प्रवाल] (१) **मूँगा।** (२) **कोंपल।**

परवास—संज्ञा पु. [स. प्रवास] **प्रवास, यात्रा।**

परवाह—संज्ञा स्त्री. [फा. परवा] (१) **चिंता, आशंका।** (२) **ध्यान, ख्याल।** उ—नहि परवाह नंद के ढोटहिं पूरत बेनु धरे—६६८। (ख) प्रिया मन परवाह नाही कोटि आवै जाहिं—२०२१। (३) **आसरा, भरोसा।**

सज्ञा पुं. [स. प्रवाह] **बहने का भाव।**

परवीन—वि. [सं. प्रवीण] **चतुर, कुशल।** उ.—(क) तुम परवीन सबै जानत हौ ताते इह कहि आई—३०१९। (ख) हम जानी ज़ु बिचार पठाए सखा अंग परवीन—३२१७।

परवेख—संज्ञा पुं. [सं. परिवेष] **वर्षा में चंद्रमा के चारो ओर दिखायी पड़नेवाला घेरा, चंद्रमडल।**

परशंसा—संज्ञा स्त्री. [स. प्रशंसा] **बड़ाई।** उ.—सूर करत परशंसा अपनी हारेउ जीति कहावत—३००८

परश—सज्ञा पुं [सं. स्पर्श] **छूना, स्पर्श।**

परशु—संज्ञा पु. [सं.] **अस्त्र जिसके सिरे पर लोहे का अर्द्धचंद्राकार मूल लगता है।**

परशुधर—संज्ञा पुं. [सं.] **परशुधारी, परशुराम।**

परशुराम—सज्ञा पुं [सं] **जमदग्नि के पुत्र जो ईश्वर के छठे अवतार माने जाते है। परशु इनका अस्त्र था।**

परसंग—संज्ञा पुं. [सं. प्रसंग] (१) **बात, वार्ता, विषय।** उ.—तहाँ हुतौ इक सुक कौ अंग। तिहिं यह सुन्यौ सकल परसंग—१-२२६।

परसंसा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रशंसा] **बड़ाई।**

परस—संज्ञा पुं. [स. स्पर्श] **छूना, छूने की क्रिया या भाव, स्पर्श।** उ.—(क) झूठौ सुख अपनौ करि जान्यौ परस प्रिया कै भीनौ—१-६५। (ख) जे पद-पदुम-परस-जल-पावन-सुरसरि-दरस कटत अघ भारे—१-६४।

सज्ञा पुं. [सं. परश] **पारस पत्थर।**

परसत—क्रि. स. [हिं परसना] **स्पर्श करना, छूते ही,**

परसकर। उ.—परसत चोंच तूल उघरत मुख, परत दुःख के कूप—१-१०२।

परसति—क्रि. स. [हिं. परसना] **परोसती है।** उ.—जसुमति हरष भरी लै परसति। जेंवत हे अपनी रुचि सौं अति—३६६।

परसन—संज्ञा पुं. [हिं. स्पर्श] **स्पर्श करने का भाव।**

मुहा.—मुँह परसन आना—**लल्लो-चप्पो की बातें करने आना।** उ.—(क) काहे को मुँह परसन आए जानति हौं चतुराई—१६५७। (ख) ह्याँ आए मुख परसन मेरो हृदय रहति नहि न्यारी—१६६८।

वि. [सं. प्रसन्न] **आनन्दित, खुश।** उ.—(क) गुरु प्रसन्न, हरि परसन होई—६-५। (ख) तबहिं अशीश दई परसन है सफल होउ तुम कामा—१० उ.-६६।

परसना—क्रि. स. [सं. स्पर्श] (१) **छूना।** (२) **छुआना।**

क्रि. स. [स. परिवेषण] **(भोजन) परोसना।**

परसन्न—वि. [हिं. प्रसन्न] **हर्षित, आनन्दित।**

परसन्नता—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रसन्नता] **हर्ष, आनन्द।**

परसपर—क्रि. वि. [सं. परस्पर] **आपस में।** उ.—मार परसपर करत आपु मैं, अति आनन्द भए मन माहिं—५३३।

परसहु—क्रि. स. [हिं. परसना] **भोजन परोसो।** उ.—परसहु बेगि, बेर कत लावति, भूखे सारँगपानी—३६५।

परसा—संज्ञा पुं. [सं. परशु] **फरसा, परशु।**

परसाइ—क्रि. स. [हिं. परसना] **स्पर्श करके, स्पर्श करने से।** उ.—जो मम भक्त के मग मैं जाइ। होइ पवित्र ताहि परसाइ—७-२।

परसाऊँगो—क्रि. स. [हिं. परसाना] **स्पर्श कराऊँगा।** उ.—तुव मिलिबे की साध भुजा भरि उर सौं कुच परसाऊँगो—१६४४।

परसाऊ—क्रि. स [हि. परसना] **स्पर्श कराया, छुआया।** उ.—बामन रूप धरयौ बलि छलि कै, तीनि परग बसुधाऊ। श्रमजल ब्रह्म-कमंडल राख्यौ दरसि चरन परसाऊ—१०-२२१।

परसाए—क्रि. स. [हिं. परसना] **(भोजन) परसवाया, (भोजन) सामने रखवाया।** उ.—(क) महर गोप सब ही मिलि बैठे, पनवारे परसाए—१०-८६। (ख) भाँति-भाँति व्यंजन परसाए—६२४।

परसाद—संज्ञा पुं. [सं. प्रसाद] **देवता का भोग, प्रसाद।** उ.—दियो तब परसाद सबको भयो सबन हुलास—पृ० ३४८ (५७)।

परसादी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रसाद] **देवता का भोग।**

परसाना—क्रि. स [हि. परसना] **स्पर्श कराना।**

क्रि. स. [हि. परसना] **भोजन सामने रखवाना।**

परसायो—क्रि स. [हिं परसाना] **(भोजन) सामने रखवाया।** उ.—पहिले पनवारौ परसायो—२३२१।

परसावत—क्रि. स [हिं. परसाना] **छुआता है।** उ.—नासा सों नासा लै जोरत नैन नैन परसावत—१८६३।

परसावति—क्रि. स. [हि. परसाना] **छुआती है।** उ.—(क) मनहु पन्नगिनि उतरि गगन ते दल पर फन परसावति—१३४५।

परसावै—क्रि. स. [हि परसाना] **स्पर्श करावे।** उ.—सुरसरि जब भुव ऊपर आवै। उनकौ अपनौ जल परसावै—६-६।

परसाल—अव्य. [स. पर+फा. साल] (१) **पिछले साल।** (२) **अगले साल।**

परसि—क्रि. स. [हिं. परसना] (१) **स्पर्श करके, छूकर।** उ.—जे पद-पदुम परसि ब्रजभामिनि सरबस दै, सुत-सदन बिसारे—१-६४। (२) **(शरीर में) मलकर या चुपड़कर।** उ.—धूरि झारि तातौ जल ल्याई, तेल परसि अन्हवाइ—१०-२२६।

क्रि. स.—**(भोजन) परोसकर या सामने रखकर।** उ.—अरु खुरमा सरस सवारे। ते परसि धरे हैं न्यारे—१०-१८३।

परसिद्ध—वि. [स प्रसिद्ध] **विख्यात, प्रसिद्ध।**

परसु—संज्ञा पुं. [सं. परशु] **फरसा, परशु।**

परसुराम—संज्ञा पुं [स. परशुराम] **जमदग्नि ऋषि के पुत्र जो ईश्वर के छठे अवतार माने जाते है। 'परशु' इनका मुख्य शस्त्र था।**

परसैं—क्रि. स [हिं. परसना] **छूते है, स्पर्श करते है।** उ.—कपट-हेत परसैं बकी जननी-गति पावै—१-४।

परसै—क्रि स. [हिं परसना] **स्पर्श करता है।** उ.—

करेंत फन-घात बिष जात उतरात अति, नीर जरि जात, नहिं गात परसै—५५२ ।

परसो—अव्य. [स. परश्वः] (१) **बीते हुए 'कल' से एक दिन पहले।** (२) **आनेवाले 'कल' से एक दिन बाद।**

परसोतम—संज्ञा पुं. [सं. पुरुषोत्तम] (१) **श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति।** (२) **परमेश्वर।**

परसौ—क्रि. स. [हिं परसना] (१) **छुओ, स्पर्श करो।** (२) **निमग्न हो, स्नान करो।** उ.—सहस बार जौ बेनी परसौ, चद्रायन कीजै सौ बार। सूरदास भगवंत-भजन बिनु, जम के दूत खरे है द्वार—२-३।

परसौहाँ—वि. [सं. स्पर्श] **छूनेवाला।**

परस्पर—क्रि. वि. [सं.] **आपस में, एक दूसरे के साथ।** उ—मोहिं देखि सब हँसत परस्पर, दै दै तारी तार—१-१७५

परस्यो, परस्यौ—क्रि. स. [हि. परसना] **स्पर्श किया, छुआ।** उ—दूरि देखि सुदामा आवत, धाइ परस्यौ चरन—१-२०२।

क्रि. स.—(**भोजन**) **सामने रखा।** उ.—नाना बिधि जेंवन करि परस्यौ—पृ. ३३६ (८५)।

परहस्त—संज्ञा पुं.—**एक राक्षस।** उ.—दुर्धर परहस्त-संग आइ सैन भारी। पवन-पूत दानव-दल ताड़े दिसिचारी—६-९६।

परहार—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **आघात, वार, चोट, मार।** उ.—(क) हिरनकसिपु-परहार थक्यौ, प्रहलाद न न नैकु डरै—१-३७। (ख) अस्त्र-सस्त्र-परहार न डरौ—७-२।

परहारि—क्रि. अ [हिं. प्रहारना] (१) **मारो, आघात करो।** (२) **मारने के लिए चलाओ, फेंको।** उ.—बद्यौ असुर, सुरपति संभारि। लै करि बज्र मोहिं परहारि—५-६।

परहेज—संज्ञा पु. [फा.] **बचना, दूर रहना।**

परहेलना—क्रि. स. [सं. प्रहेलना] **तिरस्कार करना।**

परा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **चार प्रकार की वाणियों में पहली।** (२) **ब्रह्मविद्या।**

वि. स्त्री.—(१) **श्रेष्ठ।** (२) **जो सबसे परे हो।**

संज्ञा पुं. [?] **पंक्ति, कतार।**

पराइ—क्रि. अ. [हि. पराना] **भागना।** उ.—कोउ कहति, मोहि देखि द्वारै, उतहिं गए पराइ—१०-२७३।

पराई—वि. स्त्री [हिं. पुं. पराया] **दूसरे की, अन्य व्यक्ति की।** उ.—(क) तुम बिनु और न कोउ कृपानिधि पावै पीर पराई—१-१९५। (ख) सोवत मुदित भयौ सपने मै, पाई निधि जो पराई—१-१४७।

क्रि. अ. [हि. पराना] **भाग गये।** उ.—(क) सुरनि की जीत, असुर मारे बहुत, जहाँ तहँ गए सबही पराई—८-८। (ख) सकुच न आवत घोष बसत की तजि ब्रज गए पराई—३२०८।

पराए—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भागे।** उ.—अंबरीष-हित साप निवारे, व्याकुल चले पराए—१-३१।

पराकाष्ठा—सज्ञा स्त्री. [सं.] **चरम सीमा, हद।**

पराकृत—वि. [सं प्राकृत] **सहज सामान्य (रूप)।** उ.—सूरदास प्रभु होहु पराकृत अस कहि भुज के चिह्न दुरावति—१०-७।

पराक्रम—संज्ञा पुं. [सं.] **बल-पौरुष।**

पराक्रमी—वि. [पराक्रमिन्] **बली, पुरुषार्थी।**

पराग—सज्ञा पुं [सं.] (१) **फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमी रज जिसके फूलों के बीच के गर्भ कोशों में पड़ने से गर्भाधान होता है, पुष्परज।** (२) **एक सुगंधित चूर्ण।** (३) **चंदन।**

परागकेसर—सज्ञा पुं. [सं] **फूलो के पतले सूत्र जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।**

परागना—क्रि. अ. [स. उपराग] **अनुरक्त होना।**

परागी—क्रि. अ. [हि. परागना] **अनुरक्त हुई।** उ.—प्रीति नदी महँ पाँव न बोरयौ दृष्टि न रूप परागी—३३३५।

पराङ्मुख—वि. [स] **विमुख, विरुद्ध।**

पराजय—संज्ञा स्त्री. [स.] **हार।**

पराजित—वि. [सं.] **हारा हुआ, परास्त।**

परात—संज्ञा स्त्री. [सं. पात्र] **ऊँचे किनारे या कडल की काफी बड़ी थाली।**

कि. अ. [हिं. पराना] **भागता है।** उ.—बेद-बिरुद्ध होत कुंदनपुर हंस को अंश काग लै परात-१०-उ.-११।

पराधीन—वि. [सं. पर+आधीन] **परवश, दूसरे के**

अधीन । उ.—पराधीन पर-बदन निहारत मानत मूढ बड़ाई—**१-१६५** ।

परा‍धीनता—संज्ञा स्त्री. [स.] **दूसरे की अधीनता** ।

परान—संज्ञा पुं. [सं. प्राण] **प्राण** । उ.—(क) भीषम धरि हरि कौ उर ध्यान। हरि के देखत तजे परान १-२८० । (ख) कै वह भाजि सिंधु मै डूबी, कै उहिं तज्यौ परान—६-७५ ।

परान‍ा—क्रि. अ. [सं. पलायन] **भागना** ।

परानी—क्रि. अ.स्त्री. [हिं. पराना] **भागी, गयी, लुप्त हुई** । उ.—चिरई चुह-चुहानी चंद की ज्योति परानी रजनी बिहानी प्राची पियरी प्रवान की—१६०६ ।

प्र.—जाति परानी—**भागी जाती हूँ** । उ.—करत कहा पिय अति उताइली मै कहुँ जात परानी—१६०१ ।

पराने—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भाग गये** । उ.—(क) हरि सब भाजन फोरि पराने—१०-३२८ । (ख) कोउ डर डर दिसि-बिदिसि पराने—१० उ.-३१ ।

परान्न—संज्ञा पुं. [सं.] **दूसरे का दिया भोजन** ।

परान्यौ—क्रि. अ. [हिं. पराना] **भागा, भाग गया** । उ.—कागासुर आवत नहिं जान्यौ। सुनि कहत ज्यौ लेइ परान्यौ—३६१ ।

पराभव—संज्ञा पुं. [स.] (१) **हार, पराजय** । (२) **तिरस्कार** । (३) **नाश, विनाश** ।

पराभूत—वि. [स.] (१) **पराजित** । (२) **नष्ट** ।

परामर्श—संज्ञा पुं [स.] (१) **खीचना** । (२) **विवेचन** । (३) **निर्णय** । (४) **स्मृति** । (५) **सलाह, मंत्रणा** ।

परायण, परायन—वि. [स. परायण] (१) **निरत, प्रवृत्त, लीन, तत्पर** । उ.—बहुतक जन्म पुरीष-परायन, सूकर स्वान भयौ—१-७८ । (२) **गया हुआ** ।

सज्ञा पुं.—**शरण का स्थान, आश्रय** ।

परायत्त—वि. [सं.] **परवश , पराधीन** ।

पराया, परार, परारा—वि. [हिं. पर] **दूसरे का बिराना** ।

परारी—वि. स्त्री. [हि. परार] **परायी, दूसरे की** । उ.—सूरदास धृग धृग तिनको है जिनके नहि पीर परारी—पृ. ३३२ (१०) ।

परार्थ—वि. [स.] **जो दूसरे के लिए हो** ।

सज्ञा पुं. —**दूसरे का काम या लाभ** ।

परालब्ध—संज्ञा पुं. [सं. प्रारब्ध] **प्रारब्ध, भाग्य** । उ.—अरु जो परालब्ध सौं आवै । ताही कौ सुख सौं बरतावै —३-१३ ।

पराव—संज्ञा पुं. [हिं. पराना] **भागने की क्रिया या भाव** ।

संज्ञा पुं. [हिं पराया] **दुराव-छिपाव** ।

परावन—संज्ञा पुं. [हिं पराना] **भगदड़, भागड़** । उ.—ग्वाल गए जे धेनु चरावन। तिन्है परयौ बन माँझ परावन—१०५० ।

परावर्तन—संज्ञा पुं [सं.] **लौटना, पलटना** ।

परावा—वि [हि पराया] **दूसरे का, पराया** ।

पराशर, परासर—संज्ञा पुं [स पराशर] **मुनिवर वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र। सत्यवती पर मुग्ध होकर इन्होंने उसका कुमारीत्व भंग किया जिससे व्यास कृष्ण द्वैपायन का जन्म हुआ** ।

पराश्रय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूसरे का सहारा, भरोसा या अवलंब** । (२) **परवशता** ।

पराश्रित—वि. [सं.] (१) **दूसरे के सहारे या भरोसे पर** । (२) **दूसरे के वश में या अधीन** ।

परास—संज्ञा पुं. [स. पलाश] **ढाक, टेसू** ।

परासी—सज्ञा स्त्री. [सं.] **एक रागिनी** ।

परास्त—वि. [सं.] (१) **पराजित** । (२) **दबा हुआ** ।

पराहिं—क्रि. अ. [हिं. पलाना] **भाग जाते हैं, भागते हैं** । उ.—नाम सुनत त्यौ पाप पराहिं। पापी हू बैकुंठ सिधाहिं—६-४ ।

पराह्न—वि. [स.] **दोपहर के बाद का समय** ।

परि—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **छाकर, आच्छादित करके** । उ.—अति बिपरीत तृनावर्त आयौ। बात-चक्र मिस ब्रज ऊपर परि, नद पौरि कै भीतर धायौ—१०-७७ । (२) **गिरकर, लेटकर** । उ. (क) मारग रोकि रह्यौ द्वारै परि पतित-सिरोमनि सूर—४८७ । (३) **निश्चित होकर** । उ.—सूर अधम की कहौ कौन गति, उदर भरे, परि सोए—१-५२ ।

प्र.—परि आई—**पड़ गई है, आदत हो गई है** । उ.—ज्यौ दिनकरहिं उलूक न मानत, परि आई यह टेव—१-१०० ।

उप. [सं] 'चारो-ओर', 'अतिशय', म', पूर्णता' आदि अर्थों की वृद्धि करनेवाला एक उपसर्ग।

परिकर—संज्ञा पुं. [स] (१) पलंग। (२) परिवार। (३) समूह। (४) कमरबंद। (५) एक अर्थालंकार।

परिकरमा—संज्ञा स्त्री. [स. परिक्रमा] प्रदक्षिणा।

परिकरांकुर—संज्ञा पुं [स.] एक अर्थालंकार।

परिकीर्ण—वि. [सं.] (१) विस्तृत। (२) समर्पित।

परिक्रमा—संज्ञा स्त्री. [सं. परिक्रम] मंदिर की फेरी।

परिखना—क्रि. स. [हिं. परखना] जांचना-परखना। क्रि. स [स. प्रतीक्षा] बाट जोहना, राह देखना।

परिगणन—संज्ञा पुं. [स] भली भाँति गणना करना।

परिगणित—वि. [सं] जो गिना जा चुका हो।

परिगह—संज्ञा पुं. [स. परिग्रह] कुटुम्बी, बाल-बच्चे।

परिग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ग्रहण। (२) संग्रह। (३) स्वीकार। (४) विवाह। (५) परिवार। (६) अनुग्रह।

परिचय—संज्ञा पुं. [स.] (१) जानकारी, ज्ञान। (२) लक्षण। (३) व्यक्ति सम्बन्धी जानकारी। (४) जान-पहचान।

परिचर—संज्ञा पुं. [स.] (१) सेवक। (२) सेनापति।

परिचरजा, परिचर्जा, परिचर्या—संज्ञा स्त्री [सं. परिचर्या] (१) सेवा-शुश्रूषा। (२) रोगी की सेवा-टहल।

परिचायक—संज्ञा पुं [स.] परिचय देनेवाला।

परिचार—संज्ञा पुं [स.] सेवा-शुश्रूषा, टहल।

परिचारक—संज्ञा पुं. [सं.] सेवक, नौकर।

परिचारना—क्रि. स. [सं. परिचारण] सेवा करना।

परिचारक—संज्ञा पुं [स.] सेवक, टहलुआ।

परिचारिका—संज्ञा स्त्री. [स.] सेविका, टहलनी।

परिचारी—वि. [सं. परिचारिन्] सेवक, चाकर।

परिचालक—संज्ञा पुं [सं.] (१) चलाने या गति देने वाला। (२) सचालक।

परिचालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संचालन। (२) कार्य-निर्वाह।

परिचालित—वि. [सं.] संचालित।

परिचित—वि. [सं.] (१) ज्ञात, जाना-बूझा। (२) जिसको जानकारी हो, अभिज्ञ। (३) मुलाकाती।

परिचो—संज्ञा स्त्री. [सं. परिचय] ज्ञान, परिचय।

परिच्छद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) खोल, गिलाफ आदि ढकनेवाली वस्तु। (२) वस्त्र, पोशाक। (३) राजचिन्ह।

परिच्छन्न—वि [स.] (१) ढका हुआ। (२) वस्त्र-सज्जित।

परिच्छा—संज्ञा स्त्री. [स. परीक्षा] परीक्षा

परिच्छिन्न—वि. [स.] (१) मर्यादित। (२) विभाजित।

परिच्छेद—संज्ञा पुं [स] (१) ग्रंथ का एक स्वतंत्र भाग। (२) सीमा, हद। (३) विभाग। (४) निश्चय।

परिछन—संज्ञा पुं. [हि. परछन] विवाह की एक रीति जिसमें वर के द्वार पर आते ही आरती करते हैं।

परिछाहीं—संज्ञा स्त्री. [हि. परछाईं] छाया, परछाईं।

परिजंक—संज्ञा पुं. [स पर्यंक] पलँग।

परिजटन—संज्ञा पु. [स पर्यटन] टहलना, घूमना।

परिजन—संज्ञा पु. बहु. [स.] (१) परिवार, भरण-पोषण के लिए आश्रित व्यक्ति। (२) सेवक, अनुचर।

परिजात—वि. [स.] उत्पन्न, जन्मा हुआ।

परिज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] संशयरहित बुद्धि।

परिज्ञात—वि. [सं.] निश्चित रूप से ज्ञात।

परिज्ञान—संज्ञा पुं. [सं.] पूर्ण निश्चयात्मक ज्ञान।

परिणत—वि. [स.] (१) नम्र, नत। (२) रूपांतरित, परिवर्तित। (३) पक्का हुआ (४) प्रौढ़, पुष्ट।

परिणति—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) झुकाव। (२) रूपांतर होना। (३) परिपाक। (४) प्रौढ़ता। (५) अंत।

परिणय—संज्ञा पु. [स] विवाह।

परिणाम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) रूपांतर, विकृति। (२) विकास। (३) अवसान, अंत। (४) फल, नतीजा।

परिणामदर्शी—वि. [स] दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी।

परिणीत—वि. [स.] (१) विवाहित (२) समाप्त।

परिणेता—संज्ञा पुं. [स परिणेतृ] पति, स्वामी।

परितच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] जिसको स्पष्ट देखा जा सके।

परितप्त—वि. [स.] (१) तपा हुआ। (२) दुखित।

परिताप—संज्ञा पु. [स.] (१) आंच, ताव। (२) दुख, क्लेश। (३) पछतावा। (४) भय। (५) कँपकपी।

परितापी—वि. [सं.] (१) दुखी। (२) सतानेवाला।

परितुष्ट—वि. [सं.] बहुत संतुष्ट और प्रसन्न।

परितुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संतोष। (२) प्रसन्नता।

परितोष—संज्ञा पुं. [स.] (१) संतोष। उ.—सूरदास अब

क्यो त्रिसरत है, मधु-रिपु को परितोप—पृ० ३३२ (१८)। (२) **हर्ष**।

परितोषक—वि. [सं.] **पारितोष देनेवाला**।

परितोषण, परितोषन—संज्ञा पुं. [स. परितोषण] **संतोष**। उ.—मानापमान परम परितोपन सुस्थल थिति मन राख्यो—३०१४।

परितोषी—वि. [सं. परितोषिन्] **सतोषी**।

परितोस—संज्ञा पुं [सं. परितोष] **सतोष**।

परित्यक्त—वि. [सं.] **त्यागा हुआ**।

परित्यक्ता—वि. [सं. परित्यक्त] **त्यागी हुई**।

परित्यजन—संज्ञा पुं [स.] **त्यागने की क्रिया**।

परित्याग—संज्ञा पुं. [स.] **त्यागने का भाव**।

परित्राण—संज्ञा पुं. [स.] **बचाव, रक्षा**।

परित्राता—सज्ञा पुं. [स. परित्रातृ] **रक्षक**।

परिधन, परिधान—सज्ञा पुं. [स. परिधान] (१) **धोती आदि नीचे पहनने का वस्त्र**। (२) **वस्त्र**। उ—(क) खान पान परिधान राज सुख जो कोउ कोटि लड़ावै—२७१०। (ख) खान-पान-परिधान मैं (रे) जोबन गयौ सब बीति—१-३२५।

परिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घेरा**। (२) **दायरे की रेखा**। (३) **मंडल, परिवेश**। (४) **कक्षा**। (५) **वस्त्र**।

परिनय—संज्ञा पुं. [स. परिणय] **विवाह**।

परिनिर्वाण—संज्ञा पु. [स] **पूर्ण मोक्ष**।

परिनौत—संज्ञा स्त्री. [हिं. परनवना] **प्रणति, प्रणाम, नमस्कार**। उ.—नाते तुमकौ करत दंडौत। अरु सब नरहूँ कौ परिनौत—५-४।

परिपक्व—वि. [स.] (१) **खूब पका हुआ**। (२) **अच्छी तरह पचा हुआ**। (३) **पूर्ण विकसित, प्रौढ़**। (४) **पूर्ण अनुभवी**। (५) **निपुण, प्रवीण**।

परिपाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पकने का भाव**। (२) **पचने का भाव**। (३) **प्रौढ़ता, पूर्णता**। (४) **अनुभव**। (५) **निपुणता, प्रवीणता**। (६) **परिणाम, फल**।

परिपाटि, परिपाटी—सज्ञा स्त्री. [सं. परिपाटी] (१) **क्रम, सिलसिला**। (२) **प्रणाली, रीति, चाल, ढंग, नियम**। उ.—(क) बदन उघारि दिखायौ अपनौ नाटक की परिपाटी—१०-२५४। (ख) पहिली परिपाटी चलौ—१०१९। (ग) वै सुफलकसुत ए सखी ऊधौ मिली एक परिपाटी—३०५६।

परिपालन—संज्ञा पुं. [स] (१) **रक्षा करना, बचाना**। उ.—गाए सूर कौन नहिं उबरयौ, हरि परिपालन पन रे—१-६६। (२) **रक्षा, बचाव**।

परिपुष्ट—वि. [सं.] **बहुत हृष्ट पुष्ट**।

परिपूरक—वि. [सं.] (१) **लबालब भर देनेवाला**। (२) **धन-धान्य से पूर्ण करनेवाला**। (३) **संपूर्ण**।

परिपूरण, परिपूरन, परिपूर्ण—वि. [स. परिपूर्ण] (१) **परिपूर्ण, खूब भरा हुआ, लबालब**। उ.—(क) ऐसे प्रभु अनाथ के स्वामी। दीन-दयाल, प्रेम-परिपूरन, सब घट अंतरजामी—१-१६०। (ख) अहि के गुन इनमे परिपूरण यामे कछू न पावत—३००६। (२) **पूर्ण तृप्त**। (३) **समाप्त या सपूर्ण किया हुआ**।

परिभव, परिभाव—सज्ञा पुं. [सं.] **अनादर, अपमान**।

परिभापक—संज्ञा पु. [सं.] **निंदा करनेवाला**।

परिभाषण—संज्ञा पु [सं] (१) **निंदापूर्ण उपालंभ**। (२) **फटकार**। (३) **भाषण, बातचीत**। (४) **नियम**।

परिभाषा—सज्ञा स्त्री. [स.] (१) **स्पष्ट कथन या भाषण**। (२) **वस्तु या पदार्थ की व्याख्या-विशेषता-युक्त कथन**। (३) **निर्दिष्ट अर्थ सूचक विशिष्ट शब्द**। (४) **कथन जो पारिभाषिक शब्दों में हो**। (५) **निंदा**।

परिभाषी—सज्ञा पुं. [स परिभाषिन्] **भाषणकर्ता**।

परिभुक्त—वि [सं.] **जो काम में आ चुका हो**।

परिभ्रमण—सज्ञा पं. [स] (१) **घेरा**। (२) **घूमना-फिरना**।

परिमल—सज्ञा पुं [स] **सुवास, सुगंध**। उ.—(क) बीना झाँझ पखाउज-आउज, और राजसी भोग। पुहुप-प्रजंक परी नवजोबनि, सुख-परिमल-संजोग—९-७५। (ख) चोवा चंदन अगर कुमकुमा परिमल अग चढायो—१० उ-६५।

परिमाण, परिमान—सज्ञा पुं. [स. परिमाण] (१) **मान, विस्तार**। (२) **घेरा**।

परिमार्जन—सज्ञा पुं. [स.] **अच्छी तरह धोना, माँजना**।

परिमार्जित—वि. [सं] (१) **माँजा हुआ**। (२) **परिष्कृत**।

परिमित—वि. [सं.] (१) **नपा तुला हुआ**। (२) **उचित मात्रा या परिमाण में**। (३) **कम, थोड़ा, सीमित**।

परिमिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नाप, तोल, सीमा।** (२) **मान-मर्यादा, इज्जत।** उ.—परिमिति गए लाज तुमही को हँसिनि व्याहि काग लै जाइ—१० उ.-६५।

परिमुक्त—वि. [सं.] **पूर्ण स्वाधीन।**

परियंक—संज्ञा पुं [स. पर्यंक] **पलँग।**

परियंत—अव्य. [स. पर्यंत] **लौं, तक।**

परिरंभ, परिरभण, परिरंभन—संज्ञा पुं. [सं. परिरंभण] **गले या छाती से लगाना, आलिंगन।** उ.—(क) फूले फिरत अजोध्यावासी, गनत न त्यागत चीर। परिरंभन हँसि देत परस्पर, आनन्द नैननि नीर—९-१९। (ख) अनुनय करत बिबस बोलत है दै परिरम्भण दान—२०३१।

परिरंभना—क्रि. स [स. परिरभ+ना] **आलिंगन करना।**

परिलेखना—क्रि. स. [सं परिलेख+ना] **समझना, मानना, ख्याल करना।**

परिवर्त-संज्ञा पुं. [सं.] (१) **घुमाव, फेरा।** (२) **विनिमय।**

परिवर्तक—संज्ञा पुं. [स] (१) **घूमने-फिरनेवाला।** (२) **घुमाने-फिरानेवाला।** (३) **विनिमय करनेवाला।**

परिवर्तन—संज्ञा पुं. [स] (१) **घुमाव, फेरा।** (२) **विनिमय।** (३) **बदलने की क्रिया या भाव।** (४) **काल या युग की समाप्ति।**

परिवर्तनीय—वि. [स] **जो परिवर्तन-योग्य हो।**

परिवर्तित—वि. [स.] **बदला हुआ, रूपांतरित।**

परिवर्ती—वि [सं. परिवर्तिनी] (१) **परिवर्तनशील।** (२) **विनिमय करनेवाला।** (३) **घूमने-फिरने के स्वभाव वाला।**

परिवर्द्धन—संज्ञा पुं. [स.] **बहुत वृद्धि।**

परिवा—संज्ञा स्त्री [स प्रतिपदा, प्रा पड़िवआ] **पक्ष की पहली तिथि।** उ.—परिवा सिमिटि सकल ब्रजवासी चले जमुन जलन्हान—२४४५।

परिवाद—संज्ञा पुं. [स.] (१) **आवरण।** (२) **तलवार की म्यान।** (३) **कुटुंब, परिवार।** (४) **समान वस्तुओं का समूह।**

परिवार, परिवारा—संज्ञा पुं [स. परिवार] **कुटुंब, परिवार।** उ.—और बहुत ताकौ परिवारा। हरि-हलधर मिलि सबकौ मारा—४९९।

परिवेश, परिवेष—संज्ञा पुं. सं.] (१) **घेरा, परिधि।** (२) **वर्षा में चंद्र या सूर्य के चारों ओर बननेवाला मंडल।** (३) **परकोटा।**

परिव्राज, परिव्राजक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सन्यासी।** (२) **सदा भ्रमण करनेवाला साधु।**

परिशिष्ट—वि. [स.] **बचा या छूटा हुआ।**

संज्ञा पुं.—**पुस्तक का वह भाग जो विषय से संबद्ध होता हुआ भी, मुख्य भाग में न दिया जाकर, अंत में दिया जाय।**

परिशीलन—संज्ञा पुं. [स.] **मननपूर्वक अध्ययन।**

परिश्रम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रम, उद्यम।** (२) **थकावट।**

परिश्रमी—वि. [हि परिश्रम] **जो बहुत श्रम करे।**

परिश्रांत—वि. [स.] **श्रमित, थका हुआ।**

परिषत्, परिषद्—संज्ञा स्त्री. [सं] **सभा, समाज।**

परिषद्—संज्ञा पुं. [सं] **सदस्य, सभासद।**

परिषेचन—संज्ञा पु. [सं.] **सींचना।**

परिष्कार—संज्ञा पु [स] (१) **संस्कार।** (२) **स्वच्छता।** (३) **आभूषण।** (४) **शोभा।** (५) **सजावट।**

परिष्कृत—वि. [स.] (१) **संस्कृत।** (२) **सजाया हुआ।**

परिसंख्या—संज्ञा स्त्री. [स.] **एक अर्थालंकार।**

परिस्तान—संज्ञा पु. [फा.] (२) **परियों का लोक।** (२) **सुन्दर स्त्रियों का समाज या जमघटा।**

परिस्थिति—संज्ञा स्त्री. [स.] **स्थिति, अवस्था।**

परिहँस—संज्ञा पुं. [सं. परिहास] (१) **ईर्ष्या।** (२) **उपहास।**

परिहरण—संज्ञा पु [स] (१) **छीनना।** (२) **त्याग।**

परिहरना—क्रि. स [सं परिहरण] **त्यागना, छोड़ना।**

परिहरि—क्रि. स. [हि. परिहरना] **त्यागकर, छोड़कर, तजकर।** उ.—सूर पतित-पावन पद-अंबुज, सो क्यों परिहरि जाउँ—१-१२८।

परिहरै—क्रि. स. [हिं परिहरना] **छोड़ता है, त्यागता है।** उ.—(क) भक्ति-पंथ कौं जो अनुसरै। सुत-कलत्र सौं हित परिहरै—२-२०। (ख) काम-क्रोध-लोभहिं परिहरै—३-१३।

परिहरौ—क्रि. स. [हिं. परिहरना] **त्याग दो, छोड़ो, तजो।** उ.—तब हरि कह्यौ, टेक परिहरौ'' ···। अहंकार चित तैं परिहरौ—१-२६१।

परिहस—संज्ञा पुं. [सं. परिहास] **दुख, खेद**। उ.—(क) परिहस सूल प्रबल निसि-बासर, तातैं यह कहि आवत। सूरदास गोपाल सरनगत भएँ न को गति पावत—१-१८१। (ख) कंठ बचन न बोलि आवै, हृदय परिहस भीन—३४५१।

संज्ञा पुं. [सं. परिहास] (१) **हँसी, दिल्लगी**। (२) **खिलवाड़**। उ.—रावन से गहि कोटिक मारौं। जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तौ यह परिहस सारौं—६-१०८।

परिहार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दोष, अनिष्ट आदि का निवारण**। (२) **उपचार**। (३) **त्याग**। (४) **अनुचित कर्म का प्रायश्चित (नाटक)**। (५) **तिरस्कार**।

संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **आघात, प्रहार**। उ.—चक्र परिहार हरि कियौ—१० उ.-३५।

परिहारक—वि. [सं.] **परिहार करनेवाला**।

परिहारा—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **नाश, वध, आघात**। उ.—याकी कोख औतैरे जो सुत करै प्रान-परिहारा—१०-४।

परिहारी—वि. [सं.] **छीनने या त्यागनेवाला**।

परिहार्य—वि. [सं.] **जो परिहार-योग्य हो**।

परिहास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हँसी-दिल्लगी**। (२) **खेल**।

परिहै—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ेगा**।

मुहा.—फँग परिहै—**मेरे हाथ आयगा, मेरे चंगुल या फंदे मे फँसेगा**। उ.—दूरि करौ लँगराई वाकी मेरे फँग जो परिहै—१२६४। शिर परिहै—**सिर पर पड़ेगी या बीतेगी**। उ.—सूर क्रोध भयो नृपति काके शिर परिहै—२४७४।

परी—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **गिरीं**। उ.—(क) रोवति धरनि परी अकुलाइ—५४७। (ख) पाइ परी जुवती सब—७६८।

प्र.—मोहि परी—**मोहित हो गयीं**। उ.—संग की सखी स्याम सन्मुख भई, मोहि परी पसु-पाल सो—८०४।

परी—संज्ञा स्त्री [फा.] (१) **कल्पित सुन्दर स्त्री जो पंखों के सहारे उड़ती मानी गयी है**। (२) **परम सुन्दरी**।

क्रि. अ. [हिं. पड़ना] (१) **उपस्थित हुई, (दुखद घटना या अवस्था) घटित हुई, पड़ी**। उ.—(क) जे जन सरन भजे बनवारी। ते ते राखि लिए जग-जीवन, जहँ जहँ बिपति परी तहँ टारी—१-२२। (ख) सूर परी जहँ बिपति दीन पर, तहाँ बिघन तुम टारे—१-२५।

प्र.—समुझी न परी—**समझ में नहीं आई**। उ.—अपनै जान मैं बहुत करी। कौन भाँति हरि-कृपा तुम्हारी, सो स्वामी, समुझी न परी—१-११५। गरे परी **अनचाही, अनिच्छित**। उ.—सूरदास गाहक नहि कोऊ दिखियत गरे परी—३१०४।

परीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **परीक्षा करने या लेनेवाला**।

परीक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **देख-भाल, जाँच-पड़ताल**।

परीक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देखना-भालना, समीक्षा**। (२) **योग्यता आदि का इम्तहान**। (३) **अनुभव के लिए प्रयोग**। (४) **प्रमाण द्वारा निर्णय**।

परीक्षित—वि. [सं.] **जिसकी जाँच या परीक्षा हुई हो**।

संज्ञा पुं.—**अर्जुन का पौत्र और अभिमन्यु का पुत्र। इन्हीं के राज्य काल में द्वापर का अंत और कलियुग का आरंभ माना जाता है। तक्षक के डसने से परीक्षित की मृत्यु हुई थी। जनमेजय इसी का पुत्र था**।

परीख—संज्ञा स्त्री [हिं. परख] **परख, जाँच**।

परीखना—क्रि. स. [सं. परीक्षण] **जाँचना परखना**।

परीच्छित, परीछित—संज्ञा पुं. [सं. परीक्षित] **अभिमन्यु का पुत्र जिसकी रक्षा श्रीकृष्ण ने गर्भ में ही की थी**।

परीछम—संज्ञा पुं. [हिं. परी + छम] **पैर का एक गहना**।

परीछा—संज्ञा स्त्री [सं. परीक्षा] **परीक्षा**।

परीजाद—वि. [फा.] **बहुत सुन्दर**।

परीजो—क्रि. अ. [हिं. पड़ना] **पड़ना, गिरना**। उ.—सूरदास प्रभु हमरे कोते नँदनंदन के पाँइ परीजो—१० उ.-९५।

परुख, परुष—वि. [सं. परुष] (१) **कठोर, सख्त**। (२) **अप्रिय, कटु**। (३) **निष्ठुर, निर्दय**।

परुखाई, परुषाई—संज्ञा स्त्री [हिं. परुष] **कड़ापन**।

परुषता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **कठोरता, कड़ापन**। (२) **अप्रियता, कर्कशता, कटुता**। (३) **निर्दयता**।

परुषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कठोरपन**। (२) **निर्दयपन**।

पहतना—क्रि. स. [सं. प्रखेट, प्रा. पहेट] **पीछा करना**।

क्रि. स. [देश] **धार को रगड़कर तेज करना**।

पहन—संज्ञा पुं. [हि. पाहन] **पत्थर, पाषाण**।

पहनना—क्रि. स. [सं. परिधान] **(वस्त्राभूषण) धारण करना**।

पहनाई—संज्ञा स्त्री [हिं. पहनना] **पहनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी**।

पहनाना—क्रि. स. [हिं पहनना] **दूसरे को वस्त्राभूषण आदि धारण कराना**।

पहरावन, पहरावनि, पहरावनी—संज्ञा स्त्री. [हिं पहरना] **वे वस्त्र जो शुभ अवसर पर या प्रसन्न होकर छोटों को दिये जायँ**। उ.—नीलांबर पहरावन पाई सन्मुख क्यौ न चहौ—१६६६।

पहरावा—संज्ञा पु. [हि पहनावा] (१) **पोशाक**। (२) **सिरोपाव**। (३) **विशेष उत्सव के वस्त्र**। (४) **वस्त्र पहनने का ढंग**।

पहरावैनी—वि. [हि. पहरावनी] **पहनने या पहनानेवाली**। उ.—जय, जय, जय, जय माधवबेनी। ···। जा

पेज १०७४ के बाद १०७५ के बजाय भूल से १०७३ पृष्ठ संख्या पड़ गई है। इस प्रकार पेज १०९६ तक दो-दो पृष्ठ बढ़ाकर पढ़े। १०६६ के बाद से पृष्ठ संख्या ठीक है।

शब्दों का क्रम सब पेजों मे ठीक है।

—प्रकाशक

बिरमावत जेते आवत कारे।

(२) **जन्म, समय, युग**। उ.—अंकुरित पुन्य फूले पाछिले पहर के—१०-३४।

क्रि. स. [हिं. पहरना] **पहनकर**। उ.—नृपति के रजक सो भेट मग मे भई, कह्यौ, दै बसन हम पहर जाही—२५८४।

पहरक—संज्ञा पुं [हिं. पहर+एक] **एक पहर**। उ.—हौ मरि एक कहौ पहरक मे वै छिन माँझ अनेक—३४६६।

पहरना—क्रि. स. [हिं. पहनना) **(वस्त्रादि) पहनना**।

पहरा—संज्ञा पुं. [हिं. पहर] (१) **चौकसी का प्रबन्ध, चौकी**। (२) **रखवाली**। (३) **चौकीदार का कार्य-काल**। (४) **चौकीदार की गश्त**। (५) **हिरासत, हवालात**। (६) **समय, जमाना**।

संज्ञा पुं. [हिं. पाँव+र.=पौरा] **आगमन का शुभ-अशुभ फल या प्रभाव, पौर**।

पहराना—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाना**।

पहलवान होने का भाव या व्यवसाय।

पहला—वि [सं. प्रथम, प्रा. पहिलो] **प्रथम, अव्वल**।

पहलू—संज्ञा पु [फा] (१) **बगल, पार्श्व** (२) **दाहिना या बाँया भाग**। (३) **करवट, दिशा**। (४) **आसपास, पड़ोस**। (५) **कटाव, पहल**। (६) **विषय या प्रसंग का कोई अंग**। (७) **संकेत, गूढ़ाशय, संकेतार्थ**।

पहले—अव्य. [हिं. पहला] (१) **आरंभ में**। (२) **स्थिति स्थान या कालक्रम में प्रथम**। (३) **पूर्व या विगत काल में**।

पहलेपहल—अव्य. [हिं. पहला] **सबसे पहले**।

पहलौठा—वि. [हिं. पहला+औठा] **पहला लडका**

पहलौठी—संज्ञा स्त्री [हिं. पहलौठा] **प्रथम प्रसव**।

पहाड़—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] (१) **पर्वत, गिरि**।

मुहा.—पहाड़ उठाना—(१) **भारी काम लेना**। (२) **भारी काम करना**। पहाड़ कटना—(१) **भारी काम हो जाना**। (२) **संकट कटना**। पहाड़ काटना—(१) **भारी काम कर लेना**। (२) **संकट से पीछा छुड़ाना**। पहाड़

टूटना (टूट पड़ना)—**अचानक महान संकट आ जाना**। पहाड़ से टक्कर लेना—**बहुत बड़े से बैर ठानना या मुकाबला करना**।

(२) **बड़ा ढेर या समूह**। (३) **बहुत भारी चीज**। (४) **वह जिसका काटना, बिताना या हल करना बहुत कठिन हो जाय**। (५) **बहुत कठिन काम**।

पहाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्तार] **गुणनसूची**।

पहाड़िया, पहाड़ी—वि. [हिं. पहाड़] (१) **पहाड़ पर रहने या होनेवाला**। (२) **पहाड़-संबंधी**।

संज्ञा स्त्री.—(१) **छोटा पहाड़**। (२) **गाने की एक धुन**।

पहार—संज्ञा पुं. [हि. पहाड़] **पहाड़, पर्वत**। उ —मै जु रह्यौ राजीव-नैन दुरि, पाप-पहार-दरी—१-१३०।

पहिचान—संज्ञा स्त्री. [हि. पहचान] **परिचय, पहचान**।

पहिचानत—क्रि. स. [हि. पहचानना] (१) **किसी वस्तु या व्यक्ति का गुण-दोष, योग्यता-विशेषता आदि की जानकारी रखता है**। उ.—सब सुखनिधि हरिनाम महामनि, सो पाएहु नाही पहिचानत। परम कुबुद्धि, तुच्छ रस-लोभी, कौड़ी लगि मग की रज छानत—१-११४। (२) **परिचय मानता है, जान-पहचान दिखाता है**। उ.—चाड़ सरै पहिचानत नाहिंन प्रीतम करत नए—२६६३।

पहिचानना—क्रि. स. [हि. पहचानना] **जानना, समझना, पहचानना**।

पहिचानि—क्रि. स. [हिं. पहचानना] (१) (**किसी वस्तु या व्यक्ति के) गुण-दोष की परीक्षा करके**। उ.—एकनि कौ जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैकु न तूठे। तब पहिचानि सबनि कौ छाँड़े, नखसिख लौ सब झूठे—१-१७७।

(२) **व्यक्ति अथवा वस्तु-विशेष का गुण-दोष जानो-पहचानो**। उ.—रे मन आपु को पहिचानि। सब जनम तै भ्रमत खोयौ, अजहुँ तौ कछु हानि—१-७०।

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रत्यभिज्ञान या परिचयन, हि. पहचान] (१) **पहचानने की क्रिया, वृत्ति या भाव**। (२) **जान पहचान, परिचय**। उ.—जौपै राखत हौ पहिचानि—२७१०।

पहिचानी—क्रि. स. [हिं. पहचानना] **पहचान ली, जान लिया, चीन्ह लिया**। उ.—बैन सुनत माता पहिचानी, चले घुटुरुवनि पाइ—१०-१११।

संज्ञा स्त्री. [हि. पहचान] **जान-पहचान, परिचय**। उ.—बिमुखनि सौ रति जोरत दिन-प्रति, साधुनि सौं न कबहूँ पहिचानी—१-१४६।

पहिचानै—क्रि. स. [हिं. पहचाना] **समझ-बूझ सकता है जान सकता है**। उ.—सूरदास यह सकल समग्री प्रभु प्रताप पहिचानै—१-४०।

पहिचान्यौ—क्रि. स. [हि. पहचानना] **जाना-बूझा, पहचाना**। उ.—कौन भाँति तुमको पहिचान्यौ—१० उ. —२७।

पहित, पहिति, पहिती—संज्ञा स्त्री. [स. प्रहित = सालन] **पकी या चुरी हुई दाल**।

पहिऑं, पहियाँ—अव्य. [हि पहँ] **समीप, पास, पहँ**। उ.—परम चतुर चली हरि पहिऑं—२२४२। (२) **से, द्वारा**। उ.—यह सुख तीनि लोक मै नाही, जो पाए प्रभु पहियाँ—६-१६।

पहिया—संज्ञा पुं. [सं. पथ्य, प्रा० पह्य, पहिय] (१) **चक्कर, चक्र, चाका**। (२) **चक्कर**।

पहिरना—क्रि. स. [हि. पहनना] (**वस्त्रादि) पहनना**।

पहिराइ—संज्ञा स्त्री. [हि. पहरावनी] **प्रसन्न होकर छोटों को दिये जानेवाले वस्त्रादि**। उ.—नद कौं सिरपाव दीनौ गोप सब पहिराइ—५८६।

पहिराऊँ—क्रि. स [हि. पहराना] (**कपड़े अथवा गहने आदि) शरीर पर धारण करता हूँ, पहनता हूँ**। उ.—पाटंबर-अंबर तजि, गूदरि पहिराऊँ—१-१६६।

पहिराना—क्रि. स. [हि. पहनाना] **वस्त्रादि धारण करना**।

पहिरावत—क्रि. स. [हिं. पहिरावना] (१) **वस्त्रादि दान देते है**। उ.—(क) नद उदार भए पहिरावत—१०-३८—(२) **पहनाते हैं**। उ.—बनमाला पहिरावत स्यामहिं—४२६।

पहिरावन पहिरावनि, पहिरावनी, पहिरावने—संज्ञा पुं. [हि. पहनावा] **प्रसन्न होकर अथवा विशेष अवसर पर दिये गये पाँचों कपड़े**। उ.—(क) दियौ सिरपाँव नृप-राव नै महर कौ आप पहिरावने सब दिखाए—५८७।

(ख) देन उरहनौ तुमकौं आई। नीकी पहिरावनि हम पाई—७६६। (ग) रंग रंग पहिरावनि दई, अति बने कन्हाई—२४४१। (घ) पहिरावन जो पाइहै सो तुमहूँ दैहै—२५७५।

पहिरावौ—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **पहनाओ, धारण कराओ**। उ.—मेरे कहै बिप्रनि बुलाइ, एक सुभ घरी धराइ, बागे चीरे बनाइ, भूषन पहिरावौ—६-६५।

पहिरि—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहनकर, (कपड़ा, गहना आदि) शरीर पर धारण करके**। उ.—अब मै नाच्यौ बहुत गुपाल। काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कठ बिषय की माल—१-१५३।

पहिरे—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहने है, धारण किये हैं**। उ.—पहिरे राती चूनरी, सेत उपरना सोहै (हो)—१-४४।

पहिरै—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहने, धारण करे**। उ.—कच खुबि ऑधरि काजर कानी नकटी पहिरै बेसरि—३०२६।

पहिरौ—क्रि. स. [हिं. पहनना] **पहनो, धारण करो**। उ.—मेरे कहै, आइ पहिरौ पट—७८७।

सज्ञा पुं [हि. पहरा] **पहरा**।

पहिल—वि. [हि. पहला] **प्रथम, पहला**।

क्रि. वि [हि पहले] **आरंभ में, पहले**।

पहिला—वि. [हि. पहला] (१) **प्रथम**। (२) **पहली बार ब्याई हुई**।

पहिले, पहिलैं—क्रि वि [हिं. पहला] **आरंभ में, सर्व-प्रथम, शुरू में**। उ—मन-ममता रुचि सौ रखवारी, पहिलै लेहु निबेरि—१-५१।

पहिलो—वि. [हि. पहला] **प्रथम, पहला**।

पहीति—संज्ञा स्त्री [हि. पहिती] **पकी हुई दाल**।

पहीलि, पहीली—वि. [हि पहला] **पहली, प्रथम**।

पहुँच—सज्ञा स्त्री. [हिं. प्रभूत, प्रा. पहूच] (१) **किसी स्थान तक जा पाने की शक्ति या क्रिया**। (२) **फैलाव, बिस्तार**। (३) **पैठ, प्रवेश, रसाई**। (४) **प्राप्ति-सूचना**। (५) **समझने की शक्ति या योग्यता**। (६) **जानकारी या अभिज्ञता**।

पहुँचना—क्रि अ. [हि. पहुँच] (१) **किसी स्थान में जाना या जा पाना**।

मुहा—पहुँचा हुआ—(१) **सिद्ध**। (२) **बड़ा जानकार**। (३) **बहुत चतुर और काँइयाँ**।

(२) **फैलना, विस्तृत होना**। (३) **परिवर्तित स्थिति या दशा को प्राप्त होना**। (४) **घुसना, पैठना, समाना**। (५) **जानना समझना**। (६) **जानकारी रखना**। (७) **मिलना, प्राप्त होना**। **अनुभव में आना**। (८) **समकक्ष या तुल्य होना**।

पहुँचा—संज्ञा पुं. [हि. पहुँचना अथवा स प्रकोष्ठ] **कुहनी से नीचे की बाहु, कलाई**। उ.—पहुँचा कर सों गहि रहे जिय संकट मेल्यो—२५७७।

पहुँचाइ—क्रि. स. [हिं. पहुँचाना] **पहुँचा कर**।

प्र०—गयौ पहुँचाइ—**पहुँचा गया है**। उ.—काली आपु गयौ पहुँचाइ—५८२।

पहुँचाना—क्रि. स. [हि. पहुँचना] (१) **एक स्थान से दूसरे को ले जाना**। (२) **किसी के साथ जाना**। (३) **विशेष स्थिति या अवस्था तक ले जाना**। (४) **घुसाना, पैठाना**। (५) **प्राप्त कराना**। (६) **अनुभव कराना**। (७) **समान या समकक्ष कर देना**।

पहुँचायो—क्रि. स. [हि. पहुँचाया] **पहुँचा दिया है**। उ.—कर गहि खडग कह्यौ देवकि सौं बालक कहँ पहुँचायौ—सारा. ३७६।

पहुँचावै—क्रि. स. [हि. पहुँचाना] **दूसरे स्थान को ले जाय या पहुँचा दे**। उ.—(क) सूरदास की बीनती कोउ लै पहुँचावै—१-४। (ख) सूर आप गुजरान मुसाहिब, लै जवाब पहुँचावै—१-१४२।

पहुँचिया, पहुँची—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पहुँचा, स्त्री. पहुँची] **कलाई में पहनने का एक गहना जिसमें दाने गुँथे रहते हैं**। उ.—(क) पकज पानि पहुँचिया राजै—१०-११७। (ख) पहुँची करनि, पदिक उर हरि-नख, कठुला कंठ मंजु गजमनियाँ—१०-१०६।

पहुँचै—संज्ञा पुं. सवि [हि पहुँचा] **पहुँचे में**। उ.—चित्रित बाँह पहुँचिया पहुँचै, हाथ मुरलिया छाजै—४५१।

क्रि. अ. [हि. पहुँचना] **आकर उपस्थित हो**।

पहुँच्यौ—क्रि. अ. [हिं. पहुँचना] **पहुँचा, उपस्थित हुआ, गया।** उ.—उडत उड़त सुक पहुँच्यौ तहाँ। नारि ब्यास की बैठी जहाँ—१-२२६।

पहुनई—संज्ञा स्त्री. [हिं पहुनाई] **पाहुन होकर आने का भाव।** उ.—चारिहु दिवस आनि सुख दीजै सूर पहुनई सूतर—२७०८। (२) **अतिथि-सत्कार।**

पहुना—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुन] **अतिथि, पाहुन।**

पहुनाई—संज्ञा स्त्री. [हिं पहुना + ई प्रत्य०] (१) **आगत व्यक्ति का भोजन-पान से सत्कार, अतिथि-सत्कार।** उ.—(क) हम करिहै उनकी पहुनाई—१०४७। (ख) बहुतै आदर करति सबै मिलि पहुने की करिये पहुनाई—१२८६।

मुहा—करौ पहुनाई—**खबर लूँगी, अच्छी तरह पीटूँगी।** उ—सोंटिनि मारि करौ पहुनाई, चितवत कान्ह डरायौ—१०-३३०। (२) **अतिथि के आने-जाने का भाव।**

पहुनाय—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुनाई] **अतिथि-सत्कार।** उ.—करत सबै रुचि की पहुनाय—२४०६।

पहुनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुनाई] **अतिथि-सत्कार।**

पहुने—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुन] **अतिथि।** उ.—बहुतै आदर करत सबै मिलि पहुने की करिये पहुनाई—१२८५।

पहुप—संज्ञा पुं [सं. पुष्प] **फूल।**

पहुम, पहुँमि, पहुमी—संज्ञा स्त्री [हि पुहुमी] **पृथ्वी।**

पहुला—संज्ञा पु. [स. प्रफुल्ल] **एक तरह का फूल।**

पहूँचै—क्रि. अ. [हिं पहुँचना] (आ) **पहुँचे,** (आ) **जाय,** (आकर) **उपस्थित हो।** उ.—तौ लगि बेगि हरौ किन पीर? जौ लगि आन न आनि पहूँचे, फेरि परैगी भीर—१-१६१।

पहूँच्यो, पहूँच्यौ—क्रि अ. [हिं. पहुँचना] **पहुँचा, आया।**

प्र.—आइ पहूँच्यौ—**आ पहुँचा।** उ.—दनुज एक तहँ आइ पहूँच्यौ—४१०।

पहेटना—क्रि. स. [अनु] (१) **कठिन परिश्रम से काम पूरा करना।** (२) **खूब डटकर खाना।**

पहेरी, पहेली—संज्ञा स्त्री. [स. प्रहेलिकी, हिं. पहेली] (१) **बुझौवल, प्रहेलिका।** (२) **वह बात जिसका अर्थ न खुलता हो।**

पाँइ—संज्ञा पुं. [पाँव] **पैर, पाँव।** उ.—अपनी गरज को तुम एक पाँइ नाचे—१४०३।

पाँइता—संज्ञा पुं [हिं. पाँयता] **पलँग का पैंताना।**

पाँइनि—संज्ञा पुं. बहु० [हिं. पाँव] **पैर, पाँव।**

मुहा.—पाइनि परि—**पैर पर गिरकर, बड़ी नम्रता और विनय से।** उ.—जेइ जेइ पथिक जात मधुबन तन तिनहूँ सो ब्यथा कहति पाँइनि परि—२८००।

पाँउ—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव] **पैर, पाँव।**

मुहा—पाँव पसार सोना—**बिलकुल निश्चित होकर सोना।**

पाँक, पाँका—संज्ञा पुं [स. पंक] **कीचड़।**

पाँख, पाँखड़ा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **पख, डैना।** उ—कीड़ी तनु ज्यों पाँख उपाई—१०४१।

पाँखड़ी—संज्ञा स्त्री. [हि पंखुड़ी] **फूल की पंखुड़ी, पुष्पदल।**

पाँखनि—संज्ञा पुं. बहु. [हि पंख] **अनेक पंख।** उ—जिन पाँखनि कै मुकुट बनायौ, सिर धरि नदकिसोर—४७७।

पाँखि, पाँखी—संज्ञा पुं. [स पक्ष] **पंख, पर, डैना।** उ.—सूरदास सोने के पानी, मढौ चौंच अरु पाँखि—६-१६४।

संज्ञा स्त्री. [सं. पक्षी] (१) **पखदार पतिंगा।** (२) **पक्षी।**

पाँखुड़ी—संज्ञा स्त्री [हि पंखुड़ी] **फूल की पखुड़ी, पुष्पदल।**

पाँखे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. पंख] **पंख, डैने।** उ.—मुरली अधर मोर के पाँखें जिन इह मूरति देखि—३२१७।

पाँगुर, पाँगुरी—वि. [हिं. पगु] **लूली, पंगु।** उ—सूर सो मनसा भई पाँगुरी निरखि डगमगे गोड़—१३५७।

पाँच—वि. [स. पंच] **चार से एक अधिक।**

मुहा.—पाँच-सात न आना—**बहुत सीधे और सरल स्वभाव का होना।** उ.—चकृत भए नारि-नर ठाढे पाँच न आवै सात—२४६४। पाँच-सात भूलना—**चालाकी भूल जाना।** उ.—सूरदास प्रभु के वै बचन सुनहु मधुर मधुर अब मोहिं भूली पाँच और सात—पृ. ३१५ (४५)। पाँच की सात लगाना—

अनेक बातें गढ़कर दोषी बताना। उ.—पाँच की सात लगायो झूँठी-झूँठी कै बनायौ साँची जो तनक होइ तौलौ सब सहिए—१२७२।

संज्ञा पुं—(१) **पाँच की संख्या**। (२) **कई लोग**। (३) **मुखिया लोग, पच**।

पाँचक—वि. पुं. [हि. पाँच+एक] **लगभग पाँच, पाँच-सात**। उ.—दीपमालिका के दिन पाँचक गोपनि कहौ बुलाइ—८१२।

संज्ञा पुं. [स. पंचक] (१) **पाँच नक्षत्र जिनमें नया कार्य करना मना है**। (२) **पाँच का समूह**। (३) **शकुन शास्त्र**।

पाँचजना—संज्ञा पुं. [स.] (१) **श्रीकृष्ण का शख जो पचजन नामक दैत्य से उन्हें मिला था**। (२) **विष्णु का शख**।

पाँचवाँ—वि. [हिं. पाँच] **पाँच के स्थानवाला**।

पांचाल—संज्ञा पुं. [सं.] **'पचाल' नामक देश**।

वि.—(१) **पंचाल देशवाला**। (२) **पचाल-सबधी**।

पांचाली—संज्ञा स्त्री [स.] (१) **वाक्य-रचना की वह रीति जिसमें बड़े बड़े समासो में कोमल कांत पदावली हो**। (२) **द्रौपदी जो पंचाल देश की राजकुमारी थी**।

पाँचै—संज्ञा स्त्री. [हि. पंचमी] **किसी पक्ष की पाँचवी तिथि**। उ.—पाँचै परिमिति परिहरै हरि होरी है—२४५५।

पाँचौ—संज्ञा पुं. [हिं. पाँच] **कुल पाँच**। उ.—करि हरि सौं स्नेह मन साँचौ। निपट कपट की छाँड़ि अटपटी, इन्द्रिय बस राखहि किन पाँचौ—१-८३।

पाँजना—क्रि. स. [सं. प्रगाढ़, प्रा. पगाज्झ, पँज्झ] **धातु के टुकड़ों या टूटे पात्रों में टाँका लगाना**।

पाँजर—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] (१) **पसली**। (२) **पार्श्व, बगल**।

पाँजी, पाँझ—संज्ञा स्त्री [देश.] **नदी के पानी का इतना सूख जाना कि पैदल ही उसे पार किया जा सके**।

पांडव—संज्ञा पुं. [सं.] **कुन्ती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन नकुल, सहदेव**।

पांडित्य—संज्ञा पुं. [सं.] **विद्वत्ता, पंडिताई**।

पांडु—संज्ञा पुं. [सं] (१) **पांडव वश के आदि पुरुष। ये विचित्रवीर्य की विधवा स्त्री अंबालिका के, व्यासदेव से उत्पन्न पुत्र थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन्ही के पुत्र थे**। (२) **एक रोग जिसमें शरीर पीला पड जाता है**। (३) **सफेद रंग**।

पांडुता—सज्ञा स्त्री. [सं.] **पीलापन**।

पांडु-बधू—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **पांडु की पतोहू**। (२) **द्रौपदी**। उ—कोपि कौरव गहे केस जब सभा मै, पाडु की बधू जस नैकु गायौ—१-५।

पांडुर—वि [स] (१) **पीला**। (२) **सफेद**।

पांडुलिपि—सज्ञा स्त्री. [सं.] **लेख की मूल प्रति**।

पाँडे, पाँड़ेय—सज्ञा पुं. [सं पंडित] (१) **ब्राह्मणों की एक शाखा**। (२) **पडित**। (३) **अध्यापक**। उ.—जब पाँड़े इत-उत कहुँ गए। बालक सब इकठौरे भए ७-२। (४) **रसोइया**। (५) **वह ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का जन्म सुनकर महराने में आया था**। उ.—महराने तै पाँड़े आयौ। ब्रज घर घर बूझत नँद-राउर पुत्र भयौ, सुनि कै उठि धायौ—१०-२४८।

पाँति—संज्ञा स्त्री. [स पङ्क्ति] (१) **कतार, पक्ति**। उ.—अब वै लाज मरति मोहि देखत बैठी मिलि हरि पाँति—पृ. ३३७ (६५)। (२) **अवली, समूह**। उ.—मानौं निकसि बगपाँति दाँत उर अवधि सरोवर फोरे—२८१३ (३) **बिरादरी, परिवार-समूह**। उ.—जातिपाँति कोउ पूछत नाही, श्रीपति कै दरबार—१-२३१।

पाँती—सज्ञा स्त्री [सं. पक्ति] **समूह, समाज**। उ.—कुसुमित धर्म-कर्म कौ मारग जउ कोउ करत बनाई। तदपि बिमुख पाँती सो गनियत, भक्ति हृदय नहि आई—१-६३।

पाँथ—संज्ञा पुं. [सं. पंथ] **मार्ग**।

वि. [स.] (१) **पथिक**। (२) **वियोगी**।

पाँयँ, पाँय—सज्ञा पुं. [स पाद] **पैर, चरण**।

पाँयता—संज्ञा पुं. [हिं. पाँय+तल] **पैताना**।

पाँयन—संज्ञा पुं. [हि पाँव] **पैरों में**। उ.—सुनत सुवन घटियार घोर ध्वनि पाँयन नूपुर बाजत—२५६१।

पाँव—संज्ञा पुं. [सं. पद] **पैर, पग**।

पाँवड़ा, पाँवड़े—संज्ञा पुं. [हिं. पाँव+ड़ा (प्रत्य.)] **वस्त्र जो मार्ग में आदर के लिए बिछाया जाता है, पायंदाज ।** उ.—(क) बरन बरन पट परत पाँवड़े, बीथिनि सकल सुगन्ध सिंचाई—६-१६६ । (ख) पाटंबर पाँवड़े डसाये—२६४३ ।

पाँवड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँव] (१) **खड़ाऊँ** । (२) **जूता** ।

पाँवर—वि. [सं. पामर] (१) **पापी, नीच** । (२) **ओछा, क्षुद्र** । उ.—थोरी कृपा बहुत करि मानी पाँवर बुधि ब्रजबाल—१८३० ।

पाँवरि, पाँवरी—संज्ञा स्त्री [हिं. पाँवरी] (१) **जूता, पनही** । उ.—(क) सूर स्वामि की पाँवरि सिर धरि, भरत चले बिलखाई—६-५३ । (ख) सूरदास प्रभु पाँवरि मम सिर इहि बल भरत कहाऊँ—९-१५५ । (२) **सीढ़ी** । (३) **पैर रखने का स्थान** ।

संज्ञा स्त्री. [हि. पौरि, पौरी] (१) **ड्योढ़ी** । (२) **दालान** ।

पांशु—सज्ञा स्त्री [सं.] (१) **धूल, रज** । (२) **बालू** ।

पाँस—स्त्री. [सं. पांशु] **खाद** ।

पाँसना—क्रि स. [हिं. पाँस] **खेत में खाद देना** ।

पाँसा—सज्ञा पुं. [स. पाशक] **चौसर खेलने की गोट** । उ.—कौरव पाँसा कपट बनाये ।

मुहा.—पाँसा उलटना (पलटना)—**प्रयत्न या योजना का फल आशा के प्रतिकूल होना** ।

पाँसुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पसली] **पसली** ।

पाँसे—संज्ञा पुं. [हि. पाँसा] **चौसर खेलने के छोटे टुकड़े जो सख्या में ३ होते हैं। ये प्रायः हाथी दाँत या किसी हड्डी के बनते हैं** । उ.—चौपरि जगत मडे जुग बीते । गुन पाँसे, क्रम अंक, चारि गति सारि, न कबहूँ जीते—१-६० ।

पाँही—क्रि. वि. [हिं. पँह] **पास, निकट, समीप** ।

पा, पाइँ, पाइ—संज्ञा पुं. [सं. पाद] **पैर, चरण** । उ—(क) हा हा हो पिय पा लागति हौं जाइ सुनौ बन बेनु रसालहिं—८६८ ।

पाइक—संज्ञा पुं. [सं. पायक] (१) **दूत** । (२) **सेवक** ।

पाइतरी—सज्ञा स्त्री. [सं. पादस्थली] **पलँग का पैर की ओर का भाग, पैताना** । उ.—कमलनैन पौढे सुखसज्या, बैठे पारथ पाइतरी—१-२६८ ।

पाइयत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाता है** । उ.—प्रानन के बदले न पाइयत सेंति बिकाय सुजस की ढेरी—२८५२ ।

पाइल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायल] **पैर का एक गहना** ।

पाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाँय] (१) **मडल में नाचना** । (२) **एक सिक्का** । (३) **दीर्घता-सूचक मात्रा** । (४) **खड़ा विराम-चिह्न** ।

क्रि. स. [हिं. पाना] **प्राप्त की, उपलब्ध की, लाभ करना** । उ.—(क) यह गति काहू देव न पाई—१-५ । (ख) अंबरीष, प्रहलाद, नृपति बलि, महाँ ऊँच पदवी तिन पाई—१-२४ । (२) **समझी, जानी-बूझी** । उ.—उनकी महिमा है नहिं पाई—४-५ ।

पाउक—संज्ञा पुं [सं पावक] **आग, अग्नि** ।

पाउँ—संज्ञा पु [हिं. पाँव] **पैर** । उ.—भवन जाहु अपनै अपनै सब, लागति हौ मै पाउँ—३४५ ।

पाऊँगो—क्रि. स. [हि. पाना] **प्राप्त करूँगा** । उ.—मात-पिता जिय त्रास धरत हौ तऊ आइ सुख पाऊँगो—१९४४ ।

पाएँ—क्रि. स. सवि. [हिं. पाना] **पाने से, पाने पर भी, पाकर भी** । उ.—अति प्रचंड पौरुष बल पाएँ केहरि भूख मरै—१-२०५ ।

पाक—संज्ञा पु. [स.] (१) **पकाने की क्रिया, रसोई बनाना** । उ.—पाक पावक करै, बारि सुरपति भरै, पौन पावन करै द्वार मेरे—६-१२६ । (२) **रसोई, तैयार भोजन** । उ.—देखौ आइ जसोदा सुत-कृति। सिद्ध पाक इहिं आइ जुठायौ—१०-२४८ । (३), **पकवान** । उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे, बहुत बने कहि पाक—४६४ । (४) **चाशनी में बनी औषध** ।

वि. [फा.] (१) **पवित्र** । (२) **निर्दोष** । (३) **समाप्त** ।

पाकर—सज्ञा पुं. [सं. पर्कटी, प्रा. पक्कड़ी] **एक वृक्ष** । उ.—फूल करील कली पाकर नम—२३२१ ।

पाकशाला, पाकसाला—सज्ञा पुं. [स पाकशाला] **रसोई-घर** । उ.—तब उन कह्यौ पाकसाला मे अबही यह पहुँचाओ—सारा० ६६४ ।

पाकशासन, पाकसासन—संज्ञा पुं. [स पाकशासन] **इंद्र।**

पाकस्थली—संज्ञा स्त्री. [स.] **पक्काशय।**

पाक्षिक—वि. [सं.] **(१) पक्ष या पखवाड़े का। (२) जो प्रतिपक्षी हो। (३) तरफदार।**

पाखंड—संज्ञा पुं. [सं. पाखंड] **(१) वेद-विरुद्ध आचरण। (२) आडंबर, ढोंग, ढकोसला।** उ.—दूरि कियौ पाखंड वाद, हरि भक्तिनि को अनुकूल—सारा० ३११। **(३) छल-कपट।**

वि.—**पाखंड करनेवाला, ढोंगी, पाखंडी।**

पाखंडी—वि. [हिं पाखंड] **(१) वैदिक आचार का खंडन या निंदा करनेवाला। (२) कपटाचारी, ढोंगी। (३) छली-कपटी।**

पाख, पाखा—संज्ञा पुं. [सं. पक्ष] **(१) पक्ष, पखवाड़ा, पंद्रह दिन।** उ.—एक पाख त्रय मास कौ, मेरौ भयौ कन्हाई—१०-६८। **(२) कोना, छोर।**

पाखान—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण] **पत्थर।**

पाखाननि—संज्ञा पुं. सवि. [सं. पाषाण] **पत्थरो से।** उ.—तब लौ तुरत एक .तौ बाँधौ, द्रुम पाखाननि छाई—६-११०।

पाखर—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रखर] **हाथी-घोड़े पर, युद्ध के अवसर पर, डाली जानेवाली लोहे की झूल।**

पाग—संज्ञा स्त्री. [हि. पग=पैर] **पगड़ी।** उ.—(क) टेढी चाल, पाग सिर टेढी, टेढैं-टेढैं धायौ—१-३०१। (ख) रोकि रहत गहि गली साँकरी टेढी बाँधत पाग—१०-३२८। (ग) दधि-ओदन दोना भरि दैहौ अरु अंचल की पाग—२६४८।

संज्ञा पुं. [सं. पाक] **(१) रसोई। (२) चाशनी में पगी मिठाई।**

पागना—क्रि. स. [सं. पाक] **चाशनी में पकाना।**

पागल—वि. [देश.] **(१) बावला, सनकी, विक्षिप्त। (२) क्रोध, शोक आदि के कारण आपे से बाहर। (३) नासमझ, मूर्ख।**

पागलपन—संज्ञा पुं. [हिं. पागल] **(१) सनक। (२) मूर्खता। (३) उन्मत्तता।**

पागी—वि. [हि. पगना] **रस या चाशनी में पगी हुई।** उ.—(क) भव-चिंता हिरदै नहि एकौ स्याम रंग-रस पागी—१४८६। (ख) सूरदास अबला हम भोरी गुर चैंटी ज्यौं पागी—३३३५।

पागे—क्रि. अ. [हि पगना] **(१) अनुरक्त हुए, मग्न हुए, प्रेम में डूब गये।** उ.—नवल गुपाल, नवेली राधा नये प्रेम-रस पागे—६८६। **(२) ओतप्रोत हुए, मग्न हुए, भरे गये।** उ.—(क) तब बसुदेव देवकी निरखत परम प्रेम रस पागे—१०-४। (ख) सोभित सिथिल बसन मन मोहन, सुखवत स्रम के पागे…। नहि छूटति रति रुचिर भामिनी, वा रस मैं दोउ पागे—६८६।

पाग्यौ—क्रि अ. भूत. [हि. पगना] **बहुत अधिक लिप्त हुआ, ओतप्रोत हो गया।** उ.—जनम सिरानौई सौ लाग्यौ। राम रोम, नख-सिख लौं मेरै, महा अवनि बपु पाग्यौ—१-७३।

पाचक—वि. [स.] **पचाने या पकानेवाला।**

पाचन—संज्ञा पुं. [स.] **(१) पचाने या पकाने की क्रिया। (२) अन्न-पचाने की क्रिया। (३) प्रायश्चित।**

पाचना—क्रि. स. [स. पाचन] **अच्छी तरह पकाना।**

पाचै—क्रि. स. [हि. पाचना] **परिपक्व करती है।** उ.—निसि दिन स्याम सुमिरि जस गावै कलपन मेटि प्रेम-रस पाचै।

पाछ—संज्ञा पु. [स. पश्चात, प्रा. पच्छा] **पिछला भाग।**

क्रि. वि. [हि. पीछा] **पीछे।**

पाछना—क्रि. स. [हि. पछा] **चीर-फाड़ देना।**

पाछल, पाछलु—वि. [हि. पिछला] **पीछे का, पिछला।**

पाछिल, पाछिलो—वि. [हि. पिछला] **(१) पिछला, पीछे का। (२) पूर्व जन्म का।** उ.—धन्य सुकृत पाछिलो—११८१।

पाछिली—वि. स्त्री. [हि. पिछला] **पीछे की, पूर्व की।**

पाछिले—वि. [हिं. पीछा, पिछला] **पूर्व या पहले की, पिछली।** उ.—उन तौ करी पाछिले की गति, गुन तोरयौ बिच धार—१-१७५।

पाछी—क्रि. वि. [हिं. पाछ] **पीछे, पीछे की ओर।**

पाछू, पाछे, पाछैं—क्रि. वि. [हिं. पीछा, पीछे] **(१) भूतकाल में, पूर्व समय में, पहले।** उ.—तीनौ पन भरि ओर निबाह्यौ, तऊ न आयौ बाज। पाछैं भयौ

न आगै हैहै, सब पतितनि सिरताज—१-६६। (२) **पीठ की ओर, पीछे की तरफ**। उ.—पुनि पाछैं अघ-सिंधु बढ़त है सूर खाल किन पाटत—**१-१०७**।

पाछेन—वि. [हि. पीछा] **पीछे आनेवाले**। उ.—पदखि लिए पाछेन को तेऊ सब आए—२५७५।

पाज—संज्ञा पु. [हि पाँजर] **पाँजर**। उ.—निरखि छबि फूलत है ब्रजराज। उत जसुदा इत आपु परस्पर आडे रहे कर पाज।

पाजस्य—संज्ञा पुं [स.] **छाती और पेट की बगल का भाग, पार्श्व, पाँजर**।

पाजी—संज्ञा पु [स. पदाति] **(१) पैदल सिपाही**। (२) **रक्षक**।

वि. [स पाठ्य] **दुष्ट, नीच, कमीना**।

पाजीपन—संज्ञा पुं. [हिं पाजी+पन] **दुष्टता, नीचता**।

पाजेब—सज्ञा स्त्री [फा.] **पैर का गहना, नूपुर, मजीर**।

पाटंबर—संज्ञा पुं. [स] **रेशमी वस्त्र**। उ.—हय गय हेम धेनु पाटंबर दीन्हे दान उदार—सारा. ३०७।

पाट—संज्ञा पुं. [स पट्ट, पाट] **(१) रेशम**। उ.—किंकिनि नूपुर पाट पाटंबर, मानौ लिये फिरैं बरबार—**१-४१**। **(२) राजसिंहासन**। उ.—मोदी लोभ, खवास मोह के, द्वारपाल अहँकार। पाट बिरध ममता है मेरैं माया कौ अधिकार—१-१४१। **(३) फैलाव, चौड़ाई**। **(४) पीढ़ा, पटरा**। **(५) धोबी का पाटा**। (६) **चक्की का एक भाग**। (७) **द्वार, कपाट**।

पाटत—क्रि. स. [हिं पाट, पाटना] **किसी गहरी जगह को भर देना, गढ़ा-जैसी जगह पाट देना**। उ.—पुनि पाछैं अघ-सिंधु बढ़त है, सूर खाल किन पाटत—**१-१०७**।

पाटन—सज्ञा स्त्री. [हि. पाटना] **(१) पटाव, छत**। (२) **साँप का विष उतारने का एक मत्र**।

पाटना—क्रि. स. [हिं. पाट] (१) **निचले स्थान को भरकर समतल करना**। (२) **ढेर लगाना**। (३) **पटाव या छत बनाना**। (४) **तृप्त करना**।

पाटमहिषी—संज्ञा स्त्री. [स. पट्ट+महिषी] **पटरानी**।

पाटरानी—संज्ञा स्त्री. [स. पट्ट+रानी] **प्रधान रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठे**। उ.—अब कहावत पाटरानी बड़े राजा स्याम—२६८१।

पाटल—संज्ञा पुं. [सं.] **पाढर नामक पेड़**। उ.—मिलत सम्मुख पाटल पटल भरत मान जुही—**२३८१**। (१) **गुलाब**।

वि —**(१) गुलाब-संबधी**। (२) **गुलाबी**।

पाटव—सज्ञा पुं [स.] **(१) कौशल**। **(२) पक्कापन**।

पाटवी—वि [हिं पाट] **(१) पटरानी से उत्पन्न**। **(२) रेशमी**।

पाटा—संज्ञा पुं. [हिं. पाट] **पीढ़ा, पटरा, तख्ता**।

पाटी—संज्ञा स्त्री. [स. पाट] **(१) पटिया, पट्टी, माँग के दोनो ओर के बैठे हुए बाल**। उ.—मुँड़ली पाटी पारन चाहैं, नकटी पहिरै बेसरि (२) **पटरा, पीढ़ा**। (३) **सिंहासन**। उ.—नव ग्रह परे रहैं पाटी-तर, कूपहिं काल उसारौ—६-१५६। (४) **शिला, चट्टान**। **(५) पलँग की एक लकड़ी**। उ.—घुनो बाँस बुन्यौ खटोला काहू को पलँग कनक पाटी—१० उ.-७१।

सज्ञा स्त्री. [सं.] **(१) परिपाटी**। **(२) श्रेणी**। **(३) गणना-क्रम**।

पाटौ—क्रि. स. [हिं. पाटना] (१) **पाट दूँ, दबाकर गाड़ दूँ**। उ.—कहौ तौ मृत्युहिं मारि डारि कै, खोदि पता. लहि पाटौं—६-१४८। (२) **लबालब भर दूँ, डुबा दूँ**। उ —छिन मे बरषि प्रलय जल पाटौं खोजु रहै नहिं चीनो—६४५।

पाटौ—संज्ञा पु [स. पट्टा] **पट्टा, अधिकार-पत्र, सनद**। उ.—जौ प्रभु अजामील कौ दीन्हौ, सो पाटौ लिखि पाऊँ। तौ बिस्वास होइ मन मेरै, औरौ पतित बुलाऊँ **—१-१४६**।

पाठ—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **पढ़ाई, अध्ययन**। उ.—संदीपन सुत तुम प्रभु दीने, विद्या-पाठ करयौ—**१-१३३**। (२) **नियम से पढ़ने की क्रिया या भाव** (३) **पढ़ने का विषय**। (४) **सबक**। (५) **पुस्तक का एक अंश**। **(६) वाक्य का शब्द-क्रम या शब्द-वर्तनी**।

पाठक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पढ़नेवाला**। (२) **पढ़ानेवाला**।

पाठन—संज्ञा पुं. [सं] **पढ़ने की क्रिया या भाव**।

पाठ-भेद—संज्ञा पुं. [सं.] **पाठ का अतर**।

पाठशाला—संज्ञा स्त्री. [स.] **विद्यालय, चटसाल**।

पाठांतर—संज्ञा पुं. [सं.] **पाठ में अंतर**।

पाठी—वि. [सं. पाठिन्] **पढ़नेवाला, पढ़ैया** ।

पाठ्य—वि. [सं.] (१) **पठनीय** । (२) **जो पढ़ाया जाय** ।

पाड़, पाढ़—संज्ञा पु. [हिं. पाट] (१) **धोती-साड़ी का किनारा** । (२) **बाँध, पुश्ता** ।

पाड़इ, पाढ़इ—संज्ञा स्त्री. [सं. पाटल] **'पाटल' वृक्ष** । उ.—जहाँ निवारी सेवती मिलि झूमक हो । बहु पाड़इ बिपुल गँभीर मिलि झूमक हो—२४४५ ।

पाड़ा—संज्ञा पुं. [सं. पट्टन] **टोला, मुहल्ला, पुरवा** ।

पाढ़त—संज्ञा स्त्री. [हिं. पढना] **जादू-टोना, मंत्र** ।

पाण—संज्ञा पुं. [सं] (१) **व्यापार** । (२) **हाथ, कर** ।

पाणि—संज्ञा पुं [सं.] **हाथ, कर** ।

पाणिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सौदा** । (२) **हाथ** ।

पाणिगृहीता—वि. [सं.] **विवाहिता (पत्नी)** ।

पाणिग्रह, पाणिग्रहण—संज्ञा पुं. [सं] **विवाह** ।

पाणिनि—संज्ञा पुं. [सं.] **संस्कृत भाषा के 'अष्टाध्यायी' नामक प्रसिद्ध व्याकरण के रचयिता** ।

पाणिपल्लव—संज्ञा पुं [सं] **उँगलियाँ** ।

पाणिमूल—संज्ञा पुं. [सं] **कलाई** ।

पातंजलि—संज्ञा पु. [सं पतंजलि] **प्रसिद्ध प्राचीन विद्वान पतंजलि** । उ.—पातंजलि-से मुनि पद सेवत करत सदा अज ध्यान—सारा. ६२ ।

पात—संज्ञा पुं. [सं. पत्र] (१) **पत्ता, पत्र** । उ.-जा दिन मन पछी उड़ि जैहै । ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहै—१-८६ । (२) **कान का एक गहना, पत्ता** ।

संज्ञा पुं. [सं.] **पतन** । (२) **गिरना** । (३) **टूट कर गिरना** । (४) **नाश** । (५) **पड़ना** ।

पातक—संज्ञा पुं. [सं.] **पाप, अघ, अधर्म** ।

पातकी—वि. [सं. पातक] **पापी, अधर्मी** ।

पातन—संज्ञा पु. [सं.] **गिराने की क्रिया** ।

संज्ञा पु. बहु. [हिं. पात=पत्ता] **पत्तों के** । उ.—मूरी के पातन के बदले को मुक्काहल दैहै—३१०५ ।

पातर, पातरा—वि [हिं. पतला] **दुबला, पतला, क्षीण** । उ.—मचला, अकलै-मूल, पातर खाउँ खाउँ करै भूखा—१-१८६ । (२) **क्षीण, बारीक** । (३) **जो जरा भी गाढ़ा न हो** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] **पत्तल, पनवारा** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पातली] **वेश्या** ।

पातरि, पातरी - वि.[हिं. पतला] **दुबली-पतली** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पातली] **वेश्या** ।

पातशाह—संज्ञा पुं. [हिं. पादशाह] **बादशाह** ।

पातशाही—संज्ञा स्त्री [हिं. पातशाह] **बादशाही** ।

पाता—संज्ञा पुं.[सं. पत्र हिं., पत्ता] **पत्ता, पत्र** । उ.-सरबस प्रभु रीझि देत तुलसी कैं पाता—१-१२३ ।

वि. [सं. पातृ] (१) **रक्षक** । (२) **पीनेवाला** ।

पातार, पाताल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ** । (२) **पृथ्वी के नीचे का लोक** । उ.—ग्रस्यौ गज ग्राह कौं लै चल्यौ पाताल कौं काल कै त्रास मुख नाम आयौ—१-५ । (३) **गुफा** ।

पातालकेतु—संज्ञा पुं. [सं.] **पातालवासी एक दैत्य** ।

पाताखत—संज्ञा पुं. [हिं. पात+आखत] **पत्र-अक्षत, पूजा या भेंट की सामान्य वस्तु** ।

पाति—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्र] (१) **पत्ती** । (२) **चिट्ठी** ।

पातिव्रता, पातिव्रत—संज्ञा पुं. [सं. पातिव्रत्य] **पतिव्रता होना** । उ.—पातिव्रतहिं धर्म जब जान्यौ बहुरौ रुद्र बिहाई—सारा-५० ।

पातिसाह—संज्ञा पुं. [हिं. पादशाह] **बादशाह** ।

पाती—संज्ञा स्त्री. [सं. पत्री, प्रा. पत्ती] (१) **चिट्ठी, पत्र** । उ.—(क) पाती बाँचत नंद डराने—५२६ । (ख) लोचन जल कागद मसि मिलि करि है गइ स्याम स्याम जू की पाती—२६७७ । (२) **वृक्ष-लता की पत्ती** ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पति] **लज्जा, प्रतिष्ठा** । उ.—सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु सब पाती उघरी—३३४६ ।

पातुर, पातुरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पातली] **वेश्या** ।

पाते, पातै—संज्ञा पुं. [हिं. पत्ता.] **वृक्ष का पत्ता** । उ.—(क) मलिन बसन हरि हित अंतर्गति तनु पीरो जनु पाते—३४६१ । (ख) मारे कंस सुरन सुख दीनो असुर जरे पिर पाते—३३३८ ।

पात्त—संज्ञा पुं. [सं.] **पापियों का उद्धारक** ।

पात्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वह व्यक्ति जो किसी वस्तु अथवा विषय का अधिकारी हो** । उ.—हरि जू हौं यातैं

दुख-पात्र—१-२१६ । (२) **आधार, बरतन, भाजन** । उ.—(क) हृदय कुचील काम-भू तृष्ना-जल कलिम है पात्र—१-२१६ । (ख) पात्र-स्थान हाथ हरि दीन्हे—२-२० । (३) **नदी का पाट** । (४) **नाटक के नायक-नायिका आदि** । (५) **नाटक के अभिनेता** । (६) **पत्ता** ।

पात्रता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **योग्यता, अधिकार** ।

पात्री—संज्ञा स्त्री. [सं. पात्र] (१) **छोटा बरतन** । (२) **नाटक के स्त्री-पात्र** (३) **अभिनय करनेवाली स्त्री** ।

पाथ—संज्ञा पुं. [सं. पाथस्] (१) **जल** । (२) **वायु** ।

संज्ञा पुं. [सं. पथ] **पंथ, मार्ग, राह** । उ.—भ्रमित भयौ जैसैं मृग चितवत, देखि देखि भ्रम-पाथ—१-२०८ ।

पाथना—क्रि. स. [हिं. थापना का आद्यन्त विपर्यय] (१) **ठोंक-पीट कर गढ़ना-बनाना** । (२) **थोप-थाप करना** । (३) **मारना** ।

पाथनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र** ।

पाथनिधि—संज्ञा पुं. [सं. पाथोनिधि] **समुद्र** ।

पाथर—संज्ञा पुं. [हिं. पत्थर] **पत्थर** । उ.—उकठे तरु भये पात, पाथर पर कमल जात, आरज पथ तज्यै । नात, व्याकुल नर-नारी ।

पाथा—संज्ञा पुं. [सं. पाथस्] (१) **जल** । (२) **आकाश** ।

पाथेय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **यात्री के लिए मार्ग का भोजन** । (२) **पथिक का राह-खर्च, संबल** ।

पाथोज—संज्ञा पुं. [सं.] **कमल** ।

पाथोर—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल** ।

पथोधार—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल** ।

पाथोधि—संज्ञा पुं. [सं.] **सागर, समुद्र** ।

पाथोनिधि—संज्ञा पं. [सं.] **सागर, समुद्र** ।

पाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पैर, चरण** । (२) **छंद का एक चरण** । (३) **चौथाई भाग** । (४) **पुस्तक का विशेष भाग** । (५) **निचला भाग, तल** ।

पादत्र, पादत्राण, पादत्रान—वि. [सं.] **जो नर-नारी के पैर की रक्षा करे** ।

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **खड़ाऊँ** । (२) **जूता, पनही** ।

पादप—संज्ञा पुं. [सं.] **वृक्ष, पेड़** ।

पादपा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **जूता** । (२) **खड़ाऊँ** ।

पादपूरक—वि. [सं.] **कविता में पद की पूर्ति के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द** ।

पादपूरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कविता में अधूरे पद को पूरा करना** । (२) **पद-पूर्ति के लिए भरती के शब्द रखना** ।

पादशाह—संज्ञा पुं. [फा.] **बादशाह** ।

पादाकुल, पादाकुलक—संज्ञा पुं. [सं.] **चौपाई (छंद)** ।

पादाक्रांत—वि. [सं.] **पैर से कुचला हुआ** ।

पादारघ—संज्ञा पुं. [सं. पाद्यार्घ] (१) **हाथ-पैर धुलाने का जल** । (२) **पूजन-सामग्री** । (३) **भेंट, उपहार** ।

पादुका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **खड़ाऊँ** । (२) **जूता** ।

पादोदक—संज्ञा पुं. [सं. पाद+उदक=जल] (१) **वह जल जिसमे पैर धोया गया हो** । (२) **चरणामृत** । उ.—गंग तरग बिलोकत नैन । अतिहि पुनीत बिष्नु-पादोदक, महिमा निगम पढत गुनि चैन—९-१२ ।

पाद्य—संज्ञा पुं. [सं.] **चरण धोने का जल** । उ.—चमर अंचल, कुच कलश मनो पाद्य पानि चढाइ—३४८३ ।

पद्यार्घ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हाथ-पैर धोने का जल** । (२) **पूजा या भेंट की सामग्री** ।

पाधा, पाधे—संज्ञा पुं. [सं. उपाध्याय] (१) **आचार्य** । (२) **पंडित** । उ.—गिरिधरलाल छबीले को यह कहा पठायौ पाधे—३२८४ ।

पान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **(किसी द्रव पदार्थ को) घूँटना, पीना** ।

(२) **शराब पीना** ।

प्र०—पान करि—**पीकर**—उ.—रुधिर पान करि, आतमाल धरि, जयजय शब्द उचारी । करती पान—**पीती** । उ.—रास रसिक गुपाल मिलि मधु अधर करती पान—३०३२ ।

(३) **पेय पदार्थ, पेय द्रव** । उ.—चरनोदक कौं छाँड़ि सुधा-रस, सुरापान अँचयौ—१-६४ । (४) **मद्य, शराब** । (५) **पानी** । (६) **आब, कांति** । (७) **पीने का पात्र** । (८) **प्याऊ** ।

संज्ञा पुं. [सं. प्राण] **प्राण** । उ.—पान अपान व्यान उदान और कहियत प्राण समान ।

संज्ञा पुं. [सं. पर्ण, प्रा. पण्ण] (१) **एक प्रसिद्ध लता**

जिसके पत्तों का बीड़ा बनाकर खाया जाता है, ताम्बूली उ.—दिन राती पोषत रह्यौ जैसे चोली पान—**१-३२५**। (२) **पान का बीड़ा**। उ.—(क) आदर सहित पान कर दीन्हों—१०४७। (ख) पान लै चल्यौ नृप-आन कीन्हौ—**१०-६२**।

मुहा०—पान उठाना—किसी काम के करने का जिम्मा लेना। पान खिलाना—**सगाई-सबंध पक्का कराना**। पान चीरना—**व्यर्थ का काम करना**। पान देना—**कोई काम करने का जिम्मा देना**। दै पान—**काम करने का जिम्मा देकर**। उ.—असुर कस दै पान पठाई—**१०-५०**। पान-पत्ता या पान-फूल—**साधारण या तुच्छ भेंट**। पान लेना—किसी काम को करने का जिम्मा लेना। लै पान—**काम करने का जिम्मा लेकर**। उ.—नृपति के लै पान मन कियौ अभिमान करत अनुमान चँद्र पास धाऊँ।

(३) **पान के आकार की ताबीज**।

संज्ञा पुं [सं पाणि] **हाथ**।

पानक—सज्ञा पुं. [स.] **पना, पन्ना**।

पानय—संज्ञा पुं. [सं.] **शराबी, मद्यप**।

पानरा—सज्ञा पु [हिं. पनारा] **परनाला**।

पानही—सज्ञा स्त्री. [स. उपानह, हि पनही] **जता**।

पाना—क्रि. स. [स. प्रापण, प्रा. पावण] (१) **प्राप्त करना**। (२) **फल या परिणाम भुगतना**। (३) **खोई हुई चीज फिर पाना**। (४) **पता, भेद या खोज पाना**। (५) **कुछ सुन या जान लेना**। (६) **देखना-जानना**। (७) **भोगना**। (८) **समर्थ हो सकना**। (९) **समीप जा सकना**। (१०) **समान या बराबर होना**। (११) **भोजन करना**। (१२) **समझ सकना**।

वि.—**जिसे पाने का हक हो**।

पानि—संज्ञा पुं. [स. पाणि] **हाथ**। उ.—(क) सक्र कौ दान-बलि-मान ग्वारनि लियौ, गह्यौ गिरि पानि, जस जगत छायौ—**१-५**। (ख)—उरग-इंद्र उनमान सुभग भुज, पानि पदुम आयुध राजै—**१-६६**।

सज्ञा पुं. [हिं पानी] **पानी, जल**। उ.—पवन पानि घनसारि सुमन दै दधिसुत किरनि भानु भै भुजैं—२७**२१**।

पानिग्रहण, पानिग्रहन—सज्ञा पु. [स. पाणि+ग्रहण] **विवाह**।

पानिप—सज्ञा पुं. [हिं. पानी+प (प्रत्य०)] (१) **ओप, द्युति, कांत**। (२) **पानी**।

वि.—**मर्यादायुक्त, इज्जतदार, सम्मानित, प्रतिष्ठित**। उ.—सभा माँझ द्रौपति-पति राखी, पति पानिप कुल ताकौ। बसन-ओट करि कोट बिसंभर, परन न दीन्हो झाँकौ—**१-११३**।

पानी—सज्ञा पुं. [स. पानीय] (१) **जल, अबु, नीर**। उ.—जिनकै क्रोध पुहुमि-नभ पलटै, सूखें सकल सिंधु कर पानी—९-११५।

मुहा०—पानी उतरना—**पानी घटना**। (काम) पानी करना—**सरल या सहज कर डालना**। पानी का बताशा (बुलबुला)—**क्षणभगुर चीज**। पानी की तरह बहाना—**खूब लुटाना या अँधाधुंध खर्च करना**। पानी के मोल—**बहुत सस्ता**। पानी चढ़ना—(१) **पानी का ऊँचाई की ओर जाना**। (२) **पानी बढ़ना**। पानी चलाना—**नष्ट या चौपट करना**। पानी टूटना—**बहुत ही कम पानी रह जाना**। पानी दिखाना—**(पशु कों) पानी पिलाना**। पानी देना—(१) **सींचना, तर करना**। (२) **पितरो के नाम तर्पण करना**। पितर दै पानी—**पितरो के नाम तर्पण कर**। उ.—ढोटा एक भयौ कैसैहुँ करि कौन कौन करबर बिधि भानी। क्रम क्रम करि अब लौं उबर्यौ है, ताकौं मारि पितर दै पानी—**३६८**। पानी भी न माँगना—**चटपट दम निकल जाना**। पानी पर नीव डालना (देना)—**ऐसा काम करना जो टिकाऊ न हो**। पानी पढना—**मत्र पढ़कर पानी फूँकना**। पानी पानी करना—**बहुत लज्जित करना**। पानी पानी होना—**बहुत लज्जित होना**। पानी पी पीकर—**हर समय, लगातार**। पानी फिर जाना (फेरना)—**नष्ट हो जाना**। पानी फूँकना—**मत्र पढ़कर पानी फूँकना**। (किसी के सामने) पानी भरना—**तुलना में अत्यत तुच्छ होना**। पानी भरी खाल—**क्षणभगुर शरीर**। पानी मरना—**किसी स्थान पर पानी जमा होकर सूखना**। (किसी के सिर) पानी मरना—**किसी का दोषी साबित होना**। पानी मे आग लगाना—(१) **असंभव को संभव कर देना**। (२) **शांतिप्रिय लोगों में झगड़ा करा देना**। पानी मे फेंकना

(बहाना)—**नष्ट करना**। पानी लगना—**वातावरण और संगति के प्रभाव से बुरी बातें सीख जाना**। सूखे में पानी में डूबना—**धोखा खा जाना**। भारी पानी—**पानी जिसमें खनिज पदार्थ अधिक मिले हों**। हलका पानी—**पानी जिसमें खनिज पदार्थ कम हो**। (मुँह मे) पानी भरना (भर जाना)—**सुन्दर या स्वादिष्ट वस्तु को देखकर उसे पाने या उसका स्वाद लेने का लोभ होना**। दूध का दूध, पानी का पानी उघरना—**सच्चाई और वास्तविकता प्रकट हो जाना**। उ.—हम जातहिं वह उघरि परैगी दूध दूध पानी को पानी—१८६२।

(२) **शरीर के अंगों से निकलने वाला पसीना आदि (पानी-सा पदार्थ)**। (३) **वर्षा, मेंह**।

मुहा०—पानी आना—**वर्षा होना**। पानी उठना—**घटा घिरना**। पानी टूटना—**मेह बंद होना**। पानी निकलना—**वर्षा बंद होना**। पानी पड़ना—**मेह बरसना**।

(४) **पानी जैसा पतला द्रव पदार्थ जो चिकना न हो**। (५) **निचोड़ने से निकलनेवाला रस, अर्क आदि**। (६) **चमक, आब, कांति, छबि, सुन्दरता**। (७) **धारदार हथियारों की आब, जौहर**। (८) **मान**।

मुहा०—पानी उतारना—**अपमानित करना**। पानी जाना—**अपमान होना**। पानी बचाना (रखना)—**मान की रक्षा करना**। पानी (हर) लेना—**प्रतिष्ठा नष्ट करना**। उ.—सुंदर नैननि हरि लियो कमलनि कौ पानी—४७५। **बे पानी करना—प्रतिष्ठा नष्ट करना**।

(९) **वर्ष, साल**। (१०) **मुलम्मा**। (११) **जीवट, स्वाभिमान**। (१२) **पशु की वंशगत विशिष्टता**। (१३) **पानी-सी ठंढी चीज**।

मुहा०—पानी करना (कर देना)—**गुस्सा ठंढा कर देना**। (किसी का) पानी होना (हो जाना)—(१) **गुस्सा ठंढा हो जाना**। (२) **तेजी न रह जाना**।

(१४) **बहुत मुलायम चीज**। (१५) **फीकी चीज**। (१६) **कुश्ती, द्वंद्वयुद्ध**। (१७) **बार, दफा**। (१८) **शराब**। (१९) **अवसर, मौका**। (२०) **जलवायु**।

मुहा०—पानी लगना—**किसी स्थान की जलवायु स्वास्थ्य के अनुकूल न होने से रोगी हो जाना**।

(२१) **चाल-ढाल, रंग-ढंग, वातावरण**।

संज्ञा पु.—[सं. पाणि] **हाथ**। उ.—सोइ दसरथ-कुलचंद अमित बल आए सारँग पानी—९-११५।

पानीदार—वि. [हिं. पानी+फा. दार] (१) **चमक या आबदार**। (२) **प्रतिष्ठित, सम्मानित**। (३) **आत्माभिमानी**।

पानी देवा—वि. [हिं. पानी+देना] (१) **तर्पण या पिंडदान करनेवाला**। (२) **पुत्र**। (३) **अपने गोत्र या वंश का**।

पानीय—संज्ञा पुं. [सं.] **जल, पानी**।

वि.—(१) **पीने योग्य**। (२) **रक्षा करने योग्य**।

पानै—संज्ञा पुं. [सं. पाणि] **पाणि, हाथ, कर**।

उ.—अजहूँ सिय सौंपि ,तरु बीस भुजा भानै। रघुपति यह पैज करी, भूतल धरि पानै—९-९७।

संज्ञा पु. [स पानीय] **पानी, जल**। उ.—चातक सदा स्वाति को सेवक दुखित होत बिन पानै—३४०४।

पानो, पानौ—संज्ञा पुं. [हि. पानी] **पीना**।

यौ०—भोजन-पानो—**खाना पीना**। उ.—सूर आसा पुजै या मन की तब भावै भोजन पानो—८६२।

पानौरा—संज्ञा पुं. [हिं. पान+बड़ा] **पान के पत्ते की पकौड़ी, पतौड़, पतौर**। उ.—पानौरा रायता पकौरी १—२३२१।

पान्यौ—संज्ञा पुं. [हिं पानी] (१) **पानी**। उ.—(क) अब क्यो जाति निबेरि सखी री मिलो एक पय पान्यौ—१२०२। (ख) सूर सु ऊधो मिलत भए सुख ज्यों खग पायो पान्यो—२९७१। (२) **मेघ**। उ.—मानो दव द्रुम जरत अस भयो उनयो अंबर पान्यौ—२२७५।

पाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अधर्म, बुरा काम, अघ**।

मुहा०—पाप उदय होना—**पिछले पापों का बुरा फल भुगतना**। पाप कटना—**पिछले पापों का बुरा फल-भोग चुकना और सुख की आशा होना**। पाप कमाना (बटोरना) **बराबर पाप करना**। पाप काटना—**पाप का कुफल भुगता देना**। पाप की गठरी (मोट)—**अनेक पापो का संग्रह**। पाप पड़ना

(लगना)—**दोष होना** ।

(२) **अपराध, कसूर** ।

मुहा०—पाप लगाना—**दोष लगाना, दोषी ठहराना** । लावत पाप—**दोष लगाता है** । उ.—हारि-जीति कछु नेकु न समझत, लरिकनि लावत पाप—१०-२१४ ।

(३) **हत्या** । (४) **बुरी नीयत, बुराई** । उ.—मथुरापति के जिय कछु तुम पर उपज्यौ पाप—५८६ । (५) **अशुभ ग्रह** । (६) **झंझट बखेड़ा** ।

मुहा०—पाप कटना—**बाधा दूर होना** । पाप काटना—**बाधा दूर करना झंझट मिटाना** । पाप मोल लेना—**जान-बूझकर झंझट मे पड़ना** । पाप गले (पीछे) लगना—**झंझट में फँस जाना** ।

(७) **कठिनाई, सकट मुसीबत** । उ.—छींक सुनत कुसगुन कह्यौ, कहा भयौ यह पाप—५८६ ।

मुहा०—पाप पड़ना—**कठिन या सामर्थ्य से बाहर होना** ।

वि.—(१) **पापी** । (२) **नीच** । (३) **अशुभ** ।

पापकर्मा—वि. [सं. पापकर्मन्] **पापी** ।

पापक्षय—संज्ञा पुं [स.] **तीर्थ जहाँ पाप नष्ट हो जायँ** ।

पापग्रह—सज्ञा पु. [स.] **अशुभ ग्रह** ।

पापचारी—वि. [स. पापचारिन्] **पापी** ।

पापचेता—वि. [स.] **जिसके चित्त मे पाप रहता हो** ।

पापड़—संज्ञा पुं. [स. पर्पट, प्रा पप्पड़] **उर्द, मूँग या आलू की बहुत पतली चपाती जो प्रायः सूखने पर तली जाती है** ।

मुहा०—पापड़ बेलना—(१) **कठिन परिश्रम करना** । (२) **कठिनाई से दिन काटना** । (३) **बहुत भटकना** ।

वि.—(१) **बहुत पतला** । (२) **सूखा, शुष्क** ।

पापदर्शी—वि. [सं] **बुरी नीयत से देखनेवाला** ।

पापदृष्टि—वि. [स.] (१) **बुरी नीयत से देखनेवाला** । (२) **अशुभ या अमगलकारिणी दृष्टि** ।

पापनामा—वि. [सं.] **बुरे नामवाला** ।

पापनाशन—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाप का नाश करने वाला** । (२) **प्रायश्चित** । (३) **विष्णु** । (४) **शिव** ।

पापमति—वि. [सं.] **जिसकी मति सदा पाप में रहे** ।

पापमय—वि [स.] **पाप युक्त, पाप से पूर्ण** ।

पापयोनि—सज्ञा स्त्री. [स] **निकृष्ट योनि** ।

पापर—संज्ञा पुं. [हिं पापड़] **पापड़** । उ.—पापर बरी मिथैरि फुलौरी । कूर बरी काचरी पिठौरी—३९६ ।

पापलोक—संज्ञा पुं. [स] **नरक** ।

पापहर—वि. [स] **पाप का नाश करनेवाला** ।

पापाचार—संज्ञा पुं. [स.] **दुराचार, पापकर्म** ।

पापात्मा—वि. [सं पापात्मन्] **पापी, दुष्टात्मा** ।

पापाह—सज्ञा पु. [सं] (१) **सूतककाल** । (२) **अशुभ काल** ।

पापिनी—वि स्त्री [हि. पुं पापी] **पाप करनेवाली, जिस स्त्री ने पाप किया हो** । उ.—यह आसा पापिनी दहै—१-५३ ।

पापिष्ठ—वि [स. पापिन्] **बहुत बड़ा पापी** ।

पापी—वि. [सं. पापिन्] (१) **पापयुक्त, अघी, पातकी** । (२) **अनरीति करनेवाला, जो अनुचित व्यवहार करे** । उ.—पिता-वचन खंडै सो पापी, सोई प्रहलादहि कीन्हौ—१-१०४ । (३) **कठोर, निर्दय** । उ.—जगत के प्रभु बिनु कल न परै छिनु ऐसे पापी पिय तोहि पीर न पराई है—२८२७ ।

पाबंद—वि [फा.] (१) **बँधा हुआ** । (२) **नियमबद्ध** ।

पाबंदी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] (१) **विवशता** । (२) **नियमबद्धता** ।

पाम—संज्ञा स्त्री. [देश.] **लड़, रस्सी, डोरी** ।

संज्ञा पं. [सं. पामन] (१) **फुंसियाँ** (२) **खाज** ।

वि.—**खाज आदि रोगो से युक्त** ।

पामड़ा—सज्ञा पु. [हि पाँवड़ा] **पायदाज** ।

पामर—वि. [स.] (१) **दुष्ट, पापी** । (२) **नीच कुलवाला, नीच कुल में उत्पन्न** ।

पामरी—सज्ञा स्त्री. [सं. प्रावार] **दुपट्टा, उपरना** । उ.—
उ.—ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल—१४६३ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं पाँवड़ी] (१) **खड़ाऊँ** । (२) **जूता** ।

वि. [सं पामर] **दुष्टा, पापिनी** ।

पायँ—संज्ञा पुं. [हि. पावँ] **पैर** ।

पायँजेहरि—सज्ञा स्त्री. [हि. पावँ + जेहरी] **पायजेब** ।

पायँत, पायँती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँता] **पैताना।**

पायँता—संज्ञा पुं. [हि. पायँ + थान] **पैताना।**

पायंदाज—संज्ञा पुं. [फा.] **पैर-पुछना।**

पाय—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ] **पावँ, पैर।** उ.—होड़ाहोड़ी मनहि भावते किए पाप भरि पेट। ते सब पतित पाय-तर डारौ, यहै हमारी भेंट—१-१४६।

पायक—संज्ञा पुं. [सं. पादातिक, पायिक] (१) **धावन, दूत, हरकारा।** उ.—अंजनि-कुँवर राम कौ पायक, ताके बल गर्जत—६-८३। (२) **दास, सेवक, अनुचर।** उ.—उमड़त चले इंद्र के पायक सूर गगन रहे छाइ—६४५। (३) **पैदल सिपाही।** उ.—पायक मन, बानैत अधीरज, सदा दुष्ट मति दूत—१-१४१।

पायदार—वि. [फ़ा.] **दृढ़, टिकाऊ, मजबूत।**

पायदारी—संज्ञा स्त्री [फ़ा.] **दृढ़ता, मजबूती।**

पायमाल—वि. [फ़ा] (१) **पददलित।** (२) **नष्ट-ध्वस्त।**

पायमाली—संज्ञा स्त्री. [फा] (१) **दुर्गति।** (२) **नाश।**

पायल—संज्ञा स्त्री. [हिं. पाय+ल] **नूपुर, पाजेब।**

पायस—संज्ञा स्त्री. [सं.] **खीर।**

पायसा—संज्ञा पुं. [हि. पास] **पास-पड़ोस।**

पाया—संज्ञा पुं. [हिं. पायँ] (१) **पलँग, कुर्सी आदि का पावा।** (२) **खंभा, स्तम्भ।** (३) **पद, ओहदा।** (४) **सीढ़ी, जीना।**

पायिक—संज्ञा पुं [सं.] (१) **दूत।** (२) **पैदल सिपाही।**

पायी—वि. [सं. पायिन्] **पीनेवाला।**

पायौ—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाया, प्राप्त किया।**

पारंगत—वि. [सं.] (१) **नदी अथवा जलाशय के पार पहुँचा हुआ, जो पार जा चुका हो।** उ.—यहै मंत्र सबही परधान्यौ सेतु बंध प्रभु कीजै। सब दल उतरि होइ पारंगत, ज्यौं न कोउ इक छीजै—९-१२१। (२) **पार पहुँचा हुआ।** (३) **पूरा जानकार, पूर्ण पंडित।**

पार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नदी, झील आदि के दूसरी ओर का किनारा।** उ.—भव-समुद्र हरि-पद नौका बिनु कोउ न उतारै पार—१-६८।

मुहा०—पार उतरना—(१) **पाट या फैलाव पार करके दूसरे किनारे पहुँचना।** (२) **काम से छुट्टी पा जाना।** (३) **सफलता प्राप्त करना।** पार उतारना—(१) **दूसरे किनारे पर पहुँचाना।** (२) **समाप्त कर देना।** (३) **सफलता प्राप्त करना।** (४) **उद्धार करना।** पार तरना—(१) **नदी, समुद्र आदि पार करना।** (२) **दुख, कष्ट आदि से छुटकारा पाना।** पार तरै—**उद्धार हो जाता है, दुख-कष्ट से मुक्ति या छुटकारा मिल जाता है।** उ—सूरजदास स्याम सेए तै दुस्तर पार तरै—१-८२। (किसी का) पार लगाना—**निर्वाह करना।** लड़की पार होना—**कन्या का विवाह होना।**

यौ०—आरपार—**इस किनारे से उस किनारे तक।** वार पार—**यह और वह किनारा।** उ.—सूर स्याम द्वै अँखियन देखति, जाको वार न पार—१३११।

(२) **दूसरी ओर या तरफ।**

यौ०—आर पार—**एक ओर से होकर दूसरी ओर निकलना।**

मुहा०—पार करना—(१) **एक ओर से करके दूसरी ओर पहुँचा देना।** (२) **उद्धार करना।** पार होना—**एक ओर से जाकर दूसरी ओर निकलना।**

(३) **ओर, तरफ।** (४) **छोर, अंत।** उ.—प्रभु तव माया अगम अमोघ है लहि न सकत कोउ पार—३४६४।

मुहा०—पार पाना—(१) **अंत तक पहुँचना।** (२) **सफलता पाना।**

अव्य.—**परे, आगे, दूर।**

पारख—संज्ञा स्त्री [हि परख] **जाँच, परीक्षा।**

संज्ञा पु [हिं. पारखी] **परख या जाँच करनेवाला।**

पारखद—संज्ञा पु. [सं. पार्षद] **सेवक, पार्षद।**

पारखि, पारखी—संज्ञा पुं. [हिं.परख] **परखने-जाँचनेवाला।** उ.—सूरदास गथ खोटो काहे पारखि दोष धरे—पृ० ३३१ (५)।

पारगत—वि. [सं.] (१) **पार जानेवाला** (२) **जानकार।**

पारचा—संज्ञा पु. [फा.] (१) **टुकड़ा।** (२)**पोशाक।**

पारण—संज्ञा पुं. [सं] (१) **व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्संबधी कृत्य।** (२) **तृप्त करने की क्रिया या भाव।** (३) **मेघ, बादल।**

पारत—क्रि. स. [हिं. पारना] **झपकाता, मिलाता या गिराता है।** उ.—निदरे बिरह समूह स्याम अँग पेखि

पलक नहिं पारत—पृ० ३३५ (४७)।

पारथ—संज्ञा पुं० [सं. पार्थ] **अर्जुन**। उ.—प्रभु-पारथ द्वै नाहीं।

पारथिव—वि. [सं. पार्थिव] (१) **पृथिवी-सबंधी**। (२) **पृथ्वी या मिट्टी से बना हुआ**। (३) **राजसी**।

पारद—संज्ञा पु. [सं.] **पारा**।

पारदर्शक—वि. [सं.] **जिससे आरपार दिखायी दे**।

पारदर्शी—वि. [सं.] (१) **उस पार तक देखनेवाला**। (२) **दूर तक देखनेवाला, दूरदर्शी**। (३) **जिसने खूब देखा-सुना हो**।

पारधि, पारधी—संज्ञा पुं० [सं परिधान = आच्छादन, हिं पारधी] (१) **शिकारी**। उ—हौ अनाथ बैठ्यौ द्रुम-डरिया, पारधि साधे बान।.....। सुमिरत ही अहि डस्यौ पारधी, कर छूट्यौ संधान—१-९७। (२) **बहेलिया**। (३) **बधिक**।

संज्ञा स्त्री.—**ओट, आड़**।

पारन—संज्ञा पुं [सं. पारण] **व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्सबंधी कृत्य**। उ.—पारन की विधि करौ सवारै—१००१।

पारना—क्रि. स. [हिं पारना] (१) **डालना, गिराना**। (२) **जमीन पर डालना**। (३) **लिटाना**। (४) **कुश्ती मे गिराना**। (५) **एक वस्तु को दूसरी मे डालना या रखना**। (६) **रखना**। (७) **शामिल करना**। (८) **पहनाना**। (९) **उत्पात मचाना**। (१०) **साँचे में डालकर तैयार करना**।

क्रि. अ. [हिं. पार] **समर्थ होना**।

क्रि. स. [हिं पालना] **पालन-पोषण करना**।

पारबती—संज्ञा स्त्री [सं पार्वती] **हिमालय की कन्या, शिवजी की अर्द्धांगिनी**।

पारमार्थिक—वि. [सं.] **परमार्थ-सबधी**।

पारलौकिक—वि. [सं.] **परलोक सबधी**।

पारषद—संज्ञा पुं. [सं. पार्षद] **पार्षद, सेवक**। उ—जय अरु बिजय पारषद दोई। बिप्र-सराप असुर भए सोई—६-१५।

पारस—संज्ञा पुं. [सं स्पर्श, हि. परस] (१) **एक पत्थर जिससे छूते ही लोहा सोना हो जाता है**। (२) **अत्यंत उपयोगी वस्तु**।

वि.—(१) **स्वच्छ, उत्तम**। (२) **स्वस्थ**।

संज्ञा पु. [हिं. परसना] **परसा भोजन**।

संज्ञा पु. [सं. पार्श्व] **पास, निकट, समीप**। उ.—(क) भृकुटी कुटिल निकट नैनन के चपल होत यहि भाँति। मनहुँ तामरस पारस खेलत बाल भृंग की पाँति—१३५७। (ख) उत स्यामा इत सखा मंडली, इत हरि उत ब्रज नारि। मनो तामरस पारस खेलत मिलि मधुकर गुंजारि।

संज्ञा पुं. [सं. पारस्य] **एक प्रसिद्ध देश**।

पारसी—वि. [फ़ा. पारस] **पारस देश का**।

संज्ञा पुं.—**पारस देश का निवासी**।

पारसीक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पारस देश**। (२) **पारस का वासी**।

पारस्परिक—वि. [सं.] **परस्पर होनेवाला, आपस का**।

पारा—संज्ञा पुं. [सं. पार] (१) **दूसरा तट, दूसरी ओर**। उ.—गयौ कूदि हनुमत जब सिंधु पारा—९-७६। (२) **छोर, अत**।

पावहिं नहिं पारा—**अंत या छोर नहीं पाते**। उ.—सुर-सारद से करत बिचारा। नारद-से नहि पावहि पारा—१०-३।

संज्ञा पुं. [सं. पारद] **एक चमकीली धातु, पारद**।

संज्ञा पु. [सं पारि] **मिट्टी का बड़ा प्याला**।

पारायण—संज्ञा पु. [सं.] (१) **पूरा करने का कार्य**। (२) **नियत समय तक ग्रथ का आद्योपांत पाठ**।

पारावत—संज्ञा पुं. [सं] (१) **पडुक**। (२) **कबूतर**। ब.—बन उपवन फल-फूल सुभग सर सुक सारिका हस पारावत—१० उ.-५। (३) **बदर**। (४) **पर्वत**।

पारावार—संज्ञा पुं. [सं] (१) **आरपार, तट**। (२) **सीमा, अत**। उ.—तिन कीन्ह्यौ सब जग विस्तार। जाकौ नाही पारावार—४-६। (३) **समुद्र, सागर**।

पारि—संज्ञा स्त्री. [हि पार] (१) **हद, सीमा**। उ.—मानो बदि इदु मडल मे रूप सुधा को पारि—१६८४। (२) **ओर, दिशा**। (३) **जलाशय का तट**।

क्रि. स. [हिं. पारना] (१) **(उत्पात या शोर) करके**। उ.—सोर पारि हरि सुबलहिं धाए, गह्यौ श्रीदामा जाहि—१०-२४०। (२) **(माँग, चोटी)**

सँवारकर। उ —(क) माँग पारि बेनी जु सँवारति गूँथी सुदर भाँति—७०४। (ख) मुँडली पटिया पारि सँवारै कोढी लावै केसरि—३०२६। (३) **बधन मे डालकर, बाँधकर**। उ —तिनकी यह करि गए पलक मे पारि बिरह दुख बेरी—२७१६।

पारिख—सज्ञा स्त्री. [हि. परख] **जाँच, परीक्षा**।

पारिजात, पारिजातक—संज्ञा पुं. [स.] (१) **देव-वृक्ष जो समुद्र-मंथन से निकला था और अब नंदनकानन मे है**। (२) **हरसिंगार**। (३) **कचनार, कोविदार**।

पारित—वि. [सं.] (१) **जिसका पारण हो चुका हो**। (२) **जो परीक्षा मे उत्तीर्ण हो चुका हो**।

पारितोषिक—वि. [स] **प्रीति या आनंदकर**।

सज्ञा पुं.—**पुरस्कार, इनाम**।

पारिभाषिक—वि. [स] **विशिष्ट अर्थ मे प्रयुक्त**।

पारिश्रमिक—संज्ञा पु. [सं.] **परिश्रम के बदले (लेखक या कार्यकर्ता को) दिया जानेवाला धन**।

पारिषद्—संज्ञा पु. [सं.] (१) **सभासद**। (२) **गण**।

पारी—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन की, पूरी की, निभा दी**। उ.—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी। हिरनकसिपु की देह बिदारी—१-२८।

क्रि. स. [हि. पारना] **(माँग) सँवारी या निकाली, (बाल काढ़कर माँग) बनाई**। उ.—बूझनि जननि कहाँ हुती प्यारी। किन तेरे भाल तिलक रचि कीनौ, किहि कच गूँदि माँग सिर पारी—७०८।

संज्ञा स्त्री. [हि बारी] **बारी, ओसरी**।

पारे—वि. [हिं. पारना] (१) **सजाये या काढ़े हुए**। उ —वे मोरे सिर पटिया पारे कंथा काहि उढाऊँ—३४६६।

क्रि. स.— **उठाये, मिलाये, गिराये**। उ.—मानहु रति रस भए रँगमगे करत केलि पिय पलक न पारे —३१३२।

पारेउ—क्रि. स. [हिं. पारना] **गिराया, खोया**। उ.—बिकल मान खोयौ कौरव पति, पारेउ सिर कौ ताज —१-२५५।

पारौं—क्रि. स. [हिं. पारना] **गिराऊँ, गिरने को प्रवृत करूँ, डालूँ**। उ.—कहौ तौ ताकौ तृन गहाइ कै, जीवित पाइनि पारौ—६-१०८।

क्रि. स. [हि. पारना] **पूरी करूँ, पालन करूँ, निभाऊँ**। उ.—रघुपति, जौ न इंद्रजित मारौं। तौ न होउँ चरननि कौ चेरौ, जौ न प्रतिज्ञा पारौ—६-१३७।

पार्‍यौ—क्रि. स. [हिं पारना] (१) **गिराया, नष्ट किया**। उ.—द्रुपद-सुता की राखी लाज। कौरवपति कौ पार्‍यौ ताज—१-२४५। (२) **(शब्द) निकाला, (शोर) किया**। उ.—मरत असुर चिकार पार्‍यौ—४२७।

पार्थ—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथ्वीपति**। (२) **अर्जुन**।

पार्थक्य—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **पृथकता, भेद**। **वियोग**।

पार्थव—संज्ञा पु. [स.] **स्थूलता, भारीपन**।

पार्थिव—सज्ञा पुं. [स] (१) **पृथ्वी-सबधी**। (२) **पृथ्वी या मिट्टी से उत्पन्न**। (३) **राजसी**।

पार्वती—सज्ञा स्त्री. [स.] **हिमालय-पुत्री जो शिव की अर्द्धांगिनी देवी है, गौरी, शिवा, भवानी**।

पार्श्व—संज्ञा पु. [स.] (१) **बगल**। (२) **पसली**। (३) **अगल-बगल की जगह**। (४) **कुटिल उपाय**।

पार्श्वनाथ—संज्ञा पुं. [स.] **जैनियो के तेइसवें तीर्थंकर**।

पार्षद—सज्ञा पुं. [स] (१) **सेवक, अनुचर**। उ.—अजामिल द्विज सौं अपराधी, अतकाल बिडरै। सुत-सुमिरत नारायन-बानी, पार्षद धाइ परै—१-८२। (२) **मत्री**।

पाल—सज्ञा पुं [सं.] **पालनकर्ता, पालक**। उ.—मन बिहँसत गोपाल, भक्त-पाल, दुष्ट-साल, जानै को सूरदास चरित कान्ह केरौ—१०-२७६।

संज्ञा—पुं. [हिं. पालना] **फलो को पकाने के लिए भूसे-पत्ते आदि मे रखना**।

सज्ञा पु.—[स. पट या पाट] (१) **मस्तूल से लगा लबा चौड़ा परदा जिसमे हवा भरने से नाव चलती है**। (२) **तंबू, चँदोवा**। (३) **गाड़ी, पालकी आदि का ओहार**।

सज्ञा स्त्री. [सं. पालि] (१) **बाँध, मेड़**। (२) **ऊँचा किनारा**।

पालउ—संज्ञा पुं. [स. पल्लव] **पल्लव, कोपल**।

पालक—सज्ञा पुं. [स.] (१) **पालनकर्त्ता**। (२) **निर्वाह करने वाला**। उ.—तुम हो बडे रोग के पालक संग लिए कुबिजा सी—३१३३।

संज्ञा पु.—**एक तरह का साग।** उ.—सरसों मेथी सोवा पालक—३९६।

पालकी - संज्ञा स्त्री. [स. पर्यंक] **बढ़िया 'डोली' की सवारी।**

पालत—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालता है, पालन-पोषण करता है।** उ.—पालत, सृजत, सँहारत, सैंतत, अंड अनेक अवधि पल आधे—६-५८।

पालतू—वि. [हिं. पालना] **पाला पोसा हुआ।**

पालथी—संज्ञा स्त्री. [सं. पर्य्यस्त] **बैठने की एक रीति।**

पालन—संज्ञा पु. [सं.] (१) **भरण-पोषण।** (२) **निर्वाह।**

पालनहारै—वि [सं. पालन+हारै (प्रत्य.)] **पालनेवाले।** उ.—सूर स्याम के पालनहारै, आवतिं हौ नित गारि—१-१५०।

पालना—क्रि. स.[स पालन] (१) **भरण-पोषण करना।** (२) **पशु पक्षी को खिलाना-पिलाना और हिलाना।** (३) **भग न करना, न टालना।**

संज्ञा पुं. [सं. पल्यंक] **बच्चों का झूला, हिंडोला।**

पालनैं—संज्ञा पुं. सर्व [हिं. पालना] **हिंडोले में।** उ.—जसोदा हरि पालनैं झुलावै—१०-४२।

पालीं—वि पुं. [हिं. पालना] **जिन्हें पाला हो, पाली हुईं।** उ.—आईं बेगि सूर के प्रभु पै, ते क्यौं भजै जे पाली—६१३।

पाली—क्रि. स. [हिं. पालना] **पालन की, निर्वाह की, निभायी।** उ.—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पाली, कियौ बिभीषन राजा भारी—१-३४।

संज्ञा स्त्री. [सं. पालि] **बरतन का ढक्कन।**

संज्ञा स्त्री.—**एक प्रसिद्ध प्राचीन भाषा।**

पालू—वि. [हिं. पालना] **पाला हुआ, पालतू।**

पालै—क्रि. स. [हि. पालना] **पालन करे।** उ.—दया धर्म पालै जो कोइ—पृ. ६०० (२)।

पालो, पालौ—संज्ञा पुं. [सं. पल्लव] **पत्ता, कोपल।**

पावँ—संज्ञा पुं. [स. पाद, प्रा. पाय, पाव हिं.पाँव] **पैर, पग।**

मुहा०—पावँ अड़ाना—**व्यर्थ ही बीच में पड़ना या दखल देना।** पावँ उखड़ (उठ) जाना—**सामने रुकने, ठहरने या लड़ने का साहस न रहना।** पावँ काँपना—(१) **भय, निर्बलता आदि से पैर काँपना।** (२) **ठहरने या आगे बढ़ने का साहस न रहना।** पावँ की जूती—**अत्यंत तुच्छ।** पावँ की जूती सिर को लगाना—**छोटे आदमी को बहुत महत्व दे देना।** पावँ की बेड़ी—**झंझट, जजाल।** पावँ को मेंहदी न छिसना (छूटना)—**कहीं जाने में ज्यादा कष्ट या परेशानी नहीं होगी।** पावँ खींचना - **घूमना फिरना छोड़ देना।** पावँ गाड़ना—(१) **डटकर खड़े रहना या सामना करना।** (२) **दृढ़ रहना।** पावँ जमना (टकना)—**दृढ़ता से रहना।** पावँ जमाना—(१) **डटकर खड़े रहना या सामना करना।** (२) **दृढ़ रहना।** (३) **रहने-बसने का मजबूत प्रबध कर लेना।** पावँ टिकाना—(१) **खड़ा होना।** (२) **विश्राम करना।** पावँ ठहरना—(१) **पैर जमना।** (२) **स्थिरता होना।** पावँ डगमगाना—(१) **पैर स्थिर न रहना।** (२) **विचलित हो जाना।** पावँ डालना—**काम करने को तैयार होना।** पावँ तले की चींटी—**अत्यंत दीन-हीन प्राणी।** पावँ तले की धरती सरकना—**ऐसा दुख होना कि पृथ्वी भी काँप जाय।** पावँ तले की मिट्टी निकल जाना—**ऐसी अनहोनी या भयंकर बात कि सुनकर सन्नाटे में आ जाना।** पावँ तोड़ना—**बहुत चलकर पैर थकाना।** पावँ तोडकर बैठना—(१) **अचल या स्थिर होना।** (२) **थक-हारकर बैठ जाना।** पावँ थरथराना—(१) **भय, आशका आदि से पैर काँपना।** (२) **आगे बढ़ने का साहस न होना।** पावँ दबाना (दाबना)—(१) **थकावट दूर करने को पैर दबाना।** (२) **सेवा करना।** पावँ धरना—**कहीं जाना।** काम मे पावँ धरना—**काम में लगना।** (किसी का) पावँ धरना—(१) **पैर छूकर प्रणाम करना।** (२) **दीनता दिखाना।** (३) **तेजी दिखाना, तर्क से निरुत्तर करना।** पावँ धरना—**कहीं जाना।** बुरे पथ पर पाँव धरना—**बुरे कामों मे रुचि लेना।** पावँ धोकर पीना—**बड़ा आदर-भाव दिखाना।** पावँ निकलना—(१) **आजादी से घूमना-फिरना।** (२) **दुराचार के कारण बदनामी होना।** पावँ निकालना—(१) **इतराकर चलना, हैसियत से बाहर काम करना।** (२) **स्वेच्छाचारी होना।** (३) **दुराचरण करना।** (४) **चालाकी दिखाना।** (काम से) पावँ निकालना—**काम के झगड़े**

से अलग हो जाना। पावँ पकड़ना—(१) **जाने से रुकने को प्रार्थना करना**। (२) **बड़ी दीनता दिखाना**। (३) **बड़े भक्ति-भाव से नमस्कार करना**। पावँ पकरना—**विनयपूर्वक यात्रा से रोकना**। पावँ पकरि—**बड़ी विनय या नम्रता दिखाकर**। उ.—जानति जो न स्याम ऐहैं पुनि पावँ पकरि धर राखती। पावँ पकरति—**बड़ी दीनता या विनयपूर्वक प्रार्थना करती हूँ**। उ.—अब यह बात कहौ जनि ऊधो, पकरति पावँ तिहारे। पावँ पखारना—**पैर धोना**। पावँ पड़ना—(पैर पर गिरना) (१) **भक्ति-भाव से प्रणाम करना**। (२) **दीनता दिखाना**। (३) **जाने से रुकने को नम्रतापूर्वक कहना**। पॉव पर पावँ रखकर बैठना (सेना)—(१) **काम-धंधा छोड़ बैठना**। (२) **बेफिक्र या गाफिल रहना**। (किसी के) पावँ पर पावँ रखना—**किसी का अनुकरण करना**। (किसी के) पावँ पर सिर रखना—(१) **भक्ति-भाव से प्रणाम करना**। (२) **दीनता दिखाना**। (३) **जाने से रुकने को नम्रतापूर्वक कहना**। पावँ पलोटना—**सेवा करना**। पॉव पसारना—(१) **आराम से सोना**। (२) **मरना**। (३) **ठाट-बाट करना**। पावँ-पावँ (चलना)—**पैदल चलना**। पावँ पीटना—(१) **तड़पना, छटपटाना**। (२) **रोग या मृत्यु का कष्ट भोगना**। (३) **परेशान या हैरान होना**। पावँ पूजना—(१) **बड़ा आदर-सत्कार करना**। (२) **कन्यादान में योग देना**। (३) **खुशामद से पनाह माँगना**। पावँ फिसलना—**कुसगत मे पड़ना**। पावँ फूँक-फूँककर रखना—**बहुत बचा-बचाकर या सावधानी से चलना**। पावँ फूलना—(१) **पैर आगे न उठना**। (२) **थकावट से पैर दुखना**। पावँ फेरने जाना—(१) **विवाह के पश्चात् वधू का पहले पहल ससुराल जाना**। (२) **बच्चा होने के पश्चात् वधू का अपने माता-पिता या बड़े सबंधियो के यहाँ जाना**। पावँ फैलाना—(१) **अधिक की प्राप्ति के लिए लोभ दिखाना**। (२) **बच्चों की तरह मचलना**। पावँ बढ़ाना—(१) **जल्दी जल्दी चलना**। (२) **अधिकार बढ़ाना**। पावँ बाहर निकलना—**बदनामी फैलना**। पावँ बाहर निकालना—(१) **इतराकर चलना**। (२) **स्वेच्छाचारी होना**। पावँ विचलना (१) **पैर रपट जाना**। (२) **स्थिर या दृढ़ न रहना**। (३) **नीयत डोल जाना**। (४) **कुसगति में पड़ जाना**। पावँ भर जाना—**चलने की बहुत थकावट होना**। पावँ भारी होना—**गर्भ रहना**। (किसी से) पावँ भी न धुलवाना (दबवाना)—(किसी को) **बहुत ही तुच्छ समझना**। पावँ मे क्या मेहदी लगी है—**कहीं आने-जाने का आलस्य दिखाना (व्यंग्य)**। पावँ में बेड़ी पड़ना—(**गृहस्थी के**) **बधन या जंजाल में पड़ना**। पावँ मे सिर देना—(१) **प्रणाम करना**। (२) **दीनता दिखाना**। (३) **पनाह माँगना**। पावँ रगड़ना—(१) **छटपटाना**। (२) **दौड़-धूप करना**। पावँ रह जाना—(१) **चलने या दौड़ने-धूपने से पैरों मे बहुत ही थकावट होना**। (२) **पैर अशक्त हो जाना**। पावँ रोपना—**प्रतिज्ञा करना**। पावँ लगना—(१) **पैर छूकर प्रणाम करना**। (२) **आदर करना**। (३) **विनती करना**। पावँ लगा होना—**खूब घूमा-फिरा और परिचित (स्थान) होना**। पावँ समेटना सिकोड़ना, सुकेडना—(१) **पैर ज्यादा न फैलाना**। (२) **लगाव या सबध न रखना**। (३) **इधर-उधर न घूमना**। पावँ से पावँ बाँधकर रखना—(१) **बराबर अपने पास रखना**। (२) **पूरी चौकसी या निगरानी रखना**। पावँ न होना—**दृढ़ता या साहस न होना**। धरती पर पावँ न रखना (रहना)—(१) **बहुत घमंड होना**। (२) **अत्यानद से फूले अंग न समाना**।

पावँड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ+डा.] **पैरपुछना, पायंदाज**।

पावँड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँ+ड़ी] (१) **खड़ाऊँ**। (२) **जूता**।

पावँर—वि. [सं. पामर] (१) **दुष्ट, नीच**। (२) **मूर्ख**।
उ.—पाखँड धर्म करत है पावँर।

संज्ञा पुं. [हिं. पावँड़ा] **पायंदाज**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँड़ी] (१) **खड़ाऊँ**। (२) **जूता**।

पावँरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँड़ी] (१) **खड़ाऊँ**। (२) **जूता**।

पावँ—संज्ञा पुं. [सं. पाद] (१) **चौथाई भाग**। (२) **एक सेर का चौथाई भाग**।

क्रि. स. [हिं. पाना] **पाते हैं।** उ.—जाकौ सिव-बिरंचि सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव—१०-७५।

पावक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्नि।** (२) **सदाचार।**

वि.—**पवित्र करनेवाला।**

पावत—क्रि. स. [हिं. पाना] **पाते हैं।** उ.—जन्मथान जिय जानि कै ताते सुख पावत—२५६०।

पावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. पाना] **पाती है।** उ.—ढ़ूँढ़त फिरति ग्वारिनी हरि कौ, कितहूँ भेद न पावति४-५६।

पावती—क्रि. स. स्त्री. [हि. पाना] **पाती, पा सकती।**

प्र.—छबि पावती—**शोभा देखती।** उ.—स्यामा छबीली भावती, गौर स्याम छबि पावती—२०६५। जान पावती— (१) **जा सकती।** उ.-जौ हौं कैसेहु जान पावती तौं कत आवत छोडी—२७०१। (२) **समझ पाती।**

पावन—वि. [सं.] (१) **शुद्ध या पवित्र करनेवाला।** उ.—जौ तुम पतितनि के पावन हौ, हौ हूँ पतित न छोटौ—१-१७६। (२) **शुद्ध, पवित्र।**

संज्ञा पुं.-(१) **अग्नि, आग।** (२) **शुद्धि, प्रायश्चित।** (३) **जल।** (४) **गोबर।** (५) **चंदन।** (६) **विष्णु।**

पावनता, पावनताई—संज्ञा स्त्री. [स. पावनता] **पवित्रता।**

पावनध्वनि—संज्ञा पुं [स.] **शंख।**

पावना—क्रि. स. [हिं. पाना] (१) **पाना, प्राप्त करना।** (२) **जानना-समझना, अनुभव करना।** (३) **भोजन करना।**

पावनी—वि. स्त्री. [सं.] **पवित्र करनेवाली।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **तुलसी।** (२) **गाय।** (३) **गंगा।**

पावनी—वि. [हि. पावना] **पानेवाला।**

संज्ञा पुं.—**पाने की क्रिया या भाव।**

पावस—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रावृष, प्रा. पाउस] **वर्षाकाल, बरसात, सावन-भादो के महीने।** उ.—चतुरानन बल सँभारि मेघनाद आयौ। मानौ घन पावस मैं नगपति है छायौ—६-६६।

पावहिंगे—क्रि. स. [हिं. पाना] **पायँगे, प्राप्त करेंगे।** उ.—निरखि-निरखि वह मदन मनोहर नैन बहुत सुख पावहिंगे—२८८६।

पावा—संज्ञा पुं. [हिं. पावँ] **पलँग आदि का पाया।**

पावै—क्रि. स. [हिं. पावना] (१) **प्राप्त करता है।** (२) **फल भोगता है।** (३) **अनुभव करता है।** उ.—मन बानी कौं अगम अगोचर सो जानै जो पावै—१-२। (४) **जान या समझ सकता है।** उ.—तुम बिनु और न कोउ कृपा निधि पावै पीर पराई—१-१६५। (५) **जानना, समझना।**

पाश—संज्ञा पुं. [स] (१) **फंदा, फाँस।** (२) **पशु-पक्षी को फँसाने का जाल।** (३) **बंधन।**

पाशक—संज्ञा पुं. [स.] **जुए का एक खेल।**

पाशधर—संज्ञा पुं. [सं.] **वरुण जिनका अस्त्र पाश है।**

पाशव, पाशविक—वि. [सं.] (१) **पशु-सबधी।** (२) **पशु-जैसा।** (३) **अत्यंत निर्दय और कठोर।**

पाशिक—वि. [स.] **जाल मे फँसानेवाला।**

पाशित—वि. [सं.] **जाल में फँसा हुआ, पाशबद्ध।**

पाशी—वि. [सं.] **पाश धारण करनेवाला।**

पाशुपतास्त्र—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव का शूलास्त्र जिससे अर्जुन ने जयद्रथ को मारा था।**

पाश्चात्य—वि. [सं.] (१) **पिछला।** (२) **पश्चिम का।**

पाषंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वेद-विरुद्ध आचरण करने वाला।** (२) **आडबर, ढोंग।** (३) **ढोंगी या कपटी मनुष्य।** (४) **संप्रदाय।**

पाषंडी—वि. [सं. पाषण्डिन्] **ढोंगी, धूर्त, ठग, आडम्बरी।**

पाषाण—संज्ञा पुं. [स.] **पत्थर, प्रस्तर।**

पाषाणी—वि. [सं.] **कठोर हृदयवाली।**

पासंग—संज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **तराजू के पलड़े बराबर करने के लिए रखी जानेवाली वस्तु, पसंघा।**

मुहा.—पासंग (बराबर) भी न होना—**तुलना या मुकाबले में जरा भी न ठहरना, बहुत ही कम होना।**

(२) **तराजू की डंडी का किसी ओर झुकना।**

पासंगहु—संज्ञा पुं. [फा. पासंग+हिं. हु (प्रत्य.)] **पसघा भी, पसंघे के बराबर भी।**

मुहा.—पासगहु नाहीं—**बहुत ही तुच्छ है, कुछ भी नहीं है, नगण्य हैं।** उ.—पतितनि मैं बिख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारौ। बड़े पतित पासंगहु नाहीं, अजमिल कौन बिचारौ—१-१३१।

पास—संज्ञा पुं. [सं. पार्श्व] (१) **बगल, ओर, तरफ।** (२) **सामीप्य, निकटता।**

यौ०—पास-परोसनैं—**पास-पड़ोस में रहनेवाली स्त्रियाँ।** उ.—हरषी पास-परोसनैं (हो), हरष नगर के लोग—१०४०।

(३) **अधिकार, रक्षा, पल्ला।**

अव्य०—(१) **बगल में, निकट, समीप।** उ.—हम अजान नत डरत है, कान्ह हमारैं पास—४३१। (२) **निकट जाकर, संबोधन करके, किसी के प्रति।** उ.—माँगत है प्रभु पास दास यह बार बार कर जोरी। (३) **अधिकार में, रक्षा में, पल्ले।** उ.—ज्यों मृगा कस्तूरि भूलै, सु तौ ताके पास—१-७०।

संज्ञा पुं.—[सं. पाश]—**पाश, फंदा।** उ.—बरुन-पास तैं ब्रजपतिहिं छन माहि छुड़ावै—१-४।

पासना—क्रि. अ. [हि. पय] **थन में दूध उतरना।**

पासनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राशन] **अन्नप्राशन, बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति।** उ.—कान्ह कुँवर की करहु पासनी कछु दिन घटि षट मास गए—१०-८८।

पासमान—संज्ञा पुं. [हिं पास+मान] (१) **पास ही में बना रहनेवाला, निकट रहनेवाला।** (२) **मंत्री।** (३) **सखा।**

पासा—संज्ञा पुं. [सं. पाशक, प्रा. पासा] (१) **चौसर खेलने के टुकड़े जिन्हें खिलाड़ी बारी-बारी फेंकते हैं।** उ.—छल कियौ पाडवनि कौरव कपट पासा ढरन—१-२०२।

मुहा०—पासा पड़ना—(१) **जीत का दाँव पड़ना।** (२) **भाग्य अनुकूल होना।** पासा पलटना—(१) **खेल में हारना।** (२) **भाग्य प्रतिकूल होना।** (३) **प्रयत्न करने पर भी उलटा फल होना।** पासा फेंकना—**भाग्य की परीक्षा करना।**

(२) **पासे का खेल, चौसर।** (३) **चौकोर टुकड़े।** उ.—महल-महल लागे मनि पासा—२६४३।

अव्य. [हिं. पास] (१) **निकट, समीप।** उ.—(क) अतिहिं ए बाल हैं, भोजन नवनीति के जानि तिन्हें लीन्हें जात दनुज पासा—२५५२। (ख) आतुर गयो कुवलिया पासा—२६४३। (२) **अधिकार या कब्जे में।** उ. कोटि दनुज मो सरि मो पासा—२४५६।

पासासार, पासासारि—संज्ञा पुं. [हिं. पासा+सारि=गोटी] (१) **पासे का खेल।** (२) **पासे की गोटी।**

पासिक—संज्ञा पु. [सं. पाश] **फंदा, जाल, बंधन।**

पासि, पासिका—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश] **फंदा, जाल, बंधन।** उ.—(क) मोहन के मन बाँधिबे को मनो पूरी पासि मनोज—२०६४।

पासी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाशी] (१) **फंदा डालकर फँसाने वाला।** (२) **एक नीची जाति।**

संज्ञा स्त्री. [सं पाश] **फंदा, बंधन।** उ.—सूरदास प्रभु दृढ़ करि बाँधे प्रेम-पुंजित पासी—३०८६।

पासुरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पसली] **पसली।**

पाहँ—अव्य. [सं. पार्श्व, प्रा. पास, पाह] (१) **निकट, समीप, पास।** (२) **किसी के प्रति, किसी को संबोधन करके।**

पाहन—संज्ञा पुं. [सं. पाषाण, प्रा. पाहाण] **पत्थर, प्रस्तर।** उ.—पाहन बीच कमल बिकसावै, जल मैं अगिनि जरै—१-१०५।

पाहरू—संज्ञा पुं. [हिं. पहरा] **पहरा देनेवाला।**

पाहा—संज्ञा पुं. [सं. पथ] **खेत की मेड़।**

पाहाँ, पाहिं—अव्य. [सं. पार्श्व, प्रा. पास, पाह] (१) **निकट, समीप।** (२) **किसी के प्रति, किसी को संबोधन करके।** (३) **(किस) से।** उ.—हमहिं छाप देखावहु दान चहत केहि पाहिं—११०६।

पाहि—पद [सं.] **बचाओ, रक्षा करो।**

पाहीं—अव्य. [हिं. पाहि] (१) **समीप।** (२) **किसी के प्रति।**

पाहुँच—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहुच] **पैठ, प्रवेश, पहुँच।**

पाहुन, पाहुना—संज्ञा. पुं. [सं. प्रघूर्ण] **अतिथि।**

पाहुनी—संज्ञा स्त्री. [हि. पुं. पाहुना] **स्त्री अतिथि, अभ्यागत स्त्री।** उ.—पाहुनी, करि दै तनक मह्यौ। हौं लागी गृह-काज-रसोई, जसुमति बिनय कह्यौ—१०-१८२।

पाहुने—संज्ञा पुं. [हिं. पाहुना] **अतिथि, मेहमान, अभ्यागत।** उ.—(क) जा दिन संत पाहुने आवत—२-१७। (ख) सुंदर स्यान पाहुने के मिसि मिल न जाहु दिन चार—२७६६।

पाहुर— संज्ञा पुं. [सं. प्राभृत, प्रा. पाहुड़ = भेंट] **भेंट, सौगात**।

पाहैं— अव्य. [हिं पाहँ] (१) **पास, निकट**। (२) **किसके प्रति**। उ.—सूरदास प्रभु दूरि सिधारे दुख कहिए केहि पाहैं—२८०१।

पिंग, पिंगल— वि. [सं.] (१) **पीला**। (२) **भूरापन लिये लाल**। (३) **भूरापन लिये पीला**।

पिंगल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक प्राचीन आचार्य जिन्होंने छंद शास्त्र रचा था**। (२) **उक्त आचार्य का बनाया छंदशास्त्र**। (३) **छंदशास्त्र**।

पिंगला—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **हठयोग की तीन प्रधान नाड़ियों में एक**। उ.—इगला, पिंगला, सुखमना नारी—३३०८। (२) **एक वेश्या जिसे वियोग में तड़पते तड़पते ज्ञान हुआ कि निकट के कांत को छोड़कर दूर के कांत के लिए भटकना अज्ञान है**। उ.—सूरदास बरु भली पिंगला आशा तजि परतीति—२७३०।

पिंजड़ा, पिंजर, पिंजरा—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] **लोहे, बाँस आदि की तीलियों से बना झाबा जिसमें पक्षियों को रखा जाता है**। उ.—कंस के प्रान भयभीत पिंजरा जैसे नव विहगम तैसे मरत फफराने—२५६६।

पिंजर—संज्ञा पुं. [सं. पंजर] (१) **पिंजड़ा**। (२) **शरीर की हड्डियों की ठठरी**।

पिंजरन—संज्ञा पुं. बहु [हिं. पिंजर] **पिंजड़ों में**। उ.—ज्यों उड़ि मैलि बधिक खग छिन में पलक पिंजरन तोरि—पृ. ३३३ (२०)।

पिंजरापोल—संज्ञा पु. [हिं. पिंजरा+पोल] **गोशाला**।

पिंजरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंजड़ा] **छोटा पिंजड़ा**। उ.—बच पिंजरी रूँधि मानों राखे निकसन को अकुलात—२७०३।

पिंजरैं—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. पिंजरा, पिंजड़ा] **पिंजड़े में**। उ.—कीर पिंजरैं गहत अँगुरी, ललन लेत भँजाइ—४६८।

पिंड—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गोल मटोल टुकड़ा, पिंडा, ढेर**। उ.—दुहूँ करनि असुर हयौ, भयो मास पिंड-६-६६। (२) **लौंदा, लुगदा**। उ.—माखन पिंड बिभागि दुहूँकर, मेलत मुख मुसुकाइ—१०-१७६। (३) **खीर का लौंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है**। (४) **भोजन, आहार**। (५) **शरीर, देह**। उ.—अपनौ पिंड पोषिबे कारन, कोटि सहस जिय मारे—१-३३४।

मुहा.—पिंड छोड़ना—**तंग न करना**। पिंड पड़ना—**तंग करना**।

पिंडखजूर—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंडखर्जुर] **खजूर**।

पिंडज—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जीव जो गर्भ से बने-बनाये शरीर के रूप में जन्मे**।

पिंडदान—संज्ञा पुं. [सं.] **पितरों को पिंड देना**।

पिंडली, पिंडरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड, हिं. पिंडली] **घुटने के कुछ नीचे का पिछला मांसल भाग**।

पिंडवाही—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह का कपड़ा**।

पिंडा—संज्ञा पुं. [सं. पिंड] (१) **गोल-मटोल टुकड़ा, ढेर**। (२) **लौंदा, लुगदा**। (३) **खीर का लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है**। (४) **शरीर, देह**।

पिंडारू, पिंडालू—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंड+हिं. आलू] **एक प्रकार का मीठा सकरकंद**। उ.—बनवौरा पिंडीक चिचिंडी। सीप पिंडारू कोमल भिंडी—३९६।

पिंडिया, पिंडी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] **छोटा लंबा पिंड**।

पिंडीक—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंडिका] **इमली, श्वेतांलिका**।

पिंडीशूर—संज्ञा पुं.—[सं.] **डींग हाँकने वाला**।

पिंडुरी, पिंडुरिया पिंडुली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिंडली] **पिंडली**। उ.—पीन पिंडुरिया साँवल सीरी चरणांबुज नख लाल री—पृ. ४२०।

पिअ—वि. [सं. प्रिय] **प्यारा, प्रिय**।

संज्ञा पुं.—(१) **प्रेमी**। (२) **प्रियतम, पति**।

पिअर, पिअरवा—वि. [हिं. पीला] **पीला**।

पिअरवा—वि. [हिं. प्रिय] **प्यारा, प्रिय**।

संज्ञा पुं.—(१) **प्यारा**। (२) **प्रियतम, पति**।

पिअराई—संज्ञा स्त्री. [सं. पीत] **पीलापन**।

पिअरिया, पिअरी—वि. [हिं. पीला] **पीली**।

संज्ञा स्त्री.— **हल्दी के रंग में रँगी पीली धोती**।

पिआना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना**।

पिआर—संज्ञा पुं. [हिं. प्यार] (१) **प्रेम, प्रीति**। (२) **चुंबन**।

पिआरा—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय**।

पिआवत—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराते हैं**। उ.—आपुन पीवत सुधा रस सजनी बिरहिनि बोलि पिआवत—२८४५।

पिआवै—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान करावे**। उ.—जेहिं मुख अमृत पिउ रसना भरि तेहिं क्यो बिषहि पिआवै—३०६८।

पिआस—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्यास] **पीने की इच्छा, प्यास**।

पिआसा—वि. [हिं प्यासा] **जिसे पीने की इच्छा हो, प्यासा**।

पिउ—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] (१) **प्रेमी**। (२) **पति**।

पिएउ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पी थी, पान किया था**। उ.—आई छाक अबार भई है, नैंसुक बैया पिएउ सबेरे—४६३।

पिक—संज्ञा पुं. [सं.] **कोयल**।

पिकानंद—संज्ञा पुं. [सं.] **वसंत ऋतु**।

पिकी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कोयल**।

पिघलना—क्रि. अ. [सं. प्र+गलन] (१) **घन पदार्थ का गर्मी से द्रवित होना**। (२) **दया उपजना**।

पिघलाना—क्रि. स. [हिं. पिघलना] (१) **घन पदार्थ को गर्मी से द्रवित करना**। (२) **दया उपजाना**।

पिचक—संज्ञा स्त्री. [हि. पिचकारी] **पिचकारी**।

पिचकना—क्रि. अ. [सं. पिच्च] **फूली-उभरी चीज का दबना**।

पिचकाना—क्रि. स. [हिं. पिचकना] **फूली-उभरी चीज को दबवाना**।

पिचकारी, पिचकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिचकना] **होली जैसे अवसरों पर पानी या रंग चलाने का यंत्र**। उ.—रबावा साखि जवाए कुमकुमा छिरकत भरि केसरि पिच-कारी—२३६१।

मुहा०—पिचकारी छूटना (निकलना)—**तरल पदार्थ का वेग से निकलना**। पिचकारी छोड़ना—**तरल पदार्थ को वेग से निकालना**।

पिछड़ना—क्रि. अ. [हिं. पिछाड़ी+ना] **पीछे रह जाना, साथ या बराबर न रह पाना**।

पिछताना—क्रि. अ. [हिं. पछताना] **पश्चाताप करना**।

पिछताने—क्रि. अ. [हि. पछताना] **पश्चाताप करने (से)**। उ.—मंद हीन अति भयो नंद अति होत कहा पिछ॰ताने छिन छिन—२६७०।

पिछलगा, पिछलगू, पिछलग्गू—वि. [हिं. पीछे+लगना] (१) **जो सदा साथ लगा रहे**। (२) **जो स्वतंत्र विचार न रखता हो**। (३) **आश्रित**। (४) **शिष्य**। (५) **सेवक**।

पिछलना—क्रि. अ. [हि पीछा] **पीछे हटना या मुड़ना**।

पिछला—वि. [हिं. पीछा] (१) **पीछे की ओर का**। (२) **बाद वाला, बाद का**। (३) **अंत की ओर का**। (४) **बीता हुआ, पुराना**। (५) **भूतकालीन**।

पिछवाड़ा, पिछवारा—संज्ञा पुं. [हिं पीछा + वाड़ा (प्रत्य.)] **पीछे की ओर का स्थान**।

पिछवार—संज्ञा पुं. सवि. [हिं पिछवाड़ा] **पीछे की ओर, मकान आदि के पीछे की दिशा में**। उ.—देखि फिरे हरि ग्वाल दुवारैं। तब इक बुद्धि रची अपनैं मन, गए नाँघि पिछवारैं—१०-२७७।

पिछाड़ी—संज्ञा स्त्री. [हिं पीछा] (१) **पिछला भाग**। (२) **पिछले पैर**।

पिछान—संज्ञा स्त्री. [हिं. पहचान] **जान-पहचान**।

पिछानना—क्रि. स. [हि. पहचानना] **पहचान करना**।

पिछानि—संज्ञा स्त्री. [हि. पहचान, पहचानना] पहचान। लै पिछानि—**पहचान ले, जाँच ले, चीन्ह लें**। उ.—जसुमति धौ देखि आनि आगै ह्वै लै पिछानि, बहियाँ गहि ल्याई, कुँवर और कौ कि तेरौ—१०-२७६।

पिछोरि, पिछोरी—संज्ञा स्त्री. [हि. पिछौरा] **बच्चो की चादर**। उ.—मनमथ कोटि-कोटि गहि वारौ ओढे पीत पिछोरी—८८३।

पिछोर्‌यो—क्रि. स. [हि. पछोड़ना] **फटक कर साफ की**।

मुहा०—फटकि पछोर्‌यो—**फटक छानकर खो दी**। उ.—नाच कछ्यौ अब घूँघट छोर्‌यौ, लोक-लाज सब फटकि पछोर्‌यौ—१२०१।

पिछौंड़—वि. [हि. पीछे] **जिसका मुँह पीछे हो**।

पिछौंड़ा, पिछौता—क्रि. वि. [हि. पीछे] **पीछे की ओर**।

पिछौंहैं—क्रि. वि. [हिं. पीछा] **पीछे की ओर से**।

पिछौरा—संज्ञा पुं. [सं. पक्षपट, प्रा पच्छवड, हि. पछेवड़ा] **पुरुषों की चादर या दुपट्टा**।

पिछौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुं. पिछौरा] (१) **स्त्रियों के ओढ़ने की चादर, ओढ़नी** । (२) **बच्चो के ओढ़ने की छोटी चादर या छोटा दुपट्टा** । उ.—कटि-तट पीत पिछौरी बाँधे, काकपच्छ धरे सीस—६-२० ।

पिटंत—संज्ञा स्त्री. [हि. पीटना + अंत] **पीटने की क्रिया** ।

पिटक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पिटारा** । (२) **ग्रंथ का भाग** ।

पिटना—क्रि. अ. [हिं. पीटना] (१) **मार खाना** । (२) **बजना** ।

पिट पिट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **'पिट' 'पिट' शब्द** ।

पिटरिया, पिटरी—संज्ञा स्त्री. [हि. पिटारा] **छोटा पिटारा, झाँपी** । उ.—परतिय-रति अभिलाष निसादिन, मन पिटरी लै भरतौ—१-२०३ ।

पिटवाना—क्रि. स. [हि. पीटना] (१) **मार खिलवाना** । (२)**बजवाना** । (३)**पीटने या बजवाने का काम कराना** ।

पिटाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीटना] (१) **पीटने का काम, भाव या वेतन** । (२) **मार, चोट** ।

पिटारा—संज्ञा पुं. [सं. पिटक] **बेंत आदि का झाबा** ।

पिटारी—संज्ञा स्त्री. [हि. पिटारा] **छोटा पिटारा** ।

पिटारे—संज्ञा पुं. [हिं. पिटारा] **पिटारे में** । उ.—भवन भुजंग पिटारे पाल्यौ ज्यो जननी जिय तात—३१७१ ।

पिट्टस—संज्ञा स्त्री. [हि पिटना] **छाती पीट कर रोना** ।

मुहा.—पिट्टस पड़ना (मचना)—**छाती पीट कर रोना** ।

पिट्ठी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीठी] **पिसी हुई भीगी दाल** ।

पिट्ठू—संज्ञा पुं. [हिं. पठ्ठा] (१) **पीछे लगा रहने वाला** । (२) **हिमायती** ।

पिठौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिट्ठी+औरी (प्रत्य)] **पीठी की बनी हुई खाने की चीज, जैसे बरी, मुँगौरी** । उ.—पापर बरी मिथौरि फुलौरी । कूर बरी काचरी पिठौरी—३९६ ।

पितंबर—संज्ञा पुं. [स. पीतांबर] **पीताम्बर** । उ.—कटि पितंबर बेष नटवर, नृतत फन प्रति डोल—५६३ ।

पितज्वर—संज्ञा पुं. [हि पित्त+ज्वर] **पित्त बिगड़ने से होनेवाला ज्वर** । उ.—सूर सो ओषध हमहिं बतावत ज्यौं पितज्वर पर गुर सी—३१६८ ।

पितर—संज्ञा पु. [स. पितृ] **पितृ, पुरखे, मृत पूर्व पुरुष** । उ.—तिहि घर देव पितर काहे कौ जा घर कान्हर आयौ—१०-३४६ ।

पिता—संज्ञा पुं. [सं. पितृ] **बाप, जनक** ।

पितामह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दादा, बाबा** । (२) **भीष्म** ।

पितु—संज्ञा पुं. [हिं. पिता] **पिता, जनक** ।

पितृ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पिता** । (२) **मृतक पिता, दादा आदि** ।

पितृऋण—संज्ञा पुं. [सं.] **तीन ऋणो मे एक मुक्ति, जो पुत्र उत्पन्न करने पर ही होती है** ।

पितृकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म** ।

पितृकुल—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता के वंश के लोग** ।

पितृतिथि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **अमावस्या** ।

पितृत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता होने का भाव** ।

पितृदाय—संज्ञा पुं. [सं.] **पिता से प्राप्त धन-धाम** ।

पितृपक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **कुआर का कृष्णपक्ष** ।

पितृ लोक—संज्ञा पुं [सं.] **चंद्रमा के ऊपर का एक लोक जहाँ पितरगण रहते है** ।

पितृव्य—संज्ञा पुं [सं.] **पिता के भ्राता, चाचा** ।

पित्त—संज्ञा पु. [सं] **शरीर के भीतर यकृत मे बननेवाला एक तरल पदार्थ** ।

पित्ता—संज्ञा पुं. [स. पित्त] (१) **पित्ताशय** ।

मुहा०—पित्ता उबलना (खौलना)—**बहुत क्रोध आना** । पित्ता (पानी) मारना—**बहुत परिश्रम करना** । पित्ता मरना—**गुस्सा न रहना** । पित्ता मारना—(१) **बिना ऊबे कठिन काम करना** । (२) **क्रोध दबाना** । पित्तामार (पित्तमारी का) काम—**अरुचिकर और कठिन काम** ।

(२) **साहस, हिम्मत, हौसला** ।

पित्ताशय—संज्ञा पु. [सं.] **पित्त की थैली** ।

पित्र्य—वि. [सं.] **जिसका श्राद्ध हो सके** ।

पिधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **गिलाफ, आवरण** । (२) **ढकना** । (३) **तलवार की म्यान** । (४) **किवाड़** ।

पिधानक—संज्ञा पुं. [सं.] **म्यान, कोष** ।

पिनकना—क्रि. अ. [हिं. पीनक] **नशे मे ऊँघना** ।

पिनाक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शिवजी का धनुष जिसे श्रीरामचन्द्र जी ने तोड़ा था** । (२) **कोई धनुष** ।

मुहा०—पिनाक होना—**काम का बहुत कठिन होना** ।

पिनाकी—संज्ञा पुं. [सं. पिनाकिन्] **शिव, महादेव** ।

पिन्नी—संज्ञा स्त्री [देश.] **एक तरह की मिठाई** ।

पिपासा—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **प्यास** । (२) **लोभ** ।

पिपासित—वि. [सं.] **प्यासा, तृषित** ।

पिपासु—वि. [सं.] (१) **प्यासा** । (२) **लालची** ।

पिपीलक—संज्ञा पुं. [सं.] **चींटा** ।

पिपीलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **चींटी** ।

पिय—संज्ञा पुं [सं. प्रिय] (१) **पति, स्वामी** । (२) **पपीहे का 'पिउ' शब्द** । उ.—सावन मास पपीहा बोलत पिय पिय करि जो पुकारै—२८१० ।

पियतो—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीता, पान करता** । उ.—काहे कौं जसादा मैया, त्रास्यौ तैं बारो कन्हैया, मोहन हमारौ भैया केतो दधि पियतो—३७३ ।

पियर—वि. [हिं. पीला] **पीला** ।

पियरई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीला] **पीलापन** ।

पियरवा—संज्ञा पुं. [हिं प्यारा] **प्रिय, पति** ।

वि.—**प्रिय, प्यारा** ।

वि.—[हिं. पीला] **जो पीला हो** ।

पियराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पियर] **पीला** ।

पियराना—क्रि. अ. [हिं. पियर+आना] **पीला पड़ना** ।

पियरी—वि. स्त्री. [हिं. पियर] **पीली** । उ.—पियरी पिछौरी झीनी—१०-१५१ ।

संज्ञा स्त्री.—(१) **पीली रँगी धोती** । (२) **पीलापन** । (३) **पीले रंग की गाय** । उ.—पियरी, मौरी, गोरी, गैनी, खैरी, कजरी, जेती—४४५ ।

पियरो, पियरौ—वि. [हिं. पीला] **पीला, पीले रंग का** । उ.—सेत, हरौ, रातौ अरु पियरौ रंग लेत है धोई—१-६३ ।

पियल्ला—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] **दूधपीता बच्चा** ।

पिया—संज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **प्रिय, प्रियतम** ।

पियाई—क्रि. स. [हिं. पिआना, पिलाना] **पिलाया** ।

प्र.—दीन्ही पियाई—**पिला दिया, पान करा दिया** । उ.—असुर-दिसि चितै, मुसुकयाइ मोहे सकल, सुरनि कौ अमृत दीन्ह्यौ पियाई—८-८ ।

पियादा—वि. [फा. प्यादा] (१) **जो पैदल चलता हो** । उ.—गरुड़ छाँड़ि प्रभु पायँ पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५ । (२) **जो नंगे पैर हो** ।

पियादे—क्रि. [हिं. प्यादा] **बिना जूता पहने, नगे पैर** । उ.—(क) गरुड़ छाँड़ि प्रभु पाय पियादे गज-कारन पग धारे—१-२५ । (ख) वह घर-द्वार छाँड़ि कै सुन्दरि, चली पियादे पाउँ—६-४४ ।

पियाना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना** ।

पियार—संज्ञा पु. [हिं. प्यार] (१) **चुंबन** । (२) **प्रेम** ।

वि.—**प्रिय, प्यारा** ।

पियारा—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय प्यारा** ।

पियारी—वि. [हिं. प्यारा] (१) **प्रिय, रुचिकर** । उ.—लुचुई, लपसी, सद्य जलेबी, सोइ जेवहु जो लगै पियारी—१०-२२७, (२) **प्यारी लगनेवाली** ।

संज्ञा. स्त्री.—**प्रिय, प्रेयसी** ।

पियारे—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय, प्यारा, प्रेमपात्र** । उ.—बंदौ चरन-सरोज तिहारे । सुदर स्याम कमल-दल लोचन, ललित त्रिभंगी प्रान पियारे—१-६४ ।

पियारो, पियायौ—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलाया, पान कराया** । उ.—नृपति-कुँवर कौं जहर पियायौ—६-५ ।

पियारौ—वि. [हिं. प्यारा] **प्रिय, प्रीतिपात्र, प्रेमपात्र** । उ.—(क) बिदुर हमारौ प्रान-पियारौ, तू बिषया अधिकारी—१-२४४ । (ख) असुर होइ, भावै सुर होइ । जो हरि भजै पियारौ सोइ—७-२ ।

पियावत—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराता है** । उ.—आपुन पियत पियावत दुहि दुहि इन धेनुन के छीर—२६८६ ।

पियावति—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलाती है, पान कराती है** । उ.—अचरा तर लै ढाँकि, सूर के प्रभु कौं दूध पियावति—१०-११० ।

पियावै—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पिलावै, पीने को प्रेरित करे** । उ.—अति सुकुमार डोलत रस-भीनौ, सो रस जाहि पियावै (हो)—२-१० ।

पियास—संज्ञा स्त्री. [हिं. प्यास] **तृष्णा, प्यास** ।

पियासा, पियासौ—वि. [हिं. प्यासा] **जिसे प्यास लगी हो, तृषित, पिपासा युक्त।** उ.—परम गंग कौं छाँड़ि पियासौ दुरमति कूप खनावै—१-१६८।

पियूख, पियूष—संज्ञा पुं. [स. पियूष] **पीयूष।**

पियैए—क्रि. स. [हि पिलाना] **पिलाइए, पान कराइए।** उ.—सूरदास प्रभु तृषा बढी अति दरसन सुधा पियैए—३२००।

पियौ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पी लिया, पान किया।** उ.—मृतक भए सब सखा जिवाए, बिष-जल जाइ पियौ—१-३८।

पिरथी—संज्ञा स्त्री. [स. पृथ्वी] **पृथ्वी।**

पिराईं—क्रि. स. बहु. [हि. पिराना] **दुखाते है।** उ.—सिगरे ग्वाल घिरावत मेसौ, मेरे पाइ पिराईं—५१०।

पिराइ—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **पीड़ित होती है, दुखती है।** उ.—धरयौ गिरिवर, दोहनी कर धरत बाहँ पिराइ—४६८।

पिराई—सज्ञा स्त्री. [हि. पियराई] **पीलापन।**

पिराक—संज्ञा पु [सं. पिष्टक, प्रा. पिट्ठक, पिड्क] **एक पकवान, गोझा, गोझिया।** उ.—रचि पिराक लाड़ू दधि आनौ—१०-२११।

पिराति—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखती है, पीड़ित होती है।** उ.—अधिक पिराति सिरानि न कबहूं अनेक जतन करि हारी—३०३६।

पिराना—क्रि. अ. [स. पीडन] (१) **दुखना, दर्द करना।** (२) **(दूसरे का) दुख-दर्द समझना।**

पिरानी—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखीं, दर्द करने लगी।** उ.—स्याम कह्यौ, नहि भुजा पिरानी ग्वालनि कियौ सहैया—१०७१।

पिराने—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुखने लगे, दर्द करने लगे।** उ.—धरनी धरत बनै नाही पग अतिहि पिराने—पृ. ३५३ (८६)।

पिरानो, पिरानौ—क्रि. अ [हि. पिराना] **दुखने लगे।** उ.—मारन मारन सात के दोऊ हाथ पिराने—पृ. ४६५।

पिरायौ—क्रि. अ. [हिं. पिराना] **दुख दिया, दर्द कर दिया।** उ.—तुमही मिलि रसबाद बढायौ। उरहन दै दै मूँड़ पिरायौ—३९१।

पिरारा—संज्ञा पुं. [हि पिडारा] **एक साग।**

पिरीतम—संज्ञा पुं. [सं. प्रियतम] **पति, प्रियतम।**

पिरीता, पिरीते—वि. [सं. प्रिय] **प्रिय, प्यारा।**

पिरीती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रेम, प्रीति।**

पिरोइ—क्रि. स. [हि. पिरोना] **गूँथकर, पिरोकर, पोहकर।** उ.—नील पाट पिरोइ मनिगन फनिग धोखैं जाइ—१०-१७०।

पिरोजन—सज्ञा पुं. [हिं. पिरोना] **कनछेदन।**

पिरोजा—सज्ञा पुं. [फा. फीरोजा] **हरापन लिए हुए एक नीला पत्थर।** उ.—रेसम बनाइ नव रतन पालनौ, लटकन बहुत पिरोजा-लाल—१०-८४।

पिरोना, पिरोहना—क्रि. स. [स. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोअ+ना, हि. पिरोना] (१) **गूँथना, पोहना।** (२) **सूत-आदि छेद के आर पार निकालना।**

पिरोयौ—क्रि. स. [हि. पिरोना] **गूँथा, पोहा, पिरो लिया।** उ.—सूरदास कंचन अरु काँचहि, एकहिं धगा पिरोयौ—१-४३।

पिलकना—क्रि. स. [स. पिल] **गिराना, ढकेलना।**

पिलना—क्रि. अ. [सं. पिल] (१) **झुक या धँस पड़ना।** (२) **एक बारगी जुट जाना।** (३) **तेल निकालने के लिए पेरा जाना।**

पिलपिला—वि. [अनु.] **बहुत मुलायम या नरम।**

पिलपिलाना—क्रि. स [हि. पिलपिला] **बहुत मुलायम या नरम हो जाना।**

पिलाना—क्रि. स. [हि. पीना] (१) **पान कराना** (२) **पीने को देना।** (३) **भीतर भरना या ढालना।**

पिल्ला—सज्ञा पुं. [देश.] **कुत्ते का बच्चा।**

पिव—संज्ञा पु. [स. प्रिय] **प्रियतम, पति।**

पिवन—सज्ञा पु. [हिं. पीना] (१) **पीने की क्रिया या भाव।** (२) **पिलाने की क्रिया या भाव।** उ.—देवकि उर-अवतार लेन कह्यौ, दूध पिवन तुम माँगि लियौ—१०-८५।

पिवाना—क्रि. अ. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

पिवायो, पिवायौ—क्रि. अ. [हि पिलाना] **पान कराया।**

पिवावन—संज्ञा पुं. [हिं. पिलाना] **पिलाने के लिए।** उ बकी पिवावन इनही आई—२३६५।

पिशाच—संज्ञा पुं. [सं.] **एक हीन देवयोनि।**

पिशाचिनी, पिशाची—संज्ञा स्त्री. [स. पिशाच] (१) **पिशाच स्त्री।** (२) **निर्दयी स्त्री।**

पिशुन, पिसुन—सज्ञा पुं. [स. पिशुन] (१) **चुगलखोर, दुष्ट, दुर्जन।** उ.—सूरदास प्रभु बेगि मिलहु अब पिशुन करत सब हाँसी—३४८६। (२) **निंदक।** (३) **नारद।** (४) **कौआ।**

पिशुना, पिसुना—सज्ञा स्त्री [स. पिशुना] **चुगलखोरी।**

पिष्ट—वि. [स.] **पिसा या चूर्ण किया हुआ।**

पिष्टपेषण—संज्ञा पु. [स.] (१) **पिसे हुए को फिर पीसना।** (२) **कही बात को फिर कहना या लिखना।**

पिसना—क्रि अ. [हिं पीसना] (१) **बहुत महीन चूर्ण होना** (२) **दब या कुचल जाना।** (३ **घोर कष्ट या दुख उठाना।** (४) **थकावट से चूर हो जाना।**

पिसवाना—क्रि. स. [हिं. पीसना] **पीसने का काम कराना।**

पिसाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीसना] (१) **पीसने की क्रिया, भाव, धधा या मजदूरी।** (२) **कड़ी मेहनत।**

पिसाच—संज्ञा पुं. [सं. पिशाच] (१) **एक हीन देवयोनि, भूत।** (२) **वह व्यक्ति जो क्रूर और नीच प्रकृति का हो।** उ.—दुष्ट सभा पिसाच दुरजोधन, चाहत नगन करी—१-२५४।

पिसाचिनी, पिसाची—संज्ञा स्त्री. [स पिशाच] (१) **पिशाच की स्त्री।** (२) **क्रूर प्रकृति की दुष्टा स्त्री।**

पिसान—सज्ञा पुं. [हि. पिसा+अन्न] **आटा।**

पिसुन—संज्ञा पुं. [स. पिशुन] **चुगलखोर।**

पिसुनता, पिसनाई—संज्ञा स्त्री [सं. पिशुन] **चुगलखोरी।**

पिसौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीसना] (१) **पीसने का काम या धंधा।** (२) **कठिन परिश्रम।**

पिस्ता—सज्ञा पुं. [फ़ा. पिस्तः] **एक छोटा फल जिसकी गिनती अच्छे मेवों मे है।** उ—पिस्ता दाख बदाम छुहारा खुरमा खाभा गूँझा मठरी—८१०।

पिहकना—क्रि. अ [अनु.] **पक्षियो का कलरव करना।**

पिहान—सज्ञा पुं. [स. पिधान] **ढाँकने की वस्तु।**

पिहित—वि. [सं.] **छिपा हुआ।**

सज्ञा पु.—**एक अर्थालकार।**

पीजना—क्रि. स. [सं. पिंजन] **धुनना, रुई धुनना।**

पींजर—सज्ञा पुं [स. पंजर] **ठठरी, ककाल**

पीजर, पीजरा—संज्ञा पुं. [हि. पिजड़ा] **लोहे या बाँस की तीलियो का झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते है।** उ.—मन सुवा तन पीजरा, तिहि माँहिं राखै चेत—१-३११।

पीड—सज्ञा पुं. [स पिड] (१) **शरीर, देह।** (२) **वृक्ष का तना, पेड़ी।** (३) **गोला, पिंडी।** (४) **सिर या बालो का एक आभूषण।** उ.—(क) शिखा की भाँति सिर पीड डोलत सुभग, चाप ते अधिक नव माल सोभा। (ख) पीड श्रीखड सिर भेष नटवर कसे अग इक छटा मैं ही भुलाई। (५) **पिंड खजूर नामक फल।** उ.—पीड बदाम लेत बनवारी।

पी.—क्रि. स. [हि० पीना] **पीकर, पान किया।** उ.—मनौ कमल कौ पी पराग, अलि-सावक सोइ न जाग्यौ री—१०-१३६।

सज्ञा पुं. [सं. प्रिय] **प्रियतम, पति।** उ.—सूरदास ए जाइ लुभाने मृदु मुसकनि हरि पी की—पृ. ३३१ (६)

सज्ञा पुं. (अनु.) **पपीहे की बोली।**

पीक—संज्ञा स्त्री. [स. पिच्च] **चबाये हुए पान के बीड़े का रस।** उ.—कबहुँक बैठि अंस भुज धरिकै, पीक कपोलनि पागे—६८६।

पीकना—क्रि. अ. [अनु. पी+करना] **पपीहे या कोयल का मधुर कठ से बोलना, पिहिकना।**

पीका—सज्ञा पु. [देश] **कोपल, नया पत्ता।**

मुहा—पीका फूटना—**कोंपल निकलना, पनपना।**

पीछा—संज्ञा पु. [सं. पश्चात्, प्रा. पच्छा] (१) **किसी व्यक्ति या वस्तु का पिछला या पीठ की ओर का भाग।**

मुहा०—पीछा दिखाना—(१) **हारकर या डर कर भागना।** (२)**भरोसा देकर फिर हट जाना।**

(२) **बाद का समय।** (३) **पीछे चलने का भाव।**

मुहा०—पीछा करना—(१) **चुपचाप पीछे पीछे जाना।** (२) **तंग करना।** पीछा छुड़ाना—**तग करने वाले व्यक्ति, वस्तु या कार्य से बचना।** पीछा छूटना—**अप्रिय व्यक्ति, वस्तु या कार्य से छुटकारा मिलना।** पीछा छोड़ना—(१) **सहारा छोड़ना।** (२) **तग**

करना बंद करना। पीछा पकड़ना—**सहारा या आश्रय बनाना।**

पीछू, पीछें—अव्य. [हि. पीछा] (१) **पीठ की तरफ।**

मुहा०—पीछे चलना—**अनुकरण या नकल करना।** पीछे छूटना—**चुपचाप किसी के साथ लगाया जाना।** (धन आदि) पीछे डालना—**भविष्य के लिए धन सचय करना।** (काम के) पीछे पड़ना—**काम कर डालने को जुटना।** (व्यक्ति के पीछे पड़ना)—(१) **बार बार घेर कर तंग करना।** (२) **हानि पहुँचाने का अवसर ताकना।** (वस्तु के) पीछे पड़ना—(१) **हर समय उसी की प्राप्ति की चिंता में लगे रहना।** पीछे लगना—(१) **साथ साथ घूमना।** (२) **रोगादि का घेर लेना।** पीछे लगाना—(१) **आश्रय या आसरा देना।** (२) **अप्रिय वस्तु से सम्बन्ध कर लेना।**

(२) **पीठ की ओर की दिशा में कुछ दूर पर।** पीछे छूटना (पड़ना, होना)—**गुण, योग्यता आदि मे कम हो जाना, पिछड़ जाना।** (किसी को) पीछे छोड़ना—**किसी से गुण,योग्यता आदि मे बढ़ जाना।**

(३) **पश्चात्, उपरांत।** (४) **अंत मे।** (५) **अनुपस्थिति मे।** (६) **मर जाने पर।** (७) **वास्ते, लिए, कारण।** (८) **बदौलत।**

पीछौ—संज्ञा पुं. [हिं. पीछा] **किसी प्राणी के पीछे चलने का भाव।**

मुहा०—पीछौ लियौ—**कोई काम निकलने की आशा से हर समय साथ लगे रहना।** उ.—प्रभु, मै पीछौ लियौ तुम्हारौ। तुम तौ दीनदयाल कहावत, सकल आपदा टारौ—१-२१८।

पीजै—क्रि. स. [हिं. पीना] **पीजिए, पान कीजिए।** उ.—लीला-गुन अमृत-रस स्रवननि पुट पीजै—१-७२।

पीटना—क्रि. स. [स. पीडन] (१) **चोट मारना।** (२) **चोट मारकर चौड़ा-चिपटा करना।** (३) **प्रहार या आघात करना।** (४) **किसी न किसी तरह समाप्त कर देना।** (५) **किसी न किसी तरह प्राप्त कर लेना।**

संज्ञा पुं.—(१) **मातम, मृत्यु-शोक।** (२) **मुसीबत।**

पीठ—सज्ञा पु. [सं.] (१) **आसन, चौकी, पीढ़ा।** (२) **मूर्ति का आधार।** (३) **किसी वस्तु आदि के होने-बसने का स्थान।** (४) **सिंहासन।** उ.—महल करती महल महलनि, श्रव संग बैठी पीठ—२६८०। (५) **वेदी।** (६) **वह पवित्र स्थान जहाँ शिव-पत्नी सती का कोई गिरा अंग अथवा आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर था।** (७) **प्रदेश, प्रांत।**

सज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पेट के दूसरी ओर का भाग।**

मुहा०—पीठ का—**सहोदर के जन्म के बाद का।** पीठ का कच्चा(घोड़ा)-**अच्छी चाल न चल सकनेवाला।** पीठ का सच्चा (घोड़ा)—**बढ़िया चाल वाला।** पीठ की—**सहोदरा के जन्म के बाद की।** पीठ चारपाई से लग जाना—**बीमारी में बहुत दुबला हो जाना।** पीठ खाली होना—**कोई सहायक न होना।** पीठ ठोंकना—(१) **शाबाशी देना।** (२) **उत्साहित करना।** पीठ तोड़ना—(१) **मारना-पीटना।** (२) **हताश करना।** पीठ दिखाना—**लड़ाई से डरकर या हारकर भागना।** पीठ दिखाकर जाना—**स्नेह या ममता तोड़ना।** देति न पीठ—**सामने ही डटी रहती हैं।** उ.—तदपि निदरि पट जात पलक छिदि जूझत देति पीठ—पृ. ३३४। पीठ देना—(१) **विदा होना** (२) **विमुख होना।** (३) **भाग जाना।** (४) **साथ न देना** (५) **लेटकर आराम करना।** (किसी की ओर) पीठ देना—(१) **मुँह फेर लेना।** (२) **उपेक्षा दिखाना।** पीठ पर—**जन्म के अनंतर।** पीठ पर का—**सहोदरा या सहोदर के बाद जन्मा पुत्र।** पीठ पर की—**सहोदर या सहोदरा के बाद जन्मी पुत्री।** पीठ पर हाथ फेरना—(१) **शाबाशी देना।** (२) **उत्साह बढ़ाना।** पीठ पर होना—(१) **सहायक होना।** (२) **जन्म ग्रहण करना।** पीठ पीछे—**अनुपस्थिति में।** पीठ फेरना—(१) **बिदा होना।** (२) **भाग जाना।** (३) **मुँह फेर लेना।** (४) **उपेक्षा दिखाना।**

पीठमर्द—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नायक के चार सखाओं में एक जो नायिका के मान-मोचन में समर्थ हो।** (२) **मानमोचन में समर्थ नायक।**

पीठा—संज्ञा पुं. [हि. पीढ़ा] **आसन, चौकी, पीढ़ा।** उ.—आवत पीठा बैठन दीन्हौ कुशल बूझि अति निकट बुलाई।

पीठि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पीठ] **पेट के पीछे का भाग, पीठ।**

मुहा.—पीठि-ओढिए—**पीठ कीजिए या दीजिए, (स्थिति के अनुकूल) व्यवहार कीजिए।** उ.—सूरदास के पिय प्यारी आपुही जाइ मनाय लीजै। जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि—२०५। पीठि दई—**भाग गया, पीठ दिखा दी।** उ.—पाछै भयौ न आगै ह्वैहै, सब पतितनि सिरताज। नरकौ भज्यौ नाम सुनि मेरौ, पीठि दई जमराज—१-९६। पीठि दिखाऊ—(१) **पीठ फेरूँ, रण से हार कर या डरकर विमुख हो जाऊँ।** (२) **मुँह मोड़ूँ, विरत होऊँ।** उ.—सूरदास रनभूमि बिजय बिनु, जियत न पीठि दिखाऊँ—१-२७०। पीठि दीजै—**मुँह सामने न कीजिए, मुँह मोड़ लीजिए, सामने तक न देखिए।** उ.—राखहु बैर हिए गहि मोसौं बैरिहि पीठि न दीजै—२२७५। पीठि दीन्ही—(१) **मुँह मोड़ लिया, विमुख हो गये।** उ.—सीतल भई चक्र की ज्वाला, हरि हँसि दीन्ही पीठि—१-२७४। (२) **विरत हो बैठे, त्याग दिया।** उ.—जे तप-ब्रत किए तरनि-सुता-तट, पन गहि पीठि न दीन्हीं—६५६। पीठि दै—(१) **सहारा या टिकासरा देकर।** उ.—ऊखल ऊपर-आनि, पीठि दै, तापर सखा चढायौ—१०-२६२। (२) **मुँह मोड़ कर।** उ.—(क) चली पीठि दै दृष्टि फिरावति, अंग-अंग-आनंद रली—७३६। (ख) काँपति रिसनि, पीठि दै बैठी, मनि-माला तन हेरयो—२२७५।

पीड़—संज्ञा स्त्री. [सं. आपीड़] **सिर या बालो का एक आभूषण।** उ.—कर धर कै धरमैर सखी री। कै सुक सीपज की बगपगति, कै मयूर की पीड़ पखी री—१६२७।

संज्ञा स्त्री. [हि. पीड़ा] **दुख-दर्द।**

पीड़क—वि. [सं.] (१) **दुखदायी।** (२) **अत्याचारी।**

पीड़न—संज्ञा पं. [सं.] (१) **दबाना।** (२) **पेलना, पेरना।** (३) **दुख देना।** (४) **अत्याचार करना।** (५) **दबोचना।**

पीड़ा—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) **व्यथा, वेदना।** (२) **रोग।**

पीड़ित—वि. [सं.] (१) **दुखी।** (२) **रोगी।**

पीढ़ा—संज्ञा पुं. [सं. पीठ अथवा पीठक] **पाटा, पीठ, पटरा।** उ.—प्रगट भई तहँ आइ पूतना, प्रेरित काल-अवधि नियराई। आवत पीढा बैठन दीनौ, कुसल बूझि अति निकट बुलाई—१०-५०।

पीढ़िनि—संज्ञा स्त्री. [हि पीढ़ी] **पीढ़ियाँ, पुश्तें।** उ.—हौं तौ पतित सात पीढिनि कौ, पतितै ह्वै निस्तरिहौं—१-१३४।

पीढ़ी—संज्ञा स्त्री [सं पीठिका] (१) **कुल-परंपरा, पुश्त।** (२) **कुल के सभी प्राणी।** (३) **काल-विशेष का समाज।**

संज्ञा स्त्री. [हि. पीढा] **छोटा पीढ़ा।**

पीत—वि. [सं.] **पीला, पीत वर्ण का।**

पीतता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पीलापन।**

पीतधातु—संज्ञा पुं [सं. पीत+धातु] **रामरज, गोपीचदन।** उ.—पीतै पीत बसन भूषन सजि पीतधातु अँग लावै—२०३२।

पीतनि—क्रि. स. [हि. पीना] **पीता, पान करता।** उ.—निसि दिन निरखि जसोदा-नदन अरु जमुनाजल पीतनि—४६०।

पीतपराग—संज्ञा पु [सं.] **कमल का केसर।**

पीतम—वि. [सं. प्रियतम] **जो सबसे प्रिय हो।**

संज्ञा पुं.—**प्राणप्यारा पति।**

पीतमणि, पीतरत्न—संज्ञा पुं. [सं] **पुखराज।**

पीतर, पीतरि, पीतल—संज्ञा पु. [सं पित्तल, हि. पीतल] **'पीतल' नामक धातु।** उ—कोटि बार पीतरि ज्यौं डाहौ कोटि बार जो कहा कसै—२६७८।

पीतवर्ण—वि. [सं.] **पीला, पीले रग का।**

पीतांबर—संज्ञा पु. [सं.] (१) **पीला वस्त्र।** (२) **पुरुषों की रेशमी धोती।** (३) **श्रीकृष्ण।**

पीताम्बरधर—संज्ञा पुं. [सं.] **पीतांबर धारण करने वाले या पीतांबर प्रिय है जिनको वे श्रीकृष्ण।**

पीताब्धि—संज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र पीनेवाला, अगस्त्य।**

पीताभ—वि. [सं.] **जिसमें पीली आभा हो।**

पीतै—वि. सवि. [सं. पीत+ही] **पीला ही।** उ.—पीतै पीत बसन भूषन सजि पीतधातु अँग लावै—२०३२।

पीन—वि. [सं.] (१) **स्थूल, मोटा।** (२) **पुष्ट, परिवर्धित।** उ.—पीन उरोज मुख नैन चखावति इह बिष मोदक जा तन झारि—११६४। (३) **भरा-पुरा, संपन्न।**

पीनक—संज्ञा स्त्री. [हिं. पिन ना] **नशे मे ऊँघना।**

पीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मोटाई, स्थूलता।**

पीनस—संज्ञा पुं. [स.] **नाक का एक रोग।**

संज्ञा स्त्री. [फा. फ़ीनस] **पालकी।**

पीना—क्रि. स. [स. पान] (१) **पान करना, घूँटना।** (२) **(किसी बात या रहस्य को) दबा देना।** (३) **(गाली, अपमान आदि) सह जाना।** (४) **मनोभाव को दबा जाना।** (५) **मनोविकार का अनुभव ही न करना।** (६) **धूम्रपान करना।** (७) **सोख लेना।**

पीपर, पीपरि, पीपल—संज्ञा पु. [स. पिप्पल] **एक प्रसिद्ध वृक्ष।**

संज्ञा स्त्री. [स. पिप्पली] **एक लता जिसकी कलियाँ प्रसिद्ध औषधि है।** उ.—हींग, मिरच पीपरि अजवाइनि ये सब बनिज कहावै—११०८।

पीब—संज्ञा पु. [स. पूय] **मवाद।**

पीबे—संज्ञा पुं. [हिं. पीना] **पीने की क्रिया।**

यौ०—खबे-पीबे को—**खाने-पीने को।** उ.—बृद्ध बयस, पूरे पुन्यनि तै, तैं बहुतै निधि पाई। ताहू के खैबे-पीबे कौं, कहा करति चतुराई—१०-३२५।

पीय, पीया—संज्ञा पुं. [स. प्रिय] **पति, प्रियतम।** उ.—ऐसे पापी पीय तोहिं पीर न पराई है—२८२७।

पीयर—वि. [हि. पीला] **पीत वर्ण का, पीला।**

पीयूख, पीयूष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अमृत।** (२) **दूध।**

पीयौ—क्रि. स. [हिं. पीना] **पान किया, पिया।** उ.—भोजन बीच नीर लै पीयौ—३६६।

पीर—संज्ञा स्त्री. [सं. पीड़ा] (१) **पीड़ा, दुख, कष्ट।** उ.—(क) मेटी पीर परम पुरुषोत्तम, दुख मेट्यौ दुहु-धाँ कौ—१-११३। (ख) काज सरे दुख कहा कहौ धौ, का बायस की पीर—३१००। (२) **दया, सहानुभूति।** (३) **प्रसव-पीड़ा।**

वि. [फा.] (१) **बुजुर्ग।** (२) **महात्मा, सिद्ध।**

संज्ञा पु.—(१) **धर्मगुरु।** (२) **मुसलमानों के धर्म गुरु।**

संज्ञा पुं. [फा. पीर] **सोमवार का दिन।**

पीरक—वि [सं पीड़ा, हि. पीर+क (प्रत्य.)] **दुख दूर करनेवाले, दुख मिटानेवाले, दुखी के प्रति सहानुभूति रखनेवाले।** उ.—राजरवनि गाई ब्याकुल ह्वै, दै दै तिनकौ धीरक। मागध हति राजा सब छोरे, ऐसे प्रभु पर-पीरक—१-११२।

पीरा—वि. [हि. पीला] **पीले रंग का।**

पीरी—संज्ञा स्त्री. [फा] (१) **बुढ़ापा।** (२) **चालाकी, धूर्तता।** (३) **ठेका, हुकूमत।** (४) **चमत्कार।**

वि. [हि. पीला] **पीले रंग की।** उ—ओढे पीरी पामरी पहिरे लाल निचोल—१४३६।

मुहा०—पीरी-काली होना—**तेज होना, नाराज होना।** उ.—बहियाँ गहत सतराति कौन पर मग धरी उँगरी कौन पै होत पीरी-कारी—२०४७।

पीरे—वि. [हिं. पीला] **पीले रंग के।** उ.—(क) पीरे पान-बिरी मुख नावति—५१४। (ख) लै गागरि सिर मारग डगरी इन पहिरे पीरे पट—८६०।

पीरो—वि. [हि. पीला] **पीले रंग का।** उ.—मलिन बसन हरि हित अंतर्गति तनु पीरो जनु पाते—३४६१।

पील—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **हाथी।** (२) **शतरंज का एक मोहरा।**

पीलपाल—संज्ञा पुं. [हिं. पील+पालक] **महावत।**

पीलपाँव—संज्ञा पुं. [फा. पीलपा] **एक प्रसिद्ध रोग।**

पीलवान—संज्ञा पुं. [फा. पीलवान] **महावत।**

पीला—वि. [सं. पीत] (१) **जिसका रंग पीला हो।** (२) **कांतिहीन, धुंधला सफेद।**

मुहा०—पीला पड़ना होना)—(१) **रक्त के अभाव से तेज न रह जाना।** (२) **भय से चेहरा फीका पड़ जाना।**

संज्ञा पुं.—**हल्दी या सोने का सा रंग।**

मुहा०—पीली फटना—**तड़का होना।**

पीलापन—संज्ञा पुं. [हि पीला+पन] **पीतता।**

पीले—वि. [हि. पीला] **पीत वर्ण के।**

मुहा०—पीले मुख—**निस्तेज, कांतिहीन।** उ.—लाली लै लालन गए आए मुख पीले—**१६६४।**

पीव—संज्ञा पुं. [अनु] **पपीहे का 'पी' शब्द।** उ.—रसना तारू सों नहि लावत, पीवै पीव पुकारत—पृ. **३३०** (**६८**)।

पीवन—संज्ञा पुं. [हि. पीना] **पीना, पीने की क्रिया।** उ.—गर्भवती हिरनी तहँ आई। पानी सो पीवन नहि पाई—**५-३**।

पीवर—वि. [सं.] (१) **मोटा।** (२) **भारी, गुरु।**

पीवा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **जल, पानी।**

वि. [सं. पीवर] **स्थूल, पुष्ट।**

पीवै—क्रि. स. [हि. पीना] **पीता है, पान करता है।**

संज्ञा पुं. सवि. [अनु. पीव+ही] **'चातक की 'पी' ध्वनि ही।** उ.—रसना तारू सों नहिं लावत पीवै पीव पुकारत—पृ. ३३० (६८)।

पीवौ—क्रि. स. [हि. पीना] **पियो, पान करो।** उ.—पीवौ छाँछ अघाइ कैं, कब के रयवारे—१-२३८।

पीसना—क्रि. स. [स. पेषण] (१) **बहुत महीन चूरा करना।** (२) **कुचलना, दबाना।**

मुहा०—किसी को पीसना—**बहुत हानि पहुँचाना।**

(४) **कड़ी मेहनत करना, खूब जान लड़ाना।**

संज्ञा पुं.—**पीसी जानेवाली वस्तु।**

पीसि—क्रि. स. [हि. पीसना] **पीसकर।**

मुहा.—दाँत-पीसि-**दाँत किटकिटाकर, बहुत क्रोध करके।** उ.—सूर केस नहि टारि सकै कोउ, दाँत पीसि जौ जग मरै—**१-२३४।**

पीहर—सज्ञा पुं. [सं. पितृ+गृह] **(स्त्री के) माता-पिता का घर, मायका, नैहर।**

पुंगफल—संज्ञा पुं. [सं. पूगफल] **सुपारी।**

पुंगव—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल, वृष।**

वि.—**श्रेष्ठ, उत्तम।**

पुंगवकेतु—संज्ञा पुं. [सं.] **वृषभध्वज, शिवजी।**

पुंगीफल—सज्ञा पु. [स. पूगफल] **सुपारी।**

पुंछार—संज्ञा पुं. [हिं. पूँछ+आर] **मोर, मयूर।**

पुंजैं—संज्ञा पुं. [सं.] **समूह, ढेर।** उ.—(क) तड़ित-बसन घन-स्याम सदस तन, तेज-पुंज तम कौं नासै—**१-६६।** (ख) आजिर पद-प्रतिबिंब राजत, चलत उपमा-पुंज—१०-२१८। (ग) सूर-स्याम मुख देखि अलप हँसि आनँद-पुंज बढावो—१२२६।

पुंजा—संज्ञा पुं. [सं पुंज] **गुच्छा, समूह, गट्ठा।**

पुंज—संज्ञा स्त्री. [सं पुंज] **समूह, राशि।** उ.—जे वै लता लगत तनु सीतल अब भई बिषम अनल की पुंजै—२७२१।

पुंड्र—संज्ञा पुं. [सं.] **तिलक, टीका।**

पुंडरीक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्वेत कमल।** (२) **रेशम का कीड़ा।** (३) **कमंडल।** (४) **तिलक।** (५) **काशी का एक राजा।** उ.—पुंडरीक काशी को राइ—१० उ.-४४।

पुंडरीकाक्ष—वि. [स.] **कमल के समान नेत्रवाला।**

संज्ञा पुं—**विष्णु, नारायण।**

पुंड्र—सज्ञा पुं. [स.] **तिलक, टीका।**

पुंलिंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुरुष का चिन्ह।** (२) **(व्याकरण में) पुरुषवाचक शब्द।**

पुंश्चली—वि. स्त्री. [स.] **व्यभिचारिणी।**

पुंस—सज्ञा पुं. [सं.] **पुरुष।**

पुंसवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **दूध।** (२) **एक संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने पुत्र-जन्म की कामना से किया जाता है।** (३) **वैष्णवों का एक व्रत।**

वि.—**पुत्र को उत्पन्न करनेवाला।**

पुंसवान—वि. [सं. पुंसवत्] **जो पुत्रवाला हो।**

पुंस्चली—वि. स्त्री. [स. पुंश्चली] **व्यभिचारिणी, कुलटा।** उ.—पतिव्रता जालंधर-जुवती, सो पति-व्रत तैं टारी। दुष्ट पुंस्चली अधम सो गनिका सुवा पढावत तारी—१-१०४।

पुंस्त्व—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुरुषत्व।** (२) **वीर्य, शुक्र।**

पुआ—संज्ञा पु. [स. पूप] **मीठी रोटी या पूरी।**

पुआल—सज्ञा पुं. [हिं. पयाल] **सूखे डंठल, पयाल।**

पुकार—संज्ञा स्त्री. [हि. पुकारना] **रक्षा या सहायता के लिए की गयी चिल्लाहट, दुहाई।** उ.—(क) तुम हरि साँकरे के साथी। सुनत पुकार, परम आतुर ह्वै, दौरि छुड़ायौ हाथी—१-११२। (ख) असुर महा उत्पात कियौ तब देवन करी पुकार। (२) **किसी को पुकारने**

की क्रिया या भाव, हाँक, टेर।(३) नालिश, फरियाद। (४) माँग की चिल्लाहट।

क्रि. स.—(१) **पुकारकर।** (२) **जोर देकर।** उ.—तुम्हरौ नहीं तहाँ अधिकार। मै तुमसौ यह कहौ पुकार—६-४।

पुकारत—क्रि. स. [हि. पुकारना] (१) **हाँक देता हूँ, टेरता हूँ, आवाज लगाता हूँ।** (२)**रक्षा के लिए चिल्लाता हूँ, गोहार लगाता हूँ, छुटकारे के लिए चिल्लाता हूँ।** उ.—बालापन खेलत ही खोयौ, जुवा विषय-रस मात। वृद्ध भए सुधि प्रगटी मोकौ, दुखित पुकारत तातैं—१-११८। (३) **घोषणा करते है, बताते है।** उ.—दीनदयालु देवकी नदन बेद पुकारत चारो—१० उ.—७७।

पुकारना—क्रि. स [स. प्रकुश=पुकारना]—(१) **टेरना, आवाज देना।** (२) **रटना, धुन लगाना।** (३) **चिल्लाकर कहना।** (४) **माँगना।** (५) **रक्षा के लिए चिल्लाना।** (६) **फरियाद करना।** (७) **नामकरण करना।**

पुकारि—क्रि. स. [हिं. पुकारना] **जोर देकर, घोषित करके, चिल्लाकर।** उ.—सुनि मन, कहौ पुकारि तोसौ हौ, भजि गोपालहिं मेरैं—१-८५।

पुकारी—क्रि. स. [हिं पुकारना] **पुकारा, हाँक दी, टेरा, संबोधित किया।** उ.—(क) द्रुपद-सुता जब प्रगट पुकारी। गहत चीर हरि-नाम उबारी—१-२८। (ख) राखी लाज समाज माहि जब, नाथ नाथ द्रौपदी पुकारी—१-३०।

पुकारौ—क्रि. स. [हिं. पुकारना] **रक्षा के लिए चिल्लाया, किया, गोहार लगाता रहा, छुटकारे के लिए आवाज देता रहा।** उ.—हाय-हाय मैं परयौ पुकारौं, राम-नाम न कहौ—१-१५१।

पुकारयौ—क्रि स [हिं. पुकारना] (१) **हाँक लगाई, टेरा पुकारा, आवाज दी।** उ.—जब गज-चरन ग्राह गहि राख्यौ, तबहीं नाथ पुकारयौ—१-१०६। (२) **रक्षा के लिए चिल्लाया या गोहार मचायी।** उ.—पाँव पयादे धाय गए गज जबै पुकारयौ।

पुखराज—संज्ञा पुं. [सं. पुष्पराग] **एक रत्न।**

पुगाना—क्रि. स. [हि. पुजाना] **पूरा करना, पुंजाना।**

पुचकार—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुचकारना] **चूमने की सी ध्वनि।**

पुचकारना—क्रि. स. [अनु० पुच+करना] **चुमकारना।**

पुचकारी—संज्ञा स्त्री. [हि पुचकारना] **चूमने की सी ध्वनि।**

पुचारना—क्रि. स. [हि. पुचारा] (१) **चापलूसी करना।** (२) **झूठी प्रशसा करके चंग पर चढ़ाना।**

पुचारा—संज्ञा पुं. [अनु. पुचपुच या पुतारा] (१) **भीगे कपड़े से पोंछना।** (२) **पतली पुताई करना।** (३) **हलका लेप।** (४) **पोतने का कपड़ा।** (५) **मीठे और सुहाते वचन।** (६) **चापलूसी।** (७) **बढ़ावा।**

पुच्छ—सज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **दुम, पूँछ।** उ.—स्वान, कुब्ज, कुपगु, कानौ, स्रवन-पुच्छ-बिहीन—१-३२१। (२) **पिछला भाग।**

पुच्छल—वि. [हिं. पुच्छ] **दुमदार।**

पुछल्ला—संज्ञा पुं. [हि. पूँछ+ला] (१) **लंबी पूँछ या दुम।** (२) **पूँछ की तरह जुड़ी लंबी चीज।** (३) **साथ लगा रहनेवाला।** (४) **चापलूस।**

पुछातौ—क्रि. स. [हिं. पूछना] **पूछता है, जिज्ञासा करता है।**

मुहा०—न बात पुछातौ—**बात तक नही पूछता है, जरा भी ध्यान नहीं देता है।** उ.—जग मे जीवत ही कौ नातौ। मन बिछुरैं तन छार होइगौ, कोउ न बात पुछातौ—१-३०२।

पुछार, पुछैया—वि [हिं. पूछना] **खोज-खबर लेनेवाला।**

पुजना—क्रि. अ. [हिं पूजना] (१) **पूजा जाना, पूजा होना।** (२) **आदर या सम्मान होना।**

पुजवना—क्रि. स. [हि पूजना] (१) **पुजाना।** (२) **सफल करना।**

पुजवाना—क्रि. स. [हिं पूजना] (१) **पूजा मे लगाना।** (२) **अपनी पूजा करना।** (३) **आदर-सम्मान कराना।**

पुजाई—सज्ञा स्त्री. [हि. पूजना] (१) **पूजने का भाव, क्रिया या वेतन।** (२) **पूजा।** उ.—गोबर्धन की करी पुजाई मोहि डारयौ बिसराई—६७५। (३) **पूरा या सफल करने की क्रिया, भाव या मजदूरी।**

पुजाए—क्रि. स. [हि. पूजना] **पूरा किया, पूर्ति की, कमी**

दूर की । उ.—पाडु-बधू पटहीन सभा मैं, कोटिन बसन पुजाए—१-१५८ ।

पुजाना—क्रि. स. [हि पूजना] (१) **दूसरे से पूजा कराना ।** (२) **अपनी पूजा-सेवा या आदर-सत्कार कराना ।** (३) **धन वसूलना ।** (४) **(खाली जगह) भरना ।** (५) **कमी दूर करना ।** (६) **सफल करना ।**

पुजापा—संज्ञा पुं. [सं. पूजा + पात्र] (१) **पूजा की सामग्री, चढ़ावा ।** (२) **चढ़ावा या पूजन-सामग्री रखने का पात्र ।**

पुजायो, पुजायौ—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूरा किया, पूर्ण किया ।** उ.—(क) दीन्हौ दान बहुत नाना विधि, इहि बिधि कर्म पुजायौ—९०-५० । (ख) तासु मनोरथ सकल पुजायौ—१० उ०-२८ ।

पुजारी—संज्ञा पुं. [स पूजा + कारी] **पूजा करनेवाला ।**

पुजावहु—क्रि. स. [हि. पूजना] **परिपूर्ण करो, सफल करो, पूरा करो ।** उ.—तुम काहू धन दै लै आवहु, मेरे मन की आस पुजावहु—५-३ ।

पुजाही—संज्ञा स्त्री. [हि. पूजा + आही] **पुजापा रखने की थैली या पात्र ।**

पुजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूँजी] **पूँजी ।** उ.—समुझि सगुन लै चले न ऊधो यह तुमपै सब पुजी अकेलो—३१४४ ।

पुजेरी—संज्ञा पुं. [हि. पुजारी] **पूजा करनेवाला ।** उ.—आपुहि देव आपुहो पुजेरी—१०२९ ।

पुजैया—संज्ञा पु. [हि. पूजना] (१) **पूजा करनेवाला ।** (२) **पूरा करने या भरनेवाला ।**

संज्ञा स्त्री. [हि पुजाई] **पुजाई ।**

पुजौरा—संज्ञा पुं. [हि. पूजा] (१) **पूजा ।** (२) **पुजापा ।**

पुट—संज्ञा पुं. (अनु. पुट-पुट छींटा गिरने का शब्द) (१) **हलका छिड़काव ।** (२) **रग या हलका मेल देने के लिए किसी पतली चीज का रंग मे डुबोना ।** उ.—ज्यौ बिन पुट पट गहत न रग कौ, रग न रसै परै—३३५८ । (३) **हलका मेल ।**

संज्ञा पु. [सं.] (१) **दोना, कटोरा, गोल गहरा पात्र ।** उ.—जलपुट आनि धरी आँगन मे मोहन नेक तौ लीजै । (२) **दोने या कटोरे के आकार की कोई वस्तु या पात्र ।** उ.—(क) लीला-गुन अमृत-रस स्रवननि-पुट पीजै— १-७२ । (ख) नाहिन इतनौ भाग जो यह रस नित लोचन-पुट पीजै—१०-६ । (३) **मुँह बँद बरतन ।** (४) **डिबिया, सपुट ।** उ.—नील पुट बिच मनौ मोती धरे बदन बोरि—१०-२२५ । (५) **अँतरौटा, अतःपट ।**

पुटकी—संज्ञा स्त्री [हि. पुट] **पोटली, छोटी गठरी ।**

पुटपाक—संज्ञा पुं. [स.] (१) **मुँहबद बरतन मे रख कर औषध पकाने का विधान ।** (२) **इस प्रकार पकायी गयी औषध का सिद्ध रस ।**

पुटी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुट] (१) **खाली स्थान जिसमे कोई चीज रक्खी जा सके ।** उ.—मुक्ता मनौ चुगत खग खजन, चोंच पुटी न समा।—३६६ । (२) **छोटा दोना या कटोरा ।** (३) **पुड़िया ।** (४) **लँगोटी, कौपीन**

पुड़िया—संज्ञा स्त्री. [स. पुटिका, प्रा. पुड़िया] (१) **कागज में लिपटी वस्तु ।** (२) **खान भडार ।**

पुण्य—वि. [सं.] **पवित्र, भला ।**

संज्ञा पुं.—(१) **पवित्र या धर्म कार्य ।** (२) **धर्म-कार्य का सचय ।**

पुण्यक—संज्ञा पुं. [स.] **व्रत, अनुष्ठान, धर्म-कार्य ।**

पुण्यक्षेत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **तीर्थ स्थान ।**

पुण्यदर्शन—वि. [सं.] **जिसका दर्शन शुभ हो ।**

पुण्यवान्—वि. [स. पुण्यवत्] **पुण्य करनेवाला ।**

पुण्यश्लोक—वि. [स.] **जिसका चरित्र पवित्र हो ।**

पुण्यस्थान—संज्ञा पु [स.] **पवित्र या तीर्थ स्थान ।**

पुण्याई—संज्ञा स्त्री [सं. पुण्य] **पुण्य का प्रभाव ।**

पुण्यात्मा—वि. [सं. पुण्यात्मन] **पुण्य करनेवाला ।**

पुण्याह—संज्ञा पु. [स.] **शुभ या मगल दिवस ।**

पुण्याहवाचन—संज्ञा पुं [सं.] **अनुष्ठान के पूर्व कल्याण के लिए 'पुण्याह' शब्द की तीन बार आवृत्ति ।**

पुतरा, पुतला—संज्ञा पुं. [स. पुत्रक, प्रा पुत्तल, हि पुतला] **लकड़ी, मिट्टी, कपड़े की पुरुष-मूर्ति, बड़ा गुड्डा ।**

मुहा.—(किसी का) पुतला बाँधना—**निंदा करना ।**

पुतरिका, पुतरिया, पुतरी, पुतली—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुतला, पुतली] (१) **लकड़ी, मिट्टी, कपड़े की स्त्री-मूर्ति,**

बड़ी गुड़िया"। उ.—हमै तुम्हैं पुतरी कैं भाइ। देखत कौतुक बिबिध नचाइ—६-५। (२) **सुन्दर स्त्री**। (३) **आँख का काला भाग**।

मुहा०—पुतली फिरना—(१) **आँखें पथराना, मृत्यु होना**। (२) **घमड होना**।

पुताई—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोतना] **पोतने की क्रिया या मजदूरी**।

पुत्त—संज्ञा पुं. [सं. पुत्र] **बेटा**।

पुत्तल, पुत्तलक—संज्ञा पु. [हि पुतला] **पुतला**।

पुत्तलिका—संज्ञा स्त्री. [स.] (१) **बड़ी गुड़िया, पुतली**। (२) **आँख की पुतली**। (३) **सुंदरी स्त्री**।

पुत्र—संज्ञा पुं. [स.] **बेटा, लडका**।

पुत्रवती—वि. [स.] **जिसके पुत्र हो**।

पुत्रवधू—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पुत्र की स्त्री, पतोहू**।

पुत्रिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पुत्री, बेटी**। (२) **पुत्र के स्थान पर मानी गयी कन्या**। (३) **पुतली, गुड़िया**। (४) **आँख की पुतली**। (५) **नारी का चित्र**।

पुत्री—संज्ञा स्त्री. [स.] **बेटी, लड़की**।

पुत्रेष्टि—संज्ञा पुं. [सं.] **एक यज्ञ जो पुत्रेच्छा से होता है**।

पुदीना—संज्ञा पुं. [फा. पादीनः] **एक छोटा पौधा**।

पुन:—अव्य. [स. पुनर] (१) **फिर**। (२) **उपरात**।

पुन: पुन—क्रि. वि. [स.] **बार बार**।

पुनरपि—क्रि. वि. [स.] **फिर भी**।

पुनरबस, पुनरबसु—संज्ञा पुं. [सं. पुनर्वसु] **एक नक्षत्र**।

पुनरुक्त—वि. [सं] **फिर से कहा हुआ**।

पुनरुक्तवदाभास—संज्ञा पुं. [स] **एक शब्दालकार**।

पुनरुक्ति—संज्ञा स्त्री. [स.] **कही बात को फिर कहना**।

पुनर्जन्म—संज्ञा पुं. [स.] **मृत्यु के बाद फिर जन्मना**।

पुनर्भव—संज्ञा पुं. [स.] **फिर जन्मना, पुनर्जन्म**।

पुनर्भू—संज्ञा स्त्री. [स.] **विधवा जिसका पुन. विवाह हो**।

पुनर्वसु—संज्ञा पुं. [सं.] **सत्ताइस नक्षत्रों मे सातवाँ**।

पुनि—क्रि. वि. [स. पुनः] **फिर, पुन, पश्चात, बार-बार, दोबारा, अनतर**। उ.—(क) पाडव कौ दूतत्व कियौ पुनि, उग्रसेन कौं राज दियौ—१-२६। (ख) गुरु-बाधव-हित मिले सुदामहिं, तंदुल पुनि-पुनि जाँचत—१-३१।

मुहा०—पुनि-पुनि—**बार-बार**। उ.—सूरदास प्रभु कहत है पुनि-पुनि तब अति ही सुख पैहै—२५५३।

पुनी—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **पुण्य करनेवाला**।

संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्ण] **पूर्णिमा, पूनो**।

पुनीत—वि. [सं.] (१) **पवित्र, शुद्ध**। (२) **निष्कलंक**। (३) **सती (नारी)**। उ.—परम पुनीत जानकी सँग लै, कुल-कलंक किन टारौ—६-११५।

पुन्न—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्मकार्य, पुण्य**,

पुन्नाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **एक वृक्ष**। (२) **श्वेत कमल**। (३) **श्रेष्ठ मनुष्य**।

पुन्य—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्मकार्य, पुण्य**।

पुन्यो—वि. [हिं. पूनो] **पूर्णिमा का**। उ.—सेज सँवारि पथ निसि जोवत अस्त आनि भयो चंद पुन्यो—१६३१।

पुरंजन—संज्ञा पुं. [सं.] **जीवात्मा**। (**भागवत के आधार पर शरीर रूपी पुर, उसके नवद्वार और पुरजन नाम से जीवात्मा के निवास का सूरदास ने वर्णन किया है**)। उ.—तन पुर जीव पुरजन राव, कुमति तासु रानी कौ नाँव—४-१२।

पुरंदर—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पुर, घर आदि को तोड़नेवाला**। (२) **इद्र**। (३) **चोर**। (४) **विष्णु**।

पुर:—अव्य. [सं. पुरस्] (१) **आगे**। (२) **पहले**।

पुर:सर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अग्रगमन**। (२) **साथी**।

पुर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **नगर, नगरी**। उ.—उपवन बन्यो चहूंघा पुर के अति ही मोको भावत—२५५६। (२) **घर**। उ.—मन मै यह बिचार करि सुंदरि, चली आपने पुर को—७३८। (३) **कोठा, अटारी**। (४) **लोक-भुवन**। (५) **देह, शरीर**। (६) **गढ़, किला**।

पुरइन, पुरइनि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुटकिनी, प्रा. पुडइनी, हिं पुरइनि] (१) **कमल का पत्ता**। उ.—पुरइन कपिश निचोल बिबिध रँग बिहसत सचु उपजावै। (२) **कमल**। उ.—(क) नँदनंदन तो ऐसे लागे ज्यो जल पुरइन पात—२५१६। (ख) पुरइनपात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी—३३३५।

पुरई—क्रि. स. [हि. पूरना] (**मनोरथ, प्रतिज्ञा आदि**) **पूर्ण या सिद्ध की**। उ.—जन प्रह्लाद-प्रतिज्ञा पुरई, सखा बिप्र-दारिद्र हर्यौ—१-२६।

पुरखा—संज्ञा पुं. [सं. पुरुष] (१) **पूर्व पुरुष, पूर्वज**। (२) **घर या परिवार का बड़ा-बूढ़ा**।

पुरजा—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **टुकड़ा, खंड**। (२) **कतरन, धज्जी**। (३) **अंग, भाग, अवयव**।

मुहा.—चलता-पुरजा—**तेज या चालाक आदमी**।

पुरट—संज्ञा पुं. [सं.] **सोना, सुवर्ण**।

पुरतः—अव्य. [सं.] **आगे**।

पुरत्राण—संज्ञा पुं. [सं.] **शहरपनाह, परकोटा**।

पुरनियाँ—वि. [हि. पुराना] **बड़ा, बूढ़ा, वृद्ध**।

पुरबधू—संज्ञा स्त्री. [हि.] **ग्रामवधू, ग्राम की स्त्रियाँ**। उ.—लज्जित होहि पुरबधू पूछैं, अंग-अंग मुसकात—६-४३।

पुरबला, पुरबलौ—वि. [सं. पूर्व+ला] (१) **पूर्व जन्म का, पूर्वजन्म-संबंधी**। उ.—नहि अस जनम बारबार। पुरबलौ धौ पुन्य-प्रगट्यौ लह्यौ नर-अवतार—१-८८। (१) **पूर्व या पहले का**।

पुरवा—संज्ञा पुं. [सं. पुर] **छोटा गाँव, खेड़ा**।

पुरबिया, पुरबिहा—वि. [हि. पूरब] **पूरब का रहनेवाला**।

पुरबुला—वि. [सं. पूर्व] (१) **पूर्व का**। (२) **पूर्व जन्म का**।

पुरवइया—संज्ञा स्त्री. [सं पूर्व] **पूर्व से आनेवाली हवा**।

पुरवट—संज्ञा पुं. [सं. पूर] **चमड़े का मोट**।

पुरवत—क्रि. स. [हि. पूरना] **पूरा या पूर्ण करते है**। उ.—पर उपकाज हेतु तनु धार्यौ पुरवत सब मन साध—१६६०।

पुरवना—क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **भरना, पुरना**। (२) (**मनोरथ आदि**) **पूरा या पूर्ण करना**।

मुहा०—साथ पुरवना—**साथ देना**।

क्रि. अ. (१) **पूरा होना**। (२) **उपयोग के योग्य होना**।

पुरवा—संज्ञा पुं. [सं. पुर] **छोटा गाँव, खेड़ा**।

संज्ञा स्त्री. [हि. पूरब] **पूरब से आनेवाली हवा**।

संज्ञा पुं. [सं. पुटक] **मिट्टी की कुल्हिया**।

पुरवाई—वि. [हि. पूरब] **पूरब से आनेवाली**। उ.—उल्हरि आयो सीतल बूँद पवन पुरवाई—१५६५।

संज्ञा स्त्री.—**पूरब से आनेवाली हवा**।

पुरवाना—क्रि. स. [हि. पुरवना] **पूरा कराना**।

पुरवै—क्रि. अ. [हि. पूरना] (१) **भर दे, व्याप्त कर दे**। उ.—या रथ बैठि बंधु की गर्जहि पुरवै को कुरुखेत—१-२६। (**मनोरथ आदि**) **पूरा करो**। उ.—हरि बिनु को पुरवै मो स्वारथ—१-२८७।

पुरस्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आदर-पूजा**। (२) **प्रधानता**। (३) **पारितोषिक, उपहार, इनाम**। (४) **स्वीकार**।

पुरस्कृत—वि. [सं.] (१) **आदृत**। (२) **स्वीकृत**। (३) **जिसे पारितोषिक या उपहार मिला हो**।

पुरहूत—संज्ञा पुं. [सं. पुरुहूत] **इंद्र**।

पुरा—अव्य. [सं.] (१) **प्राचीन काल मे**। (२) **प्राचीन**।

संज्ञा स्त्री.—(१) **पूर्व दिशा**। (२) **एक सुगंध द्रव्य**।

संज्ञा पुं.—[सं. पुर] **गाँव खेड़ा**। उ.—(क) यह बृषभानु-पुरा, ये ब्रज मै, कहाँ दुहावन आई—७२६। (ख) ब्रज बृषभानु-पुरा जुवतिन को इक इक करि मै जानौ पृ. ३१३ (२७)।

पुराइ—क्रि. स. [हिं. पुरना] (१) **भरवाकर**। उ.—चंदन आँगन लिपाइ, मुतियनि चौकै पुराइ—१०-९५। (२) **पूरी करके**। उ.—अखिल भुवन जन कामना पुराइ कैं—२६२८।

पुराई—क्रि. स. [हि. पूरना] **पूरी की**। उ.—ताके मन की आस पुराई—१० उ.-२८।

पुराऊँ—क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **खाली स्थान भर लूँ, पूर्ति करूँ**। (२) (**पेट**) **भरूँ, भूख मिटाऊँ**। उ.—माँगत बारंबार सेष ग्वालनि कौ पाऊँ। आपु लियौ कछु जानि, भच्छ करि उदर पुराऊँ—४६२।

(२) **पूरी करूँ या करूँगा**। उ.—(क) सरद-रास तुम आस पुराऊँ। अंकम भरि सबकौ उर लाऊँ—७६७। (ख) अपनी साध पुराऊँ—१४२५।

पुराए—क्रि. स. [हि. पूरना] **पूरे किये**। उ.—अति अलसात जम्हात पियारी स्याम के काम पुराए—२११०।

पुराण—वि. [सं.] **प्राचीन, पुराना**।

संज्ञा पुं.—(१) **पुरानी कथा**। (२) **हिंदुओं के**

प्राचीन धर्माख्यान ग्रंथ जिनकी संख्या १८ है— विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त्त, लिंग, वाराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्मांड, और भविष्य ।

पुराणपुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्णु ।**

पुरातत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **प्राचीन काल संबंधी विद्या ।**

पुरातन—वि. [सं.] (१) **पुराना, प्राचीन ।** उ.—बिप्र सुदामा कियौ अजाँची, प्रीति पुरातन जानि—१-१३५ । (२) **पूर्व जन्म का, विगत जन्म का ।** उ.—अजामील तौ बिप्र निहारौ हुतौ पुरातन दास । नैंकु चूक तैं यह गति कीनी, पुनि बैकुंठ निवास—१-१३२ ।

पुरान—वि. [हिं. पुराना] **पुराना, प्राचीन ।**

संज्ञा पुं. [सं. पुराण] **पुराण ।**

पुरान पुरुष—संज्ञा पुं. [सं. पुराण पुरुष] **विष्णु ।** उ.—पुरुष पुरान आनि कियो चतुरानन—४८४ ।

पुराना—वि. [सं. पुराण] (१) **प्राचीन, पुरातन ।** (२) **फटा, जीर्ण ।** (३) **जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो ।**

मुहा०—पुराना खुर्राट या घाघ—**बहुत काइयाँ ।**

(४) **बहुत पहले का, पर अब न हो ।** (५) **बहुत समय का ।**

क्रि. स. [हिं. पूरना] (१) **भराना ।** (२) **पालन कराना ।** (३) **पूरा कराना ।** (४) **पालन कराना ।** (५) **पूरा डालना ।**

पुरानी—वि. [हिं. पुरानी] **बहुत वर्षों की, बड़ी आयु-वाली ।** उ.—डसि मानौं नागिनी पुरानी—२६४६ ।

पुरानो, पुरानौ—वि. [हिं. पुराना] **बहुत दिनों का ।**

पुराय—क्रि. स. [हिं. पूरना] **मंगल अवसरों पर देव-पूजन के लिए आटे, अबीर आदि से चौखूँटे बनाकर ।** उ.—गजमोतिनि के चौक पुराय बिच बिच लाल प्रवालिका—१०-८०८ ।

पुरायो, पुरायौ—क्रि. स. [हिं. पूरना] **मंगल-चौक भरे ।** उ.—चौक मुक्ताहल पुरायो आइ हरि बैठे तहाँ——१० उ०-२४ ।

पुरारि—संज्ञा पुं. [सं.] **शिव ।**

पुरावृत्त—संज्ञा पुं. [सं.] **पुराना इतिहास या वृत्तांत ।**

पुरावो—क्रि. स. [हिं. पुराना] **मंगल चौक आदि भरो ।** उ.—ललिता बिसाखा आँगना लिपावो, चौक पुरावो तुम रोरी—२३६५ ।

पुरि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शरीर ।** (२) **पुरी ।**

पुरिहै—क्रि. अ. [हिं पुरना] **पूरा होगा ।** उ.—सकल मनोरथ तेरौ पुरैहै—४-६ ।

पुरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **नगरी ।** (२) **जगन्नाथपुरी ।**

पुरीष—संज्ञा पुं. [सं.] **विष्टा, मल ।** उ.—बहुतक जन्म पुरीष-परायन, सूकर-स्वान भयौ—१-७८ ।

पुरु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवलोक ।** (२) **पराग ।** (३) **शरीर ।** (४) **ययाति का पुत्र जिसने पिता को यौवन दिया था ।**

पुरुष—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मनुष्य, नर ।** उ.—ज्यौं दूती पर-बधू भोरि कै लै पर-पुरुष दिखावै—१-४२ । (२) **आत्मा ।** (३) **विष्णु ।** (४) **सूर्य ।** (५) **जीव ।** (६) **शिव ।** (७) **सर्वनाम और क्रिया-रूप जिससे सूचित हो कि वह कहने, सुनने अथवा अन्य व्यक्ति में से किसके लिए प्रयुक्त हुआ है (व्याकरण) ।** (८) **आत्मा ।** (९) **पूर्वज ।** उ.—जा कुल माहिं भक्त मम होई । सप्त पुरुष लैं उधरै सोई । (१०) **यज्ञपुरुष ।** (११) **पति, स्वामी ।**

पुरुषत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **पुरुष होने का भाव ।**

पुरुषारथ, पुरुषार्थ—संज्ञा पुं. [सं. पुरुषार्थ] (१) **पुरुष के उद्योग का लक्ष्य या विषय ।** (२) **उद्यम, पराक्रम, शक्ति ।** उ.—(क) करी गोपाल की सब होइ । जो अपनो पुरुषारथ मानत, अति झूठौ है सोई—१-२६२ । (ख) अतिहि पुरुषारथ कियौ उन, कमल दह के ल्याइ—५८६ ।

पुरुषार्थी—वि. [सं. पुरुषार्थिन्] (१) **उद्योगी, परिश्रमी ।** (२) **बली, शक्तिवान ।**

पुरुषोत्तम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **श्रेष्ठ पुरुष ।** (२) **विष्णु ।** (३) **जगन्नाथ ।** (४) **ईश्वर ।** (५) **मलमास ।**

पुरुहूत—संज्ञा पुं. [सं.] **इंद्र ।**

पुरुरवा—संज्ञा पुं. [सं. पुरूरवा] **एक प्राचीन राजा जिसकी प्रतिष्ठानपुर नामक राजधानी प्रयाग में गंगा के किनारे थी । पुरुरवा इला के गर्भ से उत्पन्न बुध का पुत्र था । उर्वशी एक बार शापवश भूलोक में आ**

पड़ी थी। तब पुरुरवा ने उससे विवाह किया था। शाप से मुक्त होकर जब वह स्वर्ग चली गयी तब राजा ने बहुत विलाप किया। पश्चात्, एकबार पुनः उर्वशी से उनकी भेंट हुई। उर्वशी से उत्पन्न उनके सात पुत्र थे— आयु, अमावसु, विश्वायु, श्रुतायु, दृढ़ायु, वनायु, और शतायु।

पुरेन, पुरेनि, पुरैन, पुरैनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुरइनि] (१) कमल। (२) कमल का पत्ता।

पुरोध, पुरोधा—संज्ञा पुं. [स. पुरोधस] पुरोहित।

पुरोहित—संज्ञा पुं. [सं.] कर्मकाड करानेवाला। उ.—कह्यौ पुरोहित होत न भलौ। बिनशि जात तेज-तप सकलौ ६-५।

पुरोहिताई—संज्ञा स्त्री. [हि. पुरोहित] पुरोहित का काम।

पुल—सज्ञा पुं. [फा] सेतु।

मुहा.—(किसी बात का) पुल बँधना—ढेर लगना। (किसी बात का) पुल बाँधना—ढेर लगाना।

पुलक—संज्ञा पुं. [सं.] रोमांच, प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से पुलकित होना। उ.—गद्गद् सुर, पुलक रोम, अंग प्रेम भीज—१-७२।

पुलकना—क्रि. अ. [सं. पुलक] गद्‌गद् होना।

पुलकाई—सज्ञा स्त्री. [हि पुलकना] गद्‌गद् होने का भाव।

पुलकालि, पुलकावलि, पुलकावली—संज्ञा स्त्री. [स. पुलकावलि] हर्ष से रोमों का खड़ा होना।

पुलकि—क्रि. अ. [हि. पुलकना] गद्‌गद् या पुलकित होकर। उ.—सूरदास प्रभु बोल न आयो प्रेम पुलकि सब गात—२५३१।

पुलकित—वि. [हि. पुलकना] रोमांचयुक्त, गद्‌गद्, प्रेम या हर्ष से जिसके रोएँ उभर आये हों। उ.—लोचन सजल, प्रेम-पुलकित तन, डगर अंचल, कर-माल—१-१८६।

पुलकी—वि. [स पुलकिन] गद्‌गद् होनेवाला।

पुलस्त, पुलस्त्य—संज्ञा पुं. [सं.] एक ऋषि जिनकी गणना ब्रह्मा के मानस पुत्रों, प्रजापतियों और सप्तर्षियों में है। ये कुबेर और रावण के पितामह थे।

पुलह—सज्ञा पु. [सं.] एक ऋषि जिनकी गणना ब्रह्मा के मानस पुत्रों, प्रजापतियों और सप्तर्षियों में है।

पुलिंदा—संज्ञा पुं. [सं. पुल = ढेर] पूला, गड्ढा।

पुलिन—संज्ञा पुं. [सं.] नदी का तट। उ.—जैसोइ पुलिन पवित्र जमुन को तैसोइ मद सुगंध—पृ. ३१५ (४५)।

पुलिहोरा—सज्ञा पुं. [देश.] एक पकवान।

पुश्त—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) पीठ। (२) पीढ़ी।

पुश्ता—संज्ञा पुं. [फा. पुश्तः] ऊँची मेड़, बांध।

पुश्ती—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) सहारा। (२) सहायता।

पुश्तैनी—वि. [हिं. पुश्त] (१) जो कई पुश्तों से चला आता हो। (२) जो कई पुश्तो तक चले।

पुष्कर—संज्ञा पुं [स.] (१) जल। (२) जलाशय। (३) कमल। उ.—पुष्कर माल उतार हृदय ते दीनी स्याम—सारा. ५५४। (४) सात द्वीपों में से एक। उ.—जंबु, प्लच्छ, क्रौंच, साक, साल्मलि, कुस, पुष्कर भरपूर—सारा. ३४। (५) एक तीर्थ। (६) विष्णु का एक रूप।

पुष्कल—वि. [सं.] (१) बहुत अधिक। (२) भरा-पुरा, परिपूर्ण। (३) श्रेष्ठ। (४) पवित्र।

पुष्ट—वि. [सं.] (१) पाला पोषा हुआ। (२) मोटा-ताजा। (३) बलवर्द्धक। (४) दृढ़, मजबूत।

पुष्टई—संज्ञा स्त्री. [सं. पुष्ट] बलवर्धक वस्तु।

पुष्टता—संज्ञा स्त्री. [सं.] दृढ़ता, मजबूती।

पुष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पोषण। (२) मोटाताजापन। (३) दृढ़ता। (४) बात का समर्थन। (५) वृद्धि।

पुष्टिकर—वि. [सं.] बल-वीर्य-वर्द्धक।

पुष्टिकारक—वि. [स.] बल-वीर्य-वर्द्धक।

पुष्टिमार्ग—संज्ञा पुं [सं.] वल्लभाचार्य का वैष्णव भक्तिमार्ग।

पुष्प—संज्ञा पुं [सं.] (१) फूल। (२) ऋतुमती स्त्री का रज। (३) कुबेर का 'पुष्पक' विमान।

पुष्पक—संज्ञा पुं.[सं.] (१) फूल। (२) कुबेर का विमान।

पुष्पचाप—संज्ञा पुं. [स.] कामदेव।

पुष्पधन्वा—सज्ञा पुं. [स. पुष्पधन्वन्] कामदेव।

पुष्पध्वज—सज्ञा पुं. [स] कामदेव।

पुष्पवती—संज्ञा स्त्री. [सं.] रजस्वला स्त्री।

पुष्पवाटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **फुलवारी।**

पुष्पबाण—संज्ञा पुं [सं.] (१) **फूलों का बाण।** (२) **कामदेव जिसके बाण फूलो के हैं।**

पुष्पवृष्टि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **फूलों की वर्षा।**

पुष्पशर, पुष्पशरासन—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव।**

पुष्पायुध—संज्ञा पुं. [सं.] **कामदेव।**

पुष्पित—वि. [सं.] **फूलों से युक्त।**

पुष्पोद्यान—संज्ञा पुं. [सं] **फुलवारी।**

पुष्य—सज्ञा पुं [सं] (१) **पोषण।** (२) **सारवस्तु।** (३) **२७ नक्षत्रो में आठवाँ।** (४) **पूसमास।**

पुसाना—क्रि. अ [हिं. पोसना] (१) **पूरा पड़ना।** (२) **उचित लगना।**

पुस्तक—सज्ञा स्त्री [सं.] **पोथी, किताब, ग्रथ।**

पुस्तकालय -संज्ञा पुं. [स.] **पुस्तक-सग्रहालय।**

पुहकर, पुहुकर—संज्ञा पुं. [सं. पुष्कर] **कमल।** उ०—पुहुकर पुंडरीक पूरन मानो खजन केलि खगे—पृ० ३५० (६४)।

पुहाना—क्रि. स. [हिं. पोहना] **गुथवाना, ग्रथित कराना।**

पुहुप—संज्ञा पुं [सं. पुष्प] **फूल।** उ.—देखि यह सुरनि वर्षा करी पुहुप की—७-६।

पुहुपमाल पहुपमाला—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुहुप+माला] **फूलों की माला।** उ.—बीच माली मिल्यौ, दौरि चरननि पर्‍यौ, पुहुपमाला स्याम-कंठ धार्‍यौ-२५८८।

पुहुपावलि—संज्ञा स्त्री. [सं. पुष्पावली] **पुष्पों की राशि।** उ.—छाल सुगंध सेज पुहुपावलि हारु छुए ते हिय हारु जरैगौ—२८७०।

पुहुमि, पुहुमी—संज्ञा स्त्री. [सं. भूमि] **पृथ्वी।** उ.—(क) तब न कंस निग्रह्यौ पुहुमि को भार उतार्‍यौ—११३६। (ख) चोंच एक पुहुमी लगाई, इक अकास समाई—४२७।

पुहुरेनु—संज्ञा पुं. [सं. पुष्परेणु] **फूल का पराग।**

पूँछ—सज्ञा स्त्री [सं. पुच्छ] (१) **दुम, पुच्छ, लांगूल।** (२) **पिछला भाग।** (३) **पीछे लगा रहनेवाला, पिछलग्गा।**

पूँजी—संज्ञा स्त्री. [सं. पुंज] (१) **सचित धन सपत्ति।** (२) **मूलधन।** (३) **रुपया-पैसा।** (४) **विषय की जानकारी।** (५) **पुंज, समूह।**

पूँठ—संज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पीठ।**

पूआ—संज्ञा पुं. [स. पूव] **मीठी पूरी, मालपुआ।** उ.—दोना मेलि धरे है खूआ। हौंस होइ तौ ल्याऊँ पूआ—३९६।

पूगफल, पूगीफल—संज्ञा पुं. [सं. पूगफल] **सुपारी।**

पूछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूछना] (१) **पूछने का भाव।** (२) **चाह, जरूरत।** (३) **आदर, आवभगत।**

पूछगाछ, पूछताछ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूछना] **जाँच-पड़ताल।**

पूछत—क्रि. स. [हि. पूछना] **पूछता है, जॉच-पडताल करता हूँ।** उ.—जाति-पाँत कोइ पूछत नाही श्रीपति कैं दरबार—१-२३१।

पूछन—क्रि स. [हिं पूछना] **पूछना, जिज्ञासा करना।**

प्र.—पूछन लागे-**पूछने लगे।** उ.-बानी सुनि बलि पूछन लागे, इहाँ बिप्र कत आवन—८-१३।

पूछना—क्रि. स. [सं. पृच्छण] (१) **जिज्ञासा करना।** (२) **खोज-खबर लेना।** (३) **आदर-सत्कार करना।** (४) **आश्रय देना।** (५) **ध्यान देना।**

पूज वि. [सं. पूज्य] **पूजने योग्य, पूजनीय।**

संज्ञा पुं.—**देवता।**

संज्ञा स्त्री. [स पूजन] **शुभ कर्म के पूर्व गणेश का पूजन।**

पूजक—वि [स.] **पूजा करनेवाला।**

पूजत—क्रि. स. [हि. पूजना] **पूजा करता है, देवी देवता के प्रति श्रद्धा प्रकट करता है।** उ.—फल माँगत फिरि जात मुकर ह्वै, यह देवन की रीति। एकनि कौ जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैंकु न तूटे—१-१७७।

क्रि. अ.—**बराबर होते हैं, समान है।** उ.—ये सब पतित न पूजत मों सम, जिते पतित तुम हारे—१-१७६।

पूजति—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करती है।** उ.—गौरी-पति पूजति ब्रजनारी—७६६।

पूजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवी-देवता की सेवा, वंदना या अर्चना।** (२) **आदर, सम्मान।**

पूजना—क्रि. स. [सं पूजन] (१) **देवी-देवता की सेवा, वदना या अर्चना करना।** (२) **आदर-सत्कार करना।**

क्रि. अ. [सं. पूर्यते, प्रा. पूज्जति] (१) **भरना, बराबर हो जाना।** (२) **गहरे स्थान का भरकर समतल हो जाना।** (३) **चुकता हो जाना।** (४) **बीतना, समाप्त होना।**

पूजनीय— वि. [सं.] (१) **पूजने-योग्य।** (२) **आदरणीय।**

पूजहु—क्रि. स. [हिं. पूजना] **पूजा करो।** उ.—अब तुम भवन जाहु पति पूजहु परमेश्वर की नाईं—पृ. ३४१ (७०)।

पूजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देवी-देवता की-वंदना अर्चना।** उ.—जोग न जुक्ति, ध्यान नहि पूजा बिरध भएँ पछितात—२-२२। (२) **देवी-देवता पर जल, फल-फूल आदि चढ़ाना।** (३) **आदर-सत्कार, आवभगत।** (४) **प्रसन्न करने का प्रयत्न करना।** (५) **ताड़ना, दंड।** उ.—(क) करन देहु इनकी मोहि पूजा, चोरी प्रगटत नाम—३७६। (ख) सूर सबै जुबतिन के देखत पूजा करौ बनाइ—११२५।

पूजि—क्रि. स. [हि. पूजना] **पूरा करके, बहुत अधिक भरकर, बराबर करके।** उ.—करत बिबस्त्र द्रुपद-तनया कौं सरन सब्द कहि आयौ। पूजि अनंत कोटि बसननि हरि, अरि कौ गर्ब गँवायौ—१-१६०।

पूजित—वि. [सं.] **जिसकी पूजा की गयी हो।**

पूजे—क्रि. स. [हि पूजना] **किसी देवी-देवता की वंदना के लिए कोई कार्य किया, अर्चना की।** उ.—एकनि कौ जिय-बलि दै पूजे, पूजत नैकु न तूटे—१-१७७।

पूजै—क्रि. स. [हि. पूजना] **पूजा करे।** उ.—(क) जो ऊजर खेरे के देवन को पूजै को मानै—३४०६। (ख) नँदनंदन ब्रत छाँड़ि कै को लखि पूजै भीति—३४४३।

क्रि. अ.—**बराबरी, समता या तुलना कर सके, बराबर, समान या तुल्य हो सके।** उ.—(क) राम-नाम-सरि तऊ न पूजै जौ तनु गारौ जाइ हिबार—२-३। (ख) नान्ही एड़ियनि अरुनता, फल-बिंब न पूजै—१०-१३४।

पूजौ—क्रि. अ. [हिं. पूजना] **समान, तुल्य या बराबर हो सका।** उ.—हिरन्याच्छ इक भयौ, हिरनकस्यप भयौ दूजौ। तिन के बल कौं इंद्र, बरुन, कोऊ नाहिं पूजौ—३-११।

पूज्य—वि. [सं.] **पूजनीय, माननीय।**

पूज्यता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूज्य या मान्य होने का भाव।**

पूज्यपाद—वि. [सं.] **बहुत पूज्य या मान्य।**

पूज्यमान—वि. [स.] **जो पूजा जा रहा हो।**

पूज्यो, पूज्यौ—क्रि. स. [हि पूजना] **पूजा की।** उ.—कालिहिं पूज्यौ फल्यौ बिहाने—१०५१।

पूठि—संज्ञा स्त्री. [सं. पृष्ठ] **पीठ।**

पूत—वि. [सं.] **शुद्ध, पवित्र।**

संज्ञा पुं. [सं. पुत्र, प्रा. पुत्त] **बेटा, पुत्र।**

पूतना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक दानवी जो कंस की आज्ञा से, स्तनों पर विष मलकर, बालकृष्ण को मारने आयी थी। श्रीकृष्ण ने इसका रक्त चूसकर इसी को मार डाला था।**

पूतमति—वि. [सं.] **पवित्र या शुद्ध चित्तवाला।**

पूतरा—संज्ञा—पुं [हिं. पुतला] **पुतला।**

संज्ञा पुं. [स. पुत्र] **पुत्र, बाल, बच्चा।**

पूतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पुतली] **पुतली, गुड़िया।** उ.—(क) ऐपन की सी पूतरी (सब) सखियनि कियौ सिंगार—१०-४०। (ख) इक टक भईं चित्र पूतरि ज्यों जीवनि की नहि आश—२०५२। (ग) ए सब भई चित्र की पुतरी सून सरीरहिं डाहत—३०६५।

पूतात्मा—संज्ञा पुं. [सं. पूतात्मन] **जिसका अंतःकरण शुद्ध हो।**

पूतै—संज्ञा पुं. सवि. [हि. पूत] **पुत्र को, बेटे को।** उ.—मैं हूँ अपनै औरस पूतै बहुत दिननि मैं पायौ—१०-३३६।

पून—संज्ञा पुं. [सं. पुण्य] **धर्म-कार्य, पुण्य।**

संज्ञा पुं. [सं. पूर्ण] **पूर्ण।**

पूनव, पूनिउँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. पूनो] **पूर्णिमा।**

पूनी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंजिका] **धुनकी हुई रुई की मोटी बत्ती।**

पूनो, पून्यो, पून्यौ—संज्ञा स्त्री. [स. पूर्णिमा] **पूर्णिमा।** उ.—(क) चैत्र मास पूनो को सुभ दिन सुभ नक्षत्र सुभ बार—सारा. ६४१। (ख) पून्यौ प्रगटी प्रानपति हरि होरी है—२४२२।

पूप—संज्ञा पुं. [सं.] **पूआ, मालपूआ।**

पूपला, पपली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक मीठा पकवान।**

पूपली—संज्ञा स्त्री. [देश] **पोली नली ।**

पूय—संज्ञा पुं. [स.] **पीप, मवाद ।** उ.—बिषयी भजे, बिरक्त न सेए, मन धन-धाम धरे । ज्यों माखी, मृग मद-मंडित तन परिहरि पूय परै—१-१६८ ।

पूर—संज्ञा पुं. [सं.] **घाव भरना ।**

वि. [स पूर्ण] **पूर्ण, भरापूरा ।**

पूरक—वि. [सं.] **पूर्ति करनेवाला ।**

संज्ञा पुं. [स.] (१) **प्राणायाम विधि के तीन भागो में पहला ।** उ.—सब आसन रेचक अरु पूरक कुंभक सीखे पाइ—३१३४ । (२) **मृतक के दसवें को दिये जानेवाले दस पिंड ।**

पूरण—सज्ञा पुं. [स. पूर्ण] (१) **भरने या पूर्ण करने की क्रिया ।** (२) **समाप्त करने की क्रिया ।** (३) **सेतु ।**

बि.—**पूरा करनेवाला, पूरक ।**

वि. [सं. पूर्ण] **पूर्ण ।** उ.—सूर पूरण ब्रह्म निगम नाही गम्य तिनहि अक्रूर मन यह बिचारै—२५५१ ।

पूरणकाम—वि. [सं. पूर्णकाम] (१) **जिसकी सब इच्छाएँ पूरी हो गयी हों ।** (२) **कामनारहित, निष्काम ।**

पूरणता—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णता] **पूर्ण होने का भाव ।** उ.—पूरणता तो तबही बूड़ी सग गए लै चित को—३३३६ ।

पूरत—क्रि. स. [हिं. पूरना] **बजाते हैं ।** उ.—सूर स्याम बंशी ध्वनि पूरत श्रीराधा राधा लै नाम—१३२७ ।

पूरन—वि. [स. पूरण] (१) **(इच्छा, मनोरथ, आदि) पूर्ण करनेवाले, पूरा करनेवाले ।** उ.—कहा कमी जाके राम धनी । मनसा नाथ, मनोरथ पूरन, सुखनिधान जाकी मौज घनी—१-३६ । (२) **युक्त, सहित ।** उ.—गायौ स्वपच परम अन्न पूरन, सुत पायौ बाम्हन रे—१-६६ । (३) **पूर्ण, जिसमें कोई कमी न हो ।** उ.—तुम सर्वज्ञ सबै बिधि पूरन अखिल भुवन निज नाथ—१-१०३ ।

सज्ञा पु.—**एक प्रकार का मीठा या नमकीन चूर्ण जो गुझिया, समोसे आदि में भरा जाता है ।** उ.—गूझा बहु पूरन पूरे—१०-१८३ ।

पूरनकाम—वि. [सं. पूर्णकाम] **निष्काम ।**

पूरनता—संज्ञा स्त्री. [सं. पूर्णता] **पूर्ण होने का भाव ।**

पूरनपरब—संज्ञा पु. [सं. पूर्ण+पर्व] **पूर्णिमा ।**

पूरना—क्रि स [स. पूरण] (१) **खाली जगह भरना ।** (२) **ढाँकना ।** (३) **मनोरथ सफल या पूर्ण करना ।** (४) **मंगल अवसर पर देव-पूजन के लिए चौक आदि बनाना ।** (५) **बटकर तैयार करना ।** (६) **बजाना, फूँकना ।**

क्रि. अ —**भर जाना, पूर्ण हो जाना ।**

पूरनाहुती—सज्ञा स्त्री [सं. पूर्ण + आहुति] **यज्ञ की अंतिम आहुति, जिसे देकर होम समाप्त करते हैं ।** उ.—नृप कह्यौ, इन्द्रपुर की न इच्छा हमै, रिषिनि तब पूरनाहुती दीयौ ४-११ ।

पूरब—सज्ञा पु [स. पूर्व] **पूर्व या प्राची दिशा ।**

वि —**पहले का ।** उ.—जज्ञ कर इ प्रयाग न्हवायौ तौहूँ पूरब तन नहिं पायौ —६-८ ।

क्रि. वि —**पहले, पहले ही ।**

पूरबल—सज्ञा पुं [हि. पूरबला] (१) **पूर्वकाल ।** (२) **पूर्वजन्म ।**

पूरबला—वि. [सं. पूर्व + हिं. ला] (१) **पुराना ।** (२) **पूर्वजन्म का ।**

पूरबली—वि. [हि. पूरबला] **पूर्वजन्म की ।** उ.—लंका दई बिभीषन जन कौ पूरबली पहिचानि— १-१३५ ।

पूरबिया, पूरबी—संज्ञा पु [हिं. पूरब] **एक प्रकार का दादरा ।**

सज्ञा स्त्री —**'पूर्वी' नामक रागिनी ।** उ.—सारंग नट पूरबी मिलै कै राग अनूपम गाऊँ—पृ०३११(११) ।

वि.—**पूरब का, पूरब संबधी ।**

पूरा—वि. [सं. पूर्ण] (१) **भरा हुआ ।** (२) **समूचा, सारा ।** (३) **जिसमें कोई कमी या कसर न हो ।** ४) **काफी ।**

मुहा०—पूरा पड़ना—(१) **काम पूरा हो जाना ।** (२) **सामग्री आदि न घटना, अँट जाना ।** (३) **जीवन निर्वाह होना ।**

(५) **संपादित, कृत, संपन्न ।** (६) **तुष्ट ।**

पूरिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **कचौड़ी ।**

पूरित—वि. [सं.] (१) **भरा हुआ ।** (२) **तृप्त ।**

पूरी—वि. स्त्री. [हिं. पूरा] **भरी-पुरी, पूर्ण ।**

संज्ञा स्त्री—[सं. पूलिका] (१) **तली या घी में**

उतारी हुई रोटी । उ.—सद परसि धरी घृत-पूरी । (३) ढोल आदि पर मढ़ा हुआ चमड़ा ।

पूरे—क्रि. स. [हिं. पूरना] पूरा किया, भर दिया, बहुत अधिक एकत्र किया । उ.—(क) दुखित द्रौपदी जानि जगतपति, आए खगपति त्याज । पूरे चीर भीरु तन कृष्ना, ताके भरे जहाज—१-२५५ । (ख) पूरे चीर, अंत नहिं पायौ, दुरमति हारि लही—१-२५८ ।

वि.—भरे हुए । उ.—गूफा बहु पूरन पूरे—१०-१८३ ।

पूरैं—क्रि. स. [हिं. पूरना] बजाते है । उ.—कोउ मुरली कोउ बेनु सब्द सृ गी कोउ पूरैं—४३१ ।

पूरैं—क्रि. अ. [हिं. पूरना] नाप मे पूरी हुई । उ.—बाँधि पत्री डोरी नहिं पूरैं—३६१ ।

पूरौ—वि. [हिं. पूरा] (१) पूरा, संपूर्ण, जिसमें कमी या कसर न हो । उ.—जौ रीझन नहिं नाथ गुसाईं, तौ कत जात जँच्यौ । इतनी कहौ, सूर पूरौ दै, काहे मरत पच्यौ—१-१७४ । (२) सपन्न, संपादित, कृत ।

मुहा०—पूरौ पायौ—पूरी सफलता मिली, अच्छी तरह काम हुआ । उ.—सूर अनेक देह धरि भूतल, नाना भाव दिखायौ । नाच्यो नाच लच्छ चौरासी, कबहूँ न पूरौ पायौ—१-२०५ ।

पूर्ण—वि. [स.] (१) भरा हुआ, पूरित । (२) जिसकी कोई इच्छा या कमी न हो । (३) भरपूर । (४) समूचा, सारा । (५) सब का सब । (६) सिद्ध, सफल । (७) समाप्त ।

पूर्णकाम—वि. [स.] जिसकी कोई कामना न हो ।

पूर्णतया—क्रि. वि. [स.] पूरी तरह से ।

पूर्णतः—क्रि. वि. [स.] पूरी तौर से ।

पूर्णता—सज्ञा स्त्री. [स.] पूर्ण होने का भाव ।

पूर्णमासी—संज्ञा स्त्री. [स.] पूर्णिमा ।

पूर्णावतार—सज्ञा पु. [स.] सोलह कलाओं के अवतार ।

पूर्णाहुति—सज्ञा स्त्री. [स.] (१) यज्ञ की अंतिम आहुति । (२) किसी कार्य की समाप्ति ।

पूर्णिमा—सज्ञा स्त्री. [स.] शुक्ल पक्ष का अंतिम दिन जब पूर्ण चंद्रोदय होता है ।

पूर्णेन्दु—सज्ञा पुं. [स.] पूर्णिमा का पूर्ण चंद्र ।

पूर्णोपमा—सज्ञा पुं. [स.] वह उपमा जिसमें उसके चारौ अंग—उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—हों ।

पूर्ति—सज्ञा स्त्री [सं.] (१) कार्य की समाप्ति । (२) पूर्णता । (३) कमी या अभाव को पूरा करने की क्रिया । (४) भरने का भाव ।

पूर्नता—सज्ञा स्त्री [स. पूर्णता] पूर्ण होना, पूर्णता । उ.—सेसनाग के ऊपर पौढ़त तेतिक नाहिं बड़ाई । जातुधानि-कुच-गर मर्षत तब, तहाँ पूर्नता पाई—१-२१५ ।

पूर्व—सज्ञा पुं. [स.] पश्चिम के सामने की दिशा ।

वि.—(१) पहले का । (२) पुराना । (३) पिछला ।

क्रि. वि.—पहले ।

पूर्वक—क्रि. वि [स.] साथ, सहित ।

पूर्वकालिक—वि. [स.] पूर्वकाल का, पूर्वकाल-सबधी ।

पूर्वकालिक क्रिया—सज्ञा स्त्री. [स] वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल, दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो ।

पूर्वज—संज्ञा पु. [स.] (१) अग्रज । (२) पुरखा ।

वि.—पूर्वकाल में जन्मा हुआ ।

पूर्वराग—संज्ञा पु. [स.] नायक-नायिका में सयोग के पूर्व ही प्रेम होने की स्थिति ।

पूर्ववत्—क्रि. वि. [स.] पहले की तरह ।

पूर्ववर्ती—वि. [स. पूर्ववर्तिन्] जो पहले रहा हो ।

पूर्वा—सज्ञा स्त्री. [स.] (१) पूर्व दिशा । (२) २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ ।

पूर्वानुराग—सज्ञा पुं. [स.] नायक-नायिका के मिलने के पूर्व प्रेम होना ।

पूर्वापर—क्रि. वि. [स.] आगे पीछे ।

वि—आगे और पीछे का ।

पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री. [स.] ग्यारहवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा पु. [स.] पचीसवा नक्षत्र ।

पूर्वार्द्ध—सज्ञा पुं. [स.] आरभ का आधा भाग ।

पूर्वाषाढ़—सज्ञा स्त्री. [सं.] बीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाह्ण—सज्ञा पु. [सं.] सबेरे से दोपहर तक का काल ।

पूर्वी—वि. [स. पूर्वीय] पूर्व दिशा-सबधी ।

पूर्वोक्त—वि. [स.] पहले कहा हुआ ।

पूला—संज्ञा पुं. [सं. पूलक] पूला, गट्ठा ।

पूषण—संज्ञा पुं. [सं.] **सूर्य।**

पूस—संज्ञा पु. [स. पौष, पूष] **अगहन के बाद का मास।**

पृथक्—वि. [सं.] **भिन्न, अलग।**

पृथा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **'कुन्ती' का दूसरा नाम।**

पृथिवी—संज्ञा स्त्री. [स. पृथ्वी] **भू, भूमि।**

पृथिवीपति, पृथिवीपाल—संज्ञा पुं. [स] **राजा।**

पृथु—संज्ञा पुं. [सं.] **वेणु के पुत्र जिनकी उत्पत्ति पिता के मृत शरीर को हिलाने से हुई थी।**

वि.—(१) **मोटा, चौड़ा, मांसल।** उ.—पृथु नितंब कर भीर कमलपद नखमनि चंद्र अनूप—पृ० ३५० (६४)। (२) **महान्।** (३) **असख्य।** (४) **चतुर।**

पृथी—संज्ञा स्त्री. [स. पृथ्वी] **पृथ्वी, धरणी, धरती।** उ.—हिरन्याच्छ तब पृथी कौ लै राख्यौ पाताल। तब हरि धरि बाराह बपु, ल्याए पृथी उठाइ—३-११।

पृथ्वी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **भूमि, धरती।** (२) **पंच भूतों या तत्वों में एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है।** (३) **मिट्टी।**

पृथ्वीतल—संज्ञा पुं [स.] (१) **धरातल।** (२) **संसार।**

पृथ्वीधर—संज्ञा पुं. [स.] **पर्वत, पहाड़।**

पृथ्वीपति, पृथ्वीपाल—संज्ञा पुं. [स.] **राजा।** उ.—उतानपाद पृथ्वीपति भयौ—४-६।

पृश्नि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **एक राजा की रानी का नाम जिसके गर्भ से श्रीकृष्ण जन्मे थे।** उ.—पृस्नी गर्भ देव-ब्राह्मन जो कृष्ण रूप रंग भीन्हो—सारा० ३६७।

पृश्निगर्भ—संज्ञा पुं. [स.] **श्रीकृष्ण।**

पृष्ट—वि. [स.] **जो पूछा गया हो।**

पृष्ठ—संज्ञा पुं. [स] (१) **पीठ।** (२) **पीछे का भाग।** (३) **पुस्तक का पन्ना।**

पृष्ठपोषक—संज्ञा पुं. [सं.] **सहायक, समर्थक।**

पृष्ठभाग—संज्ञा पुं [सं.] (१) **पीठ, पुश्त।** (२) **कंधा।** उ.—पृष्ठभाग चढि जनक-नंदिनी, पौरुष देखि हमार—६-८६।

पेग—संज्ञा स्त्री [हिं० पटंग] (१) **झूले को बढाने के लिए दिया गया तेज झोंका।** (२) **झूले का एक ओर से दूसरी ओर को तेजी से जाना।**

पेंच—संज्ञा पं. [हिं. पेच] **पगड़ी का फेरा।** उ.—लटपट पेंच सँवारति प्यारी अलक सँवारत नंदकुमार—१६०६।

पेंदा—संज्ञा पु. [सं. पिंड] **निचला भाग या तला।**

पेखक—वि. [सं. प्रेक्षक, प्रा. प्रेक्खक] **देखनेवाला।**

पेखत—क्रि. स. [हिं. पेखना] **देखता है।** उ.—मनौ कमल-दल सावक पेखत, उड़त मधुप छबि न्यारी—१०-६१।

पेखन—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेखना] **देखने की क्रिया।** उ.—मल्लजुद्ध नाना बिधि क्रीड़ा राजद्वार को पेखन—सारा. ५०८।

पेखना—क्रि. स. [स. प्रेक्षण, प्रा. पेक्खण] **देखना।**

पेखा—क्रि. स. [हि. पेखना] **देखा।** उ.—बैठी सकुचि, निकट पति बोल्यौ, दुहुँनि पुत्र-मुख पेखा—१०-४।

पेखि—क्रि. स. [हि पेखना] **देखकर।** उ.—प्राची दिसा पेखि पूरण ससि हैं आयौ तानो—१० उ०-१००।

पेखी—क्रि स. [हि पेखना] **देखी।** उ—दधि बेचन जब जात मधुपुरी मैं नीके करि पेखी—२८७८।

पेखे—क्रि. स. [हिं पेखना] **देखा।** उ.—बलमोहन को तहाँ न पेखे—२६६०।

पेखै—क्रि. स. [हिं. पेखना] **देखता है।** उ.—कहुँ कछु लीला करत कहूँ कछु लीला पेखै—१० उ० ४७।

पेखो—क्रि. स. [हि. पेखना] **देखो।** उ.—कहति रही तब राधिका जब हरि संग पेखो—१५२८।

पेखौं—क्रि म. [हिं पेखना] **देखती हूँ।** उ—ज्ञानियनि मै न आचार पेखौं—८-८।

पेख्यो, पेख्यौ—क्रि स. [हि पेखना] **देखी।** उ—जैसोई स्याम बलराम श्री स्यदन चढे वहै छबि कुंवर सर माँझ पेख्यौ—२५५४।

पेच—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **लपेट।** (२) **झंझट।** (३) **चालाकी।** (४) **पगड़ी की लपेट।** उ—छूटे बंदन अरु पाग की बाँधनि छुटी लटपटे पेच अटपटे दिए—२००६। (५) **कुश्ती में पछाड़ने की युक्ति।** (६) **युक्ति।** (७) **एक आभूषण जो पगडी मे खोंसा जाता है, सिरपेच।** (८) **कान का एक आभूषण।**

पेचीला—वि [फ़ा. पेच+ईला] (१) **बहुत घुमाव-फिराव या पेच वाला।** (२) **बड़ी उलझन वाला।**

पेट—संज्ञा पुं. [स. पेटथैला] (१) **उदर।**

पेट का कुत्ता—**भोजन के लिए सब कुछ करने**

वाला। पेट काटना—**बचत के लिए कम खाना या खिलाना**। पेट का पानी न पचना—**रह न पाना, कल न पड़ना**। पेट का पानी न हिलना—**जरा भी मेहनत न पड़ना**। पेट का हलका—**जिसमे गंभीरता न हो**। पेट की आग—**भूख**। पेट की आग बुझाना—**भूख दूर करना**। पेट की बात—**गुप्त भेद**। पेट की मार देना (मारना)—(१) **भोजन न देना**। (२) **जीविका ले लेना**। पेट के लिए दौड़ना—**जीविका के लिये ही परिश्रम करना**। पेट को धोखा देना—**बचत के लिए कम खाना या खिलाना**। पेट दिखलाना—(१) **दीनता दिखाना**। (२) **भूखे होने का सकेत करना**। पेट को लगना—**भूख लगना**। पेट जलना—(१) **बहुत भूख लगना**। (२) **बहुत-असंतुष्ट होना**। पेट दिखाना—**भूखे होने का संकेत करना**। पेट देना—**मन की बात बताना**। पेट दियो—**मन का भेद बता दिया**। उ.—अपनो पेट दियौ तैं उनको नाक बुद्धि तिय सबै कहै री—१६६०। पेट पाटना—**अच्छा-बुरा खाकर पेट भर लेना**। पेट पालना—**जीवन निर्वाह करना**। पेट पीठ एक हो (से लगना) जाना—(१) **बहुत दुबला होना**। (२) **बहुत भूखा होना**। पेट फूलना—**भेद बताने के लिए बहुत व्याकुल होना**। पेट मारना—**बचत के लिए कम खाना**। पेट मारकर मरना—**आत्मघात करना**। पेट में आँत न मुँह मे दाँत—**बहुत बूढ़ा**। पेट मे खलबली पड़ना—**बहुत चिंता या घबराहट होना**। पेट मे चूहे कूदना (दौड़ना) या (चूहों का कलाबाजी खाना)—**बहुत भूख लगना**। पेट से दाढी होना—**बचपन में ही बहुत चालाक होना**। पेट में डालना—**खा लेना**। पेट में दाँत या पाँव होना—**बहुत चालबाज होना**। पेट मे होना—**गुप्त रूप से होना**। पेट मोटा हो जाना—**बहुत रिश्वत लेना**। पेट लगना (लग जाना)—**बहुत भूखा होना**। पेट से पाँव निकालना—(१) **कुमार्ग में लगना**। (२) **बहुत इतराना**। एक ही पेट के होना—**समान प्रकृति या स्वभाव के होना**। उ.—ए सब दुष्ट हने हरि जेते भए एक ही पेट—२७०३। भरि पेट—**जी भर कर**। उ.—होड़ा-होड़ी मनहिं भावते किए पाप भरि पेट—१-१४६।

(२) **गर्भ**।

मुहा०—पेट की आग—**सतान की ममता**। पेट ठढा होना—**सतान का जीवित और सुखी रहना**।

(३) **मन, अंत करण**।

मुहा०—पेट मे घुसना—**भेद लेने के लिए मेल-जोल बढ़ाना**। पेट में डालना—**बात मन में रखना**। पेट में पैठना (बैठना)—**भेद लेने को मेल-जोल बढ़ाना**। पेट मे होना—**मन में होना**।

(४) **वस्तु का भीतरी भाग**। (५) **गुंजाइश, समाई**। (६) **रोजी, जीविका**।

पेटागि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेट+आग] **भूख**।

पेटार, पेटारा—संज्ञा पुं. [स. पेटक] **पिटारा**।

पेटारी—सज्ञा स्त्री. [हि. पिटारा] **छोटी पिटारी**।

पेटिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **पिटारी**। (२) **सदूक**।

पेटी—सज्ञा स्त्री. [स. पेटिका] (१) **छोटा सदूक**। (२) **पेट का वह स्थान जहाँ त्रिबली होती है**। ३) **कमरबंद**।

पेटू—वि. [हिं. पेट] **बहुत खानेवाला**।

पेठा—संज्ञा पुं. [देश.] **सफेद रंग का कुम्हड़ा जिसका प्रायः मुरब्बा बनता है**।

पेठापाक—संज्ञा पुं. [देश. पेठा+स. पाक] **पेठे का मुरब्बा**। उ.—पेठापाक, जलेबी, कौरी,। गोंदपाक, तिनगरी, गिंदौरी—१०-३९६।

पेड़—संज्ञा पुं. [सं.] **वृक्ष, दरख्त**।

पेड़ा—संज्ञा पुं. [स. पिंड] **खोए की एक मिठाई**।

पेड़ि—संज्ञा स्त्री. [स. पिंड, हिं. पेड़ी] (१) **वृक्ष की पींड़, पेड़ का तना**। (२) **जड़**। उ.—कहौ तौ सैल उपारि पेड़ि तैं, दै सुमेरु सौं मारौं—९-१०७।

पेड़ी—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] (१) **वृक्ष का तना**। (२) **मनुष्य का धड़**। (३) **छोटा पेड़ा**।

पेड़ू—संज्ञा पुं. [सं. पेट] (१) **नाभि के कुछ नीचे का स्थान**। (२) **गर्भाशय**।

पेन्हाना—क्रि. स. [हिं. पहनाना] **वस्त्राभूषण पहनाना**।

क्रि. अ.—[सं. पयःस्रवन, प्रा पह्णवन] **पशु के थन में दूध उतरना**।

पेम—संज्ञा पुं. [सं. प्रेम] **प्रीति, प्रेम**।

पेय—वि. [सं.] **पीने योग्य, जो पिया जा सके**।

संज्ञा पुं —(१) **पीने की वस्तु** । (२) **जल** । (३) **दूध** ।

पेयूष—संज्ञा पुं. [स] (१) **गाय के ब्याने के सात दिन बाद तक का दूध** । (२) **अमृत** । (३) **ताजा घी** ।

पेरना—क्रि स. [सं पीडन] (१) **दबाकर रस निकालना** । (२) **कष्ट देना, सताना** । (३) **काम में बहुत देर लगाना** ।

क्रि. स. [स प्रेरण] (१) **प्रेरणा करना** । (२) **भेजना** ।

पेरवा, पेरवाइ—सज्ञा पुं. [हि. पेरना] **पेरनेवाला** ।

पेरी—संज्ञा स्त्री [हि पीली] **पीली रँगी धोती** ।

पेल—संज्ञा पुं. [हि पेला] **बगड़ा, झगड़ा, तकरार** । उ —सखा जीतत स्याम जाने तक करी कछु पेल—१०-२४४ ।

पेलना—क्रि. स. [स. पीड़न] (१) **दबाकर धँसाना या ठेलना** । (२) **धक्का देना** । (३) **टाल देना** । (४) **फेंकना, त्यागना** । (५) **बल का प्रयोग करना** । (६) **प्रविष्ट करना, घुसेड़ना** ।

क्रि. स.—[सं. प्रेरण] **आक्रमण के लिए बढ़ाना** ।

पेला—संज्ञा पुं. [हि पेलना] (१) **झगड़ा, तकरार** । उ —पेला करति देत नहि नीके तुम हो बड़ी बँजारिनि । (२) **अपराध, कसूर** । (३) **धावा, आक्रमण** । (४) **पेलने की क्रिया या भाव** ।

पेलि—क्रि. स. [हि. पेलना] (१) **आक्रमण के लिए बढ़ा दिया** । उ.—घात मन करत लै डारिहौं दुहुंनि पर दियो गज पेलि आपुन हँकारचो—२५९२ । (२) **जबरदस्ती** । उ —एक दिवस हरि खेलत मो सँग झगरौ कीन्हौ पेलि—२९२७ । (३) **अवज्ञा करके** । उ.—इंद्रहि पेलि करी गिरि पूजा सलिल बरषि ब्रज नाऊँ मिटावहिं—९४७ ।

पेली—संज्ञा पुं [हि. पेलना, पेला] **अवज्ञा करके लाँघी** । उ.—रावन भेष धर्यौ तपसी कौ, कत मैं भिच्छा मेली । अति अज्ञान मूढ़-मति मेरी, राम-रेख पग पेली—९-९४ ।

पेलौ—क्रि० स. [हि. पेलना] **टालो, अवज्ञा करो, अस्वीकार करो** । उ —बोलि लेहु सब सखा संग के मेरौ कह्यौ कबहुँ जिनि पेलौ—३९९ ।

पेश—क्रि. वि. [फा.] **सामने, आगे** ।

पेशकश—संज्ञा पुं. [फा] **भेंट, सौगात, उपहार** ।

पेशगी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा] **अग्रिम दिया गया धन** ।

पेशल—वि. [स.] (१) **सुन्दर, कोमल** । (२) **चालाक** ।

पेशवा—संज्ञा पुं. [फा.] **नेता, सरदार** ।

पेशवाई—सज्ञा स्त्री. [फा.] **स्वागत, अगवानी** ।

पेशवाज—संज्ञा स्त्री. [फा पेशवाज़] **नर्तकी का घाँघरा** ।

पेशा—संज्ञा पुं. [फा.] **उद्यम, व्यवसाय** ।

पेशानी—सज्ञा स्त्री. [फा] (१) **भाल, ललाट** । (२) **भाग्य** । (३) **किसी वस्तु का ऊपरी और आगे का भाग** ।

पेशी—सज्ञा स्त्री. [फा] **मुकदमे की सुनवाई** ।

पेशीनगोई—सज्ञा स्त्री. [फा] **भविष्यवाणी** ।

पेश्तर—क्रि. वि. [फा] **पहले, पूर्व** ।

पेषना—क्रि. स. [हिं. पेखना] **देखना** ।

पेस—क्रि. वि. [फा. पेश] **सामने, आगे** ।

पै—प्रत्य. [हि. ऊपर] **करणसूचक विभक्ति, से, द्वारा** । उ.—जाँचक पैं जाँचक कह जाँचै ? जो जाँचै तौ रसना हारी—१-३४ ।

पैंकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. पैर+कड़ा] (१) **पैर का कड़ा** । (२) **बेड़ी, बंधन** ।

पैंचा—संज्ञा पुं. [देश.] **हेर-फेर, पलटा** ।

पैंजना—सज्ञा पु [हि पैर+बजना] **पैर का एक गहना** ।

पैंजनि, पैंजनियाँ, पैंजनी—सज्ञा स्त्री [हि. पैंजना] **पैर मे पहनने का झाँझ की तरह का एक गहना जो झुनझुन बोलता है** । उ.—कटि किंकिनि, पग पैंजनि बाजैं—१०-११७ ।

पैंठ—संज्ञा स्त्री. [सं. पण्यस्थान, प्रा पणट्ठा, अप पइँट्ठा] (१) **हाट, बाजार** (२) **राजपथ, मार्ग** । उ.—होतौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहि टरतौ । सूरदास बैकुंठ-पैंठ मै, कोउ न फैंट पकरतौ—१-२९७ । (३) **हट्टी, दूकान** । उ.—ऊधौ तुम ब्रज मै पैठ करी । लै आए हो नफा जानिकै सबै बस्तु अकरी—३१०४ । (४) **हाट का दिन** ।

पैठौर—संज्ञा पुं. [हिं. पैंठ+ठौर] **दूकान** ।

पैंड़—संज्ञा पुं. [हिं पायँ+ड़ (प्रत्य.) अथवा सं. पाददड, प्रा. पायडड] (१) **डग, पग, कदम** । उ.—(क)

तानि पैड़ बसुधा हौं चाहौं, परनकुटी कौ छावन—८-१३। (ख) जै-जेकार भयौ भुव मापत, तीनि पैड़ भई सारी। आध पेड़ बसुधा दै राजा, ना तरु चलि सत हारी—८-१४। (२) **पथ, मार्ग।**

पैड़ा, पड़े—सज्ञा पुं. [हिं पैड़] (१) **पथ, मार्ग**। उ.—पैडे चलत न पावै कोऊ रोकि रहत लरकन लै डगरी—८५४।

मुहा०—पैडे पड़ना (परना)-**बार बार तग करना**। पैडे परे—**पीछे पड़े है, तग करते है**। उ.—मानत नाहि हटकि हारी हम पैडे परे कन्हाई।

(२) **प्रणाली, रीति**। (३) **घुड़साल**।

पैड़ौ—संज्ञा पु. [हि. पेड़, पैड़ा] **रास्ता पथ, मार्ग**।

मुहा०—दियौ उन पेडौ—**उन्होने जाने दिया, आगे बढ़ने का मार्ग दिया**। उ—तब मे इराप कियौ छोटौ तनु पेठ्यौ उदर-मँझारि। खरभर परी, दियौ उन पैंडौ, जीती पहिली रारि—६-१०४।

पैत—सज्ञा स्त्री. [स. पणकृत, प्रा. पणइत] **बाजी।**

पैती—संज्ञा स्त्री. [स. पवित्र, प्रा० पवित्त, पइत्त] (१) **कुश का छल्ला, पवित्री**। (२) **ताँबे आदि की अँगूठी**।

पैया—संज्ञा स्त्री. [हि. पायँ] **पैर, पावँ**।

पै—अव्य. [स पर] (१) **पर, परंतु, लेकिन**। उ.—बरजत बार-बार हैं तुमकौ पै तुम नेक न मानौ। (२) **पीछे, बाद, अनतर**। उ.—ऊधौ, स्याम कहा पावैंगे प्रान गए पै आए। (३) **अवश्य, जरूर**। उ.—निस्चय करि सो तरै पै तरै—६-४।

यौ०—जो पै—**यदि, अगर**। तो पै—**तो फिर, उस दशा मे।**

अव्य [सं. प्रति, प्रा. पडि, पइ, हिं. पास, पह] (१) **पास, समीप, निकट**। उ.—(क) परतिज्ञा राखी मनमोहन फिर तापै पठयौ। (ख) वा पै कही बहुत बिधि,सौ हम नेकु न दीनो कान। (२) **प्रति, ओर**।

प्रत्य. [स. उपरि, हि. ऊपर] (१) **पर, ऊपर, अधिकरण-सूचक विभक्ति**। उ.—(क) षोड्स अगनि मिलि प्रजंक पै छ-दस अक फिरि डारै—१-६०। (ख) निहचै एक असल पै राखै, टरै न कबहूँ टारै—१-१४२। (२) **करण-सूचक विभक्ति, से, द्वारा**।

उ.—दीन दयालु कृपालु कृपानिधि कापै कह्यौ परै।

सज्ञा पुं. [सं. पय] (१) **जल**। (२) **दूध**।

पैकरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पायँ+कड़ा] **पैर का गहना**।

पैगम्बर—संज्ञा पुं [फ़ा.] **धर्मप्रवर्तक**।

पैग—सज्ञा पुं. [स. पदक, प्रा. पअक] **डग, कदम, पग**। उ.—(क) तीन पैग बसुधा दै मोकौ। तहाँ रचौ ग्रमसारी। (ख) कबहुँक तीनि पैग भुव मापत, कबहुँक देहरि उलँघि न जानी—१०-१४४।

पैगाम—सज्ञा पुं. [फा.] **संदेश, सँदेसा**।

पैज—सज्ञा स्त्री. [स. प्रतिज्ञा, प्रा. प्रतिज्जा, अप. पइज्जा] (१) **प्रतिज्ञा, प्रण, टेक, हठ**। उ.—(क) राखी पैज भक्त भीषम की, पारथ कौ सारथी भयौ—१-२६। (ख) पैज करो हनुमान निसाचर मारि सीय सुधि ल्याऊँ। (ग) पैज करि कही हरि तोहि उबारौ। (२) **प्रतिद्वद्विता, होड़, लागडाट**। उ.—सहस बरस गज जुद्ध करत भए, छिन इक ध्यान धरै। चक्र धरे बैकुंठ तैं धाए, वाकी पैज सरै—१-८२।

पैजनि, पैजनियाँ, पैजनी—संज्ञा स्त्री. [हि पैंजनी] **पैंजनी**। उ.—अरुन चरन नख-जोति, जगमगति, रुन-झुन करति पाइँ पैजनियाँ—१०-१०६।

पैठ—संज्ञा स्त्री [सं प्रविष्ठ, प्रा पइट्ठ] (१) **प्रवेश**। (२) **पहुँच, आना-जाना**।

पैठना—क्रि. अ. [हि. पैठ] **प्रवेश करना**।

पैठाना—क्रि. स [हि पैठना] **प्रवेश कराना**।

पैठार—सज्ञा पुं. [हि पैठ+आर] (१) **पैठ, प्रवेश**। (२) **प्रवेशद्वार, फाटक**। उ.—सूर प्रभु सहर पैठार पहुँचे आइ धनुष के पास जोधा रखाए—२५६३।

पैठारी—सज्ञा स्त्री [हिं. पैठार] **प्रवेश, गति**।

पैठि—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **घुसकर, प्रविष्ट होकर, प्रवेश करके**। उ.—(क) सकल सभा मैं पैठि दुसासन अंबर आनि गह्यौ—१-२४७। (ख) अपने मरबे ते न डरत है पावक पैठि जरै—२८००।

पैठे—क्रि. अ. [हि. पैठना] **घसे, प्रविष्ट हुए, प्रवेश किया**। उ.—सुन्दर गऊ रूप हरि कीन्हौ। बछरा करि ब्रह्मा सँग लीन्हौ। अमृत-कुंड मैं पैठे जाइ। कह्यौ असुरनि, मारौ इहि गाइ—७-७।

पैठ्यो—क्रि. अ. [हिं. पैठना] **घुसा, प्रविष्ट हुआ, प्रवेश**

किया । उ.—(क) धर-अंबर लौ रूप निसाचरि, गरजी बदन पसारि । तब मैं डरपि कियौ छोटौ तनु, पैठयो उदर-मँझारि—६-१०४ । (ख) अचल गाँठि दई, दुख भाज्यौ, सुख जु आनि उर पैठ्यो—६-१६४।

पड़ी—संज्ञा स्त्री [हि पैर] **सीढ़ी, जीना** ।

पैड़े—संज्ञा पुं [हि पैड, पैड़ा] **रास्ता, पथ, मार्ग** । उ — सूर स्याम पाए पैड़े मे, ज्यौं पावै निधि रक परी—१०-८० ।

मुहा०—पैडे परे—**पीछे पड़े है, बहुत तग करते हैं** । उ.—मानत नाहि हटकि हारी हम पैडे परे कन्हाई।

पैतरा—संज्ञा पुं [स पदातर, प्रा पयातर] (१) **वार करने या बचाने की मुद्रा** । (२) **पद-चिह्न** ।

पैतला—वि. [हि. पायँ+थल] **उथला, छिछला** ।

पैता—संज्ञा पुं. [देश.] **कृष्ण का सखा एक गोप** । उ.—रैता, पैता, मना, मनसुखा, हलधर संगहिं रैहौ—४१२ ।

पैताना—संज्ञा पुं. [हि पायताना] **पायताना** ।

पैतृक—वि. [स.] **पितृ-संबधी, पुरखो की** ।

पैथला—वि. [हि. पायँ+थल] **उथला, छिछला** ।

पैदल—वि. [स. पादतल, प्रा. पायतल] **बिना सवारी के, पैर-पैर ही चलनेवाला** ।

क्रि. वि.—**पैर-पैर ही** ।

संज्ञा पुं.—(१) **पैदल सिपाही** । (२) **शतरज की एक गोटी** ।

पैदा—वि [फा] (१) **जन्मा हुआ, उत्पन्न** । (२) **घटित, उपस्थित** । (३) **प्राप्त, अर्जित** ।

संज्ञा स्त्री —**आमदनी, आय** ।

पैदाइश—संज्ञा स्त्री. [फा.] **जन्म, उत्पत्ति** ।

पैदाइशी—वि. [फा.] (१) **जन्म का** । (२) **स्वाभाविक** ।

पैदावार—संज्ञा स्त्री. [फा.] **उपज, फसल** ।

पैना—वि. [स. पैण] **तेज, धारदार, तीक्ष्ण** ।

पैनी—वि. [हिं पैना] **तेज, तीक्ष्ण** । उ —सोभित अग तरग त्रिसगम, धरी धार अति पैनी—६-११ ।

पैबौ—संज्ञा पुं. [हि. पाना] (१) **(कर) पाना, (कर) सकना, सपादित करना** । उ —चोली चीर हार लै भाजत, सो कैसे करि पैबौ—७७६ । (२) **प्राप्त करना, पा सकना** । उ.—गोवर्धन कहुँ गोप बृंद सचु कहा गोरस सचु पैबौ—३३७२ ।

पैमाइश—संज्ञा स्त्री [फा.] **माप, नाप** ।

पैमाना—संज्ञा पुं [फा.] **मापने की वस्तु** ।

पैमाल—वि [हि पामाल] **पददलित, नष्ट-भ्रष्ट** ।

पैयत—क्रि स [हि पाना] **पाता है, प्राप्त करता है, लाभ करता है** । उ —अब कैसैं पैयत सुख माँगे—१-६१ ।

पैयाँ—संज्ञा स्त्री [हि पायँ] **पावँ, पैर** ।

पैया—संज्ञा पुं [हि पहिया] **पहिया, चक्का, चक्र** । उ. —मन-मत्री सो रथ हँकवैया । रथ तन, पुन्य-पाप दोउ पैया—४-५२ ।

संज्ञा पुं. [सं पाथ्य] **खोखला, खुक्ख** ।

संज्ञा पु [हिं पेर] **पैर, डग** । उ —अरबराइ कर पानि गहावत डगमगाइ धरनी धरै पैया—**१०-११५** ।

क्रि. स. [हिं. पाना] **पाया** । उ.—सूर स्याम अतिही विरुझाने, सुर-मुनि अत न पैया री—**१०-१८६** ।

पैर—संज्ञा पुं. [स. पद+दड, प्रा पयदड, अप. पयँड] (१) **पावँ, चरण** । (२) **चरण चिन्ह** ।

पैरत—क्रि. अ [हि. पैरना] **तैरता है** । उ —कहा जानै दादुर जल पैरत सागर औ' सम कूप—३३७६ ।

पैरना—क्रि. अ. [स. प्लवन, प्रा पवण] **तैरना** ।

पैरवी—संज्ञा स्त्री [फा] **पक्षके समर्थन की दौड़-धूप** ।

पैरा—संज्ञा पुं. [हि पैर] (१) **पड़े हुए चरण, पौरा** । (२) **पैर का कड़ा** । (३) **बल्लियो का सीढ़ीदार जीना** ।

पैराई—संज्ञा स्त्री. [हि पैरना] **तैरने का भाव** ।

पैराना—क्रि. स. [हि पैरना] **तैराना** ।

पैरि—क्रि. अ [हिं पैरना] **तैरकर, पानी मे हाथ-पैर चलाकर** । उ.—भवसागर मै पैरि न लीन्हौ—**१-१७५** ।

पैरी—संज्ञा स्त्री [हिं. पैर] (१) **पैर का एक चौड़ा गहना** । (२) **अनाज झाड़ने की क्रिया** । (३) **सीढ़ी** ।

पैर्यौ—क्रि. अ. [हि पैरना] **तैरता रहा, पानी में हाथ-पैर लगाकर चलता रहा** । उ.—जल औंड़े मै चहुँ दिसि पैरयौ, पाँउ कुल्हारौ मारौ—१-१५२ ।

पैलगी—संज्ञा स्त्री [हि. पायँ+लगना] **प्रणाम ।**

पैला—संज्ञा पु [हि पैली] **नाँद की बनावट का बड़ा ढक्कन ।**— उ स्याम सब भाजन फोरि पराने । हाँकि देत पैठत हैं पैला नेकु न मनहि डराने ।

पैली—संज्ञा स्त्री. [स. पातिली, प्रा पाइली] **मिट्टी का नाँद की तरह का बड़ा पात्र जो ढकने के काम आता है ।**

पैवंद—संज्ञा पुं. [फा.] **चकती, थिगली, जोड़ ।**

मुहा०—पैवद लगाना—**अधूरी या अपूर्ण वस्तु या बात को वैसा ही मेल मिलाकर पूरा करना ।**

पैशाच—वि [स] **पिशाच का, पिशाच संबंधी ।**

पैशाच विवाह—संज्ञा पुं [स] **आठ प्रकार के विवाहो में एक जो सोती कन्या का हरण करके या छल से किया जाय ।**

पैशाचिक—वि [स] **घोर और बीभत्स, राक्षसी ।**

पैशाची—संज्ञा स्त्री. [सं] **एक प्राकृत भाषा ।**

पैसना—क्रि अ [सं. प्रविश, प्रा पइस+ना] **घुसना ।**

पैसरा—संज्ञा पुं. [स परिश्रम] **जजाल, झंझट ।**

पैसा—संज्ञा पुं. [स पाद या पणांश] **ताँबे का सिक्का जो पहले रुपए का चौसठवाँ भाग था और अब सौवाँ है । (२) धन-दौलत ।**

मुहा०—पैसा उठना—**धन खर्च होना ।** पैसा उठाना—**फिजूल खर्ची करना ।** पैसा कमाना—**रुपया पैदा करना ।** पैसा डूबना—**घाटा होना ।** पैसा ढो ले जाना—**दूसरे देश का धन अपने देश ले जाना ।** पैसा धाकर रखना—**मनौती मानकर पैसा रख देना ।**

पैसार—संज्ञा पुं. [हिं पैसना] **प्रवेश, पैठ ।**

पैसी—क्रि. अ स्त्री [हि पैसना] **घुसी, पैठी ।** उ — करि बरिआइ तहाँऊ पैसी—२४३८ ।

पैसेवाला—वि. [हिं पैसा+वाला] **धनी, मालदार ।**

पैहराइ—क्रि स [हि पहनाना] **पहनाकर, धारण कराके ।** उ.—पँचरँग सारी मँगाइ, बधू जननि पैहराइ, नाचैं सब उमँगि अग, आनँद बटावें—**१०-६५ ।**

पैहारी—वि. [हिं. पय+आहारी] **दूध पर ही रहनेवाला ।**

पैहैं—क्रि. स. [हि पाना] (१) **पायँगे, प्राप्त करेंगे ।** (२) **भोगेंगे, सहेंगे ।** उ —सुख सौ बसत राज उनकैं सब । दुख पैहै सो सकल प्रजा अब—**१-२६० ।**

पैहै—क्रि स [हि पाना] **पायगा, लाभ करेगा, प्राप्त करेगा ।** उ.—अजहूँ मूढ करौ सतसंगति, संतनि मैं कछु पैहै—१-८६ ।

पैहौं—क्रि. स [हि. पाना] **पाऊँगा ।** उ —बंसी बट तट ग्वालनि कैं सँग खेलत अति सुख पैहौं—४१२ ।

प्र०—आवन पैहौं—**आने पाऊँगा ।** उ.—कैसेहुँ आज जसोदा छाँड़्यो, कालिह न आवन पैहौं—४१५ ।

पैहौ—क्रि स. [हि पाना] **पाओगे, प्राप्त करोगे ।** उ.—(क) हरि-संतनि कौ कह्यौ न मानत, क्यौ आपुनौ पैहौ—**१-३३५ ।** (ख) मुख माँगो पैहौ सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावहु—३३४० ।

पोकना—क्रि अ. [अनु] **बहुत डर जाना ।**

पोगा—संज्ञा पु [सं. पुटक] **खोखली नली । चोंगा ।**

वि.—(१) **पोला, खोखला ।** (२) **मूर्ख, बुद्धिहीन ।**

पोछति—क्रि. स. स्त्री. [हि पोछना] **काछती है, (गीला बदन) पोछती है ।** उ.—तनक बदन, दोउ तनक-तनक कर, तनक चरन, पोछति पट झोल—१०-६४ ।

पोछन—संज्ञा पुं [हि पोछना] **पोछने से छटनेवाला अंश ।**

पोछना—क्रि. स [सं. प्रोञ्छन, प्रा पोछन] (१) **लगी या सनी चीज को हाथ, कपड़े आदि से हटाना ।** (२) **गर्द आदि को हाथ, कपड़े आदि से रगडकर साफ करना । गीली चीज को सूखी से रगड़कर सुखाना ।**

संज्ञा पुं —**पोंछने का कपड़ा, साफी ।**

पोछि—क्रि. स. [हि. पोछना] **पोछकर ।** उ —आँसू पोछि निकट बैठारी—**१०** उ.-३२ ।

पोछियै—क्रि. स. [हिं. पोछना] **गीली चीज को सूखी से रगड़कर सुखाना ।** उ —बदन पोछियौ जल-जमुन सौ धाइकै—४४० ।

पोछै—क्रि स. [हि. पोछना] (१) **गीली वस्तु को पोछती है ।** (२) **पड़ी हुई गर्द आदि को झाड़ती है, या दूर करती है ।** उ.—लै उठाइ अंचल गहि पोंछै, धूरि भरी सब देह—१०-१११ ।

पोइ—क्रि. स. [हिं. पोना] (१) **पिरोकर, गूँथकर ।**

उ.—**ईषद** हास, दंत-दुति बिकसित, मानिक मोती धरे जनु पोइ—१०-२१० ।

प्र०—रह्यौ पोइ—**पिरोया हुआ है** । उ.—कचन कौ कठुला मनि-मोतिनि, बिच बघनहँ रह्यौ पोइ—१०-१४८ ।

(२) **रत करके, एक ही ओर लगाकर** । उ.—सूर-दास स्वामी करुनामय, स्याम-चरन, मन पोइ—१-२६२ ।

पोइस, पोइसि—क्रि०वि० [हि. पोइया] **दौड़कर, सरपट** । उ.—काल जमनि सौ आनि बनी है, देखि देखि मुख रोइसि । सूर स्याम बिनु कौन छुड़ावै, चले जाव भाई पोइसि—१-३३३ ।

पोई—संज्ञा स्त्री. [सं पोदकी] **एक साग** । उ.—(क) पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१ । (ख) चौराई लाल्हा अरु पोई—३९६ ।

संज्ञा स्त्री. [स. पोत] (१) **अकुर, पौधा** । (२) **ईख का कल्ला** ।

क्रि. स. [हिं. पोना] (१) **आटे की रोटी बनायी** । (२) **रोटी पकायी** । उ.—सरस कनिक बेसन मिलै रुचि रोटी पोई—१५५५ ।

क्रि. स. [हिं. पोय+ना] **पिरोयी** । उ —कचन कों कँठुला मन मोहत तिन बघनहा बिच पोई ।

पोख—संज्ञा पुं [स. पोष] **पालन-पोषण** ।

पोखना—क्रि. स. [सं. पोषण] **पालना-पोसना** ।

पोखर, पोखरा—संज्ञा पु. [स. पुष्कर, प्रा. पुक्खर.] **तालाब** ।

पोखरी—संज्ञा स्त्री. [हि. पोखर] **छोटा तालाब, तलैया** ।

पोगंड—संज्ञा पुं. [स.] (१) **पाँच से दस वर्ष की अवस्था का बालक** । (२) **छोटा, बड़ा या अधिक अंगवाला व्यक्ति** ।

पोच—वि. [फा. पूच] (१) **तुच्छ, बुरा, क्षुद्र, निकृष्ट** । उ.—(क) माधौ जू, मन सबही बिधि पोच । अति उन्मत्त, निरंकुस, मैंगल, चिंता-रहित, असोच—१-१०२ । (ख) कौन निडर कर आपको को उत्तम को पोच । (ग) जाहि बिन तन प्रान छाँडे कौन बुधि यह पोच—८८६ । (२) **शक्तिहीन, क्षीण** ।

पोची—संज्ञा स्त्री. [हि. पोच] **बुराई, नीचता** ।

पोट—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गठरी, पोटली** । (२) **ढेर** ।

पोटना—क्रि. स. [हि. पुट] (१) **बटोरना** । (२) **फुसलाना** ।

पोटरी, पोटली—संज्ञा स्त्री [सं पोटलिका] **छोटी गठरी** ।

पोटा—संज्ञा. पुं. [सं. पुट = थैली] (१) **पेट की थैली** ।

मुहा०—पोटा तर होना—**धन से बेफिक्र होना** ।

(२) **साहस, सामर्थ्य** । (३) **समाई, बिसात, हैसियत** । (४) **आँख की पलक** । (५) **उँगली का छोर** ।

सज्ञा पुं [स पोत] **चिड़िया का पंखहीन बच्चा** ।

पोढ़, पोढ़ा—वि. [स. प्रौढ़, प्रा. पोढ़] (१) **पुष्ट** । (२) **कड़ा** ।

मुहा०—जी पोढा करना—**दुख आदि से विचलित न होना** ।

पोढ़ाना—क्रि. अ. [हि. पोढ] **दृढ़ या पक्का होना** ।

क्रि. स.—**दृढ़ या पक्का करना** ।

पोत—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिड़िया या छोटा बच्चा** । (२) **पौधा** । (३) **कपड़ा** । (४) **नौका जहाज** ।

सज्ञा पुं. [सं प्रवृत्ति, प्रा. पउत्ति] (१) **ढंग** । (२) **बारी** ।

संज्ञा स्त्री. [स. प्रोता, प्रा. पोता] (१) **माला का दाना** । (२) **काँच की गुरिया का दाना जो कई रंगों का होता है** । उ —(क) झीनी कामरि काज कान्ह ऐसी नहि कीजै । काँच पोत गिर जाइ नंद घर गयौ न पूजै—१११७ । (ख) यह मत जाइ तिन्है तुम सिखवौ जिनहीं यह मत सोहत । सूर आज लौ सुनी न देखी पोत सूतरो पोहत—३१२२ ।

सज्ञा पुं [फा फोता] **जमीन का लगान, भू कर** ।

पोतना—क्रि स. [स. प्लुत, प्रा पुत+ना] (१) **गीली तह चढ़ाना, चुपड़ना, मिट्टी, गोबर आदि का घोल चढाना** ।

सज्ञा पुं.—**पोतने का कपड़ा, पोता** ।

पोता—सज्ञा पुं. [सं पौत्र, प्रा पोत्त] **पुत्र का पुत्र** ।

संज्ञा पु. [स पोतृ] (१) **वायु** । (२) **विष्णु** ।

संज्ञा पुं. [हि पोटा] **पेट की थैली, उदराशय** ।

संज्ञा पुं. [हि. पोतना] **पोतने का कपडा** ।

सज्ञा पु. [फा. फोता] **पोत, लगान, भूमिकर** । उ.—मन महतो करि कैद अपने मैं, ज्ञान-जहतिया

लावै। माँड़ि माँड़ि खरिहान क्रोध कौ, **पोता** भजन भरावै—१—१४२।

पोति, पोती—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोत] **काँच की गुरिया का दाना।** उ.—कंचन काँच कपूर कपर खरी, हीरा सम कैसे पोति बिकात री—२५०९।

पोती—संज्ञा स्त्री [हिं. पोतना] **मिट्टी का लेप।** क्रि. स. **दीवार आदि पर घोल चढ़ाया।**

संज्ञा स्त्री. [हिं. पोता] **पुत्र की पुत्री।**

पोते—क्रि. स. [हिं. पोतना] **(शरीर पर) मले हुए, लगाए हुए, लसकर।** उ—तब तू गयौ सून भवन, भस्म अंग पोते। करते बिन प्रान तोहि, लछिमन जौ होते—६-६७।

पोथा—संज्ञा पुं. [हिं. पोथी] **बड़ी पुस्तक (व्यंग्य)।**

पोथी—संज्ञा स्त्री [. पुस्तिका, प्रा. पोत्थिआ] **पुस्तक।**

पोदना—संज्ञा पुं. [अनु. फुदकना] **एक छोटी चिड़िया।**

पोना—क्रि. स. [स. पूप, हिं. पूवा+ना] (१) **गीले आटे से रोटी बनाना।** (२) **(रोटी, चपाती) पकाना।**

क्रि. स. [सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोय+ना] **पिरोना।**

पोपला—वि. [अनु० पुल] **जिसके दाँत न हों।**

पोपलाना—क्रि. अ. [हिं. पोपला] **पोपला होना।**

पोय—क्रि. स. [हिं. पोना] **(रोटी) पकाकर।** उ.—सूर आँखि मजीठ कीनी निपट काँची पोय।

संज्ञा स्त्री [हिं. पोई] **एक साग।**

पोर—संज्ञा स्त्री. [स. पर्व] **(१) उँगली की गाँठ या जोड़।** (२) **उँगली की गाँठों के बीच की जगह।** (३) **ईख आदि की गाँठों के बीच का भाग।** (४) **रीढ़, पीठ।** उ.—निकसे सबै कुँअर असवारी उच्चैःश्रवा के पोर—१० उ०-६।

पोरि—संज्ञा स्त्री. [हि. पौरी] **ड्योढ़ी, दहलीज, द्वार।** उ.—बोलि लिए सब सखा संग के, खेलत कान्ह नंद की पोरि—६६६।

पोरिया—संज्ञा स्त्री. [हि. पोरि] **उँगली का एक गहना।**

पोरी—संज्ञा स्त्री. [हि. पोल] **एक तरह की रोटी।** उ.—रोटी, बाटी, पोरी, झोरी। इक कोरी, इक घीव चभोरी—३९६।

पोल—संज्ञा पुं. [हि. पोला] (१) **खाली जगह।** (२) **खोखलापन, सारहीनता।**

मुहा.—पोल खुलना—**दोष या बुराई प्रकट होना। दोष या बुराई प्रकट करना।**

संज्ञा पुं. [स] **एक तरह की रोटी।**

संज्ञा पुं. [स. प्रतोली, प्रा. पओली] (१) **प्रवेश-द्वार।** (२) **आँगन, सहन।**

पोला—वि. [हि. पोल] (१) **खोखला, खुक्ख।** (२) **सारहीन।** (३) **जो भीतर से पुलपुला हो।**

पोलिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. पोला] **पैर का एक गहना।**

पोली—वि. स्त्री. [हिं. पोला] **खोखली, खुक्ख।**

पोशाक—संज्ञा स्त्री. [फा पोश] **वस्त्र, पहनावा।**

पोशीदा - वि. [फा.] **गुप्त, छिपा हुआ**

पोष— संज्ञा पुं [स.] (१) **पोषण।** (२) **उन्नति।** (३) **अधिकता, बढ़ती।** (४) **धन।** (५) **संतोष।**

पोषक—वि. [सं.] (१) **पालक।** (२) **सहायक, समर्थक।**

पोषण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालन।** (२) **बढ़ती।** (३) **पुष्टि, समर्थन।** (४) **सहायता।**

पोषन—संज्ञा पुं. [सं. पोषण] **पोषण, पालन।** उ.—प्रभु तेरौ बचन भरोसौ साचौ। पोषन भरन बिसंभर साहब, जो कलपै सो काँचौ—१-३२।

पोषना—क्रि. स. [सं पोषण] **पालन करना।**

पोषि—क्रि. स. [हि. पोषना] **पालन करके।** उ.—ऐसे मिल्यो जाइ मोको तजि मानहुँ इनही पोषि जयौ री—१४६६।

पोषित—वि. [स.] **पाला-पोसा हुआ।**

पोषिबै—क्रि. स. [हि. पोषना] **पालने (के लिए) पालन-पोषण (के हेतु)।** उ.—अपनौ पिंड पोषिबै कारन, कोटि सहस जिय मारे—१-३३४।

पोषु—क्रि. स. [हि. पोषना] **पालन करके।** उ.—राजकाज तुमते न सरैगौ काया अपनी पोषु—३०२६।

पोषे—क्रि. स. [हि. पोषना] **पाले।** उ.—पोषे नाहि तुव दास प्रेम सौं, पोष्यौ अपनौ गात्र—१-२१६।

वि.—**पाला-पोषा हुआ।** उ.—अधर सुधा मुरली की पोषे योग-जहर कत प्यावे रे—३०७०।

पोषैं—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करते हैं** । उ.—पोषै ताहि पुत्र की नाईं—५-३ ।

पोषै—क्रि. स. [हिं. पोषना] **पालन करती है, पालती-पोषती है** । उ.—जैसे जननि जठर अंतरगत सुत अपराध करै । तौऊ जतन करै अरु पोषै, निकसैं अंक भरै—१-११७ ।

पोष्य—वि. [सं.] **पालन के योग्य, पाला हुआ** ।

पोष्यपुत्र—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पाला हुआ पुत्र** । (२) **दत्तक पुत्र** ।

पोष्यौ—क्रि. स. [हि. पोषना] **पालन किया, पाला, पाला-पोषा** । उ.—वैसी आपदा तैं राख्यौ, तोष्यौ, पोष्यौ, जिय दयौ, मुख-नासिका नयन-स्रौन-पद पानि—१-७७ ।

पोस—संज्ञा पुं. [स. पोष] **पालक के प्रति प्रेम** ।

पोसन—संज्ञा पुं. [सं. पोषण] **पालन, रक्षा** । उ.—यह अचरज है अति मेरे जिय, यह छाँड़न वह पोसन ।

पोसना—क्रि. स. [सं. पोषण] (१) **रक्षा करना, पालना** । (२) **(पशु को) दाना-पानी देकर रखना** ।

पोस्त—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **छिलका** । (२) **चमड़ा** । (३) **अफीम के पौधे का डोंडा** । (४) **अफीम का पौधा** ।

पोस्ता—संज्ञा पु. [फा. पोस्त] **अफीम का पौधा** ।

पोस्ती—वि. [हिं. पोस्ता] (१) **अफीमची** । (२) **आलसी** ।

पोहत—क्रि. स. [हि. पोहना] **पिरोता या गूँथता है** । उ.—सूर आजु लौं सुनी न देखी पोत सूतरी पोहत—३१२२ ।

पोहना—क्रि. स. [सं. प्रोत, प्रा. पोइअ, पोय+ना] (१) **पिरोना, गूँथना** । (२) **छेड़ना** । (३) **घुसाना, धँसाना** । (४) **जड़ना, जमाना** । (५) **पीसना, घिसना** । (६) **रोटी बनाना या पकाना** ।

वि.—**घुसनेवाला, भेदनेवाला** ।

पोहि—क्रि. स. [हिं. पोहना] (१) **पिरोकर, गूँथकर** । उ.—(क) सूर प्रभु उर लाइ लीन्हों प्रेम-गुन करि पोहि—पृ. ३५२ (८०) । (ख) अपने हाथ पोहि पहिरावत कान्ह कनक के मनियाँ—२८७९ । (२) **मलकर, लगाकर, पोतकर** । उ.—पहिले पूतना कपट करि आई रतननि बिष पोहि—२५१५ । (३) **घुसाकर धँसाकर** । उ.—सूरस्याम यह प्रान पियारी उर मैं राखी पोहि ।

पोहे—क्रि. स. [हि. पोहना] **पिरोये हैं, गूँथे हैं** । उ.—लटकन लटकि रहे भ्रू-ऊपर, रँग-रँग मनि-गन पोहे री । मानहुँ गुरु-सनि-सुक्र एक ह्वै, लाल भाल पर सोहे री—१०-१३६ ।

पौंडा—संज्ञा पुं. [सं पौंड्रक] **मोटा गन्ना** ।

पौंड्र—संज्ञा पु. [सं.] **भीम के शंख का नाम** ।

पौढ़ना—क्रि. स. [हि. पौढ़ना] **लेटना** ।

पौंड्रक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पुंड्र देश का राजा जो जरासंध का सबंधी था** । (२) **भीम के शंख का नाम** । उ.—तक्षक धनंजय देवदत्त अरु पौंड्रक शंख द्युमान—सारा. ६ ।

पौढ़ि—क्रि. अ. [हिं. पौढना] **लेटकर** । उ.—मुरली तऊ गुपालहिं भावति । ...... आपुन पौढ़ि अधर सज्जा पर, कर-पल्लव पलुटावति—६५५ ।

पौरना—क्रि. अ. [सं. प्लवन] **तैरना** ।

पौरि—संज्ञा स्त्री. [हिं. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी** ।

पौरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरिया] **द्वारपाल** । उ.—निदरि परिया जाय नृप पै पुकारे—२६११ ।

पौ—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रपा, प्रा. पवा] **प्याऊ, पौसाला** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा, प्रा० पव, पउ] **किरण, ज्योति** ।

मुहा०—पौ फटना—**सबेरा या तड़का होना** ।

संज्ञा स्त्री. [सं. पद, प्रा. पव=कदम, डग] **पाँसे की एक चाल या दाँव । पाँसा फेंकने पर जब ताक या दस, पचीस, तीस आते है तब पौ होती है** । उ.—बाल, किसोर, तरुन, जर, जुग सो सुपक मारि ढिग ढारी । सूर एक पौ नाम बिना नर पिरि फिरि बाजी हारी—१-६० ।

मुहा.—पौ बारह पड़ना—**जीत का दाँव आना** । पौ बारह होना—**जीत का दाँव पड़ना, जीत होना** ।

संज्ञा पुं. [सं. पाद, प्रा पाय, पाव] **पैर** ।

पौगंड—संज्ञा पुं. [स.] **५ से १० वर्ष की आयु** ।

पौढ़त—क्रि. अ. [हिं. पौढना] **लेटते है, सोते हैं** । उ.—

सेसनाग के ऊपर पौढत, तेतिक नाहिं **बड़ाई**—१०-२१५।

पौढ़ना—क्रि. अ. [सं. प्लवन, प्रा. पव्वलन] **झूलना।**
क्रि. अ. [स. प्रलोठन] **लेटना, सोना।**

पौढ़ाई—क्रि. स. [हिं. पौढाना] **लिटाकर।** उ.—सूर स्याम कछु करौ बियारी, पुनि राखौ पौढाइ—१०-२२६।

पौढ़ाऊँ—क्रि. स. [हि. पौढाना] **लिटाकर सुलाऊँ।** उ.—उठहु लाल कहि मुख पखरायौ, तुमकौ लै पौढाऊँ—१०-२३०।

पौढाए—क्रि. स, [हिं. पौढाना] **लिटाये, लिटा दिये।** उ.—पौढाए हरि सुभग पालनै—१०-५०।

पौढाना—क्रि. स. [हि पौढना] **लिटाना, सुलाना।**

पौढायौ—क्रि. स. [हि. पौढाना] **लेटाया।** उ.—चंदन अगर सुगंध और घृत, बिधि करि चिता बनायौ। चले बिमान संग गुरु-पुरजन, तापर नृप पौढायौ—६-५०।

पौढ़ी—क्रि. अ. [हि. पौढना] **लेटी।** उ.—मै घर पौढी आइ—१०-३२२।

पौढ़े—क्रि. अ. [हिं. पौढना] (१) **लेटे, सोए।** उ.—(क) तुरत जाइ पौढे दोउ भैया—१०-२३०। (ख) पौढे हुते प्रयंक परम रुचि रुक्मिणि चमर डुलावति तीर—(२) **मूर्छित हुए, मरकर गिर पड़े।** उ.—पौढे कहा समर सेज्या सुत, उठि किन उत्तर देत—१-२६।

पौत्र—संज्ञा पुं. [सं.] **लड़के का लड़का।**

पौद, पौधि—सज्ञा स्त्री. [सं. पोत] (१) **छोटा पौधा।** (२) **संतान।**
संज्ञा स्त्री. [हिं. पावँ+पट] **पाँवड़ा, पायंदाज।**

पौदा, पौधा—संज्ञा पुं. [सं. पोत] **नया पौधा।**

पौन, पौना—संज्ञा पुं. स्त्री. [सं. पवन] (१) **पवन, वायु।** उ.—(क) द्वार सिला पर पटकि तुना कौं है आयौ जो पैना—६०१। (ख) रुकत न पौन महावत हू पै मुरत न अंकुस मोरे—२८१८। (२) **प्राण, जीवात्मा।** उ.—सोइ कीजो जैसे ब्रजबाला साधन सीखें पौन—२६२५। (३) **भूत-प्रेत।**
वि. [सं. पाद+ऊन, प्रा. पाओन] **तीन चौथाई।**

पौनार, पौनारि—सज्ञा स्त्री. [सं. पद्मनाल] **कमल-नाल।**

पौनि, पौनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. पावना] (१) **गाँव के जिन्हे फसल पर अनाज मिलता है।** (२) **नाई, बारी, धोबी आदि जो उत्सवों या शुभ कार्यों में नेग पाते हैं।** उ.—काढौ कोरे कापर हो अरु काढौ घी के मौन। जाति पाँति पहिराइ कै सब समदि छतीसौ पौनि।

पौने—वि. [हिं. पौन] **तीन चौथाई।**
मुहा०—पौने सोलह आना—**अधिकांश में।**

पौमान—संज्ञा पु. [सं. पवमान] (१) **वायु।** (२) **जलाशय।**

पौर—वि. [सं.] **पुर या नगर-संबंधी।**
सज्ञा स्त्री. [हि. पौरी] **द्वार, ड्योढ़ी।** उ.—कनक कलस प्रति पौर बिराजत मंगलचार बन्द्र है—सारा. ३९५।

पौरा—सज्ञा पुं. [हिं. पैर] **पड़े हुए चरण, आगमन।**

पौराणिक—वि. [सं] (१) **पुराण का पाठक या पडित।** (२) **पुराण-संबधी।** (३) **पूर्वकाल का।**

पौरि—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रतोली, प्रा. पओली, हिं. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार।** उ.—(क) राजा, इक पंडित पौरि तुम्हारी-८-१३। (ख) पैठत पौरि छीक भइ बाएँ—५४१। (ग)।

पौरिआ, पौरिया—संज्ञा पुं. [हिं. पौरि] **द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, दरबान।** उ.—अर्थ-काम दोउ रहै दुवारैं, धर्म मोच्छ सिर नावैं। बुद्धि विवेक, बिचित्र पौरिया, समय न कबहूँ पावैं—१-४०।

पौरी—संज्ञा स्त्री. [स. प्रतोली, प्रा पओली] **ड्योढ़ी।**

पौरुष सज्ञा पुं. [स.] (१) **पुरुष का भाव, पुरुषत्व।** (२) **पुरुष का कर्म, पुरुषार्थ।** (३) **बलवीर्य, पराक्रम, साहस।** उ.—अति प्रचड पौरुष बल पाएँ, केहरि भूख मरै—१-१०५। (४) **उद्यम, साहस।**

पौलस्त्य—संज्ञा पु. [स.] (१) **पुलस्त्य का वंशज।** (२) **कुबेर।** (३) **रावण, कुंभकर्ण, विभीषण।** (४) **चंद्र।**

पौला—सज्ञा पु. [हिं. पावँ+ला] **खड़ाऊँ जिसमें खूँटी के स्थान पर अंगूठा फंदे में फँसाया जाता है।**

पौलि, पौली—सज्ञा पुं. [.] **रोटी, फुलका।**
संज्ञा स्त्री. [हि. पाँव+ली] (१) **पैर का उतना भाग जिसमें जूता या खड़ाऊँ पहनते हैं।** (२) **चरण-चिन्ह।**
संज्ञा स्त्री, [हि. पौरी] **ड्योढ़ी, द्वार।**

पौवा—संज्ञा पुं. [सं. पाद, हि. पाव] **चौथाई भाग।**

पौष—संज्ञा पुं. [सं.] **पूस का महीना।**

पौष्टिक—वि. [सं.] **बल-वीर्य-वर्द्धक, पुष्टिकारक।**

पौसेरा—संज्ञा पुं. [हि. पाव+सेर] **पाव सेर की तौल।**

पौहारी—संज्ञा पुं. [हिं. पय+आहारी] **दूध पीकर रहने-वाला।**

प्याइ—क्रि. स. [हि. प्याना] **पिलाकर।**

प्याई—क्रि. स. [हिं. प्याना] **पिलायी, पान करायी।**

प्याऊँ—क्रि. स. [हि. प्याना] **पान कराऊँ।** उ.—असुर कौं सुरा, तुम्है अमृत प्याऊँ—८-८।

प्याऊ—सज्ञा पुं. [हि. प्याना] **पौसरा, पौसाला।**

प्याए—क्रि. स. [हि. प्याना] **पिलाने से, पिला देने के कारण।** उ.—ऐरावत अमृत कै प्याए, भयौ सचेत, इन्द्र तब धाए—६-५।

प्याज—संज्ञा पु. [फा.] **एक प्रसिद्ध कद।**

प्याज़ी—वि. [फा] **प्याज के हलके गुलाबी रग का।**

प्यादा—सज्ञा पुं [फा.] (१) **पैदल, पैदल सिपाही** (२) **दूत, हरकारा।** (३) **शतरज की एक गोट।**

प्याना—क्रि. स. [हिं. पिलाना] **पान कराना।**

प्यार—संज्ञा पुं. [सं. प्रीति] (१) **प्रेम, प्रीति।** उ.—नृप ऐसौ है पर-तिय प्यार। मूरख करैं सो बिना बिचार—६-७। (२) **चुंबन।**

प्यारा—वि. [स. प्रिय] (१) **प्रेम या प्रीति पात्र।** (२) **जो अच्छा लगे।** (३) **जो छोड़ा या त्यागा न जाय।**

प्यारि, प्यारी—वि. [हि. पुं. प्यारा] (१) **प्यारी पुत्री या सखी।** उ.—मै बरजी कहं जाति री प्यारी, तब खीझी रिस-झरतै—७४४। (२) **प्रेयसी।** (३) **जो भली लगे, जो अच्छी जान पड़े।** उ.—बिधु-मुख मृदु मुसक्यानि अमृत-सम, सकल लोक लोचन प्यारी—१-६६।

प्यारे—वि. बहु. [हि. प्यारा] **भले, अच्छे, रुचिकर।** उ.—फेनी सेव अँदरसे प्यारे—३६६।

प्यारौ—वि. [हिं. प्यारा] (१) **प्रिय, प्रेमपात्र।** उ.—ब्राह्मन हरि हरि-भक्तनि प्यारौ—६-५। (२) **जिसे छोड़ा न जा सके, अत्यन्त प्रिय।** उ.—ठाढ़े बदल बात सब हलधर, माखन प्यारौ तोहि—१०-३७५।

प्याला—सज्ञा पुं. [फ़ा.] (१) **छोटा कटोरा।** (२) **भिक्षा-पात्र।**

प्यावत—क्रि. स. [हिं. प्यावना] **पान कराता है।** उ.—मधुपनि प्यावत परम चैन—१६७७।

प्यावन—सज्ञा पु. [हिं. प्यावना] **पिलाना, पिलाने को।** उ.—(क) चारु चखौड़ा पर कुंचित कच, छबि मुक्ता ताहू मै। मनु मकरद-बिंदु लै मधुकर, सुत-प्यावन-हित झूमै—१०-१७४। (ख) बकी कपट करि प्यावन आई—५३८।

प्यावना—क्रि. स. [हि. पिलाना] **पान कराना।**

प्यास—सज्ञा स्त्री. [सं. पिपासा] (१) **जल पीने की इच्छा, तृष्णा, पिपासा।** (२) **प्रबल कामना।** उ.—कहै सूरदास, देखि नैनन की मिटी प्यास—८-५।

प्यासा—वि. [सं. पिपासित] (१) **जिसे प्यास लगी हो, तृषित।** (२) **तीव्र इच्छा रखनेवाला।**

प्यो—संज्ञा पुं. [हिं. पिय] (१) **पति।** (२) **प्रेमी।**

प्योसर, प्यौसर—संज्ञा पुं. [सं. पीयूष] **हाल की ब्याही गाय का दूध।** उ.—अति प्यौसर सरस बनाई। तिहि सोंठ मिरिच रुचि नाई—१०-१८३।

प्योसार, प्योसारो, प्यौसार, प्यौसारौ—संज्ञा पुं. [सं. पितृशाला, हि. प्योसार] **पिता-गृह, मायका, पीहर, नैहर।** उ. (क) परत फिराय पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई। मनु रघुपति भयभीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई—९-१२४। (ख) तजी लाज कुल-कानि लोक की, पति गुरुजन प्यौसारौ री। जिनकी सकुच देहरी दुर्लभ, तिनमै मूड़ उघारौ री—१०-१३५।

प्रकंप, प्रकंपन—संज्ञा पुं. [सं.] **थरथराहट, कंपन।**

प्रकट—वि. [सं.] (१) **जो सामने आया या प्रत्यक्ष हुआ हो।** (२) **उत्पन्न।** (३) **स्पष्ट, व्यक्त।**

प्रकटित—वि. [सं] **प्रकट किया हुआ।**

प्रकरण—सज्ञा पुं [स] (१) **उत्पन्न करना** (२) **वाद-विवाद।** (३) **विषय, प्रसंग।** (४) **ग्रथ का छोटा भाग।** (५) **रूपक के दस भेदों मे एक।**

प्रकरी—सज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **एक तरह का गान** (२) **कार्य-सिद्धि के पाँच साधनों में एक (नाटक)।**

प्रकर्ष—संज्ञा पुं. [स.] (१) **उत्तमता।** (२) **अधिकता।**

प्रकांड—वि. [सं.] (१) **बहुत बड़ा** (२) **बहुत विस्तृत।**

प्रकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भेद, किस्म।** उ.—विस्वामित्र सिखाई बहु बिधि विद्या धनुष प्रकार—सारा. २०३। (२) **तरह, भाँति।** (३) **समानता, बराबरी।**

संज्ञा स्त्री [सं. प्राकार] **घरा, परकोटा।** उ.—जान्यौ नही निसाचर कौ छल, नाघ्यौ धनुष-प्रकार—६-८३।

प्रकारन—क्रि. वि. [हिं. प्रकार] **अनेक प्रकार से।** उ.—पेठा बहुत प्रकारन कीने—२३२१।

प्रकारौ—संज्ञा पुं. सवि. [सं. प्रकार](१) **भेद से।** (२) **रीति से, भाँति से, तरह से।** उ.—यह भव-जल कलि-मलहिं गहे है, बोरत सहस प्रकारौ—१-२०९।

प्रकाश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आलोक, ज्योति।** (२) **विकास, विस्तार।** (३) **प्रकट होना, दिखाई देना।** (४) **प्रसिद्धि।** (५) **स्पष्ट होना, समझ में आना।** (६) **हँसी-ठट्ठा।** (७) **ग्रंथ का छोटा भाग।** (८) **धप, घाम।**

वि.—(१) **जगमगाता हुआ।** (२) **विकसित।** (३) **प्रकट।** (४) **प्रसिद्ध।** (५) **स्पष्ट।**

प्रकाशक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकाश करनेवाला।** (२) **प्रसिद्ध या प्रकट करनेवाला।**

प्रकाशन—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रकाशित करने का काम।**

प्रकाशित—वि. [सं.] (१) **चमकता हुआ।** (२) **जो प्रकाश में आ चुका हो।** (३) **प्रकट, स्पष्ट।**

प्रकाश्य—क्रि. वि. [सं.] **प्रकट रूप से, जो 'स्वगत' न हो।**

प्रकास—संज्ञा पुं. [सं. प्रकाश] (१) **प्रकाश।** (२) **विस्तार, विकास।** उ.—अबही है यह हाल करत है, दिन-दिन होत प्रकास—१०-६०।

प्रकासत—क्रि. स. [सं. प्रकाश] (१) **जलाता है।** उ.—तेल-तूल-पावक-पुट भरि धरि, बनै न बिना प्रकासत। कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसे धौं तम नासत—२-२५। (२) **प्रकाश करता है, चमकता है।** उ.—घन भीतर दामिनी प्रकासत, दामिनि घन चहुँ पास—१६३७।

प्रकासित—वि. [सं प्रकाशित] (१) **प्रकाशपूर्ण, चमकता हुआ।** उ.—अंधकार अज्ञान हरन कौ, रबि-ससि जुगल-प्रकास। बासर-निसि दोउ करैं प्रकासित महा कुमग अनायास—१-६०। (२) **जिसमें से प्रकाश निकल रहा हो।** (३) **जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो।**

प्रकासी—क्रि. स. [हिं. प्रकासना] **प्रकट की, प्रकाशित की।** उ.—हृदय कमल मे ज्योति प्रकासी—३४०८।

प्रकास्यो—क्रि स. [हिं. प्रकासना] **प्रकट किया।** उ.—जब हरि मुरली नाद प्रकास्यौ—पृ ३४७ (५२)।

प्रकीर्ण—वि. [सं.] (१) **विस्तृत।** (२) **बिखरा हुआ।** (३) **मिश्रित, मिला हुआ।** (४) **अनेक प्रकार का।**

प्रकीर्णक—संज्ञा पु. [सं.] (१) **चँवर** (२) **अध्याय।** (३) **विस्तार।** (४) **स्फुट संग्रह।**

प्रकृत—वि. [सं.] (१) **विशेष रूप से किया हुआ।** (२) **यथार्थ, सच्चा।** (३) **अविकृत।** (४) **स्वभाववाला।**

प्रकृति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **गुण, स्वभाव।** (२) **प्राणी का स्वभाव।** उ.—कोटि करौ तनु प्रकृति न जाइ—२६७६। (३) **आदत, बान।** उ.—कहा गति प्रकृति परी हो कान्ह तुम्हारी धरत कहा कन राखत घेरे—१०३६। (४) **जगत का उपादान कारण, कुदरत।**

प्रकृतिस्थ—वि. [सं.] **जो स्वाभाविक स्थिति में हो।**

प्रकोट—संज्ञा पुं. [सं.] **परकोटा, चहारदीवारी।**

प्रकोप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बहुत क्रोध।** (२) **चंचलता।**

प्रकोपन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **उत्तेजित करना।** (२) **क्षोभ।**

प्रकोष्ठ—संज्ञा पु. [सं.] (१) **कोहनी के नीचे का भाग।** (२) **कोठा, कमरा।** (३) **बड़ा आँगन।**

प्रक्रिया—संज्ञा स्त्री [सं.] **क्रिया, युक्ति।**

प्रक्षालन—संज्ञा पुं. [सं.] **धोना।**

प्रक्षालित—वि. [सं.] **धोया हुआ।**

प्रक्षिप्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फेंका हुआ।** (२) **पीछे या ऊपर से बढ़ाया या जोड़ा गया।**

प्रक्षेप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फेंकना।** (२) **मिलाना, बढ़ाना।**

प्रखर—वि. [सं.] (१) **प्रचंड।** (२) **पैना, धारदार।**

प्रखरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रचंडता।** (२) **पैनापन।**

प्रख्यात—वि. [सं.] **प्रसिद्धि, विख्याति।**

प्रख्याति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रसिद्धि, विख्याति।**

प्रगट—वि. [सं. प्रकट] (१) **जो सामने आया हो, जो प्रत्यक्ष हुआ हो।** (२) **उत्पन्न, आविर्भूत।** उ.—भीर के परे तैं धीर सबहिनि तजी, खंभ तै प्रगट है

जन छुड़ायौ—१ ५। (३) **स्पष्ट या प्रत्यक्ष रूप से।** उ.- (क) हा जगदीस, राखि इहि अवसर, प्रगट पुकारि कह्यौ—१-२४७। (ख) मोसौं कहि तू प्रगट बखान—१-२८६।

प्रगटन—संज्ञा पुं. [स. प्रकटन] **प्रकट होने की क्रिया।**

प्रगटना—क्रि. अ. [स. प्रकटन] **प्रकट होना।**

प्रगटाना—क्रि. स. [स. प्रकटन] **प्रकट करना।**

प्रगटाने—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] **प्रकट या स्पष्ट हो गये।** उ.—सुनहु सूर लोचन बटमारी गुन जोइ सोइ प्रगटाने —पृ. ३२६ (५६)।

प्रगटान्यौ—क्रि. अ. [हि प्रगटना] **सामने आयी, व्यक्त हुई।** उ.—प्रथम सनेह दुहुँनि मन जान्यौ। नैन-नैन कीन्ही सब बातैं, गुप्त प्रीति प्रगटान्यौ।

प्रगटायो—क्रि. स. [हि. प्रगटना] **प्रकट किया।** उ.—प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खेलन लागे—सारा. ३०६।

प्रगटावत- क्रि. स. [हि. प्रगटाना] **प्रकट करते है।** उ.-बदन कमल उपमा यह साँची ता गुन को प्रगटावत—१६७६।

प्रगटि—क्रि. अ. [हि. प्रगटना] **प्रत्यक्ष होकर।** उ.—माया प्रगटि सकल जग मोहै—१०-३।

प्रगटी—क्रि. अ. [हिं. प्रगटना] **(१) प्रसिद्ध हो गयी।** उ.—ब्रज घर घर प्रगटी यह बात—१०-२७२। **(२) उपजी, उत्पन्न हुई।** उ.—सूरदास कुंजनि तैं प्रगटी, चेरि सौत भई आइ—६५६।

प्रगटे—क्रि. अ. [हिं. प्रकटना] **प्रकट हुए, अवतरे।** उ.-संकट हरन-चरन हरि प्रगटे, बेद बिदित जस गावै—१-३१।

प्रगटैहै—क्रि. स. [हिं. प्रगटना] **प्रकट या जाहिर करेगी।** उ.—बिनु देखें तू कहा करैगी, सो कैसे प्रगटैहै री —७११।

प्रगट्यौ—क्रि. अ. [हि प्रकटना] **(१) प्रकट हुआ, सामने आया, प्रत्यक्ष हुआ।** उ.—नहिं अस जनम बारंबार। पुरबलौ धौं पुन्य प्रगट्यौ, लह्यौ नर अवतार —१-८८। (२) **प्रसिद्ध हुआ, फैल गया।** उ.—सूरदास प्रभु कौ जस प्रगट्यौ, देवनि बंदि छुड़ाई —६-१४०।

प्रगल्भ—वि. [स.] (१) **चतुर।** (२) **प्रतिभासंपन्न। (३ उत्साही।** (४) **निर्भय।** (५) **बकवादी, बातूनी।** (६, **धृष्ट, उद्धत।** (७) **अभिमानी।**

प्रगल्भता—संज्ञा स्त्री [स.] (१) **चतुरता।** (२)**प्रतिभा।** (३) **उत्साह।** (४) **निर्भयता।** (५) **बकवाद।** (६) **धृष्टता, उद्धतता।** (७) **अभिमान।**

प्रगसना—क्रि. अ. [स. प्रकाश] **प्रकट होना।**

प्रगाढ़—वि. [सं.] (१) **बहुत अधिक।** (२) **बहुत गाढ़ा।**

प्रघटना—क्रि. अ. [हि. प्रकटना] **प्रकट होना।**

प्रघट्टक—वि. [सं. प्रकट] **प्रकट या प्रकाशित करनेवाला।**

प्रचंड—वि. [सं.] (१ **बहुत तेज या तीखा।** (२) **बहुत वेगवान।** (३) **भयकर।** (४) **कठोर** (५) **बलवान।**

प्रचंडता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **तेजी, तीखापन।** (२) **वेग।** (३) **भयकरता** (४) **कठोरता।**

प्रचरना—क्रि. अ. [सं. प्रचार] **प्रचारित होना।**

प्रचलन—संज्ञा पुं. [सं.] **चलन, प्रचार।**

प्रचलित—वि. [सं.] **जिसका चलन हो।**

प्रचार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चलन, रिवाज।** (२) **प्रसिद्ध।**

प्रचारक—वि. [सं.] **प्रचार करनेवाला।**

प्रचारना—क्रि. स. [सं. प्रचारण] (१) **प्रचार करना, फैलाना।** (२) **ललकारना, चुनौती देना।**

प्रचारि—क्रि स [हिं. प्रचारना] **ललकार कर, सामने बुला कर, चुनौती देकर।** उ.—(क) मारयौ ताहि प्रचारि हरि, सुर मन भयौ हुलास—१-११। (ख) एक समय सुर असुर प्रचारि। लरे, भई असुरनि की हारि—७-७।

प्रचारित—वि. [स.] **जिसका प्रचार हुआ हो।**

प्रचारी—क्रि. अ. [हि. प्रचारना] **ललकार कर।** उ.—उ.—प्रद्युम्न सकल विद्या समुझि नारि सो, असुर सो जुद्ध माँग्यौ प्रचारो—१० उ.—२५।

क्रि. स.—**प्रारम्भ किया।** उ.—बृच्छ पाषाण को जब वहाँ नाश भयो, मुष्टिका-युद्ध दोऊ प्रचारी—१० उ०-४५।

प्रचार्‍यौ—क्रि. स. [हि. प्रचारना] **ललकारा, सामना करने के लिए बुलाया।** उ.—इंद्र आइ तब असुर प्रचार्‍यौ। कियौ जुद्ध पै असुर न हार्‍यौ।

प्रचालित—वि. [सं.] जिसका प्रचलन हुआ हो।
प्रचुर—वि. [सं.] बहुत, अधिक।
प्रचुरता—संज्ञा स्त्री. [सं.] अधिकता, विपुलता।
प्रचेता—वि. [सं.] चतुर, बुद्धिमान।
प्रच्छक—वि. [सं.] प्रश्न पूछनेवाला।
प्रच्छना—क्रि. स. [सं.] प्रश्न पूछना।
प्रच्छन्न—वि. [सं.] छिपा या ढका हुआ।
प्रच्छादन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ढकने या छिपाने का भाव। (२) आँख का पलँक। (३) ओढने का वस्त्र।
प्रछालि—क्रि. वि. [सं. प्रक्षालन] प्रक्षालित करके, अच्छी तरह स्वच्छ करके। उ.—त्रियाचरित मतिमंत न समुझत, उठि प्रछालि मुख धोवत—६-३१।
प्रजंक—संज्ञा पुं. [सं. प्रयंक] पलँग। उ.—षोड़स जुक्ति, जुवति चित षोड़स, षोड़स बरस निहारै। षोड़स अंगनि मिलि प्रजंक पै छ-दस अंक फिरि डारै—१-६०।
प्रजंत—अव्य. [सं. पर्यंत] तक, लौ। उ.—(क) प्राचीनबर्हि भूप इक भए। आयु प्रजंत जज्ञ तिन ठए—४-१२। (ख) नाभि प्रजंत नीर मैं ठाढो, थर-थर अँग काँपति सुकुमारि—७८५।
प्रजनन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) संतान उत्पन्न करना। (२) जन्म। (३) जन्म देनेवाला, जनक।
प्रजरना—क्रि. अ. [सं. प्र+हि. जरना] जलना, दहकना।
प्रजरि—क्रि. अ. [हि. प्रजरना] जलकर। उ.—बूड़ि न मुई नीर नैनन के, प्रेम न प्रजरि पनी गी—१० उ०—८६।
प्रजल्प—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गप। (२) सलाप।
प्रजल्पन—संज्ञा पुं. [सं.] बातचीत।
प्रजा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संतान। (२) रियाया, रैयत। उ.—बसन ए नृपति के जासु के प्रजा तुम—२५८४। (३) छोटी जातियों के लोग जो वेतन न लेकर शुभ कार्यों में उपहार पाकर सेवा करते हैं।
प्रजापति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) सृष्टि का उत्पादक, सृष्टिकर्त्ता। पुराणों में इनकी संख्या कहीं दस और कहीं इक्कीस लिखी हुई है। (२) ब्रह्मा।
प्रजारन—संज्ञा पुं. [हि. प्रजारना] अच्छी तरह जलाना, सुलगाना।

प्र०—प्रजारन लागे—जलाने लगे। उ.—सोभित सिथिल बसन मनमोहन, सुखवत स्रम के पागे। मानहुँ बुझी मदन की ज्वाला, बहुरि प्रजारन लागे—६८६।
प्रजारना—क्रि. स. [सं. प्र+जारना] जलाना, सुलगाना।
प्रजुलित—वि. [सं. प्रज्वलित] जलता-दहकता हुआ।
प्रज्ञ—संज्ञा पुं. [सं.] ज्ञाता, विद्वान।
प्रज्ञता—संज्ञा स्त्री. [सं.] विद्वता, पांडित्य।
प्रज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) बुद्धि। (२) सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) ज्ञानी। (२) अंधा (व्यंग्य)।
प्रज्वलन—संज्ञा पुं. [सं.] जलना, सुलगना।
प्रज्वलित—वि. [सं.] (१) जलता हुआ। (२) स्पष्ट।
प्रण—संज्ञा पुं. [सं. पण] अटलनिश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणत—वि. [सं.] (१) बहुत झुका हुआ, नमित। (२) प्रणाम करता हुआ। (३) विनम्र, दीन।
संज्ञा पुं.—(१) सेवक। (२) भक्त, उपासक।
प्रणतपाल, प्रणतपालक—संज्ञा पुं. [सं.] दीनरक्षक। उ.—प्रणतपाल केशव करुणापति—६८२।
प्रणति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) नम्रता। (२) विनती। (३) प्रणाम।
प्रणम्य—वि. [सं.] प्रणाम करने योग्य।
प्रणय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रेम। (२) विश्वास।
प्रणयन—संज्ञा पुं. [सं.] रचना, बनाना
प्रणयिनी—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) पत्नी। (२) प्रेमिका।
प्रणयी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रेमी। (२) पति।
प्रणव—संज्ञा पुं. [सं. प्रणय] (१) ओंकार मंत्र। (२) त्रिदेव।
प्रणवना—क्रि. स. [सं. प्रणमन] प्रणाम करना।
प्रणाली—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) रीति, ढंग। (२) परंपरा।
प्रणिधान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) समाधि। (२) ध्यान।
प्रणिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) गुप्तचर। (२) निवेदन।
प्रणीत—वि. [सं.] (१) रचित। (२) संस्कृत।
प्रणेता—संज्ञा पुं. [सं. प्रणेतृ] रचयिता, कर्त्ता।
प्रतंचा—संज्ञा स्त्री. [हि. प्रत्यंचा] धनुष की डोरी।
प्रतच्छ—वि. [सं. प्रत्यक्ष] प्रत्यक्ष या स्पष्ट। उ.—कौसिल्या सुनि परम दीन ह्वै, नैन-नीर ढरकाए।

विह्वल तन-मन, चकृत भई सो, यह प्रतच्छ सुपनाए—६-३१।

प्रताप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बल, साहस, पराक्रम, तेज।** उ.—जाकौं हरि अंगीकार कियौ। ताके कोटि बिघन हरि हरि कै, अभै प्रताप दियौ—१-३८। (२) **महत्व, महिमा, महत्ता।** उ.—(क) सूरदास यह सकल समग्री प्रभु प्रताप पहिचानै—१-४०। (ख) सब हित-कारन देव, अभय-पद नाम प्रताप बढायौ—१-१८८। (ग) छिनक भजन, संगति-प्रताप तैं, गज अरु ग्राह छुड़ायौ—१-१६०। (३) **पौरुष, वीरता।** उ.—तुम प्रताप-बल बदत न काहूँ, निडर भए घर-चेरे—१-१७०। (४) **ताप, तेज।** उ.—दिनकर महाप्रताप पुंज बर सबको तेज हरै—३३११।

प्रतापि, प्रतापी—वि. [हिं. प्रतापी] (१) **प्रतापवान, तेजस्वी।** उ.—धन्य पिता जापर परफुल्लित राघव भुजा अनूप। वा प्रतापि की मधुर बिलोकनि पर वारौं सब भूप—६-१३४। (२) **दुखदायी, सतानेवाला।**

प्रतारणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **ठगी, वंचकता।**

प्रतारित—वि. [सं.] **जो ठगा गया हो।**

प्रतिचा—संज्ञा स्त्री. [सं. पतंचिका] **धनुष की डोरी।**

प्रति—अव्य. [सं.] (१) **हर एक, एक-एक, प्रत्येक।** उ.—अंग-अंग-प्रति छबि-तरंग-गति सूरदास क्यौं कहि आवै—१-६६। (२) **विरुद्ध, विपरीत।** (३) **सामने।** (४) **बदले मे।** (५) **समान।** (६) **जोड़ी का।**

अव्य.—(१) **सामने।** (२) **ओर, तरफ।**

संज्ञा स्त्री.—(१) **नकल।** (२) **एक ही वस्तु का एक अदद।** (३) **प्रतिबिंब।** उ.—जैसे केहरि उझकि कूप-जल, देखत अपनी प्रति १-३००।

प्रतिकार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बदला।** (२) **चिकित्सा।**

प्रतिकूल—वि. [सं.] **विरुद्ध, विपरीत।**

प्रतिकूलता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विरोध, विपरीतता।**

प्रतिक्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बदला।** (२) **एक क्रिया के परिणाम या प्रत्युत्तर मे होनेवाली क्रिया।**

प्रतिग्या—संज्ञा स्त्री [सं. प्रतिज्ञा] **प्रण, प्रतिज्ञा।**

प्रतिग्रह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वीकार, ग्रहण।** (२) **वह दान लेना जो विधिपूर्वक दिया जाय।** उ.—बहुत प्रतिग्रह लेत बिप्र जो जाय परत भव कूप—सारा. ३३८। (३) **अधिकार में लाना।** (४) **पाणि-ग्रहण।** (५) **ग्रहण।** (६) **स्वागत।** (७) **विरोध।**

प्रतिग्रही, प्रतिग्राही—वि. [सं. प्रतिग्रह] **दान लेनेवाला।**

प्रतिघात—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **आघात के बदले या उत्तर में किया गया आघात।** (२) **टक्कर।**

प्रतिघाती—वि. [सं. प्रतिघात] **प्रतिद्वंद्वी, शत्रु।**

प्रतिच्छा—संज्ञा [सं. प्रतीक्षा] **प्रतीक्षा।**

प्रतिच्छाया, प्रतिछाँई, प्रतिछाँह, प्रतिछाया, प्रतिछाँही—संज्ञा स्त्री [सं. प्रतिच्छाया] (१) **चित्र।** (२) **प्रतिबिंब।**

प्रतिज्ञा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रण।** उ.—जिन हरि शकट प्रलंब तृणावृत इन्द्र प्रतिज्ञा टाली—२५६७। (२) **शपथ।** (३) **अभियोग।** (४) **उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो।**

प्रतिदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **लौटाना।** (२) **बदला।**

प्रतिदासी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **मूर्ति।** उ.—मानहु पाहन की प्रतिदासी नेक न इत उत डोलै—२२७५।

प्रतिद्वंद्व—संज्ञा पुं. [सं.] **बराबर वालो का झगड़ा।**

प्रतिद्वंद्वी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिद्वंद्व] **शत्रु, विरोधी।**

प्रतिद्वंद्विता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बराबर वालो की लडाई।**

प्रतिध्वनि—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **शब्द की गूँज।** (२) **दूसरो के भावो या विचारो की आवृत्ति।**

प्रतिनायक—संज्ञा. पुं. [सं.] **नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।**

प्रतिनिधि—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिमा।** (२) **निर्वाचित व्यक्ति।**

प्रतिनिधित्व—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रतिनिधि होने का काम।**

प्रतिपच्छ, प्रतिपच्छ—संज्ञा पुं. [सं.] **शत्रु या विरोधी पक्ष।**

प्रतिपच्छी, प्रतिपच्छी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिपच्छ] **शत्रु, विरोधी।**

प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पक्ष की पहली तिथि, परिवा।**

प्रतिपन्न—वि. [सं.] (१) **जाना हुआ।** (२) **स्वीकृत।** (३) **प्रमाणित, स्थापित।** (४) **सम्मानित।**

प्रतिपलिहौं—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन करूँगा,**

पालूँगा। उ.—तुम्हरैं चरन-कमल सुख-सागर, यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं—६-३५।

प्रतिपादक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **कहने, समझाने या प्रतिपादन करनेवाला।** (२) **निर्वाह करनेवाला।** (३) **उत्पादक।**

प्रतिपदान—संज्ञा पुं [सं.] (१) **भलीभाँति समझाना।** (२) **प्रमाणपूर्वक कथन।** (३) **प्रमाण।** (४) **उत्पत्ति।**

प्रतिपादित—वि. [सं.] (१) **जिसे कहा-समझाया या प्रतिपादन किया गया हो।** (२) **प्रमाणित।** (३) **निरूपित।** (४) **प्रदत्त।**

प्रतिपाद्य—वि. [सं.] (१) **कहने, समझाने, या प्रतिपादन करने योग्य।** (२) **निरूपण के योग्य।** (३) **देने योग्य।**

प्रतिपार—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिपाल] **पालनकर्त्ता, रक्षक, पोषक।** उ.—यहै विचार करत निसि-बासर, येई हैं जन के प्रतिपार—४६७।

प्रतिपारी—क्रि. स. स्त्री. [हि. प्रतिपालना] **पालन की, पूर्ण की, (ठानी हुई बात या इच्छा) निभायी।** उ.—सदा सहाइ करी दासनि की, जो उर धरी सोइ प्रतिपारी—१-१६०।

प्रतिपारे—क्रि. स. [हि. प्रतिपालना] (१) **पालन करके।** (२) **रक्षा करके, सुरक्षित रखकर।** उ.—बंधू करियौ राज सँभारे। राजनीति अरु गुरु की सेवा, गाइ-बिप्र प्रतिपारे—६-५४।

प्रतिपार्‌यौ—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **रक्षा की, बचाया।** उ.—नृप-कन्या कौ व्रत प्रतिपार्‌यौ, कपट बेष इक धार्‌यौ—१-३१।

प्रतिपाल—संज्ञा पुं. [सं.] **रक्षक, पालक, पोषक।**

प्रतिपालक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालन करनेवाले, पोषक।** (२) **रक्षक, सरक्षक।** उ.—गुरु बसिष्ठ अरु मिलि सुमंत्र सौ, अतिहीं प्रेम बढायौ। बालक प्रतिपालक तुम दोऊ, दसरथ लाड़ लड़ायौ—६-५५। (३) **राजा।**

प्रतिपालन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पालने की क्रिया या भाव, पालन-पोषण।** (२) **रक्षण।** (३) **निर्वाह।**

प्रतिपालना—क्रि. स. [स. प्रतिपालना] **पालन-पोषण करना।** (२) **रक्षा करना।** (३) **निर्वाह करना।**

प्रतिपालित—वि. [सं.] (१) **पाला हुआ।** (२) **रक्षित।**

प्रतिपाली—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालन] (१) **पालन-पोषण किया, रक्षा की।** उ.—तब ए बेली सींचि स्यामघन, अपनी करि प्रतिपाली—३२२८। (२) **निर्वाह किया।** उ.—धन्य सु गोकुल नारि सूर प्रभु प्रगट प्रीति प्रतिपाली—३५६७।

प्रतिपाल—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन करें, पालन-पोषण करें।** उ.—ताकी सक्ति पाइ हम करैं। प्रतिपालैं बहुरौ संहरै—४-३।

प्रतिपाल्यौ—क्रि. स. [हिं. प्रतिपालना] **पालन किया, पाला-पोसा।** उ.-जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनै है। तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरै हैं—१-८६।

प्रतिफल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परिणाम, नतीजा।** (२) **बदला, स्वार्थ।** उ.—औरौ सकल सुकृत श्रीपति-हित, प्रतिफल-रहित सुप्रीति—२-२-१२। (३) **प्रतिबिंब।**

प्रतिबंध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रुकावट।** (२) **बाधा।**

प्रतिबंधक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **रुकावट डालनेवाला, बाधक।**

प्रतिबाद—संज्ञा पुं. [स. प्रतिवाद] (१) **विरोध, खंडन।** (२) **विवाद, विरोध, संघर्ष।** उ.—तुम्है हमै प्रतिबाद भए तैं गौरव काकौ गरतौ—१-२०३।

प्रतिबिब—संज्ञा पुं. [स.] (१) **छाया, परछाईं।** उ.—किधौ यह प्रतिबिम्ब जल मे देखत निज रूप दोउ है सुहाए—२५७०। (२) **प्रतिमा।** (३) **चित्र।** (४) **दर्पण।** (५) **झलक।**

प्रतिबिबक—संज्ञा पुं. [सं.] **छायावत् पीछे चलनेवाला।**

प्रतिबिबित—वि. [सं.] (१) **जिसकी छाया पड़ती हो।** (२) **जो छाया पड़ने से दिखायी देता हो।** (३) **जिसका आभास हो।**

प्रतिभट—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **समान योद्धा।** (२) **शत्रु।**

प्रतिभा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बुद्धि।** (२) **असाधारण बुद्धि-बल या योग्यता।** (३) **दीप्ति, चमक।**

प्रतिभावान्—वि. [स.] (१) **प्रतिभाशाली।** (२) **चमकदार।**

प्रतिभासंपन्न—वि. [स.] **प्रतिभा-शाली।**

प्रतिभास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आकृति।** (२) **भ्रम।**

प्रतिभू—संज्ञा पुं. [सं.] **जमानत में पड़नेवाला।**

प्रतिभौ—संज्ञा स्त्री. सवि. [सं. प्रतिभा] **कांति, दीप्ति, चमक या आभा भी।** उ.—सबनि सनेहौ छाँड़ि दयौ। हा जदुनाथ ! जरा तन ग्रास्यौ, प्रतिभौ उतरि गयौ—१-२९८।

प्रतिम—अव्य. [सं.] **समान, सदृश।**

प्रतिमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मूर्ति, चित्र, अनुकृति।** (२) **मिट्टी, धातु आदि की देवमूर्ति।** (३) **छाया।** (४) **चिन्ह, छाप।** उ.—यह सुनि धावत धरनि, चरन की प्रतिमा पथ मैं पाई। नैन-नीर रघुनाथ सानि सो, सिव ज्यौं गात चढाई—९-६४।

प्रतिमान—संज्ञा पुं [सं] (१) **प्रतिबिम्ब।** (२) **प्रतिनिधि।**

प्रतिमूर्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रतिमा, मूर्ति, अनुकृति।**

प्रतियोगिता—संज्ञा स्त्री.[सं.](१)**प्रतिद्वद्विता।** (२)**विरोध।**

प्रतियोगी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रतिद्वद्वी।** (२) **शत्रु।**

प्रतिरूप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चित्र।** (२) **प्रतिनिधि।**

प्रतिरोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **बाधा।** (२) **तिरस्कार।**

प्रतिलिपि—संज्ञा स्त्री. [सं.] **नकल, लेख की नकल।**

प्रतिलोम—वि. [सं.] (१) **प्रतिकूल।** (२) **उलटा।**

प्रतिलोम विवाह—संज्ञा पुं. [स.] **विवाह जिसमे पुरुष नीच और स्त्री उच्च वर्ण की हो।**

प्रतिवस्तूपमा—संज्ञा पुं. [स.] **एक काव्यालकार।**

प्रतिवाद—संज्ञा पुं. [स.] (१) **विरोध।** (२) **विवाद।**

प्रतिवादी—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विरोध या खडन करने वाला।** (२) **तर्क या विवाद करनेवाला।** (३) **प्रतिपक्षी।**

प्रतिवेशी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिवेशिन्] **पड़ोसी।**

प्रतिशोध—संज्ञा पुं. [सं. प्रति+शोध] **बदला।**

प्रतिश्रुत—वि. [सं.] **स्वीकार किया हुआ।**

प्रतिश्रुति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रतिज्ञा।** (२) **स्वीकृति।**

प्रतिषेध—संज्ञा पुं. [स.] (१) **मनाही।** (२) **खडन।**

प्रतिष्ठ—वि. [सं.] (१) **प्रसिद्ध।** (२) **सम्मानित।**

प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **स्थिति।** (२) **स्थापना, या प्रतिमा स्थापना।** (३) **मान-मर्यादा, गौरव।** (४) **प्रसिद्धि।** (५) **यश।** (६) **आदर-सत्कार।**

प्रतिष्ठान—संज्ञा. पुं. [सं.] (१) **स्थापित करने की क्रिया।** (२) **देवमूर्ति-स्थापना।** (३) **स्थान।** (४) **पदवी।** (५) **व्रत आदि की समाप्ति पर किया गया कृत्य।**

प्रतिष्ठित—वि. [सं.] (१) **आदर-सम्मान-प्राप्त।** (२) **जिसकी प्रतिष्ठा या स्थापना की गयी हो।**

प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) **होड़, लागडांट, चढ़ा-ऊपरी।** (२) **झगड़ा।**

प्रतिस्पर्द्धी—वि [सं. प्रतिस्पर्द्धा] (१) **होड़, लाग-डाँट रखनेवाला।** (२) **झगड़ालू, विद्रोही।**

प्रतिहंता—वि.[सं.प्रतिहंतृ](१) **बाधक।** (२) **मारनेवाला।**

प्रतिहत—वि. [स.] (१) **रुका हुआ, अवरुद्ध।** (२) **हटाया हुआ।** (३) **फेंका या गिराया हुआ।** (४) **निराश।**

प्रतिहार—संज्ञा पुं. [स.] (१) **द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।** उ.—(क) परम चतुर सुंदर सुजान सखि या तनु को प्रतिहार—२८८८। (ख) जुग जुग बिरद इहै चलि आयो भए बलि के द्वारे प्रतिहार—२६२०। (२) **द्वार, ड्योढ़ी।** (३) **एक राज कर्मचारी जो हर समय राजाओं के साथ रहकर उन्हे विभिन्न समाचार सुनाता था।** (४) **ऐंद्रजालिक, जादूगर।**

प्रतिहारी—संज्ञा पुं. [सं. प्रतिहारिन्] **द्वारपाल।**

प्रतिहिंसा—संज्ञा स्त्री. [स] (१) **हिंसा के बदले की हिंसा।** (२) **बैर या बदला चुकाना।**

प्रतीक—वि. [सं.] (१) **विरुद्ध।** (२) **नीचे से ऊपर जानेवाला।**

संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चिन्ह।** (२) **अग।** (३) **मुख।** (४) **आकृति, रूप।** (५) **वस्तु जिसमें दूसरी वस्तु का आरोप किया जाय।** (६) **प्रतिमा, मूर्ति।**

प्रतीकार—संज्ञा पुं. [स.] (१) **बदला।** (२) **चिकित्सा।**

प्रतीकोपासना—संज्ञा स्त्री. [सं.] **विशेष पदार्थ,** जेसे **सूर्य, देवमूर्ति आदि में ब्रह्म का आरोप करके उसकी उपासना करना।**

प्रतीक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रतीक्षा करनेवाला।**

प्रतीक्षा—संज्ञा स्त्री. [स] **आसरा, इंतजार।**

प्रतीचि, प्रतीची—संज्ञा स्त्री.[स प्रतीची] **पश्चिम दिशा।** उ.—प्राची और प्रतीचि उदीची और अवाची मान—सारा. ७७५।

प्रतीच्य—वि. [सं.] **पश्चिमी, पश्चिम-संबंधी।**

प्रतीत—वि. [सं.] (१) ज्ञात, **विदित**। (२) **प्रसिद्ध**।

प्रतीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **ज्ञान, जानकारी**। (२) **दृढ़ निश्चय, विश्वास**। उ.—नाम प्रतीति भई जा जन कौं, लै आनँद, दुख दूरि दह्यौ—२-८। (३) **प्रसिद्धि, ख्याति**।

प्रतीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आशा के विरुद्ध फल या घटना**। (२) **एक अर्थालंकार**।

वि.—**विरुद्ध, विपरीत, उलटा**।

प्रत्यंच, प्रत्यंचा—संज्ञा स्त्री [सं.पतंचिका] **धनुष की डोरी**।

प्रत्यक्ष—वि. [सं] (१) **जो देखा जा सके**। (२) **जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके**। (३) **प्रकट, स्पष्ट**।

प्रत्यक्षता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रत्यक्ष होने का भाव**।

प्रत्यक्षदर्शी—संज्ञा पुं. [सं. प्रत्यक्षदर्शिन्] **साक्षी**।

प्रत्यय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **विश्वास**। (२) **प्रमाण**। (३) **विचार**। (४) **ज्ञान**। (५) **व्याख्या**। (६) **कारण**। (७) **लक्षण**। (८) **निर्णय**। (९) **सम्मति**।

प्रत्याख्यान—संज्ञा पं. [सं.] **खंडन, निराकरण**।

प्रत्यागत—संज्ञा पुं. [सं.] **पैतरा, पेंच, दाँव**।

वि.—**जो लौट आया हो, वापस आया हुआ**।

प्रत्यागमन—संज्ञा पुं [सं.](१) **वापसी**। (२) **पुनरागमन**।

प्रत्याघात—संज्ञा पुं. [सं.] **बदले का आघात या टक्कर**।

प्रत्यावर्त्तन—संज्ञा पुं. [सं.] **लौटना, वापस आना**।

प्रत्याशा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आशा, भरोसा**।

प्रत्याहार—संज्ञा पुं. [स] **योग के आठ अगों में से एक जिसमें इंद्रियों को अन्य विषयो से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है**। उ.—जम और नियम प्रान प्रत्याहार धारन ध्यान समाधि—सारा. ६०।

प्रत्युत—अव्य. [सं.] **वरन्, इसके विरुद्ध, बल्कि**।

प्रत्युत्तर—संज्ञा पु. [सं.] **उत्तर का उत्तर**।

प्रत्युत्पन्न—वि. [सं.] **जो फिर से उत्पन्न हुआ हो**।

प्रत्युत्पन्नमति—वि. [स.] **जो तुरत उपयुक्त बात या काम करे**।

संज्ञा स्त्री.—**तुरंत उपयुक्त कार्य करने की बुद्धि**।

प्रत्युपकार—संज्ञा पुं. [स.] **उपकार के बदले मे उपकार**।

प्रत्युष—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रभात, प्रातःकाल**।

प्रत्यूह—संज्ञा पुं. [सं.] **विघ्न-बाधा**।

प्रत्येक—वि. [सं.] **हर एक**।

प्रथम—वि. [सं.] (१) **पहला, जिसका स्थान पहले हो**। उ.—जन के उपजत दुख किन काटत ? जैसे प्रथम अषाढ़-आँजु-तृन, खेतिहर निरखि उपाटत—१-१०७। (२) **सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम**। उ.—मनसा करि सुमिर्‍यौ गज बपुरै, ग्राह प्रथम गति पावै—१-१२२।

क्रि. वि. [सं.] **सबसे पहले, आगे, आदि में**। उ.-जिहिं सुत कैं हित बिमुख गोविद तैं, प्रथम तिहीं मुख जार्‍यौ—१-३३६।

प्रथमा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **मदिरा**। (२) **कर्त्ताकारक**।

प्रथमी—संज्ञा स्त्री. [सं. पृथ्वी] **भू, भूमि**।

प्रथमैं—क्रि. वि. [सं. प्रथम] **सबसे पहले, सर्वप्रथम**। उ.— प्रथमै-चरन-कमल कौ ध्याव। तासु महातम मन मै ल्यावै—१०-१८।

प्रथा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रीति-रिवाज**। (२) **प्रसिद्धि**।

प्रथित—वि. [सं.] **विख्यात, प्रसिद्धि**।

प्रथिति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रसिद्धि, ख्याति**।

प्रथी—संज्ञा स्त्री. [स. पृथ्वी] **भू, भूमि**।

प्रद—वि. [सं.] **देनेवाला, दाता**। उ.—कनक-वलय मुद्रिका मोदप्रद, सदा सुभग संतनि काजैं—१-६६।

प्रदच्छिण, प्रदच्छिन—संज्ञा पुं. [सं. प्रदच्छिणा] **देवमूर्ति को दाहिनी ओर करके उसके चारों ओर घुमना, परिक्रमा, प्रदक्षिणा**। उ.—हरि कह्यौ, राजहेत तप कियौ। ध्रुव, प्रसन्न ह्वै मै तोंहि दियौ। अरु तेरे हित कियौ अस्थान। देहिं प्रदच्छिन जहाँ ससि-भान—४-६।

प्रदच्छिणा,प्रदच्छिना—संज्ञा स्त्री.[सं. प्रदच्छिणा] **परिक्रमा**।

प्रदच्छिनकारी—वि. [स. प्रदच्छिण+हि. कारी=करने वाला] **प्रदक्षिणा करनेवाले, परिक्रमा करनेवाले**। उ.—जिहि गोविंद अचल ध्रुव राख्यौ, रबि-ससि किए प्रदच्छिनकारी—१-३४।

प्रदत्त—वि. [सं.] **दिया हुआ, दिया गया**।

प्रदर्शक—संज्ञा पुं. [स.] (१) **दिखलानेवाला**। (२) **देखने या दर्शन करने वाला, दर्शक**। (२) **गुरु**।

प्रदर्शन—संज्ञा पु. [स.] **दिखलाने का काम**।

प्रदर्शनी—संज्ञा स्त्री. [स.] **नुमाइश**।

प्रदर्शित—वि. [सं.] **जो दिखलाया गया हो**।

प्रदर्शी—संज्ञा पुं. [सं. प्रदर्शिन्] देखनेवाला, दर्शक।

प्रदाता—वि. [सं. प्रदातृ] देनेवाला, दाता।

प्रदान—संज्ञा पुं. [स.] (१) दान। (२) देने की क्रिया।

प्रदायक—वि. [स.] देनेवाला, दाता।

प्रदायी—वि. [सं. प्रदायिन] देनेवाला, दाता।

प्रदीप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) दीपक। (२) एक राग।

प्रदीपक—सज्ञा पुं. [स.] प्रकाश में लानेवाला।

प्रदीपति—संज्ञा स्त्री [सं. प्रदीप्ति] (१) प्रकाश। (२) चमक।

प्रदीपन—सज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रकाश करना। (१) चमकाना।

प्रदीप्त—वि. [स.] (१) प्रकाशित। (२) चमकीला।

प्रदीप्ति—संज्ञा स्त्री [सं.] (१) प्रकाश। (२) चमक।

प्रदेश, प्रदेस—संज्ञा पुं. [स. प्रदेश] (१) शरीर का अग, अवयव। उ.—जानु सुजघन करभ-कर आकृति, कटि प्रदेस किंकिनि राजै—१-६६। (२) प्रांत, सूबा। (३) स्थान।

प्रदेशी, प्रदेशीय—वि. [सं. प्रदेशी] प्रदेश-संबधी।

प्रदोष—संज्ञा पुं. [सं] (१) सध्याकाल। (२) त्रयोदशी का व्रत जिसमें दिनभर व्रत करके शाम को शिव-पूजन के पश्चात् भोजन किया जाता है। (३) बड़ा दोष।

प्रद्युम्न—सज्ञा पु. [स.] (१) कामदेव। (२) श्रीकृष्ण का बड़ा पुत्र।

प्रद्योत—संज्ञा पुं. [स] (१) किरण। (२) चमक।

प्रधान—वि. [स.] (१) मुख्य। उ.—तहाँ अवजा नारि प्रधान—४-१२। (२) श्रेष्ठ।

संज्ञा पुं.—(१) नेता, मुखिया। (२) मंत्री।

प्रधानता—संज्ञा स्त्री. [स.] प्रधान होने का भाव।

प्रधानी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रधान] प्रधान का काम या पद।

प्रन—सज्ञा पुं. [सं प्रण] दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा।

प्रनत—वि. [स. प्रणत] (१) नम्र, दीन। (२) झुका हुआ।

सज्ञा प्र.—(१) भक्त। (२) दास, सेवक।

प्रनति—संज्ञा स्त्री [सं. प्रणति] (१) नम्रता। (२) विनती।

प्रनमन—संज्ञा पुं. [स. प्रणमन] झुकना, नमना।

प्रनमना—क्रि. स. [हिं. प्रणवना] प्रणाम करना।

प्रनय—संज्ञा पुं. [सं प्रणय] प्रेम, प्रीति।

प्रनव—संज्ञा पुं. [स. प्रणव] ओंकार मत्र।

प्रनवना—क्रि. स. [हिं. प्रणवना] प्रमाण करना।

प्रनाम—संज्ञा पुं. [स. प्रणाम] नमस्कार। उ.—सिव प्रनाम करि ढिग बैठाए—४-५।

प्रनामी—सज्ञा पुं. [सं. प्रणाम] प्रमाण करने वाला।

सज्ञा स्त्री.—गुरुदक्षिणा।

प्रनाली—संज्ञा स्त्री. [सं प्रणाली] रीति, प्रथा।

प्रनिपात—संज्ञा पुं. [सं. प्रणिपात] प्रणाम।

प्रपंच—संज्ञा पुं [स.] (१) पाँच तत्वो का विस्तार, भवजाल। (२) विस्तार, फैलाव। (३) दुनिया का जजाल (४) बखेडा, झझट, झगड़ा। उ.—अति प्रपच की मोट बाँधिकै अपनैं सीस धरी—१-१८४। (५) आडबर, ढोंग, छल, धोखा। उ.—बहुत प्रपच किये माया के, तऊ न अधम अघानौ—१-३२६।

प्रपंचन—संज्ञा पुं. [सं.] विस्तार करना।

प्रपंची—वि. [सं. प्रपंचिन्] छली, कपटी, ढोंगी।

प्रपत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] अनन्य भक्ति।

प्रपन्न—वि [सं] शरणागत, आश्रित।

प्रपात—संज्ञा पुं. [सं] झरना, निर्झर।

प्रपितामह—संज्ञा पुं [स] परदादा।

प्रपुंज—संज्ञा पुं. [सं.] बड़ा समूह, भारी झुंड। उ.—बिकसत कमलावली, चले प्रपुंज-चंचरीक, गुंजत कल कोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे—१०-२०५।

प्रपौत्र—सज्ञा पुं. [सं.] पुत्र का पौत्र।

प्रफुलना—क्रि. अ [सं. प्रफुल्ल] फूलना।

प्रफुला—सज्ञा स्त्री. [स. प्रफुल्ल] (१) कुमुदिनी। (२) कमलिनी।

प्रफुलित—वि. [सं. प्रफुल्ल] (१) खिला हुआ, कुसुमित। उ.—तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान······। जैसें कमल होत अति प्रफुलित, देखत दरसन भान—१-१६६। (२) प्रसन्न, प्रमुदित। उ.—गदगद बचन कहत मन प्रफु-लित बार-बार समुझैहौं—२६२३। (३) जो मुँदा न हो। (४) प्रसन्न, आनंदित।

प्रबध—संज्ञा पुं. [स.] (१) बाँधने की डोरी। (२) बाँधने

का क्रम या योजना। (३) **निबंध**। (४) **व्यवस्था**।

प्रबल—वि. [सं. (१) **बलवान, प्रचंड**। उ.—(क) कह करौ तेरो प्रबल माया देति मन भरमाइ—१-४५। (ख) जीवन-स्रास प्रबल श्रुति देखी—१-२८४। (२) **तेज, उग्र**। उ.—परिहस सूल प्रबल निसि-बासर, तातैं यह कहि आवत। सूरदास गोपाल सरनगत भए न को गति पावत—१-१८१। (३) **घोर, महान्**।

प्रबाल—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] (१) **मूँगा**। (२) **कोंपल**।

प्रबालिका—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाल] **मूँगा, विद्रुम, प्रवाल**। उ.—गजमोतिन के चौक पुराए बिच-बिच लाल प्रबालिका—८०६।

प्रबास—संज्ञा पुं. [सं. प्रवास] **परदेस मे रहना**।

प्रबाह—संज्ञा पुं. [सं. प्रवाह] **क्रम, तार, सिलसिला**। उ.—राखी लाज द्रुपद-तनया की, कुरुपति चीर हरै। दुरजोधन कौ मान भंग करि बसन-प्रबाह भरै—१-३७।

प्रबिसना—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रवेश करना, पैठना**।

प्रबीन—वि. [सं. प्रवीण] **चतुर**। उ.—चित दै सुनौ स्याम प्रबीन—३४५१।

प्रबीर—वि. [सं. प्रबीर] **भारी योद्धा**।

प्रबुद्ध—वि. [सं.] (१) **जागा हुआ**। (२) **सचेत**। (३) **सजग**। (४) **ज्ञानी**। (५) **विकसित**।

प्रबोध—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जागना**। (२) **पूर्ण ज्ञान**। (३) **आश्वासन, ढाढ़स**। (४) **चेतावनी**। (५) **विकास**।

प्रबोधक—वि. [सं.] (१) **जगानेवाला**। (२) **चितावनी देनेवाला**। (३) **समझानेवाला**। (४) **सांत्वना देने वाला**।

प्रबोधत—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] (१) **समझाते-बुझाते हैं**। (२) **ढाढ़स बँधाते हैं, धीरज देते है**। उ.—जननी ब्याकुल देखि प्रबोधत, धीरज करि नीकैं जदुराई। सूर स्याम कौ नैंकु नहीं डर, जनि तू रोवै जसुमति माई—५४८।

प्रबोधन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जागरण**। (२) **बोध, चेत**। (३) **ज्ञान या बोध कराना**। (४) **विकास**। (५) **सांत्वना**।

प्रबोधना—क्रि. स. [सं. प्रबोधन] (१) **जगाना**। (२) **सजग या सचेत करना**। (३) **समझाना-बुझाना**। (४) **सिखाना-पढ़ाना**। (५) **धीरज देना**।

प्रबोधि—क्रि. स. [हिं. प्रबोधना] **समझा-बुझाकर**। उ.—ठानी कथा प्रबोधि तबहि फिरि गोप समोधे—३४४३।

प्रबोधित—वि. [सं.] **जो प्रबोधा गया हो**।

प्रबोधे—क्रि. स. [हिं. प्रबोधे] **समझाया-बुझाया**। उ.—कै वह स्याम सिखाय प्रबोधे, कै वह बीच मरे—२६८२।

प्रभंजन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आँधी**। (२) **हवा**।

प्रभव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जन्म**। (२) **सृष्टि**।

प्रभविष्णु—वि. [सं.] **प्रभावशील**।

प्रभा—संज्ञा स्त्री.[सं.] (१) **दीप्ति, आभा**। (२) **सूर्यबिंब**।

प्रभाउ—संज्ञा पुं. [सं. प्रभाव] (१) **सामर्थ्य, शक्ति**। उ.—जुद्ध न करौ, शस्त्र नहिं पकरौ, एक ओर सेना सिगरी। हरि-प्रभाउ राजा नहिं जान्यौ, कह्यौ सैन मोहिं देहु हरी—१-२६८। (२) **महत्व, माहात्म्य**।

प्रभाकर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सूर्य** (२) **चन्द्र**।

प्रभाकीट—संज्ञा पुं. [सं.] **जुगनूँ, खद्योत**।

प्रभात—संज्ञा पुं. [सं.] **सबेरा, प्रातःकाल**।

प्रभाती—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रातःकालीन एक गीत**।

प्रभाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सामर्थ्य, शक्ति**। उ.—भक्ति-प्रभाव सूर लखि पायौ, भजन-छाप नहि पाई—१-६३। (२) **उद्भव, प्रादुर्भाव**। (३) **महिमा, माहात्म्य**। (४) **फल, परिणाम, असर**। (५) **साख, दबाव**। (६) **मन को किसी ओर प्रेरित कर देने का गुण**।

प्रभास—वि. [सं.] **प्रभापूर्ण**। उ.—अंग-अंग भूषन बिराजत कनक मुकुट प्रभास—१३५६।

संज्ञा पुं.-(१) **ज्योति**। (२)**गुजरात का एक तीर्थ**।

प्रभासन—संज्ञा पुं. [सं.] **ज्योति, आभा**।

प्रभासना—क्रि. अ. [सं. प्रभासिन] **दिखायी पड़ना**।

प्रभासु—संज्ञा पुं. [सं. प्रभास] **गुजरात का एक तीर्थ**। उ.—आय प्रभासु बिन्नु बहु जन को बहुतहिं दान देवाये—सारा. ८३६।

प्रभु—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अधिपति**। (२) **स्वामी**। (३)

ईश्वर, भगवान । उ.—बिनु दीन्हैं ही देत सूर-प्रभु ऐसे है जदुनाथ गुसाईं—१-३ । (४) **'महात्मा' के लिए संबोधन** ।

प्रभुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **महत्व, बड़ाई, महत्ता** । उ.—दूरि गयौ दरसन के ताईं, व्यापक प्रभुता सब बिसरी—१-११५ । (२) **साहिबी, मालिकपन, प्रभुत्व** । उ.—प्रभु की प्रभुता यहै जु दीन सरन पावै—१-१२४ । (३) **शासनाधिकार** । (४) **वैभव** ।

प्रभुताई—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभुता] (१) **बड़ाई, महत्व** । उ.—तौ क्यो तजै नाथ अपनौ प्रन ? है प्रभु की प्रभुताई—१-२०७ । (२) **वैभव** । उ.—सोवत मुदित भयौ सपने मै, पाई निधि जो पराई । जागि परैं कछु हाथ न आयौ, यौं जग की प्रभुताई—१-१४७ ।

प्रभुत्व—संज्ञा पुं. [सं.] **अधिकार, वैभव, पद-मान** । उ.—जग-प्रभुत्व प्रभु ! देख्यौ जोइ । सपन-तुल्य छन-भंगुर सोइ—७-२ ।

प्रभुभक्त—वि. [सं.] **स्वामी का सच्चा सेवक** ।

प्रभू—संज्ञा पुं. [सं. प्रभु] (१) **स्वामी** (२) **ईश्वर** ।

प्रभूत—वि. [सं.] (१) **उत्पन्न** । (२) **बहुत अधिक** ।

प्रभूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **उत्पत्ति** । (२) **अधिकता** ।

प्रभृति—अव्य. [सं.] **आदि, इत्यादि** ।

प्रभेद—संज्ञा पुं. [सं.] **भेद, उपभेद** ।

प्रमत, प्रमत्त—वि. [सं. प्रमत्त] **उन्मत्त, प्रमत्त, मतवाला, मस्त** । उ.—तू कहाँ ढीठ, जोबन-प्रमत्त सुंदरी, फिरति इठलाति गोपाल आगैं—१०-३०७ ।

प्रमत्तता—संज्ञा स्त्री. [सं.] । (१) **मस्ती** । (२) **पागलपन** ।

प्रमदा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **सुंदरी, युवती** ।

प्रमाण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सबूत** । (२) **एक अर्थालंकार** । (३) **सत्यता** । (४) **दृढ़ धारणा, निश्चय** । (५) **मान-आदर** । (६) **प्रामाणिक बात या वस्तु** । (७) **हद, सीमा, इयत्ता** । (८) **आदेशपत्र** ।

वि.—(१) **सत्य, प्रमाणित** । (२) **स्वीकार योग्य, मान्य** । (३) **परिमाण आदि में समान या बराबर** ।

अव्य.—**तक, पर्यन्त** ।

प्रमाणित—वि. [सं.] **प्रमाण से सिद्ध** ।

प्रमाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **भूल-चूक, भ्रम** । (२) **आलस्य** । (३) **अंतःकरण की दुर्बलता** ।

प्रमादी—वि. [सं. प्रमादिन्] **भूल-चूक करनेवाला** ।

प्रमान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] (१) **इयत्ता, हद, मान, सीमा** । उ.—हरि जू, मोसौ पतित न आन । मन-क्रम-वचन पाप जे कीन्हे, तिनकौ नाहि प्रमान—१-१६७ । (२) **हद, मान, इयत्ता** । उ.—अतल, वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान । पाताल और रसातल मिलि कै सातौ भुवन प्रमान—सारा. ३१ ।

वि.—**मानने योग्य, मान्य, स्वीकृत** । उ.—युग प्रमान कीन्हौ व्यवहार—१० उ.—१२६ ।

प्रमानना—क्रि. स. [सं. प्रमाण] (१) **सत्य या ठीक मानना** । (२) **सिद्ध या प्रमाणित करना** । (३) **निश्चित या स्थिर करना** ।

प्रमानी—वि. [सं. प्रामाणिक] **मान्य, मानने योग्य** ।

प्रमानो—क्रि. स. [हिं. प्रमानना] **सत्य मानो, ठीक समझो** । उ.—करो उपाय, बचो जो चाहो, मेरो बचन प्रमानो —सारा. ४८७ ।

प्रमान्यो, प्रमान्यौ—क्रि. स. [हिं. प्रमानना] **स्थिर या निश्चित किया, ठहराया** । उ.—जोगेस्वर बपु धारि हरि प्रगटे जोग समाधि प्रमान्यो—सारा. ३५१ ।

प्रमुख—क्रि. वि. [सं.] (१) **सामने, आगे** । (२) **तत्काल** ।

वि.—(१) **प्रथम** । (२) **मुख्य** । (३) **प्रतिष्ठित** ।

अव्य.—**और-और, इनके अतिरिक्त और, इत्यादि** । उ.—बंधुक सुमन अरुन पद पंकज, अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए—१०-१०४ ।

संज्ञा पुं.—(१) **आरंभ, आदि** । (२) **समूह** ।

प्रमुद—वि. [सं. प्रमुद्] **प्रसन्न, आनंदित** ।

प्रमुदा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रमदा] **राधा की एक सखी का नाम** । उ.—(क) स्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमना नारि—१५८० । (ख) सूर प्रभु स्याम सकुचि गए प्रमुदा धाम—२१५३ ।

प्रमुदित—वि. [सं.] **प्रसन्न, आनंदित** ।

प्रमोद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हर्ष** । (२) **सुख** ।

प्रयंक—संज्ञा पुं. [सं. पर्यंक] **पलँग** ।

प्रयंत—अव्य.—[सं. पर्यंत] **तक, लौं** ।

प्रयत्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रयास, चेष्टा। (२) वर्णोच्चारण में होने वाली क्रिया।

प्रयत्नवान—वि. [सं. प्रयत्नवान्] प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयाग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) अनेक यज्ञों का स्थान। (२) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-यमुना के संगम पर है।

प्रयाण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रस्थान। (२) चढ़ाई।

प्रयाणकाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) यात्राकाल। (२) मृत्यु-काल।

प्रयान—संज्ञा पुं. [सं. प्रयाण] गमन, प्रस्थान, जाना।

प्रयास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रयत्न, उद्योग। (२) श्रम, मेहनत। उ.—बिना प्रयास मारिहौ तोकौं आजु रैनिकै प्रात—६-७६। (३) इच्छा।

प्रयुक्त—वि. [सं.] (१) सम्मिलित। (२) जिसका खूब प्रयोग किया गया हो। (३) जो काम मे लगाया गया हो।

प्रयोक्ता—संज्ञा पुं. [सं. प्रयोक्तृ] (१) प्रयोग या व्यवहार करनेवाला। (२) लगानेवाला। (३) सूत्रधार।

प्रयोग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) किसी काम मे लगना। (२) व्यवहार। (३) तांत्रिक साधन। (४) क्रिया का विधान। (५) अभिनय। (६) अनुष्ठान विधि।

प्रयोगी—संज्ञा पुं. [सं. प्रयोगिन्] प्रयोग करनेवाला।

प्रयोजन—संज्ञा पुं. [सं] (१) कार्य। (२) उद्देश्य, अभिप्राय। (३) उपयोग, व्यवहार।

प्ररोजना—संज्ञा स्त्री. [सं] (१) रुचि बढ़ाना। (२) बढ़ावा।

प्रलंब—संज्ञा पुं. [सं.] प्रलंबासुर जो बलराम के हाथ से मारा गया था। गोपवेश में यह उनके साथ खेलने आया था। हारने पर बलराम को कंधे पर चढ़ा कर यह भागा। तभी उन्होंने इसे मार डाला। उ—धेनुक और प्रलंब सँहारे सख-चूड बध कीन्हो—सारा. ४७६।

वि.—(१) लटकता हुआ। (२) लंबा। (३) टँगा हुआ। (४) किसी ओर निकला हुआ। (५) शिथिल।

प्रलयंकर—वि. [सं.] प्रलयकारी।

प्रलय—संज्ञा पु. [सं.] (१) लय को प्राप्त होना, विलीन होना। उ.—सूरजदास अकाल प्रलय प्रभु मेटौ दास दिखाइ—६—११०। (२) संसार का तिरोभाव या नाश। (३) मूर्च्छा।

प्रलाप—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बकना। (२) बकवाद। (३) बातचीत, वार्तालाप। उ—बिह्वल बिकल दीन दारिद्रबस करि प्रलाप रुक्मिनि समुझाये—१०-उ०—६२।

प्रलापी—वि. [सं. प्रलापिन्] व्यर्थ बकनेवाला।

प्रलोभन—संज्ञा पुं. [सं.] लोभ, लालच।

प्रलोभी—वि. [सं. प्रलोभिन्] लोभ में फँसनेवाला।

प्रवंचक—वि. [सं] ठग, धूर्त, धोखेबाज।

प्रवंचना—संज्ञा स्त्री [सं.] ठगी, धूर्तता।

प्रवक्ता—संज्ञा पुं. [सं. प्रवक्तृ] अच्छा वक्ता।

प्रवचन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) व्याख्या। (२) उपदेश।

प्रवर—वि. [सं.] श्रेष्ठ, प्रधान।

प्रवर्त—संज्ञा पुं. [सं.] (१) कार्यारंभ। (२) एक तरह के मेघ। उ.—अनिल वर्त, बज्रवर्त, प्रवर्त—१०-४४। (३) एक गोलाकार आभूषण।

प्रवर्तक—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर्त्तक] (१) आरंभ करनेवाला (२) चलाने वाला, संचालक। (३) प्रेरित करनेवाला। (४) उसकानेवाला।

प्रवर्तन—संज्ञा पुं. [सं. प्रवर्त्तन] (१) कार्यारंभ। (२) संचालन। (३) उत्तेजना, प्रेरणा। (४) प्रवृत्ति।

प्रवर्तित—वि. [सं. प्रवर्तित] (१) आरंभ किया हुआ। (२) चलाया हुआ। (३) निकाला हुआ। (४) उत्पन्न। (५) प्रेरित, उत्तेजित।

प्रवर्षण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) वर्षा। (२) एक पर्वत।

प्रवाद—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बातचीत, वार्तालाप। (२) जनश्रुति, जनरव। (३) झूठी बदनामी, अपवाद।

प्रवान—संज्ञा पुं. [सं. प्रमाण] प्रमाण।

प्रवाल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) मूँगा। (२) कोंपल, किशलय। उ.—सिखि-सिखंड, बन-धातु बिराजत, सुमन सुगंध प्रवाल—४७८।

प्रवास—संज्ञा पुं. [सं.] (१) विदेश। (२) विदेश-वास।

प्रवासन—संज्ञा पुं. [सं.] देश-निकाला।

प्रवासित—वि. [सं.] देश से निकाला हुआ।

प्रवासी—वि. [सं.] विदेश में रहनेवाला।

प्रवाह—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **जल की गति, बहाव** । (२) **धारा** । (३) **कार्य का चलते रहना** । (४) **झुकाव, प्रवृत्ति** । (५) **क्रम, तार, सिलसिला** । उ.—(क) सुमिरत ही ततकाल कृपानिधि बसन-प्रवाह बढायौ—**१-१०६** । (ख) ऐसौ और कौन करुनामय बसन-प्रवाह बढावै—**१-१२२** ।

प्रवाहित—वि. [सं.] (१) **बहाया हुआ** । (२) **ढोया हुआ** ।

प्रवाही—वि. [सं. प्रवाहिन्] **बहने या बहानेवाला** ।

प्रविष्ट—वि. [स.] **घुसा या पैठा हुआ** ।

प्रविसना—क्रि. अ. [स. प्रवेश] **घुसना, पैठना** ।

प्रवीण, प्रवीन, प्रवीने—वि. [स.] **निपुण, कुशल, दक्ष** । उ.—अति है चतुर चातुरी जानत सकल कला जु प्रवीने —पृ० ३३५ (४२) ।

प्रवीणता, प्रवीनता—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रवीणता] **चतुराई** ।

प्रवीर—वि. [स] **भारी योद्धा, सुभट** ।

प्रवृत्त—वि. [सं.] (१) **रत, तत्पर** । (२) **तैयार** ।

प्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बहाव, प्रवाह** । (२) **मन का झुकाव, रुचि, लगन** । (३) **वृत्तांत** । (४) **सांसारिक कार्यों या विषयों में लीनता** ।

प्रवेश, प्रवेशनि—सज्ञा पुं [सं. प्रवेश] (१) **घुसना, पैठना** । उ.—सैसवता मे ह्वै सखी जोबन कियो प्रवेश—२०६५ । (२) **गति, पहुँच** । उ.—किधौं उहि देशन गवन मग छाँड़े, धरनि न बूँद प्रवेशनि—२८२४ ।

प्रवेशना, प्रवेसना—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रवेश करना** ।

प्रवेसि—क्रि. अ. [सं. प्रवेश] **प्रविष्ट होकर** । उ.—वृंदाबन प्रवेसि अघ मार्‌यौ, बालक जसुमति, तेरैं—४३२ ।

प्रवेशिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **वह पत्र, धन आदि जिसे दिखाकर या देकर प्रवेश किया जा सके** ।

प्रव्रज्या—संज्ञा स्त्री. [स.] **संन्यास** ।

प्रव्राज—संज्ञा—पुं. [सं] **सन्यास** ।

प्रशंस—सज्ञा स्त्री. [सं. प्रशंसा] **बड़ाई, प्रशसा** ।

वि. [सं. प्रशंस्य] **प्रशसा के योग्य** । उ.—एक मराल पीठि आरोहण बिधि भयो प्रबल प्रशंस—**२३४०** ।

प्रशंसक—वि. [सं] (१) **प्रशंसा करनेवाला** । (२) **खुशामदी** ।

प्रशंसन—सज्ञा पुं. [स.] **गुणकथन, बड़ाई, सराहना** । (२) **साधुवाद** ।

प्रशंसना—क्रि. स. [सं. प्रशंसन्] **तारीफ करना, सराहना** ।

प्रशंसा—सज्ञा स्त्री. [स.] **स्तुति, बड़ाई, श्लाघा** । उ.—उपजत छबि कर अधर शंख मिलि सुनियत शब्द प्रशंसा—२५६६ ।

प्रशंसित—वि. [सं.] **सराहा हुआ** । उ.—चहुँ दिसि चाँदनी चमू चली मनहु प्रशंसित पिक बर बानी—२३८३ ।

प्रशसी—क्रि. स. [हिं. प्रशसना] **प्रशंसा की** । उ.—(क) सूरदास प्रभु सब सुखदाता लै भुज बीच प्रशसी—१६८५ ।

प्रशस्त—वि. [सं.] (१) **प्रशंसनीय** । (२) **चौड़ा** ।

प्रशस्ति—सज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रशंसा, स्तुति** । (२) **पत्र का सरनामा** । (३) **ताम्रपत्रादि जिन पर राजाओं की कीर्ति लिखी हो** । (४) **प्राचीन ग्रथ के अंत का परिचायक विवरण** ।

प्रशांत—वि. [स.] (१) **स्थिर** । (२) **शांत** ।

प्रशाखा—संज्ञा स्त्री. [स.] **शाखा की शाखा** ।

प्रशासन—संज्ञा पुं. [स] (१) **कर्तव्य-शिक्षा** । (२) **शासन** ।

प्रश्न—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पूछताछ, सवाल** । (२) **पूछने की बात** । (३) **विचारणीय विषय** ।

प्रश्नोत्तर—सज्ञा पुं. [स.] **प्रश्न और उत्तर, सवाद** ।

प्रश्रय—संज्ञा पुं.—[सं.] (१) **आश्रय स्थान** । (२) **सहारा, आधार** । (३) **विनय** । (४) **विशेष ध्यान** ।

प्रश्वास—संज्ञा पुं. [सं.] **नथने से बाहर आनेवाली साँस** ।

प्रसंग—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **सबध, लगाव** । (२) **बात या विषय का सबध** । (३) **स्त्री-पुरुष-संयोग** । (४) **अनुरक्ति** । (५) **बात, विषय** । (६) **उपयुक्त अवसर** । उ.—तब तैं मै सुधि कछू न पाई । बिनु प्रसग तहँ गयौ न जाई—६-३१ । (७) **बात, वार्ता, विषय** ।

उ.—जौ अपनौ मन हरि सौं राँचै । आन उपाय-प्रसंग छाँड़ि कै, मन-बच-क्रम अनुसाँचै—१-८१ । (८) हेतु, कारण । (६) विस्तार, फैलाव ।

प्रसंसत—क्रि. स. [सं. प्रशसना] प्रशंसा करते हैं। उ.—आपहुँ खात प्रसंसत आपुहिं, माखन रोटी बहुत पयौ—१०-१६८ ।

प्रसंसना—क्रि. स. [सं. प्रशसन्] प्रशंसा करना ।

प्रसन्न—वि. [सं.] (१) संतुष्ट । (२) हर्षित, आनंदित । (३) अनुकूल (४) निर्मल, स्वच्छ ।
वि. [फा. पसंद] पसंद, मनोनीत ।

प्रसन्नता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) संतोष । (२) हर्ष, आनंद । (३) कृपा, अनुग्रह । (४) निर्मलता, स्वच्छता ।

प्रसन्नमुख—वि. [सं.] जो सदा हँसता रहे ।

प्रसन्नात्मा—वि. [सं. प्रसन्नात्मन्] आनंदी, मनमौजी ।

प्रसन्नित—वि. [सं. प्रसन्न] हर्षित, आनंदित ।

प्रसरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बढ़ना, फैलना । (२) फैलाव, विस्तार । (३) काम में प्रवृत्त होना ।

प्रसरित—वि. [सं.] (१) फैला हुआ । (२) विस्तृत ।

प्रसव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) बच्चा जनना । (२) जन्म, उत्पत्ति । (३) संतान । (४) वृद्धि । (५) विकास ।

प्रसविता—वि. [स. प्रसवितृ] जन्म देनेवाला ।

प्रसविनी—वि. [सं.] जन्म देनेवाली, जननेवाली ।

प्रसाद—संज्ञा पुं [स.] (१) प्रसन्नता । (२) कृपा, अनुग्रह । उ.—(क) मुक्ति मनोरथ मन मै ल्यावै । मम प्रसाद तैं सो वह पावैं—३-१३ । (ख) करहु मोहि ब्रज रेनु देहु बृंदाबन बासा । माँगौं यहै प्रसाद और मेरैं नहिं आसा—४९२ । (३) निर्मलता । (४) वह वस्तु जो देवता पर चढ़ाई जाय । (५) वह पदार्थ जो आचार्य या गुरुजन, पूजन, यज्ञ आदि करके या प्रसन्न होकर भक्तो या सेवकों को दें । उ.—रिषि ता नृप सों जज्ञ करायो । दै प्रसाद यह बचन सुनायौ—९-५ । (६) देवता की जूठन जो भक्तों या सेवकों में बाँटी जाय । उ.—जूठन माँगि सूर जन लीन्हौ । बाँटि प्रसाद सबनि कौं दीन्हौ—३६६ । (७) भोजन (साधु) । (८) काव्य का एक गुण जिसमें भाषा प्रचलित, सरल और स्वच्छ रहती है । (९) कोमलावृत्ति । (१०) प्रासाद, महल ।

प्रसादना—क्रि. स. [सं. प्रसाद] प्रसन्न करना ।

प्रसादनीय—वि. [सं.] प्रसन्न करने योग्य ।

प्रसादी—वि. [सं. प्रसादिन्] (१) प्रसन्न करनेवाला । (२) प्रीति करनेवाला । (३) कृपालु । (४) शांत ।
संज्ञा स्त्री. [हिं. प्रसाद] (१) देवी-देवता पर चढ़ाया गया पदार्थ । (२) नैवेद्य । (३) वह पदार्थ जो बड़े लोग छोटों को दें । (४) देवी-देवता की जूठन ।

प्रसाधक—वि. [सं] वस्त्राभूषण पहनानेवाला ।

प्रसाधन—संज्ञा पुं. [सं.] शृंगार, सजावट ।

प्रसाधित—वि. [सं.] सजाया-सँवारा हुआ ।

प्रसार—संज्ञा पुं. [सं.] विस्तार, फैलाव, पसार ।

प्रसारित—वि. [सं.] पसारा या फैलाया हुआ ।

प्रसिद्ध—वि. [सं.] विख्यात, नामी ।

प्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री. [सं.] ख्याति, सुनाम ।

प्रसुप्त—वि. [सं.] (१) खूब सोया हुआ । (२) असावधान ।

प्रसू—संज्ञा स्त्री. [स.] जननेवाली, जननी ।

प्रसूत—वि. [सं.] (१) उत्पन्न । (२) उत्पादक ।

प्रसूता—संज्ञा स्त्री. [सं.] जननेवाली, जच्चा, जननी ।

प्रसूति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) प्रसव (२) उत्पत्ति । (३) कारण । (४) संतति । (५) जच्चा । (६) उत्पत्ति स्थान ।

प्रसून—संज्ञा पुं. [सं.] फूल । उ.—सुनि सठनीति प्रसून-रस लंपट अबलनि को घाँचहि—३१४५ ।

प्रसृत—वि. [सं.] (१) फैला हुआ । (२) विकसित । (३) प्रेरित । (४) तत्पर । (५) प्रचलित ।

प्रसेद—संज्ञा पुं. [सं. प्रस्वेद] पसीना । उ.—तट बारू उपचार चूर जल पूर प्रसेद पनारी—२७२८ ।

प्रसेन, प्रसेनजित—संज्ञा पुं. [सं.] सत्राजित् का भाई जिसकी मणि के कारण श्रीकृष्ण को झूठा कलक लगा था ।

प्रस्तर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) पत्थर । (२) बिछावन ।

प्रस्ताव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) प्रसंग, विषय, चर्चा । (२) (२) सभा में स्वीकृत मंतव्य । (३) भूमिका, पूर्व वक्तव्य ।

प्रस्तावना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **आरंभ**। (२) **पूर्व वक्तव्य, भूमिका**। (३) **नाटक के विषय आदि का परिचायक प्रसंग**।

प्रस्तावित—वि. [सं.] **जिसके लिए प्रस्ताव हुआ हो**।

प्रस्तुत—वि. [सं.] (१) **जिसकी चर्चा की गयी हो**। (२) **उपस्थित, जो सामने हो**। (३) **उद्यत, तैयार**।

प्रस्थ—संज्ञा पुं. [सं.] **चौरस पहाड़ी भूमि**।

प्रस्थान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **यात्रा, गमन, कूच**। (२) **ठीक मुहूर्त पर यात्रा न कर सकने पर वस्त्रादि यात्रा की दिशा में रखवा देने की क्रिया**। (३) **मार्ग**।

प्रस्थानी—वि. [हि. प्रस्थान] **जानेवाला**।

प्रस्न—संज्ञा पु. [सं. प्रश्न] **प्रश्न, सवाल**।

प्रस्फुट—वि. [सं.] (१) **खिला हुआ**। (२) **प्रकट**।

प्रस्फुरण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **निकलना**। (२) **प्रकट या प्रकाशित होना**।

प्रस्राव—संज्ञा पुं. [सं.] **झरना, बहना, क्षरण**।

प्रस्वेद—संज्ञा पुं. [सं.] **पसीना**। उ.—नख छत सोनित प्रस्वेद गात तें चंदन गयो कछु छूटि—१६१२।

प्रहर—संज्ञा पुं. [सं.] **पहर**।

प्रहरखना—क्रि. अ. [सं. प्रहर्षण] **आनंदित होना**।

प्रहरी—संज्ञा पुं. [सं. प्रहरिन] (१) **पहर-पहर पर घंटा बजानेवाला**। (२) **पहरा देनेवाला, पहरुआ**।

प्रहलाद—संज्ञा पुं. [सं. प्रह्लाद] **हिरण्यकशिपु का पुत्र**।

प्रहर्षण—संज्ञा पुं [सं.] (१) **आनन्द**। (२) **एक अलंकार**।

प्रहसन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **हास-परिहास**। (२) **हास्य-रस-प्रधान नाटक**।

प्रहार—संज्ञा पु. [सं.] **वार, आघात, चोट**।

प्रहारक—वि. [सं.] **प्रहार करनेवाला**।

प्रहारन—वि. [हि. प्रहार] (१) **प्रहार करनेवाला**। (२) **तोड़नेवाला**। उ.—जानि लई मेरे जिय की उन गर्व-प्रहारन उनको नाऊँ—१६५४।

प्रहारना—क्रि. अ. [सं. प्रहार] (१) **मारना, आघात करना**। (२) **मारने को अस्त्रादि चलाना**।

प्रहारित—वि. [सं. प्रहार] **जिस पर प्रहार हो**।

प्रहारि—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] **मारकर**। उ.—दैत्य प्रहारि पाप-फल प्रेरित, सिर-माला सिव-सीस चढ़ैहौं—६-१५७।

प्रहारी—वि. [सं. प्रहारिन्] (१) **नष्ट करनेवाला, दूर करनेवाला, भंजन करनेवाला**। उ.—(क) जाकौ बिरद है गर्ब प्रहारी, सो कैसै बिसरै—१-३७। (ख) सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे, मथुरा-गर्व-प्रहारी—१०-४। (२) **मारनेवाला**। (३) **अस्त्र चलानेवाला**।

प्रहारो—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] **प्रहार करो**। उ.—डारि अगिन मे शस्त्रनि मारो नाना भाँति प्रहारो—सारा. १२०।

प्रहारौं—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] **मारूँ**।

प्र०—प्रान प्रहारौं—**प्राण दे दूँ**। उ.—तब देवकी भई अति ब्याकुल कैसै प्रान प्रहारौं—१०-४।

प्रहारौ—संज्ञा पुं. [सं. प्रहार] **आघात, चोट**। उ.—गोपाल सबनि प्यारौ, ताकौं तैं कीन्हौ प्रहारौ—३७३।

प्रहार्यौ—क्रि. अ. [हिं. प्रहारना] (१) **नष्ट किया, (गर्व, मान आदि) तोड़ दिया**। उ.—नृप-कन्या कौ ब्रत प्रतिपार्यौ, कपट बेष इक धार्यौ। तामैं प्रगट भए श्रीपति जू, अरिगन-गर्ब प्रहार्यौ—१-३१। (२) **मारा, आघात किया**। उ.—डारि अगिनि मै सस्त्रनि मार्यौ, नाना भाँति प्रहार्यौ। (३) **मारने के लिए चलाया, फेंका**। उ.—ऐरावत अमृत कैं प्याए। भयो सचेत इंद्र तब धाए। बृत्रासुर कौ बज्र प्रहार्यौ। तिन त्रिसूल सुरपति कौं मार्यौ—६-५।

प्रहास—संज्ञा पुं. [सं.] **अट्टहास, ठहाका**।

प्रहासी—वि. [सं. प्रहासिन्] **खूब हँसने-हँसानेवाला**।

प्रहेलिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पहेली, बुझौवल**।

प्रह्लाद—संज्ञा पुं. [स.] (१) **आनंद**। (२) **हिरण्यकशिपु दैत्य का पुत्र जो विष्णु का भक्त था। पिता की विष्णु से शत्रुता थी; इसलिए पुत्र को उसने बहुत ताड़ना दी और उसके प्राण हरने के अनेक उपाय किये अंत में विष्णु ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मार डाला और अपने भक्त की रक्षा की**।

प्रांगण, प्रागन—संज्ञा पुं. [सं. प्रांगण] **आँगन, सहन**।

प्रांजल—वि. [सं.] (१) **सरल, सीधा**। (२) **सच्चा**। (३) **जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल**।

प्रांत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **अंत, सीमा**। (२) **किनारा, छोर**। (३) **ओर, तरफ**। (४) **प्रदेश, भू-भाग**।

प्रांतिक, प्रांतीय—वि. [सं.] **प्रांत का, प्रांत संबंधी**।

प्राकाम्य—संज्ञा स्त्री. [सं.] **आठ सिद्धियों में एक**।

प्राकार—संज्ञा पुं. [सं.] **परकोटा, चहारदीवारी**।

प्राकृत—वि. [सं.] (१) **प्रकृति-संबधी**। (२) **स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज**। उ.—प्राकृत रूप धर्यौ हरि छिन में सिसु ह्वै रोवन लागे—सारा. ३७०। (३) **साधारण**। (४) **लौकिक, भौतिक**।

संज्ञा स्त्री.—(१) **बोलचाल की भाषा**। (२) **एक प्राचीन भाषा**।

प्राकृतिक—वि. [सं.] (१) **प्रकृत से उत्पन्न**। (२) **प्रकृति-संबधी**। (३) **सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक**। (४) **साधारण**। (५) **भौतिक, लौकिक**।

प्राग—संज्ञा पुं. [सं. प्रयाग] **प्रयाग तीर्थ**। उ.—सुभ कुरु-छेत्र, अजोध्या मिथिला प्राग त्रिबेनी न्हाये—सारा. ८२८।

प्राची—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पूर्व दिशा**। उ.—प्राची दिसा पेखि पूरन ससि ह्वै आयौ तन तातो—१० उ०-१००।

प्राचीन—वि. [सं.] (१) **पूर्व देश का**। (२) **पुराना, पुरातन**। (३) **पहले का, पिछला**। उ.—ढूँढत फिरै न पूँछन पावै आपुन ग्रह प्राचीन—१० उ०-६६। (४) **बूढ़ा**।

प्राचीनता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **पुरानापन**।

प्राचीनबर्हि—संज्ञा पुं. [सं. प्राचीनबर्हिस] **एक प्राचीन राजा जो अग्निगोत्रीय थे और प्रजापति कहलाते थे**।

प्राचीर—संज्ञा पुं. [सं.] **परकोटा, चहारदीवारी**।

प्राचुर्य—संज्ञा पुं. [सं. प्राचुर्य्य] **अधिकता**।

प्राच्य—वि. [सं.] (१) **पूर्व का, पूर्व-संबंधी, पूर्वीय**। (२) **पुराना, प्राचीन, पूर्वकालीन**।

प्राज्ञ—वि. [सं.] (१) **बुद्धिमान**। (२) **पंडित, विज्ञ**।

प्राण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **वायु**। (२) **वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है**। (३) **साँस**। (४) **बल, शक्ति**। (५) **जीवन, जान**। उ.—प्रीति पतंग करी दीपक सों आपै प्राण दह्यौ—२८०६।

मुहा०—प्राण उड़ जाना—(१) **होश-हवास न रहना**। (२) **डर जाना**। प्राण आना या प्राणों में प्राण आना—**चित्त कुछ ठिकाने होना, धीरज आना**। प्राण (प्राणों) का अधर या गले तक आना—**मरने पर होना**। उ.—प्रीतम प्यारे प्राण हमारे रहे अधर पर आइ—३०५६। प्राण (प्राणों का) मुँह को आना—(१) **बहुत दुख होना**। (२) **मरने पर होना**। प्राण खाना—**बहुत तंग करना**। प्राण जाना (छूटना, निकलना)—**मरना**। प्राण डालना—**जीवन का संचार करना**। प्राण छोड़ना—(तजना, त्यागना, देना)—**मरना**। किसी के ऊपर प्राण देना—(१) **किसी के काम या व्यवहार से बहुत दुखी होकर मरना**। (२) **प्राणों से भी अधिक चाहना**। प्राण निकलना—(१) **मरना**। (२) **घबरा जाना**। प्राण पयान होना—**मरना**। प्राण पर आ पड़ना—**जीवन का संकट में पड़ जाना**। प्राण पर खेलना—**ऐसा काम करना जिसमें जान जाने का डर हो, पर इसकी परवाह न करना**। उ.—हमसों मिले बरस द्वादस दिन चारिक तुम सो तूठे। सूर आपने प्राणन खेलै ऊधौ खेलै रूठे। प्राण पर बीतना—(१) **जीवन संकट में पड़ना**। (२) **मर जाना**। प्राण बचाना—(१) **जान बचाना**। (२) **पीछा छुड़ाना**। प्राण मुट्ठी में (हथेली पर) लिये फिरना (रहना)—**जान की जरा भी परवाह न करना**। प्राण रखना—(१) **जिला देना**। (२) **जान बचाना**। प्राण हरना—(१) **मार डालना**। (२) **बहुत दुख देना**। प्राण हारना—(१) **मर जाना**। (२) **साहस न रहना**। प्राण हारति—**मर जाती है**। उ.—समुझत मीन नीर की बातै, तऊ प्राण हठि हारति।

(६) **परम प्रिय व्यक्ति**।

प्राणअधार, प्राणअधारा—संज्ञा पुं. [सं. प्राण+आधार] (१) **परम प्रिय व्यक्ति**। उ.—(क) अब ही और की और होति कछु······ ताते मै पाती लिखी तुम प्राण अधारा। (ख) अपने ही गेह मधुपुरी आवन देवकी प्राण-अधारा हो। (२) **पति, स्वामी**।

वि.—**प्रिय, प्यारा**।

प्राणघात—संज्ञा पुं. [सं.] **हत्या, वध**।

प्राणजीवन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **परम प्रिय व्यक्ति।** (२) **वह जो प्राण का आधार हो।**

प्राणत्याग—संज्ञा पुं. [सं.] **मर जाना।**

प्राणदंड—संज्ञा पुं. [सं.] **मृत्यु का दंड।**

प्राणदाता—संज्ञा पुं. [सं. प्राणदातृ] **प्राण देनेवाला।**

प्राणदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मरने या मारे जाने से बचाना।** (२) **प्राण देना।**

प्राणधन, प्राणधनियाँ—संज्ञा पुं. [सं.] **बहुत प्रिय व्यक्ति।** उ.—नेक रहौ माखन देउँ मेरे प्राणधनियाँ।

प्राणधारी—वि. [सं. प्राणधारिन्] (१) **जीवित।** (२) **जो साँस लेता हो, चेतन।**

प्राणनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रिय व्यक्ति, प्रियतम।** (२) **पति, स्वामी।**

प्राणनाशक—वि. [सं.] **प्राण लेनेवाला।**

प्राणपति—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आत्मा।** (२) **हृदय।** (३) **पति, स्वामी।** (४) **प्रियतम।** उ.—प्राणपति की निरखि सोभा पलक परन न देहिं।

प्राणप्यारा—संज्ञा पुं. [हिं. प्राण+प्यारा] (१) **बहुत प्रिय व्यक्ति, प्रियतम।** (२) **पति, स्वामी।**

प्राण-प्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्राण धारण कराना।** (२) **मंदिर में मंत्रोच्चार के साथ नयी मूर्ति की प्रतिष्ठा।**

प्राणप्रद—वि. [सं.] (१) **प्राणदायक।** (२) **स्वास्थ्यवर्द्धक।**

प्राणप्रिय—वि. [सं.] **परम प्रिय, प्रियतम।**
संज्ञा पुं.—(१) **बहुत प्यारा व्यक्ति।** (२) **पति।**

प्राणबल्लभ—संज्ञा पुं. [सं. प्राणवल्लभ] **प्रियतम, पति।**

प्राणमय—वि. [सं.] **जिसमे प्राण हों।**

प्राणवल्लभ—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रियतम, पति।**

प्राणवायु—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्राण।** उ.—प्राणवायु पुनि आइ समावै। ताकौं इत उत पवन चलावै। (२) **जीव।**

प्राणहंता—वि. [सं. प्राणहंतृ] **प्राणघातक।**

प्राणहारी—वि. [सं. प्राणहारिन्] **प्राण हरनेवाला।**

प्राणांत—संज्ञा पुं. [सं.] **मरण, मृत्यु।**

प्राणांतक—वि. [सं.] **प्राण लेनेवाला।**

प्राणात्मा—संज्ञा पुं. [सं. प्राणात्मन्] **जीवात्मा, जीव।**

प्राणाधार—वि. [सं.] **अत्यंत प्रिय।**
संज्ञा पुं.—(१) **प्रियतम, प्रेमपात्र।** (२) **पति, स्वामी।**

प्राणाधिक—वि. [सं.] **प्राण से अधिक प्यारा।**
संज्ञा पुं.—**पति।**

प्राणायाम—संज्ञा पुं. [सं.] **योग के आठ अंगो में चौथा। इसमें श्वास-प्रश्वास की गतियो को धीरे-धीरे कम किया जाता है।**

प्राणी—वि. [सं. प्राणिन्] **जिसमे प्राण हों।**
संज्ञा पुं.—(१) **जीव।** (२) **मनुष्य।** (३) **व्यक्ति।**

प्राणेश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पति।** (२) **प्रिय।**

प्राणेश्वर—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पति।** (२) **प्रिय व्यक्ति।**

प्रात—अव्य. [सं. प्रात] **सबेरे, तड़के।** उ.—प्रात जो न्हात, अघ जात ताके सकल, ताहि जम दूत रहत हाथ जोरे—१-२२२।

प्रात, प्रातः—संज्ञा पुं. [सं. प्रातर्] **प्रभात तड़का।**

प्रात.कालीन—वि. [सं.] **प्रातःकाल-संबंधी।**

प्रातःस्मरण, प्रातःस्मरणीय—वि. [सं.] **प्रातःकाल स्मरण करने योग्य, पूज्य।**

प्रातनाथ—संज्ञा पुं. [सं. प्रात.+नाथ] **सूर्य।**

प्राता—संज्ञा पुं. [सं. प्रातः] **सबेरा, प्रभात।** उ.—कहत आधे बचन भयौ प्राता—४४०।

प्राथमिक—वि. [सं.] (१) **पहले का।** (२) **प्रारंभिक।**

प्रादुर्भाव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रकट होना, अस्तित्व मे आना।** (२) **उत्पत्ति।** (३) **विकास।**

प्रादुर्भूत—वि. [सं.] (१) **जो प्रकट हुआ हो, प्रकटित।** (२) **विकसित।** (३) **उत्पन्न।**

प्रादेशिक—वि. [सं.] **प्रदेश-संबंधी।**

प्राधान्य—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रधानता, मुख्यता।**

प्रान—संज्ञा पुं. [सं. प्राण] (१) **प्राण।** उ.—इनही मैं मेरे प्रान बसत है, तेरैं भाएँ नैंकु न माइ—७१०।
मुहा०—त्यागति प्रान—**प्राण देने को तैयार है।** उ.—त्यागति प्रान निरखि सायक धनु—१-२६।
(२) **जीवन का आधार, जीने का सहारा।** उ.—तुम्हारी भक्ति हमारे प्रान—१-१६६।

प्रानजिवन—संज्ञा पुं. [सं. प्राणजीवन] (१) **प्राणाधार।**

(२) **परम प्रिय व्यक्ति** । उ.—(क) कहु री ! सुमति कहा तोहिं पलटी, प्रानजिवन कैसै बन जात—६-३८। (ख) आतुर ह्वै अब छाँड़ि कौसलपुर प्रान जीवन कित चलन चहत है।

प्रानपति—संज्ञा पुं. [सं. प्राणपति] (१) **पति, स्वामी** । (२) **प्रिय व्यक्ति, प्यारा, प्राणप्रिय** । उ.—(क) मम कुटुंब की कहा गति होइ । पुनि पुनि मूरख सोचै सोइ । काल तहीं तिहि पकरि निकार्यौ । सखा प्रानपति तउ न सँभार्यौ—४-१२ । (ख) सूर श्रीगोपाल की छबि दृष्टि भरि भरि लेहिं । प्रानपति की निरखि सोभा पलक परन न देहि ।

प्रानी—संज्ञा पुं. [हिं. प्राणी] (१) **जीव, जंतु** । (२) **मनुष्य** । उ.—सूरदास धनि धनि वह प्रानी, जो हरि कौ व्रत लै निबह्यौ—२-८ ।

प्रापति—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राप्ति] (१) **उपलब्धि, प्राप्ति, मिलना** । उ.—(क) ताको हरि-पद-प्रापति होइ—१-२३० । (ख) त्रिबिधि भक्ति कहौं सुनि अब सोइ । जातै हरि-पद प्रापति होइ—३-१३ । (२) **पहुँच** ।

प्रापना—क्रि. स. [सं. प्रापण] **मिलना, प्राप्त होना** ।

प्राप्त—वि. [सं.] (१) **लब्ध** । (२) **उत्पन्न** । (३) **जो मिला हो** । (४) **समुपस्थित** ।

प्राप्तयौवन—वि. [सं.] **युवक, जवान** ।

प्राप्तव्य—वि. [सं.] **मिलनेवाला, प्राप्य** ।

प्राप्ति, प्राप्ती—संज्ञा स्त्री. [सं. प्राप्ति] (१) **उपलब्धि** । (२) **पहुँच** (३) **उदय** । (४) **भाग्य** । (५) **प्रवेश, प्रवृत्ति** । (६) **कंस की पत्नी का नाम जो जरासंध की पुत्री थी** । उ.—अस्ती अरु प्राप्ती दोउ पत्नी कंसराय की कहियत । जरासंध पै जाय पुकारी महाक्रोध मन दहियत—सारा. ५६६ ।

प्राप्य—वि. [सं.] (१) **पाने योग्य** । (२) **जो मिल सके** । (३) **जिस तक पहुँच हो सके** ।

प्राबल्य—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रबलता** । (२) **प्रधानता** ।

प्रामाणिक—वि. [सं.] (१) **जो प्रमाण से सिद्ध हो** । (२) **माननीय** । (३) **सत्य** । (४) **शास्त्रसिद्ध** ।

प्राय—वि. [सं.] (१) **समान** । (२) **लगभग** ।

प्रायः—वि. [सं.] (१) **बहुधा** । (२) **लगभग** ।

प्रायद्वीप—संज्ञा पुं. [सं. प्रायोद्वीप] **स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो** ।

प्रायश्चित्त—संज्ञा पुं. [सं.] **वह कृत्य जिसके करने से पाप या दोष से मुक्ति मिल जाती है** ।

प्रारंभ—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **आरंभ** । (२) **आदि** ।

प्रारंभिक—वि. [सं.] (१) **आरंभ का** । (२) **आदिम** ।

प्रारब्ध—वि. [सं.] **आरंभ किया हुआ** ।

संज्ञा पुं.—**भाग्य, किस्मत** ।

प्रारब्धी—वि. [सं. प्रारब्धिन्] **भाग्यवान्** ।

प्रार्थना—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **याचना** । (२) **बिनती** ।

क्रि. स.—**विनय या बिनती करना** ।

प्रार्थनीय—वि. [सं.] **प्रार्थना करने योग्य** ।

प्रार्थी—वि. [सं. प्रार्थिन्] (१) **याचक** । **निवेदक** ।

प्रालब्ध—संज्ञा पुं. [सं. प्रारब्ध] **भाग्य, किस्मत** ।

प्रासंगिक—वि. [सं.] **प्रसंग का, प्रसंगागत** ।

प्रासाद—संज्ञा पुं. [सं.] **बहुत बड़ा मकान, महल** ।

प्रियंवद—वि. [सं.] **प्रिय बचन बोलनेवाला** ।

प्रिय—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रेमी** । (२) **पति, स्वामी** ।

वि.—(१) **प्यारा** । (२) **जो अच्छा लगे, मनोहर** ।

प्रियतम—वि. [सं.] **प्राण से भी प्रिय, सबसे प्यारा** ।

संज्ञा पुं.—(१) **प्रेमी** । (२) **पति, स्वामी** ।

प्रियता—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रिय होने का भाव** ।

प्रियदर्शन—वि [सं.] **देखने में सुन्दर, शुभदर्शन** ।

प्रियदर्शी—वि. [सं.] **सबको प्रिय देखने-समझने वाला** ।

प्रियपात्र—वि. [सं.] **जिससे प्रेम किया जाय** ।

प्रियभाषी—वि. [सं. प्रियभाषिन्] **मीठी बात कहनेवाला** ।

प्रियवक्ता—वि. [सं. प्रियवक्तृ] **मधुरभाषी** ।

प्रियवर—वि. [सं.] **अति प्रिय** ।

प्रियवादी—वि. [सं. प्रियवादिन्] **प्रिय बोलनेवाला** ।

प्रियव्रत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **स्वायंभुव मनु का एक पुत्र** । उ.—प्रियव्रत बंस धरेउ हरि निज बपु ऋषभदेव वह नाम—सारा. ८५ । (२) **वह जिसे व्रत प्रिय हो** ।

प्रिया—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **प्रेमिका** । (२) **पत्नी** ।

प्रियौ—वि. [हिं. प्रिय] **प्रिय, प्यारी, रुचिकर** । उ.—आपुहिं खात प्रशंसत आपुहि, माखन-रोटी बहुत प्रियौ—१०-१६८ ।

प्रीत—वि. [सं.] **प्रीतियुक्त, प्रेमपूर्ण।**
संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रेम, स्नेह।**

प्रीतम—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **प्रेमी।** (२) **पति।**

प्रीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **तृप्ति।** (२) **आनंद।** (३) **प्रेम, स्नेह।** उ.—तुम्हारी प्रीति हमारी सेवा गनियत नाहिंन कातें—२५२८। (४) **कामदेव की एक पत्नी।**

प्रीतिभोज—संज्ञा पुं. [सं.] **वह भोज जिसमें इष्टमित्र सप्रेम आमंत्रित हों।**

प्रीतिरीति—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेमपूर्ण व्यवहार।**

प्रीती—संज्ञा स्त्री [सं. प्रीति] **प्रेम, प्रीति।** उ.—सूरदास स्वामी सो छल सो, कही सकल ब्रजप्रीती—२६४२।

प्रीते—वि. [सं. प्रीति] **प्यारे, प्रिय।** उ.—सुफलकसुत लै गए दगा दै प्रानन ही के प्रीते—२४६३।

प्रीत्यो—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रीति] **प्रीति, प्रेम।** उ.—बहुरि न जीवन-मरन सो साझौ करी मधुप की प्रीत्यो—३८८४।

प्रेक्षक—संज्ञा पुं. [सं.] **देखनेवाला, दर्शक।**

प्रेक्षण—संज्ञा पुं. [सं.] **देखने की क्रिया।**

प्रेक्षणीय—वि. [सं.] **देखने के योग्य।**

प्रेक्षा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **देखना।** (२) **विचार करना।** (३) **नाच-तमाशा देखना।** (४) **दृष्टि।** (५) **बुद्धि।**

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह—संज्ञा पुं. [सं.] **मंत्रणागृह।**

प्रेत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **मृतक प्राणी।** (२) **एक कल्पित देवयोनि जिसका रंग काला और आकृति विकराल मानी जाती है।** (३) **वह कल्पित शरीर जो मनुष्य को मरने के बाद मिलता है।** उ.—घर की नारि बहुत हित जासौं रहति सदा सँग लागी। जा छन हंस तजी यह काया, प्रत प्रेत कहि भागी—१-७६। (४) **नरक में रहनेवाला प्राणी।** (५) **बहुत चालाक और कंजूस आदमी।**

प्रेतगृह, प्रेतगेह—संज्ञा पुं. [सं. प्रेतगृह] **श्मशान।**

प्रेतनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रेत] **भूतनी, चुड़ैल।**

प्रेतपावक—संज्ञा पुं. [सं.] **वह प्रकाश जो जंगलों-वनों में सहसा दिखायी देता और प्रेत-लीला समझा जाता है।**

प्रेतिनी—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रेत] **प्रेत की स्त्री।**

प्रेती—संज्ञा पुं. [सं. प्रेत] **प्रेत-उपासक।**

प्रेम—वि. [सं.] **प्रिय।** उ.—मेरे लाल के प्रेम खिलौना ऐसौ को लै जैहै री—७११।
संज्ञा पुं.—(१) **प्रीति, अनुराग।** उ.—सूरदास प्रभु बोलि न आयो प्रेम-पुलकि सब गात—२५३१। (२) **ममता।** (३) **लोभ, माया।**

प्रेमपात्र—संज्ञा पुं. [सं.] **वह जिससे प्रेम किया जाय।**

प्रेमपुलक—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेम-जनित रोमांच।**

प्रेमा—संज्ञा पुं. [सं. प्रेमन्] (१) **स्नेह।** (२) **स्नेही।**
संज्ञा स्त्री.—**राधा की एक सखी का नाम।** उ.-प्रेमा, दामा रूपा हंसा रंगा हरषा जाउ—१५८०।

प्रेमातुर—वि. [प्रेम+आतुर] **प्रेम के कारण व्याकुल, प्रेम-पीड़ित।** उ.—गोपीजन प्रेमातुर तिनकौ सुख दीन्हौं—८-३६४।

प्रेमालाप—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेमपूर्ण संलाप।**

प्रेमाश्रु—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेम के आँसू।**

प्रेमी—संज्ञा पुं. [सं. प्रेमिन्] (१) **अनुरागी** (२) **आसक्त।**

प्रेय—वि. [सं.] **प्रिय, प्यारा।**

प्रेयस्—संज्ञा पुं. [सं.] **प्यारा व्यक्ति, प्रियतम।**

प्रेयसी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रेमिका।**

प्रेरक—संज्ञा पुं. [सं.] **प्रेरणा देनेवाला।**

प्रेरणा—संज्ञा स्त्री. [सं.] **प्रवृत्त या नियुक्त करने की क्रिया।**

प्रेरना—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रेरित करना।**

प्रेरित—वि. [सं.] (१) **जो कोई कार्य करने को उत्साहित या प्रवृत्त किया गया हो।** (२) **धकेला हुआ।**

प्रेरै—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रेरित करता है, प्रवृत्त करता है, कार्य-विशेष में लगाता है, उत्तेजना या उत्साह प्रदान करता है।** उ.—मन बस होत नाहिंनै मेरै। जिन बातनि तैं बह्यौ फिरत हौं, सोई लै-लै प्रेरै—१-२०६।

प्रेर्यौ—क्रि. स. [सं. प्रेरणा] **प्रवृत्त किया, लगाया, बढ़ाया।** उ.—भीषम ताहि देखि मुख फेर्यौ। पारथ जुद्ध-हेत रथ प्रेर्यौ—१-२७६।

प्रेषक—संज्ञा पुं. [सं.] **भेजनेवाला।**

प्रेषण—संज्ञा पुं. [सं.] भेजना, रवाना करना।
प्रेषित—वि. [सं.] भेजा या रवाना किया हुआ।
प्रोक्त—वि. [सं.] कहा हुआ, दोहराया हुआ।
प्रोत—वि. [सं.] अच्छी तरह मिला या छिपा हुआ।
प्रोत्साह—संज्ञा पुं. [सं.] अधिक उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहक—संज्ञा पुं. [सं.] उत्साह या उमंग बढ़ानेवाला।
प्रोत्साहन—संज्ञा पुं. [सं.] उत्साह या उमंग बढ़ाना।
प्रोत्साहित—वि. [सं.] जो उत्साह या उमंग से पूर्ण हो।
प्रोषित—वि. [सं.] विदेश गया हुआ, प्रवासी।
प्रोषितपतिका—संज्ञा स्त्री. [सं.] वह नायिका जो पति के विदेश जाने से उसके विरह में दुखी हो।
प्रोषितभार्य—संज्ञा पुं. [सं.] वह नायक जो नायिका के विदेश जाने से उसके विरह में दुखी हो।
प्रौढ़—वि. [सं.] (१) खूब बढ़ा हुआ। (२) जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। (३) पुष्ट, दृढ़। (४) गंभीर, गूढ़। (५) पुराना। (६) चतुर, निपुण।
प्रौढ़ता—संज्ञा स्त्री. [सं.] प्रौढ़ होने का भाव।
प्रौढ़त्व—संज्ञा पुं. [सं.] प्रौढ़ होने का भाव।
प्रौढ़ा—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) स्त्री जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। (२) काम-कला-निपुण नायिका।
प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा पुं. [सं.] एक काव्यालंकार।
प्लक्ष, प्लच्छ—संज्ञा पुं. [सं. प्लक्ष] सात कल्पित द्वीपों मे एक। उ.—जम्बू, प्लच्छ, क्रौंच, सराक साल्मलि, कुस, पुष्कर भरपूर—सारा. ३४।
प्लावन—संज्ञा पुं. [सं.] जल की बाढ़ या बहिया।
प्लीहा—संज्ञा स्त्री. [सं. प्लीहन्] पेट की तिल्ली।
प्लुत—संज्ञा पुं. [सं.] (१) टेढ़ी चाल। (२) तीन मात्राओं का।

—फ—

फ—देवनागरी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
फंका—संज्ञा पुं [हिं. फाँकना] (१) कोई सूखा महीन चूर्ण लेकर फाँकने की क्रिया। (२) चूर्ण की एक बार मे फाँकी जानेवाली मात्रा। (३) टुकड़ा, कतरा।
फकी—संज्ञा स्त्री. [हि. फका] (१) फाँकने की क्रिया। (२) चूर्ण की मात्रा जो एक बार में फाँकी जाय।
फंग, फँग—संज्ञा पुं. [सं. बंध] (१) फंदा, बधन। उ.—(क) सदा जाहु चोरटी भई, आजु परी फँग मोर—१०२३। (ख) दूरि करौ लँगराई वाकी, मेरे फग जो परिहै—१२६४। (ग) अब तो स्याम परे फँग मेरे सूधे काहे न बोलत—१५१०। (घ) चतुर काम फँग परे कन्हाई अबधौं इनहिं बुझावै को री—१५६३। (ङ) मति कोई प्रीति के फंग परै—२८०८। (२) प्रीति या अनुराग का बधन। उ.—(क) रैनि कहूँ फँग परे कन्हाई कहति सबै करि दौर—२०६०। (ख) कीधौं कतहूँ रमि रहे, फँग परे पराए—२१५६।
फंद—संज्ञा पुं. [सं. बंध, हिं. फंदा] (१) बंध, बंधन। उ.—(क) हमैं नन्दनन्दन मोल लिये। जम के फंद काटि मुकराये, अभय अजाद किये।—१-१७१। (ख) काटौ न फंद मों अन्ध के अब विलंब कारन कवन—१-१५०। (ग) त्यागे भ्रम-फंद द्वंद निरखि के मुखारबिंद सूरदास अति अनंद मेटे दुख भारे। (२) रस्सी या बाल का फंदा, जाल, फाँस। उ.—(क) माधौ जी, मन सबही बिधि पोच।·····लुबध्यौ स्वाद मीन-आमिष ज्यौं, अवलोक्यौ नहिं फंद—१-१०२। (ख) हरि-पद-कमल को मकरन्द। मलिन मति मन मधुप परिहरि बिषय नीर-रस फंद। (ग) मनहुँ काम रचि फंद बनाए कारन नन्दकुमार—१०७६। (३) छल, धोखा। (४) भेद, रहस्य। (५) दुख, कष्ट। (६) नथ, बाली आदि की गूँज जिसमें काँटी फँसायी जाती है।
फंदत—क्रि. अ. [हिं. फंदना] फंदे में पड़ता है। उ.—चारौ कपट पाछ ज्यों फंदत—१०४२।
फंदन—संज्ञा पुं. बहु. सवि. [सं. बंध, हिं. फंदा] बंध, बंधन या फदे में। उ.—(क) आरतिवंत सुनत गज-क्रंदन, फंदन काटि छुड़ायौ—१-१८८। (ख) कमल मध्य मनु द्वै खग खंजन बँधे आइ उड़ि फंदन—४७६।
फंदना—क्रि. अ. [हि. फंदा] फंदे में पड़ना, फँसना। क्रि. स. [हिं. फाँदना] लाँघना, उल्लंघन करना।

फंदरा—संज्ञा पुं. [हिं. फंदा] **फंदा।**

फंदवार—वि. [हिं. फंदा] **फंदा लगानेवाला।**

फंदा—संज्ञा पुं. [सं. पाश या बंध] (१) **रस्सी, डोरी आदि का घेरा जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो, फनी, फाँद।** (२) **फाँस, जाल।** उ.—फंदा फाँसि कमान बान सों काहू देख्यो डारत मारी।

मुहा०—फंदा लगना—**धोखे में फँस जाना।** फंदा लगाना— (१) **फँसाने के लिए जाल फैलाना।** (२) **अपनी चाल में फँसाने का प्रयत्न करना।** फंदे में पड़ना। (१) **जाल मे फँसना।** (२) **किसी के वश में होना।**

फँदाई—संज्ञा पुं. [हिं. फंदा] **पास, फाँस, जाल।** उ.—मोह्यौ जाइ कनक-कामिनि-रस, ममता, मोह बढाई। जिह्वा-स्वाद मीन ज्यों उरझ्यौ सूझी नहीं फँदाई—१-१४७।

फँदाना—क्रि. स. [हिं. फंदना] **जाल में फँसाना।**

क्रि. स. [हिं फंदन] **कुदाना, उछालना।**

फँकाना—क्रि. अ. [अनु.] **हकलाना।**

फँसना—क्रि. स. [हिं. फाँस] (१) **बंधन या फदे में पड़ना।** (२) **उलझना, अटकना।**

मुहा०—किसी से फँसना—**किसी से वासनायुक्त प्रेम होना।** बुरा फँसना।—**विपत्ति या झझट में पड़ना।**

फँसरी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश, हिं. फँसना या फंदा] **फँदा, पाश, बंधन।** उ.—सूरदास तैं कछू सरी नहि, परी काल-फँसरी—१-७१।

फँसाना—क्रि. स. [हिं. फँसाना] (१) **बंधन या फंदे में अटका लेना।** (२) **उलझाना, अटकाना।** (३) **अपने वश में करना।**

फँसिहारा—वि. [हिं. फाँस] **फँसा लेनेवाला।**

फँसिहारिनि—वि. स्त्री. [हि. फँसिहारा] **फँसानेवाली।** उ.—फँसिहारिनि बटपारिनि हम भईं आपुन भये सुधर्मा भारी—११६०।

फक—वि. [सं. स्फटिक] (१) **सफेद।** (२) **बदरंग।**

मुहा०—चेहरा या रंग फक हो (पड़) जाना—**घबरा जाना।**

फकड़ी—संज्ञा स्त्री. [हि. फक] **दुर्दशा, दुर्गति।**

फकत—वि. [अ. फ़क़त] (१) **बस।** (२) **केवल।**

फकीर—संज्ञा [अ. फकीर] (१) **भिखमंगा, साधु।** (२) **साधु, संन्यासी।** (३) **ऐसा निर्धन जिसके पास कुछ न हो।**

फकीरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फकीर] (१) **भिखमंगापन।** (२) **संन्यास, साधुता।** (३) **निर्धनता, गरीबी।**

फखर—संज्ञा पुं. [फा. फख्र] **गर्व, अभिमान।**

फग—संज्ञा पुं [हि. फंग] (१) **बंधन।**(२) **अनुराग।**

फगुआ—संज्ञा पुं [हिं. फागुन] (१) **होली।** (२) **फागुन का आमोद-प्रमोद, रंग छिड़कना, गाली गाना आदि।** (३) **फागुन के अश्लील गीत।** (४) **फगुआ खेलने के उपलक्ष मे दिया जानेवाला उपहार।** उ.—(क) अब काहे दुरि रहे साँवरे ढोटा फगुआ देहु हमार—२४०४। (ख) सूरदास प्रभु फगुआ दीजै चिरजीवौ राधा बर-जोरी—२८६४।

फगुआना—क्रि. अ. [हिं. फगुआ] **फागुन में रंग छिड़कना और अश्लील गीत गाकर आनद मनाना।**

फगुनहट—संज्ञा स्त्री. [हि. फागुन] **फागुन की वर्षा।**

फगुहरा, फगुहारा—संज्ञा पुं. [हि. फागुन+हारा] **फागुन का उत्सव मनाने, रंग खेलने और गीत गानेवाला।**

फजर—संज्ञा स्त्री. [अ.] **सबेरा, प्रातःकाल।**

फजल—संज्ञा स्त्री. [अ.] **कृपा, अनुग्रह।**

फजीहत—संज्ञा स्त्री. [अ.] **दुर्दशा, दुर्गति।**

फजूल—वि. [अ. फ़ुज़ूल] **व्यर्थ, बेकार।**

फट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **फैली और पतली चीज के हिलने, झटकने या गिरने का शब्द।**

मुहा०—फट से—**झट, तुरंत।**

फटक—संज्ञा पुं. [हिं. फटकना] **सूप जिसमें रखकर अनाज साफ किया जाय।** उ.—मूँग-मसूर उरद चनदारी। कनक-फटक धरि फटकि पछारी—३९६।

संज्ञा पुं. [सं स्फटिक, पा० फटिक] **स्फटिक।**

क्रि. वि.—**झट, तुरंत, तत्क्षण।**

फटकत—क्रि. स. [हि. फटकना] (१) **फटफटाता है, 'फट-फट' शब्द करता है।** उ.—फटकत स्रवन स्वान द्वारे पर, गररी करत लराई। माथे पर ह्वै काग उड़ान्यो,

कुसगुन बहुतक पाई—५४१ । (२) **सूप से फटक कर अनाज साफ करता है** । उ.—झूठी बात तुसी सी बिन कन फटकत हाथ न आवै—३२८७ ।

फटकन—संज्ञा स्त्री. [हि. फटकना] **महीन या मिला हुआ अनाज और कूड़ा जो फटकने से बच जाय ।**

क्रि. स.—**फेंकना, चलाना, मारना ।**

प्र०—फटकन लग्यो—**मारने लगा ।** उ.—बहुरि तरु लेहि पाषान फटकन लग्यौ हल मुसल करन परहार बाँके—१० उ०-४५ ।

फटकना—क्रि. स. [अनु. फट] (१) **फटफटाना, फटफट करना** । (२) **झटकना, पटकना, फेंकना** । (३) **फेंककर मारना** । (४) **सूप से फटककर साफ करना** ।

मुहा०—फटकना-पछोरना—(१) **सूप से फटककर साफ करना** । (२) **जांचना-परखना** ।

(५) **रुई आदि को फटके से धुनना ।**

क्रि. अ. [अनु.] (१) **जाना, पहुचाना** । (२) **दूर होना** । (३) **तड़फड़ाना** । (४) **हाथ-पैर मारना** ।

फटका—संज्ञा पुं. [अनु] **रुई धुनने की धुनकी** ।

फटकाई—क्रि. स. [हिं. फटकाना] **फेंकी, दूर की** । उ.—मोकों जुरि मारन जब धाई तबहि दीन्ही गेंडुरि फटकाई ।

फटकाना—क्रि. स. [हि. फटकना] (१) **फटकने का काम कराना** । (२) **फेंक देना** ।

फटकार—संज्ञा स्त्री. [हि फटकारना] **झिड़की, दुतकार** ।

फटकारना—क्रि. स. [अनु.] (१) **फेंक कर मारना** । (२) **झटका देकर हिलाना** । (३) **लेना, प्राप्त करना** । (४) **पटक-पटक कर धोना** । (५) **दूर फेंकना** । (६) **हटाना, अलग करना** । (७) **कड़ी और खरी बातें करना** ।

फटकारी—क्रि. स. [हिं. फटकारना] **फेंक दी** । उ.—(क) ग्रींव मरोरि दियौ कागासुर मेरैं ढिग फटकारी—१०-६० । (ख) जमुना दह गेंडुरि फटकारी फोरी सिर की गगरी ।

फटकि—क्रि. स. [हिं. फटकना] (१) **सूप पर फटक कर साफ करके, कूड़ा-कर्कट निकालकर** ।

मुहा०—फटकि पछोरी—**सूप पर फटक कर साफ की है** । उ.—मूँग, मसूर, उरद, चनदारी । कनक-फटक धरि फटकि पछोरी—३९६ । फटकि पछोरे—**जाँच या परख कर** । उ.—तुम मधुकर निर्गुन निज नीके देखे फटकि पछोरे—३१७६ । फटकि पिछोर्यौ—**छान-छूनकर या खोज-खाजकर गवाँ दी** । उ.—नाच कछ्यौ, अब घूघट छोर्यौ, लोक-लाज सब फटकि पिछोर्यौ—१२०१ ।

(२) **फटफटाकर** । उ.—बिषधर झटकी पूँछ, फटकि सहसौ फन काढौ—५६ ।

(३) **फेंककर, चलाकर** । उ.—असुर गजरूढ ह्वै गदा मारे फटकि स्याम अग लागि सो गिरे ऐसे—१० उ०-३१ ।

फटके—क्रि. अ. [हिं. फटकना] (१) **आये, लौटे** । उ.—मिले जाइ हरदी चूना ज्यो फिरि न सूर फटके—पृ० ३३६ (५२) । (२) **दूर हुए, अलग हो गये** । उ.—ललित त्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसो तोरि—पृ० ३२२ (१४) ।

फटकै—क्रि. स. [हि. फटकना] **फटकता है** ।

प्र०—भुस फटकै—**निरर्थक या मूर्खता का प्रयास करता है** । उ.—सूर स्याम तजि को भुस फटकै मधुप तुम्हारैं हेत—३२५६ ।

फटक्यौ—क्रि. स. [हिं. फटकना] **फटका, झटका, फेंका** । उ.—(क) कंठ चाँपि बहु बार फिरायौ, गहि फटक्यौ, नृप पास पर्यौ—१०-५६ । (ख) नेक फटक्यौ लात, सब्द भयौ आघात, गिर्यौ भहरात, सकटा सँहार्यौ ।

फटत—क्रि. अ. [हि. फटना] **फटता है, चिरता है, टूटता है** । उ.—चटचटात अँग फटत हैं, राखु राखु प्रभु मोहिं—५८६ ।

फटना—क्रि. अ. [हि. फाड़ना] (१) **चिरना, खंडित होना, टूटना** ।

मुहा०—छाती फटना- **बहुत दुख होना** । चित्त या मन फटना—**सबंध रखने को जी न चाहना** ।

(२) **झटका लगने से अलग होना** । (३) **छिन्न-भिन्न हो जाना** । (४) । **अलग या पृथक् होना**, (५) **पानी और सार भाग अलग होना** । (६) **बहुत अधिक प्राप्त हो जाना** ।

मुहा०—फट पड़ना—**अचानक आ जाना** ।

(८) **बहुत अधिक पीड़ा होना** ।

फटफट—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **फटफट होना।** (२) **बकवाद।**

फटफटाना—क्रि. स. [अनु.] (१) **बकवाद करना।** (२) **फड़फड़ाना।** (३) **इधर-उधर घूमना।** (४) **हाथ-पैर मारना।**

क्रि. अ.—**फटफट शब्द होना।**

फटा—संज्ञा पुं. [हिं. फटना] **छेद, छिद्र।**

फटि—क्रि. अ. [हि. फटना] (१) **फाड़कर, छिन्न-भिन्न, करके।** उ.—मनहुँ मथत सुर सिंधु, फेन फटि, दयौ दिखाई पूरन चंद—१०-२०४। (२) **चिरकर, फटकर।** उ.—फटि तब खभ भयौ द्वै फारि— ७-२१।

फटिक—संज्ञा पुं. [सं. स्फटिक, पा. फटिक] **एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर, बिल्लौर।** उ.—(क) ज्यौं गज फटिक सिला मैं देखत, दसननि डारत हति—१-३००। (ख) ऐसे कहत गए अपने पुर सबहिं बिलच्छण देख्यौ। मणिमय महल फटिक गोपुर लखिौं कनक भूमि अवरेख्यौ—(२) **संगमरमर।**

फटिकाई—क्रि. स. [हिं. फटकाना] **फेंककर।** उ.—मोक ज़ुरि मारन जब आई तब दीनी गेंडुरि फटिकाई—८५६।

फट्यो—क्रि. अ. [हिं. फटना] **टूक-टूक हुआ।** उ.—यह सब दोष हमहि लागत है बिछुरत फट्यौ न हियो—२६६२।

फड़—संज्ञा स्त्री. [सं. पण] (१) **जुए का दाँव।** (२) **जुए का अड्डा।** (३) **माल खरीदने-बेचने का स्थान।** (४) **पक्ष, दल।** (५) **विवाह में वह अवसर जब लेन-देन चुकता हो।**

फड़क—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **फड़कने की क्रिया या भाव।**

मुहा०—फड़क उठना—**उमग मे आना।** फड़क उठना (जाना)—**मुग्ध हो जाना।**

फड़कन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फड़कना] (१). **फड़फड़ाहट।** (२) **धड़कन।** (३) **लालसा, उत्सुकता।**

वि.—(१) **तेज, चंचल।** (२) **भड़कनेवाला।**

फड़कना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **फड़फड़ाना।** (२) **अंग या शरीर में गति या स्फुरण होना** (३) **हिलना-डोलना।**

मुहा०—बोटी बोटी फड़कना—(१) **बहुत चंचलता होना।** (२) **बड़ी उमंग होना।**

(४) **घबराना, व्याकुल होना।** (५) **पक्ष हिलना।**

फड़काना—क्रि. स. [हि. फड़कना] (१) **हिलाना।** (२) **उमग दिलाना।**

फड़फड़ाना—क्रि. स. [अनु.] **फड़फड़ करना।**

क्रि. अ.—(१) **फड़फड़ होना।** (२) **घबराना, तड़पना।** (३) **उमग में होना, उत्सुक होना।**

फड़ुआ, फड़हा—संज्ञा पु. [हिं. फावड़ा] **फावड़ा।**

फड़ालना—क्रि. स. [सं. स्फरण] **उलटना पलटना।**

फण—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **साँप का फन।** (२) **फदा।**

फणकर, फणधर—संज्ञा पुं. [सं.] **साँप।**

फणिक—संज्ञा पु. [सं. फणी] **साँप, नाग।**

फण द्र—संज्ञा पु. [सं.] (१) **शेषनाग।** (२) **वासुकि।**

फणी—संज्ञा पुं. [सं. फणिन्] **साँप।**

फणीश—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **शेषनाग।** (२) **वासुकि।**

फतवा—संज्ञा पुं. [अ. फ़तवा] **आचार्य की धर्म-व्यवस्था।**

फतह—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **विजय।** (२) **सफलता।**

फतूह—संज्ञा स्त्री. [हि. फतह का बहु.] (१) **विजय।** (२) **लूट का माल।**

फतूही—संज्ञा स्त्री. [अ.] **एक तरह की सदरी।**

फते, फतेह—संज्ञा स्त्री. [हिं. फतह] **विजय, जीत।**

फदकना—क्रि. अ. [अनु.] **'फदफद' करना।**

फन—संज्ञा पुं. [सं. फण] **साँप का फण।** उ.—भूमि अति डगमगी, जोगिनी सुनि जगी, सहस फन सेस कौ सीस काँप्यौ—६-१०६।

मुहा०—फन पीटना—**बहुत हाथ पैर मारना।**

संज्ञा पुं. [फा.] (१) **गुण।** (२) **विद्या।** (३) **कला, दस्तकारी।** (४) **छलने का ढग।**

फनकना—क्रि. अ. [अनु.] **फनफन' करना, फनफनाना।**

फनकार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **'फनफन' होने की ध्वनि।**

फनगना—क्रि. अ. [हि. फुनगी] **अकुर निकलना, कल्ला फूटना।**

फनना—क्रि. अ. [हिं. फानना] **कार्यारंभ होना।**

फनफनाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **'फनफन' करना।** (२) **चंचलता से इधर-उधर हिलना-डोलना।**

फनपति—संज्ञा पुं. [सं. फणि+पति=स्वामी] (१) **शेषनाग**। (२) **वासुकि**।

फनस—संज्ञा पुं. [सं. पनस, प्रा. फनस] **कटहल**।

फनिग—संज्ञा पुं. [हि. फणि+इंग] **साँप**।

फनिगन—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. फनिंग] **साँप**। उ.—कोकिल कीर कपोल किसलता हाटक हंस फनिगन की।

फनि—संज्ञा पु. [सं. फणि] (१) **नाग**। (२) **कालियनाग**। उ.—सहसौ फन फनि फुंकरै, नैकु न तिन्है बिकार—५८९।

फनिक, फनिग—संज्ञा पु. [सं. फणिक] **साँप, सर्प**। उ.—नील पाट पिरोइ मनि-गन, फनिग धोखैं जाइ—१०-१७०।

फनिधर—संज्ञा पुं. [सं. फणिधर] **साँप**।

फनिपति—संज्ञा पु. [सं. फणिपति] (१) **शेष**। (२) **वासुकि**।

फनियाला—संज्ञा पु. [हिं. फणि+हि. इयाला] **साँप**।

फनिराज—संज्ञा पु. [सं. फणिराज] (१) **शेषनाग**। (२) **वासुकिनाग**।

फनींद्र—संज्ञा पुं. [सं. फणीन्द्र] (१) **शेषनाग**। उ.—जे नख-चन्द्र फनींद्र ह्रदय ते एकौ निमिष न टारत—१३४२। (२) **वासुकिनाग**।

फनी—संज्ञा पुं. [हिं. फणा] **शेषनाग**। उ.—कच्छप अध आसन अनूप अति, डाँड़ी सहसफनी—२-२८।

फफदना—क्रि. अ. [अनु.] **बढ़ना, फैलना**।

फफसा—वि. [सं. फुप्फुस] (१) **पोला**। (२) **स्वादहीन**।

फफूँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुबती] **साड़ी-बंधन, नीबी**।

संज्ञा स्त्री. [देश० भुकड़ी] **एक तरह की सफेद काई**।

फफोला—संज्ञा पु. [सं. प्रस्फोट] **छाला, झलका**।

मुहा०—दिल का फफोला [के फफोले] फूटना—**जलन या क्रोध प्रकट होना**। दिल का फफोला [के फफोले] फोड़ना—**जलन या क्रोध प्रकट करना**।

फबकना—क्रि. अ. [अनु.] **फैलना, बढ़ना**।

फबति—क्रि. अ. [हिं. फबना] **भली लगती है**। उ.—फागुन में तो लखत न कोऊ फबति अचगरी भारी—२४२०।

फबती—संज्ञा स्त्री. [हिं. फबना] (१) **सारपूर्ण और समयानुकूल कथन**। (२) **व्यंग्य, चुटकी**।

मुहा०—फबती उड़ाना—**हँसी उड़ाना**। फबती कसना (कहना)—**हँसी उड़ाते हुए चुटकी लेना या व्यग्य करना**।

क्रि. अ. [हि. फबना] **शोभा देती है**। उ.—सदा चतुरई फबती नाहीं अति ही निझरि रही हौ—१५२७।

फबन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फबना] **शोभा, छवि, सुंदरता**।

फबना—क्रि. अ. [सं. प्रभवन, प्रा. पभवन] **सुंदर या भला जान पड़ना, शोभा देना, सोहना**।

फबाना—क्रि स. [हि फबना] **ऐसी जगह स्थापित करना या रखना कि सुंदर या भला जान पड़े**।

फबावत—क्रि. स. [हि. फबाना] **भला जान पड़ता है**। उ.—कहाँ साच मे खोवत करते झूठे कहाँ फबावत।

फबि—संज्ञा स्त्री. [हि. फबना] **छबि, शोभा, सुंदरता**।

क्रि. अ. [हिं. फबना] **शोभित है**। उ.—फबि रही मोर चन्द्रिका माथे छवि की उठन तरंग—१३५७।

फबी—क्रि. अ. [हिं. फबना] **भली लगी**। उ.—तब उलटी-पलटी फबी जब सिसु रहे कन्हाई—६१०।

फबीला—वि. [हिं. फबि+ईला] **सुंदर, शोभा देनेवाला**।

फर—संज्ञा पुं. [हि. फल] (१) **वृक्ष का फल**। उ.—उचटत अति अगार, फुटत फर, झपट लपट कराल—६१५। (२) **डोंड़ी**। उ.—उड़ियै उड़ी फिरति नैननि सँग, फर फूटें ज्यो आक रुई—१४३३। (३) **मुकाबला, सामना**। (४) **बिछौना**।

फरक—संज्ञा स्त्री. [हि. फड़क] (१) **फड़कने का भाव या क्रिया**। (२) **चपलता, चचलता**।

क्रि. अ. [हिं. फड़कना] **फड़कती (है)**। उ.—बातन न धरति कान, तानति हैं भौंह-बान, तऊ न चलति बाम, अँखियाँ फरकि रही—२२३६।

संज्ञा पुं. [अ. फ़र्क़] (१) **पृथकता**। (२) **दूरी**।

मुहा०—फरक फरक होना—**'हटो-बचो' होना**।

(३) **भेद, अंतर**। (४) **परायापन**। (५) **कमी**।

फरकत—क्रि. अ. [हिं. फड़कना] **फड़कता है**। उ.—कुच भुज अधर नयन फरकत हैं, बिनहिं बात अंचल ध्वज डोली।

फरकन—संज्ञा पुं. [हिं. फड़कना] (१) फड़कने की क्रिया या भाव, फड़क। (२) चपलता, चंचलता।

फरकना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण] (१) अंग या शरीर फड़कना। (२) उमड़ना, स्फुरित होना। (३) उड़ना।

क्रि. अ. [हिं. फरक] अलग या पृथक् होना।

फरका—संज्ञा पुं. [सं. फलक] (१) छप्पर जो अलग छाकर बँडेर पर चढ़ाया जाय। (२) टट्टर जो द्वार पर लगाया जाता है।

फरकाइ—क्रि. स. [हिं. फड़काना] अंग या शरीर फड़काकर। उ.—अंग फरकाइ अलप-मुसुकाने—१०-४६।

फरकाना—क्रि. स. [हिं. फड़काना] (१) अंग या शरीर हिलाना-डुलाना या संचालित करना। (२) बार-बार हिलाना, फड़फड़ाना।

क्रि. स. [हिं. फरक] अलग करना।

फरकावै—क्रि. स. [हिं. फड़काना] फड़काते हैं, हिलाते हैं, संचालित करते हैं। उ.—कबहु पलक हरि मूँदि लेत है, कबहुँ अधर फरकावैं—१०-४३।

फरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फरक] बाँस की तीली जिसमें लासा लगा कर पक्षी फँसाया जाता है।

फरके—क्रि. अ. [हिं. फड़कना] (शरीर के अवयव का सहसा) फड़कने लगे, उड़ने या फड़फड़ाने लगे। उ.—इतनौ कहत नैन उर फरके, सगुन जनायौ अंग—९-८३।

संज्ञा पुं. [हिं. फरका] द्वार का टट्टर। उ.—घर घर केरी फरके खोलैं—२४३८।

फरकौ—संज्ञा पुं. [हिं. फरका] द्वार का टट्टर। उ.—नव लख धेनु दुहत है नित प्रति, बड़ो नाम है नन्द महर कौ। ताके पूत कहावत हौ तुम, चोरी करत उघारत फरकौ—१०-३३३।

फरचा—वि. [सं. स्पृश्य, प्रा. फरस्स] (१) जो जूठा न हो, शुद्ध। (२) साफ-सुथरा, स्वच्छ।

फरचाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. फरचा] (१) शुद्धता (२) स्वच्छता।

फरचाना—क्रि. स. [हिं. फरचा] शुद्ध या साफ करना।

फरजद, फरजिंद—संज्ञा पुं. [फा.] पुत्र, बेटा।

फरजी—संज्ञा पुं. [फा.] शतरंज का एक मोहरा।

वि.—नकली, बनावटी, जो असली न हो।

फरद—संज्ञा स्त्री. [अ. फर्द] (१) सूची, तालिका। उ.—माँडि माँडि खरिहान क्रोध कौ, पोता-भजन भरावै। बट्टा काटि कसूर भरम कौ, फरद तले लै डारै—१-१४२। (२) कपड़े का पल्ला। (३) रजाई आदि का पल्ला।

वि.—बेजोड़, अनुपम।

फरना—क्रि. अ. [सं. फल] फलना।

फरनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. फल] फलों से युक्त। उ.—जिनि जायौ ऐसौ पूत, सब सुख-फरनि फरी—१०-२४।

फरफंद—संज्ञा पुं. [अनु. फर + हिं. फंदा] (१) छल-कपट, दाँव पेच। (२) नखरा, चोचला।

फरफर—संज्ञा पुं. [अनु.] उड़ने-फड़कने का शब्द।

फरफराना—क्रि. अ. [अनु. फरफर] फड़फड़ाना।

क्रि. स.—(१) फड़फड़ करना। (२ फड़फड़ाना।

फरफराने—क्रि. अ. [हिं. फड़फड़ाना] तड़फड़ाये। उ.—कंस के प्रान भयभीत पिंजरा जैसे नव बिहंगम तैसे मरत फरफराने—२५६६।

फरफुन्दा—संज्ञा पुं. [अनु. फरफर] फतिंगा, कीड़ा।

फरमाँबरदार—वि. [फा.] आज्ञाकारी।

फरमाइश—संज्ञा स्त्री. [फा.] आज्ञा, इच्छा।

फरमाइशी—वि. [फा.] आज्ञा से तैयार।

फरमान—संज्ञा पुं. [फा.] राजकीय आज्ञापत्र।

फरमाना—क्रि. स. [फा.] कहना, आज्ञा देना।

फरश—संज्ञा पुं. [अ.] (१) बिछाने का वस्त्र, बिछावन। (२) समतल भूमि। (३) गच।

फरशबंद—वि. [फा.] जहाँ फरश बना हो।

फरशी—संज्ञा स्त्री. [फा.] गुड़गुड़ी।

फरसा—संज्ञा पुं. [सं. परशु] एक तरह की कुल्हाड़ी।

फरहर—वि. [सं. स्फार, प्रा. फार] (१) अलग-अलग। (२) साफ, स्पष्ट। (३) निर्मल। (४) प्रसन्न।

फरहरना—क्रि. अ. [अनु. फरहर] (१) फरकना, फरफराना। (२) उड़ना, फहराना।

फरहरा—संज्ञा पुं. [हिं. फहराना] झंडा, पताका।

वि. [हिं. फरहर] (१) स्पष्ट। (२) शुद्ध। (३) प्रसन्न।

फरहरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फल+हरा] फल।

फरा—संज्ञा पुं. [देश.] एक प्रकार का व्यंजन।

फराए—क्रि. स. [हि. फलना] फलाये, फल उत्पन्न किये, फल लगाये। उ.—सूर. स्याम जुवतिनि व्रत पूरन, कौ फल डारनि कदम फराए—७८४।

फराक—संज्ञा पुं. [फा फराख] मैदान।

वि.—लंबा चौड़ा, विस्तृत।

फराकत—वि. [फा. फराख] लंबा चौड़ा, विस्तृत।

संज्ञा स्त्री. [अ. फरागत] (१) छुट्टी। (२) निश्चितता।

फरामोश—वि. [फा.] भूला हुआ, विस्मृत।

फरार—वि. [अ.] जो भाग गया हो।

फरिका—संज्ञा पुं. [हि. फरका] (१) अलग छाया गया छप्पर। (२) द्वार का टट्टर।

फरिकै—संज्ञा पुं. सवि. [हिं. फरका] द्वार के टट्टर को। उ.—लरत निकसी सबै तोरि फरिकै—पृ. ३३६(९०)।

फरिया—संज्ञा स्त्री. [हि. फरना] एक प्रकार का लहँगा-नुमा कपड़ा जो सामने सिला नहीं रहता और जिसे स्त्रियाँ और लड़कियाँ कमर में बाँधती हैं। उ.—(क) सारी चीरि नई फरिया लै, अपने हाथ बनाइ। अंचल सौं मुख पोंछि अंग सब, आपुहि लै पहिराइ—७०४। (ख) नील बसन फरिया कटि पहिरे, बेनी पीठ रुचिर झकझोरी।

फरियाद—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) शिकायत। (२) प्रार्थना।

फरियादी—वि. [फा.] फरियाद करनेवाला।

फरियाना—क्रि. स. [सं. फलीकरण] (१) भूसी आदि साफ करना। (२) साफ करना। (३) निपटाना।

क्रि. अ.—(१) छँटकर अलग होना। (२) साफ होना (३) तय होना। (४) दिखायी पड़ना।

फरिश्ता—संज्ञा पुं. [फा.] (१) देवदूत। (२) देवता।

फरी—क्रि. अ. [हिं. फलना] फल से युक्त हुई, फली। उ.—जिनि जायौ ऐसौ पूत, सब सुख-फरनि फरी—१०-२४।

संज्ञा स्त्री. [हिं. फली] फली। उ.—पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१।

फरीक—संज्ञा पुं. [अ.] (१) विपक्षी। (२) तरफदार।

फरुई, फरुही—संज्ञा स्त्री. [हिं. फावड़ा] छोटा फावड़ा।

फरुहरि. फरुहरी—संज्ञा स्त्री. [हि. फुरहरी] कँपकँपी, फुरेरी।

फरेंद, फरेंदा—संज्ञा पुं. [सं. फलेंद] बड़ी जामुन।

फरे—क्रि. अ. [हि. फलना] फले, फलयुक्त हुए। उ.—फूले फरे तरुवर आनँद लहर के—१०-३४।

फरेब—संज्ञा पुं. [फा.] छल-कपट।

फरेरा—संज्ञा पुं. [हिं. फरहरा] पताका, झंडा।

फरेरी—संज्ञा स्त्री. [हि. फल] जंगली फल।

फरै—क्रि. अ. [हिं. फलना] फलता है, फल लगते हैं। उ.—(क) तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहि पाइ—१-२६५। (ख) जंबू बृच्छ कहो क्यों लंपट फल बर अंबु फरै—३३११।

फरोख्त—संज्ञा स्त्री. [फा.] बिक्री, विक्रय।

फर्‌यौ—क्रि. स. [हिं. फलना] फला (है)। उ.—नैन भर व्रत फलहि देखौ, फर्‌यौ है द्रुम डार—७८६।

फर्ज—संज्ञा पुं. [अ. फर्ज़] (१) धर्म-कर्म। (२) कर्तव्य। (३) उत्तरदायित्व। (४) मान लेना, कल्पना।

फ़र्ज़ी—वि. [हि. फर्ज] (१) माना हुआ। (२) नाम मात्र का।

फर्द—संज्ञा स्त्री. [फा. फर्द] (१) सूची। (२) रजाई का पल्ला।

फर्राटा—संज्ञा पुं. [अनु.] वेग, तेजी।

मुहा०—फर्राटा भरना (मारना)—तेजी से दौड़ना।

फर्राश—संज्ञा पुं. [अ.] नौकर, सेवक।

फर्राशी—वि. [फा.] फर्राश से संबंधित।

यौ०—फर्राशी पंखा—हाथ का बहुत बड़ा पंखा।

फर्श—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) बिछावन। (२) गच।

फलक—संज्ञा पुं. [फा. फलक] आकाश, अंतरिक्ष।

फल—संज्ञा पुं. [सं.] (१) लताओं और पेड़-पौधों में लगने वाला वह पोषक द्रव्य जिसमें गूदा, रस और बीज आदि रहते हैं और जो फूलों के बाद उत्पन्न होता है। उ.—भिल्लिनि के फल खाए भाव सौं खाटे-मीठे-खारे—१-२५। (२) लाभ। (३) प्रयत्न या क्रिया का परिणाम, नतीजा।

मुहा०—फल चखाना—**मजा चखाना, दंड देना।** फल चखैहौं—**दंड दूँगा, मजा चखाऊँगा।** उ.—यह हित मनै कहत सूरज प्रभु इहि कृतिकौ फल तुरत चखैहौं—७-५। फल देना—**मजा चखाना, दंड देना।** फल देहिगी—**मजा चखाएँगी, दंड देंगी।** उ.—लालन हमहि करे जो हाल उहै फल देहिंगी हो—२४१६। फल पाना—**दंड पाना, मजा चखना।** फल पैहैं—**दंड पायेंगे।** उ.—कितक ब्रज के लोग, रिस करत निहि जोग, गिरि लियो भोग, फल तुरत पैहैं—६४४।

(४) **शुभ अशुभ कर्मों के सुखद-दुखद परिणाम।** उ.—(क) बालक ध्रुव बन करत गहन तप ताहि तुरत फल दैहौ। (ख) जा दिन सत पाहुने आवत। तीरथ कोटि सनान करै फल जैसौ दरसन पावत—२-१७। (ग) सिव-संकर हमकौं फल दीन्हों—७६८। (घ) मुँह मांगे फल जो तुम पावहु तौ तुम मानहु मोहिं—६१५। (५) **गुण, प्रभाव।** (६) **शुभ कर्मों के चार परिणाम-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।** उ.—होइ अटल जगदीस भजन मे सेवा तासु चारि फल पावै। (७) **बदला, प्रतिफल।** (८) **बाण, छुरी आदि का अगला भाग।** (९) **हल का फाल।** (१०) **फलक।** (११) **उद्देश्य-सिद्धि।** (१२) **गणित की क्रिया का परिणाम।**

फलक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **पटल।** (२) **चादर।**
संज्ञा पुं. [अ.] (१) **आकाश।** (२) **स्वर्ग।**

फलकना—क्रि. अ. [अनु.] **छलकना, उमँगना।**

फलका—संज्ञा पुं. [हिं. फोला] **छाला, फफोला।**

फलतः—अव्य. [सं.] **फल या परिणामस्वरूप।**

फलद—वि. [सं.] **फल देनेवाला।**

फलदान—संज्ञा पुं. [हिं. फल+दान] **विवाह की रीति जिसमें धन, मिठाई आदि भेजकर वर को कन्या के लिए निश्चित किया जाता है।**

फलना—क्रि. अ. [हिं फल] (१) **फल से युक्त होना।** (२) **लाभ दायक होना।**

मुहा०—फलना-फूलना—(१) **मनोरथ पूर्ण होना।** (२) **सुखी होना।** (३) **धन-संतान से पूर्ण होना।**

फलयोग—संज्ञा पुं. [सं.] **नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि या फल की प्राप्ति का स्थल।**

फलहार—संज्ञा पुं [सं. फलाहार] **फलों का आहार।**

फलहरी, फलहारी—वि. [सं फलाहार] **जिसमें अनाज न हो।**

फलाँ—वि. [फ़ा. फ़लाँ] **अमुक।**

फलाँग—संज्ञा स्त्री. [सं. प्लवन या प्रलंघन] (१) **कूद, कुदान, चौकड़ी।** उ.—गर्भवती हिरनी तहँ आई। पानी सो पीवन नहि पाई। सुनि कै सिंह भयान अवाज। मारि फलाँग चली सो भाग—५-३। (२) **वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।**

फलाँगना—क्रि. अ. [हिं. फलाँग] **कूदना-फाँदना।**

फलादेश—संज्ञा पुं. [सं.] **(ग्रह आदि का) फल बताना।**

फलाना—क्रि. स. [हिं. फलना] **फलने को प्रवृत्त करना।**
संज्ञा पु. [हिं. फलाँ] **अमुक।**

फलार—संज्ञा पुं. [सं. फलाहार] **फल का आहार।**

फलार्थी—वि. [सं. फलर्थिन्] **फल चाहनेवाला।**

फलाहार—संज्ञा पुं. [सं.] **फलों का ही आहार।**

फलाहारी—वि. [सं. फलाहार] (१) **फल ही खानेवाला।** (२) **जो (भोजन) फलों का हो, अनाज का न हो।**

फलित—वि. [सं.] (१) **फला हुआ।** उ.—फल फलित होत फल-रूप जानै—१-१०४२। (२) **संपन्न, पूर्ण।**

फलिहै—क्रि. स. [हिं. फलाना] **फल देगा।** उ.—विष के बृच्छ बिषहिं बिष फलिहै—१०४२।

फली—संज्ञा स्त्री. [हिं. फल] **पौधों के वे लंबे चिपटे फल जिनमें गूदा-रस न होकर बीज होते हैं।** उ.—फली अगस्त्य करी अमृत सम—२३२१।
क्रि. स. [हिं. फलना] **फल निकले।** उ.—वह रितु अमृत लता सुनि सूरज अब विष फलनि फली—२७३४।

फलीता—संज्ञा पुं [अ. फतीला] **पलीता, बत्ती।**

फलीभूत—वि. [सं.] **फल या लाभदायक।**

फलेंदा, फलेंद्र—संज्ञा पुं. [सं फलेंद्र] **बड़ा जामुन।**

फले—क्रि. अ. [हिं. फलना] **फलीभूत हुए।** उ.—यहै कहत सब जात परस्पर, सुकृत हमारे प्रगट फले—६८३।

फल्यो, फल्यौ—क्रि. अ. [हिं. फलना] **फला, फलीभूत हुआ।**

प्र०—फल्यो बिहाने [प्रात काल]—**कल ही पूजा की थी, प्रातः होते ही उसका फल मिल गया (व्यंग्य)।** उ.—कालिहि पूज्यो फल्यो बिहाने—१०५१।

फसकड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. फँसना+कड़ी] **पालथी।**

फसकना—क्रि. अ. [अनु.] **कुछ कुछ फटना, मसकना।** वि.—**जो जल्दी फट या मसक जाय।**

फसल—संज्ञा स्त्री. [अ. फस्ल] (१) **मौसम, ऋतु।** (२) **समय।** (३) **खेत की उपज।** (४) **अन्न की उपज।**

फसली—वि. [हिं. फसल] **ऋतु-संबंधी।**

फसाद—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **बलवा, विद्रोह।** (२) **उधम, उपद्रव।** (३) **झगड़ा, लड़ाई।** (४) **विवाद।**

फसादी—वि. [फा.] (१) **उपद्रवी।** (२) **झगड़ालू।**

फस्द—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़स्द] **नस काट कर, दूषित रक्त निकालने की क्रिया।**

फहम—संज्ञा स्त्री. [अ.] **समझ, विवेक।**

फहरना—क्रि. अ. [सं. प्रसरण] **उड़ना, फड़फड़ाना।**

फहरनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहरना] **फहरने की क्रिया या भाव।** उ.—न्यौछावर अंचल की फहरनि अर्ध नैन जलधार घनी—१४५६।

फहरात—क्रि. अ. [हिं फहराना] **फहराता है, उड़ता या हिलता है।** उ.—(क) स्वेत छत्र फहरात सीस पर, मनौ लच्छि कौ बध—६-७५। (ख) कमलनैन काँधे पर न्यारो पीत बसन फहरात—२५३६।

फहरान—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहराना] **फहरने की क्रिया।**

फहराना—क्रि. स. [सं. प्रसारण] **उड़ान, हवा मे हिलाना।** क्रि. अ.—**फहरना, हवा मे हिलना।**

फहरानि—संज्ञा स्त्री. [हिं. फहरान] **फहराने की क्रिया या भाव।** उ.—(क) वा पट पीत की फहरानि। कर धरि चक्र चरन की धावनि, नहिं बिसरत वह बानि—१-२७६। (ख) पीत पट फहरानि मानो लहरि उठत अपार—१३५६।

फहरावत—क्रि. स. [हिं. फहराना] **वायु में फड़फड़ाता या उड़ता है।** उ.—आजु हरि धेनु चराए आवत। मोर मुकुट बनमाल बिराजत, पीताम्बर फहरावत—४६३।

फहरावै—क्रि. अ. [हिं. फहरना] **उड़ता या फड़फड़ाता है।** उ.—मोर मुकुट कुंडल बनमाला पीतांबर फहरावै—८४०।

फहरैहैं—क्रि. स. [हिं. फहराना] **उड़ायेंगे।** उ.—सूरदास प्रभु नवल कान्ह वर पीतांबर फहरैहै—१२७७।

फहरैहै—क्रि. अ. [हि फहरना] **फहरेगी, हवा में उड़े या हिलेगी।** उ.—जा दिन कंचनपुर प्रभु ऐहै, बिमल ध्वजा रथ पर फहरैहै—६-८१।

फाँक—संज्ञा स्त्री. [सं. फलक] (१) **कटा हुआ टुकड़ा, खंड।** (२) **टुकड़े में बाँटनेवाली लकीर।**

फाँकड़ा—वि. [देश.] (१) **बाँका-तिरछा।** (२) **मजबूत।**

फाँकना—क्रि. स. [हि. फाँका] **फकी मार कर खाना।** मुहा०—धूल फाँकना—**मारे-मारे घूमना।**

फाँका—संज्ञा पुं. [हि. फेंकना] (१) **फंका।** (२) **एक फंके में आनेवाली वस्तु।**

फाँकी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाँक] **फाँक।**

फाँकौ—संज्ञा स्त्री. [हि. फाँक] **फाँक, टुकड़ा।** उ.—जरासिंधु कौ जोर उघारयौ फारि कियौ द्वै फाँकौ—१-१३३।

फाँगी—संज्ञा स्त्री. [देश०] **एक प्रकार का साग।** उ.—(क) रुचिर लजालु लोनिका थांगी। कढी कृपालु दूसरैं माँगी—३९६। (ख) पोई परवर फाँग फरी चुनि—२३२१।

फाँद—संज्ञा स्त्री. [हिं. फाँदना] **उछाल, कुदान।** संज्ञा स्त्री., पुं. [हिं. फंदा] **फंदा, जाल।**

फाँदना—क्रि. अ. [सं. फणन] **कूदना, उछलना।** क्रि. स.—**लाँघना, डाँकना, नाँघना।** क्रि. स. [हि. फंदा] **फंदे में फँसाना।** क्रि. स. [हिं. फाँनना] **रुई धुनना।**

फाँदा—संज्ञा पुं. [हि. फंदा] **जाल, फंदा।**

फाँदि—क्रि. स. [हि. फंदा] **फंदे में फँसाकर।** उ.—मनो मन्मथ फाँदि फंदनि मीन बिवि तट ल्याइ—१४०५।

फाँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फंदा] **गट्ठा बाँधने की रस्सी।**

फाँफी—संज्ञा स्त्री. [सं. पर्परी] **बहुत महीन झिल्ली।**

फाँस—संज्ञा स्त्री. [सं. पाश, प्रा. फाँस] (१) **पाश, बंधन,**

फंदा, बंध। उ.—(क) मेरी बेर क्यौं रहे सोचि ? काटिकै अव-फाँस पठवहु, ज्यौं दियौ गज मोचि—१-१९९। (ख) सूरदास भगवंत-भजन बिनु, करम-फाँस न कटै—१-२६३। (ग) ए सब त्रय गुन फाँस समान। (२) **किसी को बाँधने या फँसाने का फंदा या जाल**। उ.—(क) ब्रह्म-फाँस उन लई हाथ करि—९-१०४। (ख) हँसि-हँसि नाग-फाँस सर साँधत, बंधन बंधु-समेत बँधायौ—९-१४१। (ग) बरुन फाँस ब्रज-पतिहिं छिन माँहि छुड़ावै।

संज्ञा स्त्री. [सं. पनस] (१) **बाँस या काठ का कड़ा महीन रेशा जो काँटे की तरह चुभ जाता है**।

मुहा०—फाँस चुभना—**चित को खटकने या चुभनेवाली बात होना**। फाँस निकलना—**कष्ट देने वाली चीज का न रह जाना**। फाँस निकालना—**कष्ट देनेवाली चीज को दूर करना**।

(२) **बाँस आदि की पतली तीली या कमानी**।

फाँसना—क्रि. स. [हिं. फाँस] (१) **बंधन मे डालना, जाल में फँसाना**। (२) **धोखे में डालना** (३) **वश में करना**।

फाँसि—संज्ञा स्त्री [सं. पाश] **पाश, बंधन, फंदा**। उ.—(क) भजन-प्रताप नाहिं मै जान्यौ, परयौ मोह की फाँसि—१-१११। (ख) माया मोह लोभ अरु मान। ए सब अवगुण फाँसि समान। (२) **रस्सी जिससे शिकारी फंदा डालते हैं**।

क्रि. स.—[हिं. फाँसना] **फाँस कर, बंधन में डालकर**।

फाँसी—संज्ञा स्त्री. [सं. पाशी] (१) **फाँसने का फंदा, पाश**। उ.—(क) चंचल, चपल, चबाइ, चौपटा लिए मोह की फाँसी—१-१८६। (ख) ताकौ देह-मोह बड़ फाँसी—४-५। (ग) आए ऊधौ फिरि गए आँगन डारि गए गर फाँसी—३०३०। (घ) कीनी प्रीति हमारे ब्रज सो दई प्रेम की फाँसी—३१३३। (२) **फंदा जो दम घोटकर मारने के लिए डाला जाता है**। (३) **प्राणदण्ड देने के लिए डाला जानेवाला फंदा**। (४) **प्राणदण्ड**।

फाका—संज्ञा पुं. [अ. फ़ाकः] **उपवास**।

फाख्ता—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़ाख़्ता] **पंडुक पक्षी**।

फाग, फागु—संज्ञा पुं. [हिं. फागुन] **फागुन मास में मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें लोग एक-दूसरे पर रंग छिड़कते हैं**। उ.—(१) सकुच न करत, फाग सी खेलत, तारी देत, हसत मुख मोरि—१०-३२७। (२) कुबिजा कमल नैन मिलि खेलत बारहमासी फाग—३०९५।

फागुन—संज्ञा पुं. [सं.] **फाल्गुन, माघ के बाद का महीना जिसकी पूर्णिमा को होली जलती है**।

फागुनी—वि. [हिं. फागुन] **फागुन-संबंधी**।

फाजिल—वि. [अ. फ़ाज़िल] (१) **बहुत अधिक**। (२) **विद्वान, पंडित**।

फाटक—संज्ञा पुं. [सं. कपाट] **बड़ा द्वार या दरवाजा**।

संज्ञा पुं. [हिं फटकना] **भूसी या किनकी जो अनाज फटकने से बच जाय, फटकन, पछोड़न**। उ.—फाटक दै कै हाटक माँगत भोरो निपट सुधारो—३३४०।

फाटत—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटता, टूटता या विदीर्ण होता है, भग्न होता है**। उ.—(क) टूटत फन, फाटत तन दुहुँ दिसि, स्याम निहोरौ कीजै—५७९। (ख) निकसि न जात प्रान ए पापी फाटत नही ब्रज की छाती—२८८२।

फाटना—क्रि. अ. [हिं. फटना] **भग्न या विदीर्ण होना**।

फाटि—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटकर**। उ.—दूध फाटि जैसे भयो काँजी कौन स्वाद करि खाइ—३३३४।

फाटी—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फट गयी, विदीर्ण हुई**। उ.—(क) बड़ी बार भई, लोचन उघरे, भरम-जवनिका फाटी—१०-२५४। (ख) सरिता संयम स्वच्छ सलिल जनु फाटी काम कई—२८५३।

फाटे—वि. [हिं. फटना] **फटा हुआ, भग्न, विदीर्ण**। उ.—फूटी चुरी गोद भरि ल्यावैं, फाटे चीर दिखावैं गात—१०-३३२।

फाट्यो, फाटयौ—क्रि. अ. [हिं. फटना] **फटा, छिन्न-भिन्न हुआ, एकत्र न रहा**। उ.—(क) ज्यौं रवि-तेज पाइ दसहूँ दिसि, दोष-कुहर कौ फाटयौ—१-८७। (ख) हरि बिछुरत फाटयो न हियो—२५४५।

फाड़खाऊ—वि. [हिं. फाड़+खाना] (१) **फाड़कर खा जाने वाला**। (२) **क्रोधी, चिड़चिड़ा**। (३) **भयानक**।

फाड़न—संज्ञा स्त्री. [हिं फाड़ना] **फाड़ा हुआ टुकड़ा ।**

फाड़ना—क्रि. स. [सं. स्फाटन] (१) **चीरना, विदीर्ण करना ।** (२) **धज्जियाँ उड़ाना ।** (३) **संधि या जोड़ खोलना ।** (४) **द्रव का पानी और सार अलग करना ।**

फातिहा—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **प्रार्थना ।** (२) **मृतक के लिए चढ़ावा ।**

फानना—क्रि. स. [हिं. फारण] **रुई धुनना ।**

क्रि. स. [सं. उपायन] **काम आरम्भ करना ।**

फानूस—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **बड़ा कंदील ।** (२) **शीशे का कमल या गिलास जिसमें बत्ती जले ।**

फाब—संज्ञा स्त्री. [सं. प्रभा, प्रा पभा] **शोभा ।**

फाबना—क्रि. अ. [हिं. फबना] **शोभा देना ।**

फायदा—संज्ञा पुं. [अ. फ़ायदा] (१) **लाभ ।** (२) **भला परिणाम** (३) **प्रयोजन सिद्ध होना ।**

फार—संज्ञा पुं. [हिं फारना] **खंड, फाल ।**

फारना—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] **चीरना-फाड़ना ।**

फारसी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **फारस देश की भाषा ।**

फारा—संज्ञा पुं. [सं. फाल] **फाँक, फाल टुकड़ा ।**

फारि—क्रि. स. [फाड़ना] (१) **फाड़कर, चीरकर, विदीर्ण करके ।** उ.—(क) खंभ फारि नरसिंह प्रगट है, असुर के प्रान हरे—१-८२ । (ख) चीरि फारि करिहौं भगौहौ सिखनि सिखि लबलेस—३४१३ ।

(२) **खंड खंड करके, धज्जियाँ उड़ाकर ।** उ.—फोरि-फारि, तोरि-तारि, गगन होत गाजैं—९-१३९ ।

संज्ञा पुं. [हिं. फाल] **खंड, टुकड़ा ।** उ.—फटि तब खंभ भयौ है फारि—७-२ ।

फारी—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] (१) **चीरी, फाड़ी ।** उ.—(क) संकट तै प्रहलाद उधार्‌यौ, हिरनाकसिपु-उदर नख फारी—१-२२ । (ख) कबहि गुपाल कंचुकी फारी—७७४ । (२) **चीरकर ।** उ.—कहत प्रहलाद के धारि नरसिंह बपु निकसि आए तुरत खंभ फारी—७-६ ।

फारे—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] **फाड़े, चीरे ।** उ.—हिरन-कसिपु उर फारे हो—१०-१२८ ।

फारै—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] **फाड़ता-चीरता है ।** उ.—हार तोरै चीर फारै, नैन चलै चुराइ—७८० ।

फार्‌यौ—क्रि. स. [हिं. फाड़ना] **फाड़ दिया, चीरा, विदीर्ण किया ।** उ.—जिहिं बल हिरनकसिप उर फार्‌यौ, भए भगत कौं कृपानिधान—१०-१२७ ।

फाल—संज्ञा स्त्री. [सं. फलक] **कटा हुआ, छोटा टुकड़ा ।**

संज्ञा पुं [सं. प्लव] (१) **डग, फलाँग ।**

मुहा०—फाल भरना—**डग भरना ।** फाल बाँधना - **फलाँग या छलाँग मारना ।**

(२) **डग भर का फासला, पैंड ।** उ.—तीन फाल बसुधा सब कीनी सोइ बामन भगवान ।

संज्ञा स्त्री. [सं.] **जमीन खोदने की छड़, कुसी ।**

फालतू—वि. [हिं. फाल+तू] (१) **आवश्यकता या जरूरत से ज्यादा ।** (२) **बेकार, निकम्मा ।**

फालसई—वि. [हिं. फालसा] **फालसे के रंग का, ललाई लिये हल्के ऊदे रंग का ।**

फालसा—संज्ञा पुं. [फा फालसा] **एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने जैसे फल लगते हैं ।**

फालिज—संज्ञा पुं. [अ फालिज] **पक्षाघात रोग ।**

फाल्गुन—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **माघ के बाद का महीना जिसकी पूर्णिमा को होली जलायी जाती है ।** (२) **अर्जुन का एक नाम ।**

फालगुनि—संज्ञा पुं. [सं.] **अर्जुन ।**

फावड़ा—संज्ञा. पुं. [सं. फाल, प्रा. फाड़] **मिट्टी खोदने का एक औजार जो फरसे की तरह का होता है ।**

फाश—वि. [फा पाश] **खुला, प्रकट ।**

फासला—संज्ञा पुं. [अ.] **दूरी, अंतर ।**

फाहिशा—वि. [अ. फाहिशा] **व्यभिचारिणी ।**

फिकर, फिकिर, फिक्र—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़िक्र] (१) **चिंता ।** (२) **ध्यान, विचार ।** (३) **यत्न, उपाय ।**

फिचकुर—संज्ञा पुं [सं. पिच्छ] **मूर्च्छा या बेहोशी में मुँह से निकलनेवाला फेन ।**

फिट—अव्य. [अनु.] **धिक्, छी ।**

फिटकार—संज्ञा पुं. [हिं. फिट+करना] (१) **धिक्कार ।**

मुहा०—मुँह पर फिटकार बरसना- **चेहरा बहुत फीका या उदास होना ।**

(२) **कोसना, बद्दुआ ।** (३) **हलकी मिलावट ।**

फिटटा—वि. [हिं. फिट] **फटकार खाया हुआ, मलिन ।**

फितना—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **उपद्रव** । (२) **उपद्रवी** ।
फितरती—वि. [अ. फितरत] **काँइयाँ, धूर्त** ।
फितूर—संज्ञा पुं. [अ. फुतूर] (१) **खराबी** । (२) **झगड़ा** ।
फिनिया—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कान का एक गहना** ।
फिर—क्रि. वि. [हि. फिरना] (१) **दुबारा, पुनः** ।
यौ०—फिर-फिर—**बार बार, पुनः पुनः** ।
(२) **किसी और समय** । (३) **बाद में** । (४) **तब** ।
मुहा०—फिर क्या है—**तब क्या पूछना है ?**
(५) **आगे बढ़कर, दूरी पर** । (६) **इसके अतिरिक्त** ।
फिरकना—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **नाचना, चक्कर खाना** ।
फिरका—संज्ञा पुं. [अ. फिरका] (१) **जाति** । (२) **पथ** ।
फिरकी—संज्ञा स्त्री. [हिं फिरकना] (१) **वह गोल चीज जो कीली पर घूमती हो** । (२) **लड़को की फिरहरी नामक खिलौना जो नचाया जाता है** । (३) **चकई नामक खिलौना** ।
फिरत—क्रि. अ. [हि. फिरना] (१) **डोलता या घूमता है** । उ.—काल फिरत बिलार तनु धरि, अब घरी तिहि लेत—**१-३११** । (२) **प्रचारित या घोषित होता है** । उ.—बोलत बग निबेत गरजै अति मानो फिरत दोहाई—**२८३६** ।
प्र०—**करत फिरत**—करता-फिरता है । उ.—कहा कृपिन की माया गनिय, करत फिरत अपनी-अपनी—**१-३९** ।
फिरता—संज्ञा पुं. [हिं. फिरना] (१) **वापसी** । (२) **अस्वीकार** ।
वि.—(१) **लौटाया हुआ** । **लौटनेवाला** ।
फिरति—क्रि. अ. स्त्री. [हिं. फिरना] **फिरती है, घूमती है** । उ.—माधौ जू, यह मेरी इक गाइ । ⋯ फिरति बेद-बन-ऊख उखारति, सब दिन अरु सब राति—१-५१ ।
फिरते—क्रि अ. [हि. फिरना] **इधर-उधर घूमते, चलते** । उ.—अपने दीन दास कैं हित लगि, फिरते सँग-सँगही—१-२८३ ।
फिरतौ—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **घूमता, डोलता** ।
प्र०—दिखावत फिरतौ—**दिखाता फिरता** । **उ.**—धर्म-धुजा अन्तर कछु नाहीं, लोक दिखावत फिरतौ—१-२०३ ।
फिरना—क्रि. अ. [हि. फेरना का अक०] (१) **चलना, भ्रमण करना** । (२) **टहलना, सैर करना** । (३) **बार-बार चक्कर खाना** । (४) **ऐंठा मरोड़ा जाना** । (५) **वापस होना, लौटना** । (६) **बिकी चीज का वापस होना** । (७) **मुख या सामना दूसरी ओर घूम जाना, मुड़ना, रुख बदलना** ।
मुहा—किसी ओर फिरना—**झुकना, प्रवृत्त होना** । जी फिरना—**जी हट जाना, उदास या विरक्त होना** ।
(८) **विरुद्ध या विपक्ष में हो जाना** । (९) **बदल जाना, परिवर्तित हो जाना** । (१०) **बात या वचन पर दृढ़ न रहना** । (११) **झुकना, टेढा हो जाना** । (१२) **चारो ओर प्रचारित या घोषित होना** । (१३) **लीपा पोता जाना** । (१४) **स्पर्श किया जाना** ।
फिरवाना—क्रि. स. [हिं. फेरना] **फेरने का काम कराना** ।
क्रि. स. [हिं. फिराना] **फिराने का काम कराना** ।
फिराइ—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) **फिराकर, लौटाकर, अपने वचन को वापस लेकर** । उ.—भक्तबछल श्री जादवराइ । भीषम की परतिज्ञा राखो, अपनो बचन फिराइ—१-२६७ । (२) **ऐंठ या मरोड़कर** । उ.—बृषभ-गंजन मथन-केसी हने पूँछ फिराइ—४६८ ।
फिराई—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) **घुमाकर, फेरकर** । उ.—(क) भृकुटी कुटिल, अरुन अति लोचन, अगिनि-सिखा-मुख कह्यौ फिराई—९-५६ । (ख) नगन त्रिय देखबे जगन नाहिं कह्यो, जानि इह हरि रहे मुख फिराई—१०-३०-३५ । (२) **दूसरी दिशा में चलने की प्रेरणा दी** । उ.—उतही जातहि सखी सहेली मैं ही सबको इतहि फिराई—२०४९ ।
फिराक़—संज्ञा पुं. [अ. फिराक] (१) **चिंता** । (२) **टोह** ।
मुहा.—फिराक में रहना—**खोज मे रहना** ।
फिराना—क्रि. स. [हि. फिरना] (१) **इधर से उधर ले जाना** । (२) **टहलाना, सैर कराना** । (३) **चक्कर या फेरा खिलाना** । (४) **ऐंठना, घुमाना, मरोड़ना** । (५) **लौटाना, पलटाना** । (६ **मुख या सामना दूसरी ओर करना** । (७) **एक ओर जाते हुए को दूसरी ओर**

चलाना। (८) बदल देना। (९) बात या वचन पर दृढ़ न रहने देना।

फिरानो—क्रि. स. [हिं. फिरना] **घुमा, फिरा**। उ.—बहुत जतन करि हौं पचि हारी इतको नहीं फिरानो—पृ. ३२० (६०)।

फिराय—क्रि. स. [हिं. फिराना] **ऐंठ या मरोड़कर**। उ.—उन नहिं मार्‍यौ सम्मुख आयो पकर्‍यो पूछ फिराय।

फिरायो, फिरायौ—क्रि. स. [हिं फिराना] **घुमाया, चक्कर खिलाया**। उ.—(क) कंठ चाँपि बहु बार फिरायो, गहि पटक्यौ, नृप पास पर्‍यौ—१०-५६। (ख) यह ऐसो तुम अतिहि तनक से कैसे भुजन फिरायो—२३६६।

फिरावत—क्रि. स. [हिं. फिराना] (१) **लौटाता है, वापस करता है, विमुख करता है**। उ.—तुम नारायन भक्त कहावत। काहे को तुम मोहि फिरावत।

फिरावति—क्रि. स. [हि. फिराना] (१) **फिराती है**। (२) **घुमाती या नचाती हुई**। उ.—चली पीठि दै दृष्टि फिरावति, अंग-अंग आनन्द रली—७३६।

फिरावन—संज्ञा पुं. [हि. फिराना] **फिराने या लौटाने की क्रिया**। उ.—मंत्री गयौ फिरावन रथ लै, रघुबर फेरि दियौ—९-४६।

फिरि—क्रि. वि. [हिं. फिर, फिरना] (१) **पुनः, फिर, दोबारा**। उ.—(क) दुरबासा अँबरीष सतायौ, सो हरि-सरन गयौ। परतिज्ञा राखी मन-मोहन, फिरि तापै पठयौ—१-३८। (ख) यह औसर कब ह्वैहै फिरिकै पायौ देव मनाई—१०-१८।

यौ०—फिरि फिरि—**पुनः पुनः, बार-बार**। उ.—(क) सूरदास भगवंत-भजन बिनु फिरि फिरि जठर जरै—१-३५। (ख) फिरि फिरि ऐसोई है करत। जैसे प्रेम पतंग दीप सौं पावक हू न डरत—१-५५। (ग) दीन-दयाल सूर हरि भजि लै, यह औसर फिरि नाहीं—१-३१६।

(२) **इसके अनंतर, बाद में, पश्चात, उपरांत**। उ.—सूर पाइ यह समै लाहु लहि, दुर्लभ फिरि संसार—१-६८। (३) **तब, इस पर**। उ.—फल माँगत फिरि जात मुकर ह्वै यह देवन की रीति—१-१७७। (४) **घूमकर, मुँह फेरकर, पलटकर**। उ.—फिरि देखैं तो कुँवर कन्हाई मीजत रुचि सौं पीठि—७३८।

क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **घूमकर, भ्रमण करके**। उ.—(क) कौन कौन तीरथ फिरि आए—१-१८४। (ख) नृप चौरासी लछ फिरि आनौ—४-१२। (२) **लौटकर**। उ.—इहि अंतर अर्जुन फिरि आयौ—१-२८६। (३) **प्रचारित या घोषित होकर**। उ.—लंका फिरि गई राम दुहाई—९-१४०। (४) **पलटकर, मुँह फेरकर**। उ.—खेलन जाहु बाल सब टेरत। यह सुनि कान्ह भए अति आतुर, द्वारे तन फिरि हेरत—१०-२४३।

फिरिबौ—संज्ञा पुं. [हि फिरना] (१) **फिरना, घूमना**। (२) **आवागमन, बार बार जन्म लेना और मरना**। उ.—जिय करि कर्म, जन्म बहु पावैं। फिरत-फिरत बहुतै स्रम आवैं। अरु अजहूँ न कर्म परिहरैं। जातैं याकौ फिरबौ टरै—५-४।

फिरियाद—संज्ञा स्त्री. [अ. फरियाद] **दुहाई, पुकार**।

फिरियादी—वि. [हिं. फिरियाद] **फरियाद करनेवाला**।

फिरियै—क्रि. अ. [हि. फिरना] **लौटिए, वापस आइए**। उ.—बेगि ब्रज को फिरिए नँदराइ—२६५१।

फिरिहरा—संज्ञा स्त्री. [हिं. फिरना+हारा] **नचाने का एक खिलौना**।

फिरिहौं—क्रि. अ. [हि. फिरना] **फिरता रहूँगा, घूमता रहूँगा**। उ.—कब लग फिरिहौ दीन बह्यौ—१-१६२।

फिरी—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **चारों ओर प्रचारित हुई, घोषित हुई**। उ.—गहि सारँग, रन रावन जीत्यौ, लंक बिभीषन फिरी दुहाई—१-२४। (२) **घूमी, ढूँढ़ती रही**। उ.—बहुत फिरी तुम काज कन्हाई—४६२।

फिरे—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **लौटे, पलटे, वापस आये**। उ.—(क) देखि फिरे हरि ग्वाल दुवारै—१०-२७७। (ख) अपने धाम फिरे तब दोऊ जानि भई कछु साँझ। (ग) नैन निरखि अजहूँ न फिरे री—पृ० ३२७। (६०)।

फिरैं—क्रि. अ. बहु. [हिं. फिरना] **फिरते हैं, घूमते हैं**।

उ.—किंकिन नूपुर पाट-पटंबर, मानौं लिये फिरै घर-बार—१-४१।

फिरै—क्रि. अ. [हिं. फिरना] (१) **घूमता है, भ्रमण करता है**। उ.—कौन विरक्त अधिक नारद तैं, निसि दिन भ्रमत फिरै—१-३५। (२) **सैर करती है, विचरती है, टहलती है**। उ.—अकथ कथा याकी कछू, कहत नहीं कहि आई (हो)। छैलनि के सँग यौं फिरै, जैसै तनु सँग छाई (हो)—१-४४।

फिरैगौ—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **फिरेगा, इधर-उधर डोलेगा, घूमेगा**। उ.—चौरासी लख जोनि जन्मि जग, जल-थल भ्रमत फिरैगौ—१-७५।

फिर्‍यौ—क्रि. अ. [हिं. फिरना] **फिरा, घूमा, भ्रमण किया**। उ.—बहुतक दिवस भए या जग मैं, भ्रमत फिर्‍यौ मतिहीन—१-४६।

फिसड्डी—वि. [अनु. फिस] **जो काम में पीछे रहे**।

फिसफिसाना—क्रि. अ. [अनु फिस] **शिथिल होना**।

फिसलन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फिसलना] **रपटन**।

फिसलना—क्रि अ [सं. प्र.+सरण] (१) **चिकनाई से पैर आदि रपटना**। (२) **झुकना, प्रवृत्त होना**।

मुहा.—जी फिसलना—(१) **मन ललचाना**। (२) **मोहित होना**।

फिसलाना—क्रि. स [हिं. फिसलना] **रपटाना, खिसलाना**।

फींचना—क्रि. स. [अनु. फिच् फिच्] **पटककर धोना**।

फी—अव्य [अ. फी] **प्रति एक, हर एक**।

फीका—वि —[सं अपक्व, प्रा. अपिक्क] (१) **नीरस, स्वादहीन**। (२) **जो चटक रंग का न हो**। (३) **कांति या तेजहीन**। (४) **निष्फल, प्रभावहीन**।

फीकी—वि. स्त्री. [हिं. फीका] **व्यर्थ, निष्फल, सारहीन, प्रभावरहित**। उ.—जन यह कैसे कहै गुसाईं। तुम बिनु दीनबंधु, जादवपति, सब फीकी ठकुराई—१-१६५।

फीके—वि. बहु. [हिं. फीका] **नीरस, अरुचिकर, सारहीन**। उ.—बिनु रघुनाथ माहिं सब फीके, आज्ञा मेटि न जाइ—६-१६१।

फीको, फीकौ—वि. [हिं. फीका] (१) **अरसिक, जो मिलनसार न हो**। उ.—महा कठोर, सुन्न हिरदै कौ, दोष देन कौ नीकौ—बड़ौ कृतघ्नी और निकम्मा, बेधन, राँको-फीकौ—१-१८६। (२) **स्वादहीन, नीरस, अरुचिकर, जो चखने में अच्छा न लगे**। उ.—(क) देह गेह सनेह अर्पन कमल लोचन ध्यान। सूर उनको भजन देखत फीकौ लागत ज्ञान। (ख) जो रस खाइ स्वाद करि छाँड़े सो रस लागत फीको—२६३८।

फीता—संज्ञा पुं. [पुर्त] **पतली धज्जी या किनारा**।

फीरोजा—संज्ञा पुं. [फा. फीरोजा] **एक नग**।

फीरोजी—वि [हि फीरोजा] **हरापन लिये नीला**।

फील—संज्ञा पुं [फा. फील] **हाथी**।

फीलवान—संज्ञा पु [फा. फील+वान] **महावत**।

फीली—संज्ञा स्त्री. [सं. पिंड] **पिंडली**।

फुँकना—क्रि. अ. [हि. फूँकना] (१) **जलना**। (२) **नष्ट होना**। (३) **ईर्ष्या करना**।

संज्ञा पुं.—**हवा फूंकने की नली**।

फुँकनी—संज्ञा स्त्री. [हि फुँकना] (१) **हवा फूंकने की पतली नली**। (२) **भाथी**।

फुंकरना—क्रि. अ. [हि. फुंकार] **फुंकार छोड़ना**।

फुंकरै—क्रि. अ. [हि. फुंकरना] **फुंकार मारता है**। उ.—सहसौ फन फन फुंकरें, नैकु न तिन्ह बिकार—५८६।

फुँकर्‍यौ—क्रि. अ [हिं. फुंकारना] **फुँकार मारी, फूत्कार छोड़ी, फूँ फूँ शब्द किया**। उ.—पूछ लीन्ही झटकि धरनि सौं गहि पटकि फुंकर्‍यौ लटकि करि क्रोध फूले—५५२।

फुँकवाना, फुँकाना—क्रि. स. [हिं. फूँकना] (१) **फूंकने को प्रवृत्त करना**। (२) **मुख से हवा निकलवाना**। (३) **जलवाना**।

फुंकार—संज्ञा पुं. [अनु] **मुख से हवा का झोंका निकलने का शब्द, फूत्कार**। उ.—(क) कस कोटि जरि जाहिगे, बिष की एक फुंकार—५८६। (ख) सहस फन फुंकार छाँड़े जाइ काली नाथियौ।

फुँदना—संज्ञा पुं. [हिं. फूल+फंदा] **फुलरा, झब्बा**।

फुँदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फंदा] **गाँठ, फंदा**।

फुंसी—संज्ञा स्त्री. [सं. पनसिका, फा. फनस] **छोटी फुड़िया**।

फुट—वि. [सं. स्फुट] (१) **अकेला**। (२) **अलग**।

फुटकर—वि. [सं. स्फुट+कर] (१) **जिसका जोड़ा न हो।** (२) **कई प्रकार का।** (३) **अलग।** (४) **थोड़ा-थोड़ा।**

फुटका—संज्ञा पुं. [सं. स्फोटक] **छाला, फफोला।**

फुटकी—संज्ञा स्त्री. [सं. फुटक] **छोटे कण या लच्छे।**

फुटत—क्रि. अ. [हिं. फूटना] **फूटता है।** उ.—उचटत अति अंगार, फुटत फर, भपटत लपट कराल—६१५।

फुटट—वि. [हिं. फुट] (१) **अकेला।** (२) **अलग।**

फुटटेल—वि. [हिं. फुट+ऐल] (१) **जिसका जोड़ा न हो।** (२) **अलग रहनेवाला।**

वि. [हिं. फूटना] **जिसका भाग्य फूटा हो।**

फुदकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **उछलना कूदना।** (२) **हर्ष या उमंग से फूल जाना।**

फुनंग, फुनँगी—संज्ञा स्त्री. [सं. फुलक] **वृक्ष का छोर।**

फुप्फुस—संज्ञा पुं. [सं.] **फेफड़ा।**

फुफँदी, फुफंदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल+फंद] **नीबी, इजारबंद।**

फुफकाना—क्रि. अ. [अनु.] **फुफकारना।**

फुफुकार—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **साँप की फुंकार, फूत्कार।** उ.—सहस फन फुफुकार छाँड़े, जाइ काली नाथियाँ—५७७।

फुफकारना—क्रि. अ. [हिं. फुफकार] **साँप का फूत्कार करना।**

फुफेरा—वि. [हिं. फूफा] **फूफा से उत्पन्न।**

फुर—वि. [हिं. फुरना] **सत्य, सच्चा।**

संज्ञा स्त्री. [अनु.] **पंख फड़फड़ाने की ध्वनि।**

फुरई—क्रि. अ. [हिं. फुरना] **प्रभाव करता है, असर डालता है, लगता है।** उ.—पौढे कहा समर-सेज्या सुत, उठि किन उत्तर देत। थकित भए कछु मंत्र न फुरई, कीने मोह अचेत—१-२६।

फुरत—क्रि. अ. [हिं. फुरना] (१) **असर या प्रभाव करती है।** उ.—जंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत प्रीति सिरानी जाति। (२) **स्फुटित हुआ, उच्चरित हुआ, मुँह से निकला।** उ.—(क) कोउ निरखति अधरन की सोभा, फुरति नहीं मुख बानी—६४४। (ख) फुरत न बचन कछू कहिबे को रहे बैन सो हारी—३३१३।

फुरति, फुरती—संज्ञा स्त्री. [सं. स्फूर्ति] **शीघ्रता, तेजी।** उ.—द्विविद लै साल को वृच्छ सम्मुख भयो फुरति करि राम तनु फेंकि मारयो—१० उ०-४५।

क्रि. अ. [हिं. फुरना] **उच्चरित होता है।** उ.—सिथिल गात मुख बचन फुरति नहिं ह्वै जो गई मति भोरी।

फुरतीला—वि. [हिं. फुरती+ईला] **जो फुरती करे, तेज।**

फुरना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण, प्रा. फुरण] (१) **प्रकट या उदय होना।** (२) **चमक उठना।** (३) **फड़कना, फड़फड़ाना।** (४) **उच्चरित होना।** (५) **सत्य या ठीक उतरना।** (६) **असर या प्रभाव करना।** (७) **सफल होना।**

फुरफुर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **पंख की फरफराहट।**

फुरफुराना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **'फुरफुर' करना।** (२) **हलकी वस्तु का लहराना।**

क्रि. स.—**किसी वस्तु को हिलाना-डुलाना।**

फुरफुरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **पंख फड़फड़ाने का भाव।**

फुरसत—संज्ञा स्त्री. [अ. फ़ुरसत] **अवकाश, छुट्टी।**

फुरहरना—क्रि. अ. [सं. स्फुरण] **निकलना, उत्पन्न होना।**

फुरहरी—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **पंख फड़फड़ाने की क्रिया।** (२) **पंख, कपड़े आदि की फड़फड़ाहट।** (३) **कंप और रोमांच, कँपकँपी।**

फुराना—क्रि. स. [हिं. फुर] (१) **सच्चा या ठीक उतारना।** (२) **प्रमाणित करना।** (३) **उच्चारित करना।**

फुरी—क्रि. अ. [हिं. फुरना] **सत्य या ठीक हुई, पूरी उतरी।** उ.—फुरी तुम्हारी बात कही जो मोसो रही कन्हाई।

फुरे—क्रि. अ. बहु. [हिं. फुरना] (१) **उच्चरित हुए।** उ.—उठि के मिले तंदुल हरि लीन्हे मोहन बचन फुरे। (२) **प्रभाव किया।** उ.—फुरे न जंत्र मंत्र नहि लागे, चले गुनी गुन हारे—७४७।

फुरेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फुरफुराना] (१) **सींक जिसके सिरे पर दवा, इत्र आदि लगाने को रुई लिपटी हो।** (२) **कँपकपी।**

मुहा०—फुरेरी आना—**कँपकँपी होना।** फुरेरी

लेना—(१) **कांपना** । (२) **फड़कना, फड़फड़ाना ।** (३) **सजग या होशियार होना ।**

फुरै—क्रि. अ. [हि. फुरना] (१) **उच्चरित होता है ।** उ.—फुरै न बचन बरजिबै कारन, रही बिचारि बिचारि—१०-२८३ । (२) **प्रभाव या असर करता है ।** उ.—फुरै न मंत्र, जंत्र नहि लागे, चले गुनी गुन हारे—७४७ ।

फुलका—संज्ञा पुं. [हिं. फूलना] **हलकी पतली रोटी ।**

फुलझड़ी, फुलझरी—संज्ञा स्त्री. [हिं फूल + झड़ना] (१) **ऐसी आतिशबाजी जिसमें फूल-सी चिनगारियाँ निकलें ।** (२) **ऐसी बात जिससे परस्पर झगड़ा या विवाद हो जाय ।**

फुलरा—संज्ञा पुं [हि. फूल] **फुँदना ।**

फुलवाई, फुलवाड़ी, फुलवारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूल + वारी, फुलवाड़ी] **फुलवाटिका ।** उ.—(क) इक दिन सुकसुता मन आई । देखौ जाइ फूल फुलवाई—९-१७४ । (ख) रितु बसंत फूली फुलवाइ—११७-५

फुलहारा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल+हारा] **माली ।**

फुलही—संज्ञा स्त्री. [देश.] **एक तरह की गाय ।** उ.—पियरी, भौरी, गोरी, गैनी, खैरी, कजरी, जेती । दुलही, फुलही, भौरो, भूरी, हाँकि ठिकाई तेती—१०-४४५ ।

फुलाना—क्रि. स. [हिं. फूलना] (१) **वस्तु के विस्तार या फैलाव के बाहर की ओर बढ़ाना ।**

मुहा०—गाल (मुँह) फुलाना—**रूठना, रिसाना ।**

(२) **पुलकित या आनंदित करना ।** (३) **गर्व या घमड बढ़ाना ।** (४) **फूलों से युक्त करना ।**

फुलाव—संज्ञा पु. [हि. फूलना] **फूलने की स्थिति ।**

फुलावट—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूलना] **फूलने का भाव ।**

फुलावा—संज्ञा पुं. [हिं फूल] **बाल गूँथने की डोरी या चोटी जिसमें फूल या फुँदना लगा हो ।**

फुलिंग—संज्ञा स्त्री. [सं. स्फुलिंग, प्रा फुलिंग] **चिनगारी ।**

फुलिया—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल] (१) **कील, काँटे आदि का चिपटा सिरा ।** (२) **कान या नाक की 'लौंग' नामक गहना ।**

फुलेरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] **फूल की छतरी ।**

फुलेल, फुलेलन—संज्ञा पुं. [हिं. फूल + तेल] **सुगंधित तेल ।** उ.—उर धारी लटैं छूटीं आनन पै, भीजी फुलेलन सो आली हरि संग केलि—१५८२ ।

फुलेहरा—संज्ञा पुं. [हि. फूल + हार] **सूत, रेशम आदि के फूलों से बना बंदनवार ।**

फुलौड़ा, फुलौरा—संज्ञा पुं. [हिं. फूल] **बड़ा पकौड़ा ।**

फुलौड़ी, फुलौरी—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल + बरी] **बरी, पकौड़ी ।** उ.—पापर, बरी, मिथौरि फुलौरी । कूर बरी काचरी पिठौरा—३९६ ।

फुल्ल—वि. [स.] **फूला हुआ, विकसित ।**

फुल्ली—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल] **फूल की तरह का कोई आभूषण या उसका भाग ।**

फुस—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **बहुत धीमी आवाज ।**

फुसकारना—क्रि. अ. [अनु.] **फूत्कार छोड़ना ।**

फुसफुसा—वि. [हिं. फूस] (१) **ढीला ।** (२) **कमजोर ।**

फुसफुसाना—क्रि. स. [अनु.] **बहुत धीरे बोलना ।**

फुसलाना—क्रि. स. [हिं. फिसलाना] (१) **बहलाना, ध्यान बटाना ।** (२) **चकमा देना, बहकाना ।** (३) **मीठी बातों से अपने अनुकूल करना ।** (४) **राजी करना ।**

फुहार—संज्ञा स्त्री. [सं. फूत्कार] **बहुत महीन बूँदों की वर्षा जो उड़ती जान पड़े ।**

फुहारा—संज्ञा पुं [हिं. फुहार] **एक जलयंत्र ।**

फुही—संज्ञा स्त्री [हिं. फुहार] (१) **महीन-महीन बूँदों की झड़ी, फुहार ।** उ.—सिर बरसत सुमन सुदेस, मानौ मेघ फुही—१०-२४ । (२) **महीन बूँद ।**

फूँक—संज्ञा स्त्री. [हि. फू फू (अनु.)] (१) **ओठों से छोड़ी हुई सवेग वायु ।** (२) **विषैली फूत्कार ।** उ.—(क) कहा कस दिखरावत इनकौ, एक फूँक ही मैं जरि जाईं—५५० । (ख) एक फूँक कौ नाहिं तू बिष-ज्वाला अति तात—५८९ । (३) **साँस ।**

मुहा०—फूँक निकल जाना (निकलना)—**मरना ।**

(४) **मंत्र पढ़ कर मुँह से छोड़ी गयी वायु ।**

यौ०—झाड़-फूँक—**तन्त्र-मंत्र का उपचार ।**

फूँकति—क्रि. स. [हिं. फूँकना] **फूँक मारती है, फूँकती है ।** उ.—बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरे । तीछन लगी नैन भरि आए, रोवत बाहर

दौरे । फूँकति बदन रोहिनी ठाढी, लिए लगाइ अँकोरे—१०-२२४।

फूँकना—क्रि. स. [हि. फूँक] (१) **जोर से फूँक छोड़ना।**

मुहा०—फूँक फूँक कर चलना (पैर रखना)—**बहुत सावधानी से काम करना।**

(२) **मंत्र आदि पढ़कर फूँक मारना।** (३) **शंख आदि को फूँक मारकर बजाना।** (४) **जला देना, भस्म करना।** (५) **जलाकर भस्म बनाना।** (६) **नष्ट करना।** (७) **दुख देना।** (८) **फूँककर सुलगाना।**

फूँकि—क्रि. स. [हि. फूँकना] (१) **जोर से फूँक मारकर।** उ.—फूँकि फूँकि जननी पय प्यावति, सुख पावति जो उर न समैया—१०-२२६।

मुहा०—फूँकि फूँकि पग धारौ-**बहुत बचाकर चलो, होशियारी से काम करो।** उ.—फूँकि फूँकि धरनी पग धारौ, अब लागी तुम करन अयोग—१४६७।

(२) **फूँक से सुलगाकर।** उ.—(क) फूँकि फूँकि हियरौ सुलगावत उठि किन इहाँ ते जान—३०२३। (ख) सुलगि सुलगि हम जरत ही तुम आनि फूँकि दई। ३१३१।

फूँद, फूँदा—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल+फंद] **फुँदना, झब्बा।** उ.—रत्न जटित गजरा बाजूबंद सोभा भुजन अपार। फूँदा सुभग फूल फूले मनो मदन बिटप की डार—२०६२।

फुई—संज्ञा स्त्री. [हि. फुही] (१) **महीन बूँद।** (२) **फफूँदी।**

फूट—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूटना] (१) **फूटने का भाव।** (२) **वैर, विरोध।**

मुहा०—फूट डालना—**वैर या झगड़ा कराना।**

(३) **एक तरह की बड़ी ककड़ी, एक फल।**

मुहा०—फूट-सा खिलना—**पककर दरक जाना।**

फूटन—संज्ञा स्त्री. [हिं. फूटना] **अंगों की पीड़ा।**

फूटना—क्रि. अ. [सं. स्फुटन, प्रा. फुटन] (१) **भग्न होना, दरकना।** (२) **फटना।** (३) **नष्ट होना, बिगड़ना।**

मुहा०—फूटी आँख का तारा—**कई बेटों के मरने पर बच जानेवाला बेटा।** फूटी आँखों न भाना—**बहुत ही बुरा लगना।** फूटी आँखों न देख सकना—**बहुत जलना, कुढ़ना।** फूटे मुँह से भी न बोलना—(१) **मुँह से एक शब्द भी न निकालना।** (२) **उपेक्षा करना।**

(४) **झोंक के साथ बाहर आना।** (५) **फोड़े फुंसी की तरह निकलना।** (६) **कली का खिलना।** (७) **अंकुर-शाखा आदि निकलना, अंकुरित होना।** (८) **मार्ग आदि का अलग होकर जाना।** (९) **बिखरना, फैलना।** (१०) **संग या साथ छोड़ना।** (११) **दूसरे पक्ष में हो जाना।** (१२) **मिलाप न बना रहना।** (१३) **शब्द का मुँह से निकलना, बोलना।**

मुहा०—फूट फूट कर रोना—**बहुत विलाप करना।**

(१४) **प्रकट या प्रकाशित होना।** (१५) **गुप्त बात का प्रकट होना।** (१६) **रोक, परदा, बाँध आदि का टूटना।** (१७) **द्रव का किसी चीज पर फैल जाना।** (१८) **शरीर के जोड़ों में दर्द होना।**

फूटा—वि. [हि. फूटना] **भग्न, टूटा हुआ।**

फूटि—क्रि. अ. [हिं. फूटना] (१) **फूट गयी, भग्न हुई।** (२) **नष्ट हुई, विनष्ट हुई** उ.—निसि दिन बिषय-बिलासनि बिलसत, फूटि गईं तव चारयौ—१-१०१।

फूटी—वि. स्त्री. [हि. फूटना] (१) **भग्न, टूटी हुई, फटी हुई।** उ.—(क) टूटे कंध अरु फूटी नाकनि, कौलौं धौं भुस खैहो—१-३३१। (ख) फूटी चूरी गोद भरि ल्यावै—१०-३३२। (२) (आँख) **जिससे दिखायी न दे।** उ.—एक अँधेरो, हिए की फूटी, दौरत पहिरि खराऊँ—३४६६।

फूटै—क्रि. अ. [हिं. फूटना] **भेदकर निकले, झोंके से बाहर आए, छूटे, उदित हो।** उ.—सूरदास तबही तम नासे, ज्ञान-अगिनि-झर फूटै—२-१६।

फूत्कार—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फूँका।** (२) **सर्प की फुफकार।**

फूफा—संज्ञा पुं. [हिं. फूफी] **बाप का बहनोई।**

फूफी, फूफू—संज्ञा स्त्री. [अनु०] **बाप की बहन, बुआ।**

फूल—संज्ञा पुं. [स. फुल्ल] (१) **पुष्प, सुमन, कुसुम।** उ.—ज्यों सुक सेमर-फूल बिलोकत, जात नहीं बिनु खाए—१-१००।

मुहा०—फूल आना—**फूल लगना**। फूल उतारना (चुनना)—**फूल तोड़ना**। फूल झड़ना—**प्रिय और मधुर शब्द कहना**। फूल-सा - **बहुत कोमल, हलका या सुन्दर**। फूल सूँघकर रहना—**बहुत कम खाना (व्यंग्य)**। पान-फूल-सा—**बहुत कोमल और सुकुमार**।

(२) **फूल की तरह के बेल-बूटे**। (३) **फूल की बनावट का गहना**। (४) **दीपक की बत्ती का गुल या उससे निकलने वाली चिनगारी**। उ.—हरि जू की आरती बनी। ···। उड़त फूल उड़ेगन नभ अंतर, अंजन घटा घनी—२·८८। (५) **आग की चिनगारी**। (६) **सार, सत्त**। (७) **देशी शराब**। (८) **शव के जलने से बची हड्डियाँ**। (९) **एक मिश्र धातु**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. फूलना] (१) **उमंग**। (२) **आनंद**।

फूलडोल—संज्ञा पुं.—[हिं. फूल + डोल] (१) **चैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जानेवाला उत्सव जिसमें श्रीकृष्ण का झूला फूलो से सजाया जाता है**। (२) **फूलों का झूला**। उ.—माई फूले फूले ही फूलत श्री राधेकृष्ण झूलत सरस रस ही फूलडोल—२४०१।

फूलत—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **खिलता है**। उ.—ज्यों जल-रुह ससि-रसिम पाइ कै फूलत नाहिंन सर तैं—३५४।

फूलति—क्रि. अ. स्त्री. [हि. फूलना] **खिलती है**। उ.—हरि-बिधु मुख नहिं नाहिनै फूलति मनसा कुमुद कली—२७३४।

फूलदान—संज्ञा पु. [हिं. फूल + दान] **फूल सजाने का पात्र**।

फूलदार—वि. [हिं. फूल + दार] **जिसमें फूल बने हों**।

फूलना—क्रि. अ. [हिं. फूल] (१) **फूलों से युक्त होना**।

मुहा०—फूलना-फलना—(१) **धन-सतान से सुखी रहना**। (२) **सभी तरह से प्रसन्न और सुखी रहना**।

(२ **खिलना, विकसित होना**। (३) **हवा आदि से किसी चीज की गोलाई, या मोटाई बढ़ना**। (४) **सतह का उठना या उभरना**। (५) **सूज जाना**। (६) **मोटा या स्थूल होना**। (७) **गर्व-घमड करना**। (८) **आनंदित या प्रसन्न होना**। (९) **रूठना, मान करना**।

फूलमती—संज्ञा स्त्री. [हि. फूल + मत] **एक देवी**।

फूला—संज्ञा पुं. [हिं. फूलना] **खील, लावा**।

(१) **मोटा, स्थूल**। (२) **गर्वीला**।

फूलि—क्रि. अ. [हिं फूलना] **गर्व में भरकर, घमंड में होकर, इतराकर**। उ.—कबहुँक फूलि सभा मै बैठ्यौ, मूँछनि ताव दिवायौ—१-३०१।

फूलीं—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **विकसित हुईं, खिल गईं**। उ.—(क) मनु भोर भएँ रवि देखि, फूलीं कमल-कली—१०-२४। (ख) पूरन मुख-चंद देखि नैन-कोइ फूली—६४२।

फूली—क्रि. अ. [हिं. फूलना] (१) **पुष्पित हुई, फूल लगे**। उ.—रितु बसत फूली फुलवाई—१० उ.—२०५। (२) **प्रसन्न या आनदित हुई**। उ.—फूली फिरैं धेनु धाम, फूली गोपी अँग अँग—१०-३४।

मुहा०—फूले अंग न समाई—**बहुत आनदित हुई**। उ —भले ही मेरे लालन आये री आजु मै फूली अग न समाई—पृ. ३१९ (८१)।

फूले—क्रि. अ. [हि. फूलना] **बहुत प्रसन्न या आनंदित होकर**। उ. (क) आजु दसरथ कैं आँगन भीर।······ फूले फिरत अजोध्यावासी, गनत न त्यागत चीर—९-१६। (ख) फूले फिरैं गोपी-ग्वाल ठहर-ठहर वे—१०-३४। (ग) गावत गुन गोपाल फिरत कुंजन में फूले—३४४३।

मुहा०—फूले अग न मात (समात)—**बहुत अधिक प्रसन्न हुए**। उ.—जानि चीन्हि पहिचानि कुँवर मन फूल अग न मात—१० उ.-८।

(२) **पुष्पित हुए, खिले**। उ.—(क) मन के मनोज फूले हलधर बर के—१०-३४। (ख) व जो देखत राते राते फूलन फूले डार—२७९८।

मुहा०—फूले-फरे—**फल और पुष्प से युक्त हो गये**। उ.—फूले-फरे तरुवर आनद लहर के—१०-३४।

(३) **बहुत क्रुद्ध हुए**। उ.—पूँछ लीन्ही झटकि, धरनि सौं गहि पटकि, फुंकरयौ लटकि करि क्रोध फूले—५५२।

फूल—क्रि. अ. [हिं. फूलना] **फूल लगते हैं, पुष्पित होता है।** उ.—तरुवर फूलै, फरै, पतझरै, अपने कालहिं पाइ—१-२६५।

फूल्यौ—क्रि. अ. [हि. फूलना] **प्रफुल्ल या आनंदित हुआ।** **मुहा०**—फूल्यौ न समाई—**फूला न समाया, अत्यंत आनंदित हुआ।** उ.—हनुमत बल प्रगट भयौ, आज्ञा जब पाई। जनक-सुता-चरन बंदि, फूल्यौ न समाई—९-९६।

फूस—संज्ञा पुं. [सं. तुष] **सूखी घास और तिनके।**

फूहड़, फूहर—वि. [अनु.] **भद्दी चाल-ढाल वाला।**

फूहा—संज्ञा पुं. [हि. फुही] **रुई का गाला।**

फूही—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **बहुत हलकी वर्षा।**

फेंक—संज्ञा स्त्री. [हिं. फेंकना] **फेंकने की क्रिया या भाव।**

फेंकना—क्रि. स. [सं. प्रेषण, प्रा पेखण] (१) **ऐसा झोंका देना कि दूर जाकर गिरे।** (२) **कुश्ती मे गिराना।** (३) **एक स्थान से हटाकर दूसरे मे डालना।** (४) **लापरवाही से रख छोड़ना।** (५) **अपना पीछा छुड़ाकर दूसरे पर बोझ डालना।** (६) **कौड़ी, पासा आदि डालना।** (७) **खोना, गँवाना।** (८) **अपमान से त्यागना।** (९) **बेकार खर्च करना।** (१०) **उछालना, झटकना-पटकना।** (११) **(पटा) घुमाना।**

फेंकरना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **गीदड़ का रोना या बोलना।** (२) **चिल्ला-चिल्लाकर रोना।**

फेंट—संज्ञा स्त्री. [हिं. पेट या पेटी] (१) **कमर का घेरा, कटि मंडल।** उ.—फेंट पीतपट, साँवरे कर पलास के पात। परस्पर ग्वाल सब बिमल-बिमल दधि खात। (२) **कमर में बँधा कपड़ा, कमरबंद, पटुका।** उ.—(क) खायबे को कछु भाभी दीनी श्रीपति मुख तैं बोले। फेंट उपरि तैं अंजुलि तंदुल बल करि हरि जू खोले। (ख) स्याम सखा कौं गेंद चलाई। श्रीदामा हरि अंग बचायौ, गेंद पर्यौ कालीदह जाई। धाय गह्यौ तब फेंट स्याम की, देहु न मेरी गेंद मँगाई।

मुहा०—फेंट कसना (बाँधना)—**कमर कसकर हर बात के लिए तैयार होना।** कसि फेंट—**कटिबद्ध होकर, सन्नद्ध होकर, कमर कसकर सब कठिनाइयों को झेलने के लिए तैयार होकर।** उ.—अब लौं प्रभु तुम बिरद बुलाए, भई न मोसौं भेंट। तजौ बिरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहै कसि फेंट—१-१४५। फेंट गहता, धरता (पकड़ता)—**रोक लेता, जाने न देता।** फेंट पकरतौ—**रोकता, थामता, जाने न देता।** उ.—सूरदास बैकुंठ पैठ मैं कोउ न फेंट पकरतौ—फेंट गही—**जाने से रोका।** उ.—हम अबला कछु मर्म न जान्यौ चलत न फेंट गही—२७६७।

(३) **फेरा, लपेट, घुमाव।**

संज्ञा स्त्री [हि. फेंटना] **फेंटने की क्रिया या भाव।**

फेंटना—क्रि. स. [सं. पृष्ठ, प्रा. पिट्ठ+ना] (१) **गाढ़े लेप को खूब हिलाना या मथना।** (२) **उँगली से खूब मिलाना।**

फेंटा—संज्ञा पुं. [हि. फेंट] (१) **कटि-मंडल।** (२) **कपड़ा जो कर मे लपेटा हो, कमरबंद, पटुका।** उ.—माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ तिलक दियौ भाल—१-१५३। (३) **धोती का घेरा जो कमर पर लिपटा हो।**

फेकरना—क्रि. अ. [हि. फेंकना] **(सिर) नंगा होना।**

फेण, फेन—संज्ञा पुं. [सं. फेन] **झाग, फेना।** उ.—मनहुँ मथत सुर सिंधु, फेन फटि, दयौ दिखाई पूरनचंद—१०-२०४।

फेनक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **फेन, झाग।** (२) **एक मिठाई।**

फेनना—क्रि. स. [हि. फेन] **किसी द्रव को इतना मथना कि झाग उठने लगे।**

फेनिल—वि. [सं.] **जिसमें फेन हो।**

फेनि, फेनी—संज्ञा स्त्री. [सं फेणिका] **मैदा के महीन लच्छे की एक मिठाई जो चाशनी में पागकर या दूध में भिगोकर खाई जाती है।** उ.—(क) घेवर फेनी और सुहारी। खोवा-सहित खाहु बलिहारी—१०-११४। (ख) अपनी पत्रावलि सब देखत, जहँ तहँ फेनि पिराक—४६४।

फेनु—संज्ञा पुं. [सं. फेन] **झाग, फेन।** उ.—आनंद मगन धेनु स्रवैं थन पय फेनु, उमँग्यौ, जमुन-जल उछलि लहर के—१०-३०।

फेफड़ा—संज्ञा पुं. [सं. फुप्फुस] **साँस की थैली।**

फेफड़ी, फेफरी—संज्ञा स्त्री. [हि पपड़ी] **पपड़ी**। उ—पीरो भयो फेफरी अधरन हिरदय अतिहिं डर्‍यौ—२५६४।

फेर—संज्ञा पुं. [हिं. फेरना] (१) **चक्कर, घुमाव**।

मुहा०—फेर की बात—**घुमाववाली बात**।

(२) **मोड़, झुकाव**। (३) **उलट-पलट, परिवर्तन**।

मुहा०—दिनों का फेर—**दुर्दशा का समय**।

(४) **अंतर, फर्क**। (५) **उलझन, दुबधा**।

मुहा०—फेर मे पड़ना—**उलझन में पड़ना**। फेर डालना—**अनिश्चय की स्थिति में डालना**।

(६) **भ्रम, धोखा**। (७) **चाल-बाजी, धोखा**।

मुहा०—फेर मे आना (पड़ना)—**धोखा खाना**। फेर की बात—**छल-कपट या चालबाजी की बात**।

(८) **बखेड़ा, झझट, जजाल**।

मुहा०—निन्नानबे का फेर—**रुपया जमा करने का चक्कर**।

(९) **युक्ति, उपाय**। (१०) **अदला-बदली**।

मुहा०—हेर-फेर—**लेन-देन, अदला-बदली**।

(११) **हानि**। (१२) **भूत-प्रेत का प्रभाव**। (१३) **ओर, दिशा**।

अव्य.—**पुन., फिर**।

फेरत—सज्ञा पुं. [हि. फेरना] (१) **स्पर्श करते है, छुआते या रखते हैं**।

मुहा०—कर फेरत—**स्पर्श करते है, छूते हैं**। उ.—कृपाकटाच्छ कमल-कर-फेरत, सूर जननि सुख देत—१०-१५४। (२) **उलटता-पुलटता है**। उ.—फेरत पलटत भोर भए कछु लई न छाँड़ि दई—१३२०। (३) **भूली या दबी बात पुनः उठाते है या उसका बदला लेते है**। उ.—सूनो जानि नदनदन बिनु बैर आपनो फेरत—३१६५।

फेरन—सज्ञा स्त्री. [हिं. फेरना] **फेरने या फहराने की क्रिया या भाव**। उ.—बरनि न जाइ सुभग उर सोभा पीतावर की फेरन—३२७७।

क्रि. स.—**लौटाना, वापस करना**। उ.—जे जे आए हुते जज्ञ मे परिहै तिनकौ फेरन।

फेरना—क्रि. स. [सं. प्रेषण, प्रा. पेरन] (१) **घुमा देना, मोड़ना**। (२) **आते हुए को लौटाना या वापस करना**। (३) **ली हुई वस्तु लौटाना या वापस करना**। (४) **दी हुई वस्तु वापस कर लेना**। (५) **चक्कर खिलाना, घुमाव देना**।

मुहा०—माला फेरना—(१) **माला जपना**। (२) **नाम लेना**।

(६) **ऐंठना, मरोड़ना**। (७) **स्पर्श करना**।

मुहा०—हाथ फेरना—(१) **प्यार से सहलाना**। (२) **ले लेना**।

(८) **पोतना, लेप करना**।

मुहा०—पानी फेरना—**धो देना, नष्ट कर देना**।

(९) **रुख या मुख दूसरी ओर करना**। (१०) **उलट-पलट करना**। (११) **विरुद्ध या विपरीत करना**। (१२) **बार-बार दोहराना**। (१३) **बारी बारी से सबके सामने उपस्थित करना**। (१४) **प्रचारित या घोषित करना**। (१५) **(घोड़े को) चाल चलाना**।

फेरनि—सज्ञा स्त्री. [हिं. फेरना] **फेरने की क्रिया या भाव**। उ.—भौह मोरनि नैन फेरनि तहाँ ते नहिं टरे—पृ० ३५१ (७७)।

फेरनो, फेरनौ—सज्ञा पुं. [हि. फेरना] **फेरने की क्रिया या भाव**। उ.—तब मधुमगल कहि ग्वाल सों गैया हो भैया फेरनो—२२८०।

फेर-पल्टा—संज्ञा पुं. [हि. फेर+पलटा] **गौना**।

फेरफार—संज्ञा पु. [हि. फेर] (१) **उलट-फेर**। (२) **अंतर, बीच**। (३) **टालटूल, बहाना**। (४) **घुमाव-फिराव**।

फेरा—संज्ञा पु [हि. फेरना] (१) **चक्कर, घूमना**। (२) **लपेट, घुमाव**। (३) **इधर से उधर घूमना**। (४) **घूमते-फिरते आना**। (५) **लौट-फिर कर वापस आना**। (६) **घेरा, मडल**।

फेरि—क्रि. वि. [हिं. फिर] (१) **फिर, पुनः, दोबारा**। उ.—(क) जैसो कियौ सो तैसौ पायौ। अब उहिं चहियै फेरि जिवायौ—४-५ (ख) हय गय खोलि* भडार दिए सब फेरि भरे ता भाँति—१०-३६।

मुहा०—फेरि फेरि—**बार-बार, पुनः पुनः**।

(२) **इसके बाद, तत्पश्चात्**। उ—तौ लगि बेगि

हरौ किन पीर। जौ लगि आन न आनि पहूँचै, फेरि परैगी भीर—१-१६१।

क्रि. स. [हि. फेरना] (१) **लौटाकर।**

प्र०—फेरि दयौ—**लौटा दिया, वापस कर दिया।** उ.—मंत्री गयौ फिरावन रथ लै, रघुबर फेरि दयौ—६-४६।

फेरी—अव्य. [हिं. फिर] **पुनः, दोबारा।** उ.—जिहिं भुज परसुराम बल करष्यौ, ते भुज क्यो न सँभारत फेरी—६-६३।

मुहा०—फिरि फेरी—**बार बार, पुनः पुनः।** उ.—मैं जिनको सपनेहु न देखे, तिनकी बात कहत फिरि फेरी—१२७०।

फेरी—क्रि. स. [हिं. फेरना] **मेट दी, हटा दी, मिटायी, दूर की।** उ.—हा जदुनाथ, द्वारकावासी, जुग-जुग भक्त-आपदा फेरी—१-२५१। (२) **पलट दी, बदल दी, विपरीत की।** उ.—बसन प्रवाह बढ़्यौ जब जान्यौ, साधु-साधु सबहिनि मति फेरी—१-२५२।

संज्ञा स्त्री.—(१) **फेरा, जाकर लौटना।** उ.—जहाँ बसत जदुनाथ जगतमनि बारक तहाँ आउ दै फेरी—२८५१। (२) **घूमना, भ्रमण करना।** उ.—बाट-घाट बीथी ब्रज घर बन संग लगाए फेरी—२७१६। (३) **परिक्रमा, प्रदक्षिणा, भाँवर।**

फेरी पड़ना—**भाँवर होना, विवाह होना।**

(४) **योगी का भिक्षा माँगने का चक्कर।** (५) **वस्तु को बेचने के लिए इधर-उधर घूमना।**

फेरे—संज्ञा पुं. [हिं. फेर] (१) **ओर, दिशा।** उ.—सूरदास प्रभु बैठि सिला पर भोजन करैं ग्वाल चहुँ फेर—४६३। (२) (**बहु०**) **चक्कर, घुमाव।** उ.—तेरी सो बृषभानु नदिनी एक गाँठि सौ फेरे—२२२०।

क्रि. स. [हिं. फेरना] **रुख बदल दिया।** उ.—कहा करौं सखि दोष न काहू हरि हिन लोचन फेरे—२७२०।

फेरै—क्रि. स. [हि. फेरना] **प्रचारित या घोषित करें।** उ.—सूरदास प्रभु लका तोरैं फेरैं राम दोहाई—६-११७।

फेरै—क्रि. स. [हिं. फेरना] **स्पर्श करता है।** उ.—सूरदास प्रभु सकल लोकपति पीताबर कर फेरैं हो—४५२।

फेरो—संज्ञा पुं. [हिं. फेरी] **आगमन, जाकर आना।** उ.—(क) गयौ जु संग नदनदन के बहुरि न कीन्हौ फेरौ—३१४३। (ख) आपु नही या ब्रज के कारन करिहौ फिरि फिरि फेरो—१० उ.-१२४।

क्रि. स. [हिं फेरना]। (१) **घुमा लिया, हार मान ली।** (२) उ—सात दिवस जल बर्षि सिराने हारि मानि मुख फेरो—६५६। (२) **मुख घुमाते हो, सामना नही करते।** उ.—मेरी सौ हाहा करि पुनि-पुनि उत काहे मुख फेरो जू—१९३४।

फेरौ—क्रि. स. [हिं. फेरना] (१) **चक्कर दूँ, घुमाऊँ, चारो ओर चलाऊँ।** उ.—कहौ तौ लक लकुट ज्यौ फेरौ, फेरि कहूँ लै डारौ—६-१०७। (२) **लौटाऊँ, विमुख करूँ, पराजित करूँ।** उ.—अब हौ कौन कौ मुख हेरौं। रिपु-सैना-समूह-जल उमड़्यौ, काहि संग लै फेरौ—६-१४६।

फेरौ—क्रि. स. [हिं. फेरना] **बदलो, पलटो, मिटाओ।** उ.—सूर हँसति ग्वालिनि दै तारी, चोर नाम कैसेहुँ सुन फेरौ—३६६।

फेर्‌यौ—क्रि. स [हि. फेरना] (१) **फेरा, मोड़ लिया, दूसरी ओर किया।** उ.—पारथ भीषम सौ मति पाइ। कियौ सारथी सिखडी आइ। भीषम ताहि देखि मुख फेर्‌यौ—१-२७६। (२) **साथ छोड़ा।** उ.—सब दिन सुख-साथिनि आजु कैसे मुख फेरयौ—१०-८।

फेंट—संज्ञा स्त्री [हि. पेट, फेंट] **कमरबंद, पटुका।**

मुहा०—फैंट पकरतौ—**रोकता, जाने न देता, थाम लेता, धर रखता।** उ.—होनौ नफा साधु की संगति, मूल गाँठि नहि टरतौ। सूरदास बैकुंठ-पैठ मैं, कोउ न फैंट पकरतौ—१-२६७। कसि फेंट—**ललकार कर, चुनौती देकर।** उ.—तजौ विरद कै मोहिं उधारौ, सूर कहै कसि फैंट—१-१४५।

फैनु—संज्ञा पु. [स. फेन] (१) **फेन, झाग, फेना।** (२) **सर्प के मुख का झाग, विष।** उ.—तुम हमकौ कहँ-कहँ न उबारयौ, पियौ काली मुँह फैनु—५०२।

फैल—संज्ञा पुं. [अ. फेल] (१) **काम।** (२) **खेल।** (३) **नखरा।**

संज्ञा स्त्री. [स. प्रसृत] **विस्तृत, फैला हुआ।**

फैलना—क्रि. अ. [सं. प्रसरण] (१) **विस्तार या फैलाव से स्थान घेरना।** (२) **इधर उधर बढ़ जाना।** (३) **मोटा या स्थूल होना।** (४) **भर जाना, व्यापना।** (५) **बढ़ती या वृद्धि होना।** (६) **बिखरना, छितराना।** (७) **ज्यादा खुलना।** (८) **तनाव के साथ बढ़ना।** ९) **प्रचार पाना या होना।** (१०) **दूर-दूर तक पहुँचना।** (११) **प्रसिद्ध होना।** (१२) **हठ या आग्रह करना।**

फैलसूफी—सज्ञा स्त्री [यू फिलसफ] **फिजूल-खर्ची।**

फैलाना—क्रि. स. [हि. फैलना] (१) **विस्तार या फैलाव से स्थान घिरवाना।** (२) **इधर-उधर बढ़ाना।** (३) **लपेटा या तहाया हुआ न रखना।** (४) **छा देना, भर देना।** (५) **बिखेरना, छितराना।** (६) **बढ़ती या वृद्धि करना।** (७) **तान कर बढ़ाना।** (८) **प्रचार करना।** (९) **दूर-दूर तक पहुँचाना।** (१०) **प्रसिद्ध करना।** (११) **आयोजन करना।** (१२) **लेखा-जोखा करना।**

फैलाव—संज्ञा स्त्री [हि फैलना] (१) **प्रसार।** (२) **प्रचार।**

फैसला—सज्ञा पु. [अ. फैसला] (१) **निबटेरा।** (२)**न्याय।**

फोक—संज्ञा पुं. [स. पुंख] **तीर की पिछली नोक जिसके पास पर होते है और जिस पर डोरी बैठने की खड्डी बनी होती है।** उ.—परिमल लुब्ध मधुप जहँ बैठत उड़ि न सकत तेहि ठाँते। मनहुँ मदन के है सर पाए फोक बाहरी घाते—३१३४।

फोदा—सज्ञा पुं. [हिं. फुँदना] **फुलरा, झब्बा।** उ.—पचरँग बरन-बरन पाटहि पवित्रा बिच बिच फोदा गोहनो—२२८०।

फोक—सज्ञा पुं [हि. बोकला] (१) **सारहीन वस्तु, सीठी।** (२) **भूसी।** (३) **स्वादहीन या नीरस वस्तु।**

फोकट—वि. [हि फोक] **निःसार, व्यर्थ, सारहीन, नीरस, मूल्यहीन।** उ.—अलि चलि औरै ठौर देखावहु अपनो फोकट ज्ञान—३१२५।

फोकला—सज्ञा पुं. [हि. बोकला] **भूसी, छिलका।**

फोड़ना—क्रि स. [स. स्फोटन, प्रा फोडन] (१) **खड-खंड करना, दरकाना।** (२) **ऐसी चीज तोड़ना जो भीतर से पोली, मुलायम या रसभरी हो।** (३) **दबाव से, भेदकर निकल जाना।** (४) **शरीर मे दोष हो जाना जिससे घाव या फोड़े हो जायँ।** (५) **अंकुर आदि निकलना।** (६) **शाखा के समान अलग होकर जाना।** (७) **विपक्ष में कर देना।** (८) **साथ न रहने देना।** (९) **फूट डाल देना।** (१०) **भेद प्रकट करना।**

फोड़ा—सज्ञा पुं [सं. स्फोटक] **शरीर पर उभार आनेवाला बड़ा दाना, बड़ी फुसी।**

फोता—सज्ञा पुं. [फा. फोता] (१) **पटुका, कमरबद।** (२) **पगड़ी** (३) **भूमि-कर, पोत।** उ.—माँड़ि माँड़ि खलिहान क्रोध को फोता भजन भरावै। (४) **थैली।**

फोरत—क्रि. स. [हि. फोडना] **तोड़ना, चूर-चूर करना।** उ.—काहू की छीनत हौ गेंडुरि काहू की फोरत हौ गगरी—८५३।

फोरति—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] **फोड़ती है।**

मुहा० - सिर फोरति—**सिर पटक-पटक कर विलाप करती है।** उ.—सिर फोरति, गिरि जाति, अभूषन तोरतिं अँग को—५८९।

फोरतौ—क्रि. स. [हि. फोड़ना] **फोड़ डालता, चूर-चूर कर देता, खड-खंड कर डालता।** उ.—हौ तो न भयौ री घर, देखत्यौ तेरी यौ अर, फोरतौ बासन सब, जानति बलैया—३७२।

फोरना—क्रि. स. [हिं फोड़ना] **तोड़ना, फोड़ना।**

फोरि—क्रि. स. [हिं फोड़ना] (१) **खंड-खंड करके, भग्न करके।** (२) **ऐसी वस्तुओ को तोड़कर जिनके भीतर मुलायम या पतली चीज भरी हो।** उ.—जिन पुत्रनिहि बहुत प्रतिपाल्यौ, देवी-देव मनै है। तेई लै खोपरी बाँस दै, सीस फोरि बिखरै है—१-८६।

यौ०—फोरि-फारि—**तोड़-फोड़कर, तोड़-ताड़कर। खड-खंड करके, नष्ट करके।** उ.—फोरि फारि, तोरि तारि,गगन होत गाजैं—९-१३६।

फोरी—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] (१) **खंड-खड करके, भग्न करके।** उ.—गुदी चाँपि लै जीभ मरोरी। दधि ढरकायौ भाजन फोरी—१०-५७। (२) **तोड़-फोड़ डाली।** उ.—कब दधि मटुकी फोरी—१०-२९३।

(३) **उल्लघन की, भग की** । उ.—पय पीवत जिन हती पूतना, स्रुति मर्यादा फोरी—२८६३ ।

फोरै—क्रि. स. [हिं. फोड़ना] **फोड़ता है, खड खंड करता है, भग्न करता है** । उ.—अँग-आभूषन सब तोरै । लवनी-दधि-भाजन फोरै—१०-१८३ ।

फोर्‌यौ—क्रि. स. [हिं फोडना] **ऐसी चीज भग्न की जो भीतर से पोली, कोमल या रसभरी हो** ।

मुहा०—फोर्‌यौ नयन—**आँख फोड़ दी, अंधा कर दिया** । उ.—फोर्‌यौ नयन, काग नहिं छाँड़्यौ, सुरपति के विद्मान—९-८३ ।

फौकना—क्रि. अ. [अनु.] **डीग हाँकना** ।

फौज—सज्ञा स्त्री. [अ. फौज] (१) **सेना, सैन्य** । उ.—(क) गज-अहंकार चढ्यौ दिगबिजयी, लाभ-छत्र करि सीस । फौज असत-संगति को मेरै, ऐसौ हौ मै ईस—१-१४४ । (ख) मागध मगध देस तैं आयौ साजे फौज अपार । (ग) हो जानति हौ फौज मदन की लूटि लई सारी—२१०६ । (२) **झुंड, जत्था** ।

फौजदार—सज्ञा पुं [हिं. फौज+दार] **सेनापति** ।

फौजदारी—सज्ञा स्त्री. [हिं. फौजदार] **मार-पीट** ।

फौजपति—सज्ञा पुं. [हि फौज+स. पति] **सेनापति** । उ.—निधरक भयो चल्यो व्रज आवत आउ फौजपति मैन—२८१६ ।

फौजी—वि [हिं फौज] **सेना-सबधी** ।

फौरन—क्रि. वि [अ. फौरन] **तुरत, तत्काल** ।

फौलाद—सज्ञा पु. [फा पोलाद] **बहुत कड़ा लोहा** ।

ब

ब—**हिन्दी का तेईसवाँ व्यजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण । यह अल्पप्राण ओष्ठ्य वर्ण है** ।

बक—वि. [सं. वक्र, वक] (१) **टेढ़ा, तिरछा** । उ.—(क) कुंतल कुटिल, मकर कुंडल, भ्रुव नैन-बिलोकनि बक—१०-१५४ । (ख) लोचन बक बिसाल चिते कै रहत तब हो सबके मन—२५७३ । (ग) बंक बिलोकनि लगी लोभ सम सकति न पंख पसारि—२७१७ । (२) **विक्रमी** । (३) **दुर्गम** ।

बंकट—वि. [हि बक] (१) **टेढ़ा, तिरछा** । उ.—(क) ठठकति चलै मटकि मुँह मोरै बकट भौह मरोरै । (ख) भृकुटि बकट चारु लोचन रही जुवती देखि । (ग) गज उरोज बर बाजि बिलोचन बकट बिसद बिसाल मनोहर—१९०६ । (२) **दुर्गम** । उ.—मनो कियो फिरि मान मवासो मन्मथ बंकट कोट—२२१८ ।

बंकति—वि. [हिं बंक+अति] **बहुत टेढ़ी** । उ.—बंकति भौह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकताहल छायो—२०६३ ।

बका—वि. [हिं. बक] (१) **टेढ़ा, तिरछा** । (२) **बाँका** । (३) **बली, पराक्रमी** । (४) **दुर्गम** ।

बकाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बक] **टेढ़ा-तिरछापन** ।

बंकुर—वि. [हिं. बंक] (१) **टेढ़ा** । (२) **दुर्गम** ।

बकुरता—संज्ञा स्त्री. [हि बकुर] **टेढ़ा-तिरछापन** ।

बग—सज्ञा पुं [स. बग] **बगाल देश** ।

बँगला—संज्ञा स्त्री. [हि. बंगाल] **बगाल की भाषा** ।

वि.—**बगाल देश-संबंधी** ।

बँगली—संज्ञा स्त्री. [हिं. बगल] **कलाई का एक भूषण** ।

बंगा—वि. [हिं. बक] (१) **टेढ़ा** । (२) **मूर्ख, उजड्ड** ।

बगाल—सज्ञा पुं. [सं. वंग] (१) **बग देश** । (२) **एक राग** ।

बंगाली—संज्ञा पुं. [हिं. बंगाल] (१) **बगाल देश-वासी** । (२) **एक राग** । उ.—मुरली माहि बजावत गावत बगाली अधर चुवत अमृत बनवारी—२३९७ ।

संज्ञा स्त्री —**बगाल देश की भाषा** ।

बचक—सज्ञा पुं. [स. वंचक] **धूर्त, ठग, पाखडी** ।

बंचकता, बचकताई—संज्ञा स्त्री. [स. वंचकता] **छल, ठगी** ।

बचन—सज्ञा पुं. [स. वंचन] **छल-कपट** ।

बचनता, बचनताई—सज्ञा स्त्री. [सं. वचनता] **ठगी** ।

बचना—सज्ञा स्त्री. [स. वचना] **ठगी** ।

क्रि. स. [स. वचन] **ठगना, छलना** ।

बँचवाना—क्रि. स. [हि. बाँचना] **पढ़वाना** ।

बचित—वि. [सं. वंचित] (१) **जो ठगा गया हो** । (२) **अलग किया हुआ** । (२) **जिसे कोई वस्तु न मिले** । (४) **हीन, रहित** ।

बंछना—क्रि. स. [स. वाछा] **इच्छा करना।**

बछनीय—वि. [सं. वाछनीय] (१) **चाहने योग्य। (२) जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो। जो प्रिय हो।**

बंछित—वि. [सं. वाछित] **चाहा हुआ।**

बज—संज्ञा पुं. [हिं. बनिज] (१) **व्यापार,** (२) **सौदा।**

बंजर—संज्ञा पुं [सं. बन+ऊजड़] **ऐसी भूमि जहाँ कुछ उत्पन्न न हो, ऊसर।**

बंजारनि—सज्ञा स्त्री. [हि बनजारिन] **टाँड़ लादकर बेचने वाली।** उ.—पेला करति देति नहि नीकै तुम हो बड़ी बजारिनि—१०४०।

बंजारा—संज्ञा पुं. [हि बनजारा] **बैल पर अनाज लादकर बेचने वाला, बनजारा।**

बंझा—वि. [स वन्ध्या] **जिसके सतान न हो, बाँझ।** उ.—ब्यावर बिथा न बझा जानै—३४४१।

सज्ञा स्त्री.—**बाँझ स्त्री।**

बँटना - क्रि. अ. [हि. बटन] (१) **भाग या हिस्सा होना** (२) **कई प्राणियों में बाँटा जाना।**

संज्ञा पुं. [हिं. बटना] **उबटन।**

बँटवाई—संज्ञा स्त्री [हिं बाँटना] **बाँटने की मजदूरी।**

सज्ञा स्त्री [हिं. बाँटना] **पिसाने की मजदूरी।**

बँटवाना—क्रि. स [सं. वितरण] **दूसरे से वितरण कराना।**

क्रि. स. [स. वर्तन] **दूसरे से पिसवाना।**

बँटा—संज्ञा पुं. [हिं. वटा] **गोल या चौकोर डिब्बा।**

वि.—**छोटे कद या आकारवाला।**

बँटाइ—क्रि. स. [हि. बाँटना] **बाँटकर, वर्ग करके।**

प्र० - बँटाइ लीने—**दलो में विभाजित कर लिये।** उ —कान्ह, हलधर बीर दोऊ, भुजा बल अति जोर। सुबल, श्रीदामा, सुदामा वै भए इक ओर। और सखा बँटाइ लीन्हे, गोपबालक-बृन्द—१०-१४४।

बँटाई—संज्ञा स्त्री. [हि. बाँटना] **बाँटने का काम, भाव या मजदूरी।**

बँटाना—क्रि. स. [हि. बाँटना] (१) **भाग या हिस्सा कराना।** (२) **बाँटने को साझीदार बनना।**

मुहा०—हाथ बटाना—**सहायता करना।**

बँटावन—वि. [हि बटाना] **बँटानेवाला, भाग लेनेवाला।** उ.—बारह बरष नीद है साधी, तातैं बिकल सरीर। बोलत नही मौन कहा साध्यौ, बिपति-बँटावन-बीर—६-१४५।

बंटी—संज्ञा स्त्री. [हि] **पशु फँसाने का जाल।**

सज्ञा स्त्री. [हि. बटा] **छोटी डिबिया।**

बँटैया—संज्ञा पुं. [हिं. बाँटना+ऐया (प्रत्य)] (१) **बाँटने वाला।** (२) **बँटा लेनेवाला।**

बंडा—संज्ञा पुं. [हिं. बंटा] **बड़ी अरुई या घुइयाँ।**

बंडी—संज्ञा स्त्री. [हि बाँड़ा] **बिना बाँह की फतुही।**

बँडेरा—संज्ञा पुं [हि बरेड़ा] **खपरैल की लंबी लकड़ी।**

बँडेरी—सज्ञा स्त्री. [हिं. बँडेरा] **खपरैल की लम्बी लकड़ी।**

बंद—सज्ञा पं [फा.] (१) **बाँधने की वस्तु।** (२) **पानी रोकने का पुश्ता, मेड़।** (३) **अंगो का जोड़।** (४) **अँगरखे, चोली आदि की तनी।** उ.—(क) सूर सुतहि बरजौ नँदरानी, अब तोरत चोली-बद डोर। (ख) चीर फटे कंचुकि-बद छूटे—७६६। (ग) गए कंचुकि बँद टूटि—१०-उ०-८। (५) **उर्दू काव्य का एक पद।** (६) **बंधन, कैद।**

वि. [फा] (१) **जो किसी तरफ से खुला न हो।** (२) **जो सब तरफ से घिरा हो।** (३) **जिसका मुँह या मार्ग न खुला हो।** (४) **जो ढकना, दरवाजा आदि खुला न हो।** (४) **जिसका कार्य रुका या स्थगित हो।** (६) **जो चलता न हो।** (७) **जिसका प्रचार-प्रकाशन आदि न हो।** (८) **जो कैद में हो।**

वि [स. वद्य] **बंदनीय।** उ.—जदुकुल-नभ तिथि द्वितीय देवकी प्रगटे त्रिभुवन बद—१३३१।

बंदगी—सज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **आराधना।** (२) **प्रणाम।**

बदत—क्रि. स. [हिं. बदना] **प्रणाम करते है, नमस्कार करते है।** उ —दसरथ चले अवध आनन्दत। जनक-राइ बहु दाइज दै करि, बार-बार पद बंदत—६-२७।

बंदन—संज्ञा पुं. [स. वंदन] (१) **स्तुति।** (२) **प्रणाम।** उ.—सकुचासन कुल सील करषि करि जगत बंद्य कर बदन—३०१४।

संज्ञा पुं. [स. वंदनी=गोरोचन] (१) **रोली, रोचन।** (२) **सिंदूर, सेंदुर, ईंगुर।** उ —(क) नील पुट बिच मनो मोती धरे बंदन बोरि—१०-२२५।

(ख) मुक्ता मनौ नील-मनि-मय पुट, धरे भुरकि बर बदन—४७६ ।

बंदनता—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनता] **स्तुति, आदर या वंदना की जाने की योग्यता ।**

बंदनमाला—संज्ञा पुं. [सं.] **फूल-पत्तों की झालर जो मंगल कार्यों के शुभावसर पर खंभों-दीवारों पर बाँधी जाती है, तोरण ।** उ.—लछिमी सी जहँ मालिनि बोलै। बंदनमाला बाँधत डोलै—१०-३२ ।

बंदनवार—संज्ञा पुं. [सं. वंदनमाला] **फूल-पत्तों की बनी हुई माला या झालर जो मंगल कार्यों के अवसर पर खंभों-दीवारों पर बाँधी जाती है ।** उ.—अच्छत दूब लिये रिषि ठाढे, बारनि बंदनवार बँधाई—१०-१६ ।

बंदना—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदना] **स्तुति, प्रार्थना ।**

क्रि. स. [सं. वंदन] **प्रणाम या नमस्कार करने ।** उ.—सुर-नर-देव बंदना आए, सोवत तै उठि जागी—१०-४ ।

बंदनी—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनी] **एक भूषण जो माथे से ऊपर सिर पर रहता है, बंदी, सिरबंदी ।**

वि. [सं. वंदनीय] **स्तुति या वंदना योग्य ।**

बंदनीमाल—संज्ञा स्त्री. [सं. वंदनमाल] **गले से पैर तक की माला ।**

बंदर, बँदरा—संज्ञा पुं. [सं. वानर] **बानर, मर्कट ।**

मुहा०—बंदर घुड़की या भबकी—**डराने, धमकाने या धौंस जमाने के लिए की जानेवाली डाँट, फटकार या धमकी ।**

बँदवारे—संज्ञा पुं. बहु. [हि. बंदन+वाला] **स्तुति, प्रार्थना या बंदना करनेवाले याचक आदि ।** उ.—फूले बंदीजन द्वारे, फूले-फूले बँदवारे, फूले जहाँ जोइ सोइ गोकुल सहर के—१०-३४ ।

बंदहि—वि. [फा. बंद+हिं, हिं (प्रत्य)] **बंद (रहकर) बंदी (होकर) ।** उ.—गूँगी बातनि यौं अनुरागति, भँवर गुंजरत कमल मों बंदहि—१०-१०७ ।

बंदा—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **सेवक, दास ।** (२) **'वक्ता' का अपने लिए शिष्टता या नम्रतासूचक प्रयोग ।**

बंदारु—वि. [सं. वंदारु] **पूजनीय, वंदनीय ।**

बंदि—संज्ञा स्त्री. [सं. बंदिन्] **कारावास, कैद ।** उ.—राज रवनि सुमिरे पति-कारन असुर-बंदि तैं दिए छुड़ाई—१-२४ ।

क्रि. स. [हि बंदना] **बंदना करके ।** उ.—यह कह्यौ नंद, नृप बंदि, अहि इन्द्र पै गयौ मेरौ नंद, तुव नाम लीन्हौ—५८४ ।

बंदिया—संज्ञा स्त्री. [हि. बंदनी] **'बंदी' नामक आभूषण ।**

बंदिश—संज्ञा स्त्री. [फा.] (१) **बाँधने की क्रिया या भाव ।** (२) **प्रबंध, योजना ।** (३) **कुचक, षड्यंत्र ।**

बंदियै—क्रि. स. [हि बंदना] **प्रशंसा कीजिए ।** उ.—जाको निंदि बंदियै, सो पुनि वह ताकौ निदरै—११५५ ।

बंदी—संज्ञा पुं. [सं.] **भाट, चारण ।** उ.—मोह-मया बंदी गुन गावत, मागध दोष-अपार—१-१४४ ।

संज्ञा स्त्री. [हि. बंदनी] **सिर का एक भूषण ।**

संज्ञा पुं. [फा०] **कैदी ।** उ.—जरासंध बन्दी कटै नृप-कुल जस गावै—१-४ ।

संज्ञा स्त्री. [हि. बंदा] (१) **दासी, सेविका ।** (२) **वक्ता नारी का अपने लिए शिष्टता अथवा नम्रता सूचक प्रयोग ।**

बंदीखाना—संज्ञा पुं. [हि. बंदी+फा. खाना] **कैदखाना ।**

बंदीघर—संज्ञा पुं. [सं. बंदीगृह] **कैदखाना ।**

बंदीछोर—संज्ञा पुं. [फा. बंदी+हि. छोर] (१) **बंधन से छुड़ानेवाला ।** (२) **बंदीगृह से छुड़ानेवाला ।**

बंदीजन—संज्ञा पुं. [सं. वन्दीजन] **राजा की गुणावली गाने वाले लोग, एक प्राचीन जाति के लोग, जो राजा-महा राजाओं का यश वर्णन करते थे ।** उ.—(क) निंदा जग उपहास करत, मग बंदीजन जस गावत—१-१४१ । (ख) बिप्र-सुजन-चारन-बंदीजन सकल नन्द-गृह आए—१०-८७ ।

बंदीवान—संज्ञा पुं. [सं. वंदिन्] **कैदी ।**

बंदेरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बंदा+एरी] **दासी, चेरी ।**

बंदोबस्त—संज्ञा पुं. [फा.] **प्रबंध ।**

बंद्य—वि. [सं. वंद्य] **बंदना या स्तुति के योग्य ।** उ.—सकुचासन कुल सील करुषि करि जगत बंद्य करि बंदन—३०१४ ।

बंध—संज्ञा पुं. [सं. बन्धन] (१) **बंधन ।** (२) **कैद ।** उ.—

कोटि छ्यानवै नृप सेना सब जरासंध बँध छोरे—**१-३१। (३) पानी रोकने का धुस्स, बाँध।** उ.—जाकै संग सेत-बंध कीन्हौ, अरु जीत्यौ महभारथ। गोपी हरी सूर के प्रभु बिनु, रहत प्रान किंहिं स्वारथ—१-२८७। (४) **रति के सोलह आसनों में से एक।** उ.—परिरंभन सुख रास हास मृदु सुरति केलि सुख साजे। नाना बंध बिबिध रस क्रीड़ा खेलत स्याम अपार—(५) **गाँठ, गिरह।** (६) **योग की कोई मुद्रा।** (७) **निबंध-रचना।** (८) **चित्र काव्य-रचना।** (९) **डोरी।** (१०) **लगाव-फँसाव।** (११) **शरीर।**

बंधक—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **रेहन-रूप में रखी वस्तु।** (२) **बदला करनेवाला।** (३) **बाँधनेवाला।**

बंधन—संज्ञा पुं. [सं. बंधन] (१) **बाँधने की क्रिया।** (२) **बाँधने की वस्तु।** (३) **प्रतिबंध, फँसाने की चीज।** (४) **वध, हिंसा।** (५) **बंदीगृह।** (६) **फंदा, गाँठ।** उ.—हा करुनामय कुञ्जर टेर्‌यौ, रह्यौ नहीं बल थाकौ। लागि पुकार तुरत छुटकायौ, काट्यौ बंधन ताकौ—१-११३।

बंधना—क्रि. अ. [सं. बंधन] (१) **बंधन में आना या पड़ना।** (२) **रस्सी आदि से फँसाया जाना।** (३) **बंदी होना।** (४) **स्वतंत्र न रहना, अटकना।** (५) **ठीक या संगठित होना।** (६) **क्रम स्थिर होना।** (७) **वचन-बद्ध होना।** (८) **प्रेम में फँसना।**

संज्ञा पुं.—(१) **बाँधने का साधन।** (२) **थैली।**

बंधनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बँधना] **बाँधने का साधन।**

बंधन—संज्ञा पुं. [हिं. बाँधव] (१) **भाई।** (२) **संबधी।**

बंधवाना—क्रि. स. [हिं बाँधना] (१) **बाँधने का काम कराना।** (२) **नियत कराना।** (३) **बंदी कराना।** (४) **तैयार कराना।**

बँधाई—क्रि. स. [हि. बँधाना] **बँधवायी या बंधन में करायी।** उ.—इनही के हित भुजा बँधाई, अब बिलंब नहिं लाऊँ—१०-३८२।

प्र०—लेहि बँधाइ—**बंदी करा लेगा।** उ—मो समेत दोउ बंधु तुम, कालिहिं लेहि बँधाइ—५८६।

बँधाऊँ—क्रि स. [हिं. बँधाना] **बाँधने के लिए प्रेरित करूँ, बँधवाऊँ।** उ.—कंचन-मनि खोलि डारि, काँच गर बंधाऊँ—१-१६६।

बँधाएँ—क्रि. स. [हिं. बँधाना] **बंदी कराया।** उ.—बाँधन गए बंधाएँ आपुन, कौन सयानप कीन्यौ—८-१५।

बंधान—संज्ञा पुं. [हि. बधना] (१) **निश्चित क्रम, नियत परिपाटी।** (२) **धन जो निश्चित क्रम के अनुसार दिया जाय।** (३) **पानी रोकने का बाँध।** (४) **ताल का सम (संगीत)।** उ.—(क) सुर स्त्रुति तान बंधान अमित अति, सप्त अतीत अनागत आवत—६४८। (ख) औघर तान बँधान सरस सुर अरु रस उमंगि भरी—२३३८।

बँधाना—क्रि. स. [हिं. बधन] (१) **बाँधने का काम कराना।** (२) **धारण कराना।** (३) **बंदी बनवाया।**

बँधाने—क्रि. स. [हि बँधाना] **बंध रहा है, बाँधा गया है।** उ.—कदली कटक, साधु असाधुहिं, केहरि के संग धेनु बँधाने—१-२१७।

बँधायो, बँधायौ—क्रि. स. [हिं. बँधाना] (१) **गुँथवाया।** उ.—मोतिनि बँधायौ बार महल मे जाइकै—१०-३१। (२) **बंधन में डलवाया।** उ—सूरदास ग्वालिनि अति झूठी बरबस कान्ह बँधायौ—१०-३३०।

बँधावत—क्रि. स. [सं बंधन, हिं बँधाना] (१) (**तालाब, कुआँ, पुल आदि) बनवाते या तैयार कराते हैं।** उ.—दस अरु आठ पदुम बनचर लै, लीला सिंधु बँधावत—९-१३३। (२) **बाँधने को प्रेरित करते हैं, बंधन में डलवाते हैं।** उ.—इहाँ हरि प्रगट प्रेम जसुमति के ऊखल आप बँधावत—३१३५।

बँधावै—क्रि. स. [हिं. बँधाना (प्रे०)] (१) **अपने को बाँधने के लिए दूसरे को प्रेरित करे।** उ.—दुखित जानि कै सुत कुबेर के तिन्ह लगि आपु बँधावै—१-१२२। (२) **अपने को बंदी कराता है।** उ.—भौंरा भोगी बन भ्रमै (रे) मोद न मानै ताप। सब कुसुमनि मिलि रस करै (पै) कमल बँधावै आप—१०-३२४।

बँधि—क्रि. अ [हि बधना] (१) **पुल आदि बाँधकर।** उ.—सिला तरी, जल माँहि सेत बँधि—१-३४। (२) **वचनबद्ध होकर।** उ.—पति अति रोष मारि मन ही मन, भीषम दई बचन बँधि बेरी-१-२५२।

बंधित—वि. [स. बंध्या] **बाँझ (स्त्री)**।

बंधी—वि. [सं. बधिन्] **जो बाँधा गया**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बँधना] **बँधा हुआ क्रम**।

बंधु—सज्ञा पुं. [सं.] (१) **भाई, भ्राता**। (२) **सहायक**। (३) **मित्र**। (४) **एक वर्णवृत्त**। (५) **बधूक पुष्प**।

बँधुआ—संज्ञा पु. [हिं. बंधना+उआ] **बदी, कैदी**।

बधुक—संज्ञा पुं. [स.] **दुपहरिया का लाल फूल**। उ.—अधर दसन-छन बदन राजत बधुक पर अलि मानो—१६६१।

बधुता—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **भाईचारा**, (२) **मित्रता**।

बंधुत्व—संज्ञा पुं. [स.] (१) **भाईचारा**। (२) **मित्रता**।

बधुर—संज्ञा पुं. [स] (१) **मुकुट**। (२) **दुपहरिया फूल**।

वधुर, बधुल—वि. [स.] (१) **सुन्दर**। (२) **नम्र**।

बँधुवा—सज्ञा पुं. [हिं. बधना+उआ] **कैदी**।

बंधूक—सज्ञा पुं. [सं. वधुक] **दुपहरिया का फूल**।

बंधेज—संज्ञा पुं. [हिं. बंधना+एज] **रुकावट, प्रतिबध**।

बंध्या—वि. स्त्री. [सं.] **बाँझ स्त्री**।

बंध्यापन—संज्ञा पुं. [हिं. बध्या+पन] **बाँझपन**।

बँध्यौ—क्रि. अ. [हिं. बँधना] **बँधा, बंधन में पड़ा**। उ.—(क) ऊखल बँध्यो जु हेतु भगत के—३६१। (ख) सूरदास प्रभु को मन सजनी बँध्यौ राग की डोर—६५७।

बंब—संज्ञा स्त्री. [अनु.] (१) **बं ब शब्द जो शैवगण करते हैं**। (२) **रण का कोलाहल**। (३) **नगाड़ा, डका**।

बँबाना—क्रि. अ. [अनु.] **पशु का रँभाना**।

बँभनाई—संज्ञा स्त्री. [सं. ब्राह्मण] (१) **ब्राह्मणपन**। (२) **हठ, दुराग्रह**।

बंस—सज्ञा पुं. [सं. वश] **वंश, परिवार**। उ.—ये तुम्हरे कुल-बंस है—१-२३८।

बसकार—संज्ञा पुं. [स. वंश] **बाँसुरी**।

बसरी—संज्ञा स्त्री.—[हि बंशी] **बाँसुरी**।

बसा—संज्ञा पुं. [सं. वंश] **वंश, कुल**। उ.—ग्वाल परम सुख पाइ, कोटि मुख करत प्रससा। कहा बहुत जो भए, सपूतौ एकै बसा—४३१।

बसी—सज्ञा स्त्री. [स. वशी] **बाँसुरी, मुरली**।

बंसीधर—संज्ञा पुं. [सं. वंशीधर] **श्रीकृष्ण**।

बंसीबट—संज्ञा पु. [सं. वंशीवट] **वृंदावन में एक बरगद का पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे**।

बँहगी—संज्ञा स्त्री. [सं. वह] **भार ढोने का एक साधन**।

बई—क्रि. स [हिं बपना] **बोयी, बीज जमाया**। उ.—(क) इंद्रिय मूल किसान, महातृन-अग्रज-बीज बई—१-१८५। (ख) मनहुँ पीक दल सींचि स्वेद जल आल बाल रति-बेलि बई री—२११५। (ग) मेरे नयना बिरह की बेलि बई—२७७३।

क्रि. स. [हिं. बलना] **बली, जली, सुलगी, छितरी, बिखरी**। उ.—जोग की गति सुनत मेरे अंग-आगि बई—३१३१।

बउर—संज्ञा पुं [हि बौर] **बौर**।

बउरा—वि. [हिं. बावला] **पागल, बावला**।

बउराना—क्रि. अ. [हि बौराना] **पागल होना**।

बए—क्रि. स बहु [हि बपना] **बोया, बीज जमाया या लगाया**। उ.—(क) गोकुलनाथ बए जसुमति के आँगन भीतर, भवन मँझार। साखा-पत्र भए जल मेलत, फूलत-फरत न लागी बार—१०-१७३। (ख) सूरदास प्रभु दूत धर्म ढिग दुख के बीज बए—२६६३। (ग) जनु तनुजा मे सद्य अरुन दल काम के बीज बए—२०८४।

बक—संज्ञा पुं [सं. वक] (१) **बगला**। (२) **बकासुर**। उ—अघ बक बच्छ अरिष्ट केसी मथि जल तें काढ्यो काली २५६७। (३) **एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था**।

वि.—**बगले सा सफेद**।

संज्ञा स्त्री.—[हिं. बकना] **बकवाद, प्रलाप**।

यौ०—बकझक या बकबक—**व्यर्थ की बकवाद**।

बकठाना—क्रि. स [सं. विकुंठन] **बकठा हो जाना**।

बकत—क्रि. अ. [सं वचन, हिं. बकना] (१) **बकती-झकती हूँ, बकते-बकते** उ.—कहाँ लगि सहौं रिस, बकत भई हौं कृस, इहिं मिस सूर स्याम-बदन चहूँ—१० २६५। (२) **डाँटते-डपटते**। उ.—बकत-बकत तोसों पचिहारी, नेकहुँ लाज न आई—१०-३२६।

बकतर—सज्ञा पुं. [फा.] **एक तरह का कवच**।

बकता—वि. [स. वक्ता] **व्याख्यान देनेवाला**।

बकति, बकती—क्रि. स स्त्री. [सं. वचन, हि. बकना] **प्रलापती है, बड़बड़ाती है, बुरा-भला कहती है।** उ —करति कछू न कानि, बकति है कटु बानि, निपट निलज बैन बिलखि सहूँ—१०-२६५।

बकध्यान—संज्ञा पुं. [सं. वक+ध्यान] **बनावटी भलमनसाहत, भले बनने का आडंबर।**

बकध्यानी—वि. [स. वकध्यानिन्] **जो दिखावटी भला हो, पर हृदय से कपटी और कुटिल हो।**

बकना—क्रि. स [सं. वचन] (१) **व्यर्थ ही बहुत बोलना।** (२) **बड़बडाना, प्रलाप करना।**

मुहा०—बकना-झकना—**बड़बड़ाना।**

बकमौन—वि. [सं. वक+मौन] **चुपचाप मतलब साधनेवाला।**

बकरति—क्रि. स. [हि. बकरना] **बकती है, बड़बड़ाती है।** उ.—जसोदा ऊखल बाँधे स्याम। ·। दह्यौ मथति, मुख तैं कछु बकरति गारी दै लै नाम। घर-घर डोलत माखन चोरत, षटरस मेरै धाम—३७६।

बकरना—क्रि. स. [हिं. बकना] (१) **बड़बड़ाना।** (२) **अपना दोष स्वीकार करना या स्वगत-रूप से कहना।**

बकरा—सज्ञा पुं. [सं. वर्कर] **एक प्रसिद्ध पशु।**

बकराना—क्रि. स. [हि. बकरना] **दोष कबूल कराना।**

बकला—संज्ञा पुं [स. वल्कल] (१) **छाल।** (२) **छिलका।**

बकवाद—संज्ञा स्त्री. [हिं. बक+वाद] **व्यर्थ की बात, बकवाद।** उ.—कहि कहि कपट सँदेसन मधुकर कृत बकवाद बढावत। (ख) सूर बृथा बकवाद करत हो, इहि ब्रज नदकुमार—३२५३।

बकवादी—वि [हि. बकवाद] **बकवाद करनेवाला।**

बकवाना—क्रि. स [हिं. बकना] **बकवाद कराना।**

बकवास—सज्ञा स्त्री. [हि बकना+वास] (१) **बकबक।** (२) **बकवाद करने की तलब या इच्छा।**

बकवृत्ति—सज्ञा स्त्री. [स वकवृत्ति] **कपटाचरण।**

बकव्रती—वि. [स. वकव्रतिन्] **कपटी, आडंबरी।**

बकसना—क्रि. स. [फा. बख्श+हिं ना] (१) **कृपापूर्वक प्रदान करना।** (२) **क्षमा करना।**

बकसाऊँ—क्रि स. [हिं. बकसाना] **क्षमा कराऊँ।** उ.—चूक परी मोतैं मै जानी, मिलै स्याम बकसाऊँ री—१६७३।

बकसाना—क्रि स [हि. बकसना] **क्षमा करना।**

बकसियो—क्रि स [हिं बकसना] **क्षमा करना।** उ.—पालागौं यह दोष बकसियो सन्मुख करत ढिठाई—३३४३।

बकसीस—संज्ञा स्त्री. [फा बखशिश] (१) **इनाम, पारितोषिक।** उ —(क) नाचै फूल्यो अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथे कै चढाइ लीनौ लाल कौ बगा—१०-३६। (ख) कमल जब ते उरग पीठि ल्याए सुने वैहै बकसीस अब उनहि दैहै—२४६७। (२) **दान।**

बकसो, बकसौ—क्रि. स [हिं. बकसना] **क्षमा करो।** उ.—(क) ढीठो बहुत कियो हम तुमसो बकसो हरि चूक हमारी—११६१। (ख) यह अपराध मोहि बकसौ री इहै कहति हौ मेरी माई—८६३।

बकस्यौ—क्रि स [हिं. बकसना] **क्षमा किया, कुछ न कहा।** उ.—पूत सपूत भयौ कुल मेरैं, अब मै जानी बात। सूर स्याम अब लौं तुहिं बकस्यौ, तेरी जानी घात—१०-३२६।

बकाना—क्रि. स. [हिं बकना] (१) **बकबक कराना।** (२) **रटाना।** (३) **बकने-झकने को विवश करना।**

बकाया—सज्ञा पुं. [अ.] (१) **बाकी, शेष।** (२) **बचत।**

बकारि—सज्ञा पुं. [सं वक+अरि] **श्रीकृष्ण।**

बकावत—क्रि. स. [हि. बकाना] **रटाता है।** उ.—बार बार बकि स्याम सो कछु बोल बकावत।

बकासुर—सज्ञा पुं [स वकासुर] **वक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।**

बकिहै—क्रि. स. [हिं. बकना] **बक-झककर मना करेगा, डाँट-फटकार करेगा।** उ — सूर आइ तू करति अचगरी, को बकिहै निसि जामहिं—७२२।

बकी—संज्ञा स्त्री [स. वकी] **बकासुर की बहिन पूतना जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।**

बकुचा—सज्ञा पुं. [हि बकुचना] **गठरी, पोटली।**

बकुचाना—क्रि. स. [हिं. बकुचा] **पोटली मे बाँधकर कधे या पीठ पर लटकाना।**

बकुची—सज्ञा स्त्री [हिं बकुचा] **छोटी गठरी।**

बकुचौहाँ—वि. [हिं. बकुचा+औहाँ] **बकुचा-जैसा।**

बकुरना—क्रि. स. [हि. बकुरना] **स्वीकार करना।**

बकुराना—क्रि. स. [हिं. बकुरना] **स्वीकार कराना।**

बकुल—संज्ञा पुं. [स.] (१) **मौलसिरी।** उ.—नूतन कदम तमाल बकुल बट परसत जनम गए। (२) **शिव।**

बकै क्रि. अ. [हिं. बकना] **बकता है।** उ.—कायर बकै, लोभ तैं भागें लरै सो सूर बखानै—३३३७।

बकोट—संज्ञा स्त्री. [हि. काटना] (१) **पंजे की स्थिति जो नोचते समय होती है।** (२) **नोचने की क्रिया या भाव।** (३) **चुटकी भर वस्तु।**

बकोटना—क्रि. स. [हिं. बकोट] **नोचना, पंजा मारना।**

बकोटनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बकोट] **बकोटने या नोचने की क्रिया।** उ.—चचल अधर, चरन-कर चचल, मचल अचल गहत बकोटनि—१०-१८७।

बक्कल—सज्ञा पुं. [स. वल्कल, पा० बक्कल] (१) **फल का छिलका।** (२) **पेड़ की छाल।**

बक्काल—सज्ञा पुं. [अ.] **बनिया, वणिक।**

बक्की—वि. [हिं. बकना] **बहुत बोलनेवाला।**

बखतर—सज्ञा पु. [हिं. बकतर] **एक तरह का कवच।**

बखरा—सज्ञा पु. [फा. बख़रः] **भाग, हिस्सा।**

बखरैत—वि. [हिं. बखरा+ऐत] **साझीदार।**

बखसीस—सज्ञा स्त्री. [फा. बख़शीश] **इनाम, पुरस्कार। नेग।** उ.—नाचै फूल्यौ अँगनाई सूर बखसीस (बकसीस) पाई माथे कै चढाइ लीनो लाल को बगा—१०-३९।

बखसीसना—क्रि. स. [हि. बखशीश] **इनाम देना।**

बखान—क्रि. स. [स. व्याख्यान पा० बक्खान] **वर्णन करके, व्याख्या करके।** उ—ये ब्रह्मा सौ कहे भगवान। ब्रह्मा मोसौं कहे बखान—१-२३०।

सज्ञा पुं. (१) **वर्णन, कथन।** उ.—गुन-रूप कछु अनुहार नाही, कर बखान बखानिए—१० उ–२४। (२) **प्रशंसा, बड़ाई।**

बखानत—क्रि. स. [हिं बखानना] **वर्णन करता है, कहता है।** उ—(क) सिव कौ धन, सतनि को सरबस, महिमा बेद-पुरान बखानत- १-११४।। (ख) सुर-नर-मुनि सब सुजस बखानत—६-१३६। (ग) तुम्हैं बेद ब्रह्मरय बखानत। तातै तुम्हरी अस्तुति ठानत—१० उ०-११५।

बखानना—क्रि. स. [हिं. बखान] (१) **कहना, वर्णन करना।** (२) **प्रशंसा या बड़ाई करना।** (३) **बुरा-भला कहना।**

बखानिए—क्रि. स [हिं. बखानना] **वर्णन कीजिए।** उ.—गुन-रूप कछु अनुहारि नाही, का बखान बखानिए—१०३.-११५।

बखानी—क्रि. स. [हि. बखानना] **वर्णन किया, कहा, चर्चा की।** उ.—(क) तिहि बिनु रहत नही निसि-बासर, जिहिं सब दिन रस-बिषय बखानी—१-१४६। (ख) उमा कही, मै तौ नहि जानी। अरु सिवहूँ मोसौं न बखानी—१-२२६।

बखानैं—क्रि. स. बहु. [हिं. बखानना] **वर्णन करते हैं, कहते है।** उ.—पूरन ब्रह्म पुरान बखानैं—१०-३।

बखानै—क्रि. स. [हिं. बखानना] **वर्णन करे।** उ.—सूर सुजस कहि कहा बखानै—१०-३।

बखानौ—क्रि. स [हिं. बखानना] **वर्णन करता हूँ।** उ.—सो अब तुमसौं सकल बखानौ—१०-२।

बखार—संज्ञा पुं. [स. प्राकार] **अनाज रखने का घेरा।**

बखारी—सज्ञा स्त्री. [हि. बखार] **छोटा बखार।**

बखूबी—क्रि वि. [फा. ब+खूबी] **भली-भाँति, पूर्णतया।**

बखेड़ा—संज्ञा पुं. [हिं. बखेरना] (१) **झंझट।** (२) **विवाद, झगड़ा।** (३) **कठिनता।** (४) **व्यर्थ आडंबर।**

बखेड़िया—वि. [हिं. बखेड़ा] **झगड़ालू, झंझटी।**

बखेरना—क्रि. स. [स विकिरण] **फैलाना, छितराना।**

बख्त—संज्ञा पुं [फा बख़्त] **भाग्य, तकदीर।**

बख्तर—सज्ञा पुं. [फा. बक्तर] **लोहे का कवच।**

बख्शना - क्रि. स. [फा. बख़्श] (१) **देना।** (२) **क्षमा करना।**

बग—संज्ञा पुं. [सं. वक] **बगुला।**

बगछुट, बगटुट—क्रि. वि [हिं. बाग+छूटना, टूटना] **बड़ी तेजी से, बेतहाशा।**

बगदई—वि. [हि बगदहा] **बिगड़ने या चौंकनेवाला।** उ.—(गैया) घेरे फिरत न तुम बिनु माधौ जू मिलत नही बगदई।

बगदना—क्रि. अ [सं विकृत, हि. बिगडना] (१) **खराब**

होना । (२) भूलना, बहकना । (३) ठीक रास्ते से हट जाना ।

बगदर—संज्ञा पुं [देश.] **मच्छड़ ।**

बगदवाना—क्रि. स. [हिं बगदना] (१) **खराब कराना ।** (२) **भुलवाना ।** (३) **गिरा देना ।** (४) **वचन से हटाना ।**

बगदहा—वि. [हि. बगदना+हा] **चौंकनेवाला ।**

बगदाना—क्रि स. [हिं. बगदना] (१) **खराब करना ।** (२) **ठीक मार्ग से हटाना ।** (३) **भुलाना, भटकाना ।**

बगना—क्रि. अ [स वक (गति)] **घूमना-फिरना ।**

बगनी—संज्ञा स्त्री [देश] **एक तरह की घास ।**

बगमेल—संज्ञा पुं. [हिं बाग+मेल] (१) **दूसरे के घोड़े के साथ या पाँति बाँधकर चलना ।** (२) **समानता ।**
क्रि. वि.—**पंक्तिबद्ध, साथ-साथ ।**

बगर—सज्ञा पुं. [सं. प्रघण, पा. पघण] (१) **महल, प्रासाद ।** (२) **बडा मकान, घर ।** (३) **घर, कोठरी ।** (४) **आँगन ।** (५) **गाय बँधने का स्थान ।**

बगरना—क्रि अ. [स. विकिरण] **बिखरना, छितरना ।**

बगराइ—क्रि. अ. [हि. बगरना] **बिखरी है, बिखराकर ।** उ.—गोरे बरन चूनरी सारी अलकै मुख बगराइ—८८४ ।

बगराई—क्रि. अ. [हि. बगरना] **फैलकर, बिखरकर, छितराकर ।** उ.—अति सुदेस मृदु हरत चिकुर मन मोहन-मुख बगराई—१०-१०८ ।

बगराए—क्रि. स. [हि. बगराना] **फैलाये हुये, छिटकाए हुए, छितराये ।** उ.—ते दिन बिसरि गए इहाँ आए । अति उन्मत्त, मोह-मद छाकयौ, फिरत केस बगराए—१-३२० ।

बगराना—क्रि. स [हिं बगरना] **छितराना, छिटकाना ।**
क्रि. अ.—**फैलना, बिखरना, छितरना ।**

बगरानी—क्रि. अ [हिं बगराना] **बिखर गयीं ।** उ —बेनी छूटि, लटैं बगरानी, मुकुट लटकि लटकानो—पृ. ३४६ (४७) ।

बगरि—क्रि. अ. [हिं. बगरना] (१) **फैल गयी, बिखर गयी ।** (२) **इधर-उधर चली गयीं ।** उ.—बगरि गईं गैयाँ बन-बीथिन, देखी अति अकुलाइ—५०० ।

बगरी—क्रि. अ. [हिं. बगरना] **बिखरीं, छिटकीं ।** उ.—तैसीयै लट बगरी ऊपर स्रवत नीर अनूप—१८४६ ।

बगरी—संज्ञा स्त्री. [हि. बगर] **बखरी, घर, मकान ।** उ. —(क) बडे बाप के पूत कहावत, हम वै बास बसत इक बगरी । नंदहु तैं ये बडे कहैहै, फेरि बसैहै यह ब्रज नगरी—१०-३१६ । (ख) घाट-बाट सब देखत आवत, युवती डरनि मरत है सिगरी । सूर स्याम तेहि गारी दीनो जो कोई आवै तुमरी बगरी—८५३ ।

बगरो—सज्ञा पुं. [हि बगर] (१) **गैयाँ बँधने का स्थान ।** उ —ग्वाल बाल सँग लिये सब घेरि रहे बगरो । (२) **ठौर, स्थान, गाँव ।** उ.—और कहूँ जाइ रहे, छाँड़ि ब्रज बगरो—१०५६ ।

बगल—सज्ञा स्त्री. [फा] (१) **बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काँख ।** (२) **छाती के दोनो किनारे के भाग, पार्श्व ।**
मुहा०—बगल मे दबाना (धरना) **छल से अधिकार में करना ।** बगल बजाना—**खूब खुशी मनाना ।**
(३) **किनारे या पार्श्व का भाग ।** (४) **समीप का स्थान ।**

बगलन—संज्ञा स्त्री. बहु. [हि. बगल] **छाती के दोनों किनारो के भाग ।** उ.—बगलन दाबे पिचकारी—२४४४ ।

बगला—संज्ञा पुं. [स. वक+ला] **एक प्रसिद्ध पक्षी ।**
मुहा०—बगला भगत—**छली, कपटी, ढोंगी ।**

बगलामुखी—संज्ञा पुं. [देश.] **एक देवी ।**

बगलियाना—क्रि. अ. [हिं. बगल+इयाना] **राह काटकर या अलग हटकर जाना ।**
क्रि. स.—(१) **अलग करना ।** (२) **बगल में लाना ।**

बगली—वि. [हिं बगल] **बगल का ।**
संज्ञा स्त्री. [हिं. बगला] **बगुले की मादा ।**

बगलौहाँ—वि. [हिं. बगल+औहाँ] **तिरछा, झुका हुआ ।**

बगसना—क्रि. स. [हि. बख्शना] (१) **देना ।** (२) **क्षमा करना ।**

बगा—संज्ञा पुं. [हि. बागा] **जामा, बागा ।** उ.—नाचै फूल्यौ अँगनाइ, सूर बकसीस पाइ, माथै कै चढाइ लीनौ लाल कौ बगा—१०-३६ ।
सज्ञा पुं [सं. वक] **बगला ।**

बगाना—क्रि. स. [हिं बगना] **घुमाना-फिराना।**

क्रि. अ.—**जल्दी जाना, भागना।**

बगार—संज्ञा पु. [देश] **गाय बाँधने का स्थान।**

बगारना—क्रि. स. [हि. बगरना] **छिटकाना, बिखेरना।**

बगावत—संज्ञा स्त्री. [अ. बगावत] **विद्रोह, राजद्रोह।**

बगिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाग] **छोटा बाग।**

बगीचा—संज्ञा पुं. [फ़ा. बागचा] **छोटा बाग।**

बगुला—संज्ञा पुं. [हि बगला] **बक, बगला।**

बगुली—संज्ञा स्त्री [बगला] **बगला की मादा, स्त्री-बक।** उ.—बग-बगुली अरु गीध-गीधनी, आइ जनम लियौ तैसौ—२-१४।

बगूला—संज्ञा पुं. [हि. वायु + गोला] **वायु का भँवर, बवडर।**

बगेड़ी, बगेरी—संज्ञा स्त्री [देश] **एक छोटी चिड़िया।**

बगैर—अव्य. [अ बगैर] **बिना।**

बघवर—संज्ञा पुं [स व्याघ्राबर] (१) **बाघ का चर्म जो आसन का काम देता है।** (२) **बाघ की खाल-सा कबल।**

बघनहाँ, बघनहियाँ, बघना—संज्ञा पुं. [हिं बाघ+नहँ = नाखून] (१) **एक आभूषण जिसमें सोने-चाँदी से मढ़े बाघ के नाखून रहते है।** उ.-(क) कठुला कठ बघनहाँ नीके। नैन-सरोज मैन सरसी के—१०-११७। (ख) सूरदास प्रभु ब्रज-बधु निरखति, रुचिर हार हिय सोहत बघना—१०-११३। (ग) सीप जयमाल स्याम उर सोहै बिच बघना छबि पावै री। (२) **एक तरह का हथियार।**

बघनियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाघ+नह = नाखून, पुं बघनहाँ] **एक आभूषण जिसमे बाघ के नाखून चाँदी या सोने से मढ़े रहते है। यह गले मे तागे में गूँथ कर पहना जाता है।** उ.—घर-घर हाथ दिवावति डोलति, बाँधति गरैं बघनियाँ—१०-८३।

बघरूरा—संज्ञा पुं [हि. वायु + गँडूरा] **बवंडर।**

बघार—संज्ञा पुं. [हि. बघारना] **तड़का, छौंक।**

बघारना—क्रि स. [स अवधारण] (१) **छौंकना, तड़का देना।** (२) **मौके-बेमौके योग्यता दिखाना।**

मुहा०—शेखी बघारना—**बढ़-बढ़कर बात करना।**

बच—संज्ञा पुं [हि वचन] **वचन, वाक्य, बात।** उ.—अपनौ मन हरि सौं राँचै। आन उपाय प्रसग छाँड़ि कै, मन-बच-क्रम अनुसाँचै—१-८१।

बचकाना—वि. [हि कच्चा + काना] **बच्चो का, बच्चो-सा।**

बचत—संज्ञा स्त्री. [हि बचना] (१) **रक्षा, बचाव।** (२) **व्यय होने से बचा भाग या अश।** (३) **लाभ।**

क्रि. स. [स. वचन] **कहता या बोलता है।** उ.—अबल प्रहलाद बल देत सुख ही बचत दास ध्रुव चरन चित सीस नायो।

बचन—संज्ञा पुं. [स. वचन] (१) **वाणी, वाक्।** (२) **शब्द, बचन, बात।** उ.—भृगु को चरन राखि उर ऊपर बोले बचन सदा सुखदाई—१-३।

मुहा०—बचन खडना – **बात न मानना, आज्ञा का पालन न करना।** बचन खंडै—**बात न मानें, आज्ञा का पालन न करे।** उ —पिता-बचन खडै सो पापी—१-१०४। बचन डालना—**याचना करना।** बचन छोडना (तोड़ना)—**कहकर हट जाना, बात का निर्वाह न करना।** बचन देना—**प्रतिज्ञा करना।** बचन निभाना (पालना)—**जो कहना, सो करना, कही हुई बात का निर्वाह करना।** बचन बाँधना—**प्रतिज्ञाबद्ध करना।** बचन बँधायो—**प्रतिज्ञा या बचनबद्ध किया।** उ.—नद जसोदा बचन बधायो। ता कारन देही धरि आयो—११६१। बचन बनाना—**बात बनाना, कुछ का कुछ समझाना।** बचन बनावत—**कुछ का कुछ अर्थ या उद्देश्य समझाते है।** उ —सूरदास प्रभु बचन बनावत अब चोरत मन मोर—१६६५। बचन लेना—**प्रतिज्ञा कराना।** बचन हारना—**प्रतिज्ञा या बचन-बद्ध होना।**

बचना—क्रि अ. [स वचन = न पाना] (१) **कष्ट आदि से सुरक्षित रहना।** (२) **बुरी बात या आदत से दूर रहना।** (३) **छूट या रह जाना।** (४) **खरचने या काम में न आ पाना, बाकी रहना।** (५) **दूर या अलग रहना।** (६) **सामने से हटना।**

क्रि. स [सं. वचन] **कहना, बोलना।**

संज्ञा स्त्री —**बात, कथन, वचन।**

बचपन, बचपना—संज्ञा पुं [हि. बच्चा+पन] (१)

बाल्यावस्था । (२) बालक होने का भाव, अबोधता और सरलता ।

बचवैया—सज्ञा पुं. [हिं. बचाना+वैया] **बचानेवाला ।**

बचा—सज्ञा पुं. [हिं. बच्चा] (१) **बालक । (२) पुत्र।**

बचाउ—सज्ञा पुं. [हि. बचाना] **बचने का भाव, रक्षा, त्राण** । उ.—महरि सबै ब्रजनारि सौं, पूछति कौन उपाउ । जनमहिं त करबर टरी, अबकैं नाहिं बचाउ—५८६ ।

बचाऊ—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा की, कष्ट या विपत्ति में न पड़ने दिया ।** उ.—बिकट रूप अवतार धरयौ जब, सो प्रहलाद बचाऊ—२२१ ।

बचाए—क्रि. स [हि बचाना] **रक्षा की** । उ.—जे पद-कमल-भजन महिमा तै, जन प्रहलाद बचाए—५३८ ।

बचाना—क्रि स. [हि बचना] (१) **रक्षा करना । (२) अलग या अप्रभावित रखना ।** (३) **खर्चने के बाद भी रख छोड़ना ।** (४) **छिपाना, चुराना ।** (५) **दूर रखना ।** (६) **रोग आदि से अलग या मुक्त रखना ।** (७) **सामने से हटाना ।**

बचाव—संज्ञा पुं [हि. बचाना] **रक्षा, त्राण** । उ.—ऐसो कैसे होय सखी री घर पुनि मेरो है बचाव री—१२३७ ।

बचावत—क्रि. स. [हिं. बचाना] **रक्षा करता है, आपत्ति या कष्ट से बचाता है ।** उ.—तोकौं कौन बचावत आइ—७-१ ।

बचावें—क्रि. स. [हि बचाना] **रक्षा करें** । उ —आउ हम नृपति, तुमकौ बचावें—८-१६ ।

बचावै—क्रि. स. [हिं. बचाना] **बचावे, रक्षा करे, कष्ट में न पड़ने दे** । उ.—पग पग परत कर्म-तम-कूपहि, को करि कृपा बचावै—१-४८ ।

बचि—क्रि. अ. [हि. बचना] **कष्ट-विपत्ति मे न पड़े, रक्षित रहे** । उ.—मन सबकैं आनन्द, कान्ह जल तै बचि आए—५८६ ।

बचिबो—क्रि. अ. [हि. बचना] **बचेगा, रक्षा होगी** । उ. रे मन, छाँड़ि बिषय कौ रचिबौ । कत तू सुवा होत सेमर कौ, अतहि कपट न बचिबौ—१-५६ ।

बचुआ—सज्ञा पुं [हि बचा] **'पुत्र' के लिए स्नेहपूर्ण या दुलार-भरा सबोधन ।**

बचे—क्रि. अ. [हि. बचना] **रक्षा हुई ।** उ.—दुहूँ वृच्छ-बिच बचे कन्हाई—३६१ ।

बचै—क्रि अ. [हि, बचना] **कष्ट या विपत्ति में न पड़ें, रक्षित रहें** । उ —(क) बरु हमकौं लै जाइ, स्याम-बलराम बचै घर—५८६ । (ख) सूर क्र जोरि अचल छोरि बिनवैं, बचैं ए आजु बिधि इहै मागैं—२६०३ ।

बचै—क्रि अ. [हि बचना] **रक्षित रहे** । उ.—अब बालक क्यो बचै कन्हाई—१०-५१ ।

बचौगे—क्रि. अ. [हि बचना] **बच सकोगे, पकड़ में न आओगे** । उ.—भागै कहाँ बचौगे मोहन, पाछैं आइ गई तुव गोहन—७६६ ।

बच्चा—सज्ञा पुं. [स. वत्स] **(१) नवजात प्राणी ।** (२) **लड़का, बालक ।** (३) **बेटा, पुत्र ।**

वि.—**अनजान, अबोध ।**

बच्ची—सज्ञा स्त्री. [हिं. बच्चा] (१) **बेटी ।** (२) **लड़की ।**

बच्छ—सज्ञा पुं. [स. वत्स, प्रा. वच्छ] (१) **बच्चा, बेटा ।** (२) **गाय का बछड़ा** । उ —(क) जैसै गैया बच्छ कै सुमिरत उठि धावै । (ख) बच्छ पुच्छ लै दियो हाथ पर मगल गीत गवायो । जसुमति रानी कोख सिरानो मोहन गोद खेलायो । (३) **वत्सासुर** । उ.—अघ बक बच्छ अरिष्ट केसी मथि जल तें काढयो काली—२५६७ ।

बच्यो, बच्यौ—क्रि. अ. [हि. बचना] (१) **बचा, शेष रहा, बाकी रहा, बच सका ।** उ.—(क) पाप मारग जिते, सबै कीन्हे तिते, बच्यौ नहि कोउ जहँ सुरति मेरी—१-११० । (ख) कीन्हे स्वाँग जिते जाने मै, एकौ तौ न बच्यौ—१-१७४ । (२) **कष्ट या विपत्ति से बचा, रक्षित रहा ।** उ —कैसैं बच्यौ, जाउँ बलि तेरी, तृनावर्त कै घात—१०-८१ ।

बच्छल—वि.—[स. वत्सल, प्रा बच्छल] **माता पिता के समान स्नेह या प्यार करनेवाला** । उ —भक्तबच्छल कृपाकरन, असरनसरन, पतित-उद्धरन कहै बेद गाई—८-६ ।

बच्छस—सज्ञा पुं. [स. वक्षस्] **छाती, वक्षस्थल ।**

बच्छा—सज्ञा पुं. [स वत्स, प्रा. बच्छ] **बच्चा, बछड़ा ।**

बछ—सज्ञा पुं. [स. वत्स, प्रा बच्छ] **बछड़ा, गाय का**

बच्चा । उ —(क) आगै बछ, पाछै ब्रज-बालक, करत चले मधुरे सुर गान—४३८ । (ख) बाल-बिलख मुख गौ न चरति तृन बछ पय पियन न धावै— (ग) ब्रह्मलोक ब्रह्मा गए लै बालक बछ संग—४६२ ।

बछड़ा, **बछरा, बछरु** बछरुवा, बछरू—संज्ञा पुं [हि. बछड़ा, बछवा] **बछड़ा, गाय का बछेड़ा** । उ —(क) ब्रह्मा बाल बछरुवा हरि गयौ, सो ततछन सारिखे सँवारी—१-३० । (ख) ब्यानी गाय बछरुवा चाटति, हौं पय पियत पतूखिनि लैया—**१०-३१५** । (ग)—भोजन करत सखा इक बोल्यौ, बछरू कतहूँ दूरि गए—४३८ । (घ) राँभति गो खरिकनि मैं, बछरा हित धाई—**१०-२०२** । (ङ) कोउ गए ग्वाल गाइ बन घेरन, कोउ गए बछरु लिवाइ— ५०० ।

बछल—वि. [सं. वत्सल] **छोटो से स्नेह करनेवाला** ।

बछलता—संज्ञा स्त्री. [स. वत्सलता] **छोटो के प्रति स्नेह का भाव** । उ.—भक्तबछलता प्रगट करी—**१-२६८** ।

बछवा, बछा—**संज्ञा** पुं. [हिं. बच्छ] **गाय का बछड़ा** । उ. —धेनु बिकल सो चरत नही तृन बछा न पीवन धावैं— ३४२३ ।

बछिया—संज्ञा स्त्री. [हिं. बछवा] **बिन ब्याई गाय** ।

मुहा०—बछिया का ताऊ (बाबा)—**मूर्ख** ।

बछुरुवनि—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बछवा] **गाय के बछड़े** । उ.—ता पर सूर बछुरुवनि ढीलत, बन-बन फिरति बही—१०-२६१ ।

बछेड़ा—संज्ञा पुं. [हि बछड़ा] **घोड़े का बच्चा** ।

बछेरू—संज्ञा पुं. [हि. बछड़ा] **गाय का बछड़ा** ।

बजत्री—संज्ञा पु. [हि बछड़ा] **बाजा बजानेवाला** ।

बजना—क्रि. अ. [हि. बाजा] (१) **बाजे में शब्द उत्पन्न होना** । (२) **आघात या प्रहार होना** । (३) **शस्त्रों का चलना** । (४) **हठ करना** । (५) **प्रसिद्ध या विख्यात होना** ।

संज्ञा पुं.—**बजनेवाला बाजा** ।

वि.—**जो बजता हो, जिसमें से ध्वनि निकले** ।

बजनियाँ, बजनिहाँ—संज्ञा पुं. [हिं. बजना+इयाँ, इहाँ] **बाजा बजानेवाला** ।

बजनी, बजनू—वि [हिं. बजना] **जो बजता हो** ।

बजमारा—वि. [हि. बज्र+मारा] **बज्र का मारा हुआ, खोटे भाग्यवाला, जिससे दैव रूठा हो** ।

बजमारी—वि. स्त्री [हिं. बजमारा] **जिससे दैव रूठा हो** । उ.—जो कह्यौ करै दी हठ याही मारग आवै बजमारी ।

बजरंग—वि. [स. वज्र+अंग] **बज्र के समान दृढ़ शरीर वाला** ।

संज्ञा पुं.—**हनुमान** ।

बजर—संज्ञा पु. [स. बज्र] **वज्र** ।

बजरा—संज्ञा पु [देश.] **एक तरह की नाव** ।

बजरी—संज्ञा स्त्री [सं वज्र] (१) **ककड़ी** । (२) **ओला** । (३) **किले के ऊपरी भाग के कगूरे जिनकी बगल में गोलियाँ चलाने के लिए कुछ अवकाश रहता है** ।

बजवाई—संज्ञा स्त्री. [हि. बजवाना] **बाजा बजाने की मजदूरी** ।

बजवाना—क्रि. स [हिं. बजाना] **बजाने में प्रवृत्त करना** ।

बजवैया—वि. [हि. बजाना+वैया] **बजानेवाला** ।

बजा—वि. [फा.] **उचित ठीक** ।

क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजाना** ।

मुहा०—बजा लाना—**पालन करना** ।

बजाइ—क्रि. स. [हि बजाना] **बजा कर, घोषित करके, डंके की चोट पर** । उ.—नेना भए बजाइ गुलाम— पृ० ३२१ (६) ।

मुहा०—लीजै ठौकि बजाइ—**अच्छी तरह देखभालकर, खूब समझ-बूझकर** । उ —नन्द ब्रज लीजै ठोकि बजाइ—२७०० ।

बजाई—क्रि स. [हि. बजाना] **बाजे से ध्वनि निकाली, बजायी** । उ.—सुरनि मिलि देव-दुंदुभि बजाई— ८-८ ।

मुहा०—कीने बजाई—**खुल्लमखुल्ला या डके की चोट पर किया** । उ.—सूरदास प्रभु हम पर ताको कीने सवति बजाई—२३२६ ।

बजाऊँ—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बाजे से ध्वनि निकालूँ** । उ.—गाऊँ बजाऊँ रस प्रेम भरि नाचौ—पृ० ३१६ (८१) ।

बजागि—संज्ञा स्त्री. [सं. वज्र+आगि] **बिजली।**

बजाज—संज्ञा पुं. [अ. बज्जाज] **कपड़ा बेंचनेवाला।**

बजाजा—संज्ञा पुं. [हिं. बजाज] **कपड़े का व्यापार।**

बजाजिनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बजाज] **कपड़ा बेचने वाली।** उ.—बजाजिनि ह्वै जाउँ निरखि नैनन सुख देऊँ—पृ० ३४६ (६१)।

बजाजी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बजाज) **बजाज का काम।**

बजाना—क्रि. अ [हिं. बाजा] (१) **बाजे आदि से शब्द उत्पन्न करना।** (२) **आघात से शब्द उत्पन्न करना।**

मुहा०—ठोकना-बजाना—**देखना-भालना, जाँच-कर परखना।**

(३) **शस्त्र से मारना।**

क्रि. स.—**पूरा या पालन करना।**

बजाय—अव्य. [फा] **स्थान पर, बदले में।**

बजायो—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बाजे से शब्द निकाला, बजाया।** उ.—(क) ताल, मृदंग, झाँझ, इन्द्रिन मिलि, बीना, बेनु बजायौ—१-२०५। (ख) जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ, आनन्द-तूर बजायौ—१०-४।

बजार - संज्ञा पुं [फा बाजार] **हाट, पठ, बाजार।**

बजारी—वि [हि बाजारी] (१) **बजारू।** (२) **साधारण।**

बजारू—वि. [हि बाजारू] (१) **बाजार का।** (२) **मामूली।**

बजावत—क्रि स [हि. बजाना] **बजाता है, बाजे से स्वर निकालता है।** उ.—हठ, अन्याय, अधर्म सूर नित नौबत द्वार बजावत—१-१४१।

बजावते—क्रि स [हि. बजाना] **बजाते हैं।** उ.—दूरहि ते वह बैन अधर धरि बारबार बजावते—२०३५।

बजावहिंगे—क्रि. स. [हिं. बजाना] **बजायँगे।** उ.—तैसीए दमकति दामिनि अरु मुरली मलार बजावहिंगे —२८८६।

बजावहीं—क्रि. स. [हि. बजाना] **बजाते हैं।** उ.—दिवि दुंदुभी बजावही, फन-प्रति निरतत स्याम—५८६।

बजावै—क्रि स [हि. बजाना] **बजाता है।** उ.- मदन मोहन बेनु मृदु मृदुल बजावै री—६२६।

बजी—क्रि अ स्त्री. [हिं. बजना] **बजने लगी, (बाँसुरी आदि) से शब्द निकाला गया।** उ.—(क) राजा के घर बजी बधाइ—५-२। (ख) तैसे सूर सुने जदुनंदन बजी एक रस ताँति—३१६८।

बजुल्ला—संज्ञा पु. [हि. बाजू] **बाँह का एक भूषण।**

बजैहै—क्रि. स. [हि. बजाना] **बजायगी।**

मुहा०—गाल बजैहै—**बढ़-बढ़कर बात करेगी, डींग हाँकेगी।** उ.—देखहु जाइ चरित तुम वाके जैसे गाल बजैहै—१२६३।

बज्जना—क्रि. अ. [हिं. बजना] **बजना।**

बज्जर—संज्ञा पुं. [स. वज्र] (१) **वज्र।** (२) **बिजली।**

बज्जात—वि. [फा. बदजात] **दुष्ट, पाजी।**

बज्र—संज्ञा पुं [सं. वज्र] **इंद्र का शस्त्र, कुलिश।**

मुहा०—बज्र परै **नाश हो जाय।** उ.—परै बज्र या नृपति-सभा पै, कहति प्रजा अकुलानी—१-२५०।

वि.—**दृढ़, बहुत मजबूत।** उ.—बंदि बेरी सबै छुटी, खुले बज्र कपाट—१०-५।

बज्री—संज्ञा पुं. [सं. वज्रिन्] **इंद्र।**

बज्रनाभ—संज्ञा पुं. [सं. वज्रनाभ] **अनिरुद्ध का पुत्र जिसे युधिष्ठिर ने मथुरापति बनाया था।** उ.—राज परीच्छित कौ नृप दीन्हौ। बज्रनाभ मथुरापति कीन्हौ—१-२८८।

बज्रवर्त—संज्ञा पु [स. वज्रवर्त्त] **मेघो का एक भेद।** उ.—जलवर्त, बारिवर्त, पवनवर्त्त, बज्रवर्त, अग्निवर्तक—६४४।

बझना—क्रि. अ [स. बद्ध, प्रा. बज्झ+ना] (१) **बधन में पड़ना, बँध जाना।** (२) **उलझना, अटकना।** (३) **हठ करना।**

बझवट—वि. [हि. बाँझ+वट] **बाँझ (स्त्री या पशु)।**

बझाना—क्रि स [हि बझना] (१) **बधन में डालना।** (२) **उलझाना, अटकाना, फँसाना।**

बझाव—संज्ञा पु. [हि. बझना] (१) **फँसाव।** (२) **उलझाव।**

बझावट—संज्ञा स्त्री [हिं बझना+आवट] (१) **फँसने का भाव।** (२) **उलझाव, अटकाव।**

बझावना—क्रि स [हि. बझाना] (१) **बँधाना।** (२) **फँसाना।**

बझे—क्रि. अ. [हि बझना] **बँधन में पड़े, बँध गये।** उ —(क) स्याम हृदय अति बिसाल, माखन दधि बिंदु-जाल, मोह्यौ मन नंदलाल, बाल ही बझे री—१०-२७५। (ख) चली प्रात ही गोपिका मटुकिन लै गोरस।····।जीव परयौ या ख्याल मे अरु गए दसादस। बझे जाय खगवृंद ज्यौ प्रिय छवि लटकनि बस—१३७७।

बट—संज्ञा पुं [स. वट] (१) **बरगद का वृक्ष।** (२) **बड़ा (एक खाद्य)।** (३) **गोल वस्तु।** (४) **ऐंठन, बटाई।** (५) **पुराणानुसार वह वट-वृक्ष जो प्रलयकाल में सुरक्षित रहा था और जिस पर भगवान ने बाल-रूप में शयन किया था।** उ —कर पग गहि, अँगुठा मुख मेलत।··। बट बाढ्यौ सागर-जल झेलत—१०-६३।

संज्ञा पुं. [हिं. बाट] **मार्ग, रास्ता।**

बटई—संज्ञा स्त्री. [स. वर्त्तक] **बटेर (पक्षी)।**

बटखर, बटखरा—सज्ञा पुं [सं. वटक] **तौलने का बाट।**

बटन—संज्ञा स्त्री. [हि. बटना] **बटने का भाव, ऐंठन।**

बटना—क्रि. स. [सं. वट=बटना] **ऐंठन देकर मिलाना।**

क्रि अ. [हि. बट्टा] **सिल पर पीसा जाना।**

संज्ञा पुं. [सं. उद्वर्त्तन, प्रा. उब्बट्टन] **उबटन।**

बटपरा, बटपार—सज्ञा पुं. [हि बाट+पड़ना, बटपार] **ठग, डाकू, लुटेरा।** उ.—चोर ढुठ बटपार अन्याई अपमारगी कहावे—पृ. ३२६ (५२)।

बटपारी—सज्ञा स्त्री. [हि बटपार] **डकैती, ठगी, लूट।**

संज्ञा पुं.—**डाकू, लुटेरा।** उ. (क) बटपारी, ठग, चोर, उचक्का, गाँठिकटा, लटबासी—१-१८६। (ख) सुनहु सूर प्रभु नीके जान्यौ व्रज जुवती तुम सन बटपारी—११६०।

बटपारे, बटपारो—सज्ञा पुं. [हि बटपार] **ठग, लुटेरा।** उ.—राधे तेरे नैन किधौ बटपारे—२१६२।

बटमार—संज्ञा पुं. [हि बाट+मारना] **ठग, लुटेरा।**

बटला—संज्ञा पुं. [सं वर्तुल, प्रा बट्टुल] **बड़ी बटलोई।**

बटली, बटलोई—सज्ञा स्त्रो [हि. बटला] **पतीली।**

बटवार—संज्ञा पुं. [हि बाट+वाला] (१) **राह-बाट का पहरेदार।** (२) **राह का कर वसूलनेवाला।**

बटा—संज्ञा पुं. [स. वटक] (१) **गोल वस्तु।** (२) **गद।** उ.—(क) लै चौगान-बटा अपनै कर, प्रभु आए घर बाहर—१० २४३। (ख) बटा धरती डारि,दीनौ,लै चले ढरकाइ—१०-२४४। (ग) देखत ही उड़ि गए हाथ ते भए बटा नट के—पृ —२३६ (५२)। (३) **रोड़ा, ढेला।** (४) **पथिक, राही।**

बटाइ—क्रि. स. [हिं. बाँटना] **बाँट कर, हिस्से करके।**

प्र०—देहु बटाइ—**बाट दो, विभाग कर दो।** उ.—बिदुर कह्यौ मति करौ अन्याइ। देहु पाडवनि राज बटाइ—१-२८४।

बटाई—सज्ञा स्त्री. [हि. बटना] **बटने का काम या भाव।**

सज्ञा स्त्री. [हिं. बँटाई] **बाँटने का काम या भाव।**

क्रि. स. [हि. बटाना] **विभाजित की।**

बटाऊ—सज्ञा पुं. [हि. बाट=रास्ता+आऊ (प्रत्य.)] **बटोही, पथिक, राही।** उ —किहि घाँ के तुम बीर बटाऊ, कौन तुम्हारौ गाउँ—६-४४। (ख) कहि धौं सखी बटाऊ को है—६-४५। (ग) बीर बटाऊ पथी हो तुम कौन देस तें आए—२८८३।

मुहा०—बटाऊ होना—**चल देना।**

बटाक—वि. [हि बड़ा] **ऊँचा, बड़ा।**

बटाना—क्रि. अ. [हि. बटाना] **(मेह) बद हो जाना।**

बटान्यो—क्रि. अ. [हि. बटाना] **(मेह) बद हो गया।** उ.—सात दिवस जल बरषि बटान्यो आवत चल्यो ब्रजहि अत्रावत।

बटिया—सज्ञा स्त्री. [हिं. बटा] (१) **छोटा गोला।** (२) **लोढ़िया।**

बटी—सज्ञा स्त्री. [सं. वटी] (१) **गोली** (२) **बड़ी (खाद्य)।**

संज्ञा स्त्री. [सं. बाटी] **वाटिका, उपवन।**

बटु—संज्ञा पुं [स. वटु] **ब्रह्मचारी।** उ.—धरि बटु रूप चले बामन जू अंबुज नयन बिसाला—सारा. ३३३।

बटुआ—संज्ञा पुं. [हि. बटुवा] (१) **एक तरह की छोटी थैली।** उ.—बटुआ झोरी दड अधारा इतनेन को आराधै—३२८४। (२) **बड़ी बटलोई।**

बटेर—संज्ञा स्त्री. [स. वर्त्तक, प्रा. बट्टा] **एक छोटी चिड़िया।**

बटोई—संज्ञा पुं. [हि. बटोही] **यात्री, पथिक।**

बटोर—संज्ञा पु. [हिं. बटोरना] (१) **जमाव । (२) ढेर ।**

बटोरत—क्रि. स. [हिं. बटोरना] **समेटता है, बटोरकर उठाता है ।** उ.—कबहूँ मग-मग धूरि बटोरत, भोजन कौ बिलखात—२-२२ ।

बटोरन—संज्ञा स्त्री. [हिं. बटोरना] (१) **बिखरी वस्तुओं को समेट कर लगाया गया ढेर । (२) खेतों में बिखरा हुआ दाना जो बटोरा जाय ।** (२) **कूड़-करकट का ढेर ।**

बटोरना—क्रि. स. [हिं. बटुरना] (१) **बिखरी चीज को एक स्थान पर एकत्र करना । (२) फैली चीज को समेटना । (३) इधर-उधर पड़ी चीजों को चुनना । (४) इकट्ठा या एकत्र करना ।**

बटोहिया, बटोही—संज्ञा पुं. [हिं बाट+वाह (प्रत्य.), बटोही] **यात्री, पथिक, राही ।**

बट्ट—संज्ञा पुं. [हि. बटा] **(१) गोला । (२) गेंद । (३) ऐंठन, मरोड़** (४) **तौल का बाट ।**

बट्टा—संज्ञा पुं. [स. वार्त्त, प्रा. वाट्ट=बनियाई] **दलाली, दस्तूरी ।** उ —बट्टा काटि कसूर भरम कौ, पोता-भजन भरावै—१-१४२ ।

मुहा०—बट्टा करना—**दस्तूरी ले लेना ।**

(२) **सिक्के आभूषण आदि के बदलने, बेचने या तुड़ाने से कटने वाली कमी । (३) खोटे सिक्के के बदलने में बेचने से होनेवाली कमी ।**

मुहा०—बट्टा लगना—**दाग या कलंक लगना ।** बट्टा लगाना—**दाग या कलक लगाना ।**

(४) **घाटा, हानि, टोटा ।**

सज्ञा पुं. [हिं. बटा=गोला] (१) **सिल पीसने का लोढ़ा । (२) ईंट, पत्थर का गोल टुकड़ा ।**

बट्टाखाता—सज्ञा पुं. [हिं बट्टा+खाता] **वह बही या खाता जिसमें डूबी हुई रकम लिखी जाय ।**

बट्टी—संज्ञा स्त्री. [हिं बट्टा] (१) **छोटा बट्टा, लोढ़िया । (२) बड़ी टिकिया या टिक्की ।**

बठपारिनि—सज्ञा स्त्री. बहु [हि बटपारी] **ठग, लुटेरी ।** उ.—फसिहारिनि बठपारिनि हम भईं, आपुन भए सुधर्मा—११६० ।

बड़—सज्ञा स्त्री. [अनु.] **बकवाद, लाप ।**

संज्ञा पुं. [सं. वट] **बरगद का पेड़ ।**

वि. स्त्री., पुं. [हि. बड़ा] (१) **बड़ा, बड़ी ।** उ.—(क) हौ बड़ हौं बड़ बहुत कहावत, सूधैं करत न बात—२-२२ । (ख) दानव-सुर बड सूर—६-२६ । (ग) जाति-पाँति हमहै बड नाही—१०-२४५ । (घ) खेलत मै कह छोट-बड़—५८६ । (२) **पद, शक्ति, अधिकार, मान-मर्यादा में अधिक, श्रेष्ठ ।** उ.—हरि के जन सब तै अधिकारी । ब्रह्मा महादेव तैं को बड़, तिनकी सेवा कछु न सुधारी—१-३४ ।

बड़का—वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, बड़ावाला ।**

बड़प्पन—सज्ञा पुं. [हि. बड़ा+पन] **बड़ाई, श्रेष्ठता, महत्व, गौरव ।** उ.– ताके झुगिया मैं तुम बैठे कौन बड़प्पन पायौ—१-२४४ ।

बड़बड़—सज्ञा स्त्री. [अनु.] **बकवाद, प्रलाप ।**

बड़बड़ाना—क्रि. अ. [अनु. बड़बड़] (१) **बकवाद करना ।** (२) **झुंझलाहट की स्थिति में धीरे-धीरे बकना ।**

बड़बड़िया—वि [अनु. बड़बड़] **बकवादी ।**

बड़बोल—वि. [हि बड़ा+बोल] (१) **बहुत बोलनेवाला, बकवादी ।** (२) **बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला, शेखीखोर ।**

बड़बोला—वि. [हिं. बड़ा+बोल] **डींग हाँकनेवाला ।**

बड़भाग, बड़भागि, बड़भागी—वि. [हिं. बड़ा+भागी] **भाग्यवान ।** उ —(क) भुजा छौरि उठाइ लीन्हे, महर है बड़भागि—३८७ । (ख) बड़भागी के सब ब्रजबासी । जिनकै संग खेलैं अबिनासी – १०-३ । (ग) ऊधौ, हम आजु भईं बड़भागी—३०१५ ।

बड़रा—वि. [हिं बड़ा] **आकार में बड़ा ।**

बड़राना—क्रि. अ. [हिं. बर्राना] **नीद में बकना ।**

बड़री—वि. स्त्री. [हिं. बड़री] **आकार में बड़ी ।**

बडवा, बड़वागि, बड़वाग्नि—संज्ञा पुं. [सं बड़वाग्नि] **समुद्र के भीतर की आग ।**

बड़वानल—सज्ञा पुं. [सं.] **समुद्र की आग ।**

बड़वार—वि. [हि. बड़ा] **बड़ा, श्रेष्ठ ।**

बड़वारी—सज्ञा स्त्री. [हि. बड़वार] **बड़ाई, महत्व ।**

बड़हर, बड़हल—सज्ञा पुं [हि. बड़ा+फल] **एक वृक्ष ।**

बढ़हार—सज्ञा पु. [हि. वर+आहार] **विवाह के पश्चात् वर और बरातियों का भोज ।**

बड़ा—वि [सं. वद्धर्न] (१) **दीर्घ, विशाल।**

मुहा०—बड़ा घर—**बंदीगृह, कारागार।**

(२) **अवस्था में अधिक।** (३) **अवस्था, परिमाण या विस्तार का।** (४) **पद, मान आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ा घर—**धनी और प्रतिष्ठित घराना।**

(५) **गुण, प्रभाव आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ा आदमी—(१) **धनी।** (२) **ऊँचे पदवाला।**

(६) **किसी बात में बढ़कर।**

संज्ञा पुं. [हि. बटा] **एक खाद्य पकवान।**

बड़ाइ, बडाई—संज्ञा स्त्री. [हि बड़ा+ई] (१) **परिमाण या विस्तार में अधिक।** (२) **पद, मान, गौरव में अधिक, बड़प्पन।** उ.—(क) बासुदेव की बड़ी बड़ाई। जगतपति, जगदीस, जगतगुरु, निज भक्तन की सहत ढिठाई—१-३। (ख) राजा छोरि बंदि तै ल्याए, तिहूँ लोक मैं विदित बड़ाइ—४६७। (३) **प्रशंसा।**

(३) **महिमा, प्रशसा, तारीफ।** उ.—(क) जहँ-तहँ सुनियत यहै बड़ाई मो समान नहिं आन - १-१४५। (ख) दिन दिन इनकी करौ बड़ाई अहिर गए इतराइ—२५७८।

मुहा०—बड़ाई देना—**आदर करना।** बड़ाई मारना—**शेखी हाँकना, डींग मारना।**

(४) **परिमाण, विस्तार या फैलाव।**

बड़ाबोल—संज्ञा पुं [हि. बड़ा+बोलना] **घमंड की बात।**

बड़िए—वि. [हिं बड़ी] **बड़ी ही।** उ.—बड़ो दूत तू बड़ी उमर को बड़िए बुद्धि बड़ोई—३०२२।

बड़ियाई—संज्ञा स्त्री. [हि. बड़ाई] **बड़ाई, प्रशंसा।** उ.—प्रभु आज्ञा तैं वर कौं आई। पुरुष करत तिनकी बड़ियाई—८००।

बड़ी—वि. स्त्री. [हिं. बड़ा] (१) **बड़े आकार या विस्तार की।** (२) **पद, मान आदि में अधिक।**

मुहा०—बड़ी बात—**बहुत संतोषजनक बात, गनीमत।** उ.—बड़ी बात भई कमल पठाए, मानहुँ आपुन जल तैं ल्याए—५८८।

बड़े—वि. [हिं. बड़ा] (१) **आदर, पद आदि में अधिक।** उ.—(क) बड़े बाप के पूत कहावत·· नंदहु तैं ये बड़े कहैहै—१०-३१६। (ख) वहाँ जादव पति प्रभु कहियत हमैं न लगन बड़े—३१५१।

मुहा०—बड़े घर की—**प्रतिष्ठित और धनी घराने की।** उ.—बड़े घर की बहू-बेटी करति बृथा झवारि—११३५।

बड़ेरर—संज्ञा पुं. [देश.] **बवंडर, चक्रवात।**

बड़ेरा—वि. [हिं. बड़ा] (१) **बड़ा।** (२) **प्रधान।**

संज्ञा पुं.—**छाजन के बीच की लकड़ी जो लंबाई के बल होती है।**

बड़ेरे—वि. बहु. [हि. बडेरा] **बड़े।** उ.—जे द्रुम सींचि सींचि अपने कर कियो बढाय बडेरे—२७२०।

बड़ेरो—वि. [हिं. बडेरा] (१) **बड़ा।** उ.—बनि बनि आवत हे लाल भाग बड़ेरो मेरे—पृ. ३१६ (८६)।

(२) **आयु या पद में बड़ा।** उ.—मेरो सुत सरदार सबनि कौ बहुतै कान्ह बडेरो—१०-२१५।

बड़ैया—संज्ञा स्त्री [हिं. बड़ाई] **कीर्ति, मान।** उ.—इतने बड़े और नहि कोऊ इहि सब देत बड़ैया—२३७४।

बड़ोइ—वि. [हिं. बड़ा] (१) **खूब लंबा-चौड़ा, अधिक विस्तार का।** (२) **अधिक अवस्था का।** उ.—सुनि देवता बड़े, जग पावन, तू पति या कुल कोइ। पद पूजिहौं, बेगि यह बालक करि दै मोहिं बडोइ—१०-५६।

बड़ौ—वि. [हिं. बड़ा] (१) **बढ़कर, श्रेष्ठ, अधिक, बढ़ा-चढ़ा।** उ.—ब्याध, गीध अरु पतित पूतना, तिनतैं बड़ौ जु और—१-१४५। (२) **बड़े डील-डौल का, मोटा-ताजा।** उ.—मैया मोहिं बड़ौ करि लै री—१०-१७६।

बड़ौना—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ापन] **बड़ाई, महिमा।**

बढ़—वि. [हिं. बढना] **अधिक, बड़ा हुआ।**

संज्ञा—**बढ़ती, अधिकता।**

बढ़इयै—क्रि. स. [हि बढाना] **बढ़ाइए, वर्द्धित कीजिए।** उ.—सूरदास-प्रभु भक्तनि कैं बस, भक्तनि प्रेम बढइयै—१-२३६।

बढ़ई—संज्ञा पुं [सं. वर्द्धकि, प्रा. बड्ढइ] **लकड़ी को छील और गढ़कर अनेक सामान बनानेवाला।**

बढ़त—क्रि. अ. [हि. बढना] **बढ़ता है** । उ.—पुनि पाछें-अघ-सिंधु बढत है, सूर खाल किन पाटत—१-१०७ ।

बढ़ती—संज्ञा स्त्री [हि बढना+ती] **वृद्धि, उन्नति** ।

बढ़न—संज्ञा स्त्री. [हि बढना] **वृद्धि, बढ़ती** ।

बढ़ना—क्रि. अ. [सं. वर्द्धन, प्रा. बड्ढन] (१) **डील-डौल या लंबाई-चौड़ाई में वृद्धि को प्राप्त होना** ।

मुहा०—बात बढना—**विवाद या झगड़ा होना** ।

(२) **गिनती या नाप-तौल में ज्यादा होना** । (३) **बल, प्रभाव या गुण मे अधिक होना** । (४) **पद, मर्यादा, अधिकार आदि में अधिक होना** । (५) **स्थान-विशेष से आगे जाना** । (६) **चलने-दौड़ने मे आगे हो जाना** । (७) **किसी बात में आगे हो जाना** । (८) **भाव आदि का अधिक हो जाना** । (९) **लाभ होना** । (१०) **दूकान आदि बंद होना** । (११) **दीपक का बुझना** ।

बढ़नी—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्द्धनी, प्रा. बड्ढनी] **झाड़ू** ।

बढ़यौ—क्रि. अ. [हि. बढना] **बढ़ा, विस्तार मे अधिक हुआ** । उ.—द्रौपदी कौ चीर बढयौ, दुस्सासन गारी —१-१७६ ।

बढ़वारि—संज्ञा स्त्री. [हि. बढना] **वृद्धि, बढ़ती** ।

बढ़ाइ, बढ़ाई—क्रि. स. [हि. बढाना] (१) **बढ़ाकर, अधिक करके** । उ.—मोह्यौ जाइ कनक कामिनि-रस, ममता-मोह बढाई—१-१४७ । (२) **विस्तृत की (भूत०)** ।

बढ़ाऊँ—क्रि स. [हिं बटाना] **विस्तृत करूँ, आकार मे बढ़ाऊँ** । उ.—मोहन-मुर्छन-बसीकरन पढि, अगमिति देह बटाऊँ—१०-४६ ।

बढ़ाए—क्रि. स. बहु [हिं. बढाना] **बढ़ाया, वृद्धि की** । उ.—हरष नँदराइ कैं मन बढाए—५८७ ।

बढ़ायौ—क्रि. स. [हि. बटाना] **वृद्धि की** । उ.—गुरु बसिष्ठ अरु मिलि सुमत सौं अति ही प्रेम बढायौ—९-५५ ।

बढ़ाना—क्रि. स. [हि बढना] (१) **लम्बाई-चौड़ाई या डील-डौल मे अधिक करना** ।

मुहा०—बात बढाना—(१) **अत्युक्तिपूर्वक कुछ कहना** । (२) **झगड़ा या विवाद करना** ।

(२) **गिनती या नाप-तौल मे अधिक करना** । (३) **बल, प्रभाव या गुण मे अधिक करना** । (४) **पद, मर्यादा, अधिकार आदि में अधिक करना** । (५) **स्थान-विशेष से आगे कर देना** । (६) **चलने, दौड़ने मे आगे कर देना** । (७) **किसी बात में आगे कर देना** । (८) **भाव आदि को बढ़ा देना** । (९) **फैलाना, विस्तार करना** । (१०) **दूकान आदि बंद करना** । (११) **फैलाना, लंबा करना** । (१२) **दीपक बुझाना** ।

क्रि. अ.—**चुकना, समाप्त होना** ।

बढ़ाने—क्रि. प्र. [हिं. बढाना] **समाप्त हो गये, चुक गये** । उ.—मेघ सबै जल बरषि बढाने, बिवि गुन गए सिराई—६६७ ।

बढ़ाली—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कटार, कटारी** ।

बढाव—क्रि. स. [हि बढाना] **बढ़ाती है** । उ.—जाकौ सिव-बिरंचि सनकादिक मुनिजन ध्यान न पाव । सूरदास जसुमति ता सुत हित, मन अभिलाष बढाव —१०-७५ ।

संज्ञा पु [हि. बढना+आव] (१) **बढ़ने की क्रिया या भाव** । (२) **विस्तार, फैलाव** । (३) **अधिकता** । (४) **उन्नति** ।

बढावत—क्रि. स. [हि. बढावना] **बढ़ाते है** । उ.—छज्जे महलन देखि कै मन हरष बढावत—२५६० ।

बढावति—क्रि. स. स्त्री. [हिं. बढ़ावना] **बढ़ाती है** ।

मुहा०—बढ़ावति रारि—**झगड़ा बढ़ाती है, विवाद करती है** । उ.—बादति है बिन काज ही, बृथा बढावति रारि—५८९ ।

बढ़ावना—क्रि. स. [हि बढ़ाना] **वृद्धि करना, बढ़ाना** ।

बढ़ावा—संज्ञा पुं. [हिं बढाव] **प्रोत्साहन** ।

बढ़ावै—क्रि स [हि. बढाना] **परिमाण या मात्रा में अधिक किया** । उ.—ऐसौ और कौन करुनामय, बसन-प्रवाह बढ़ावै—१-१२२ ।

बढि—क्रि. अ. [हिं बढ़ना] **वृद्धि पाकर** ।

प्र०—बढ़ि गयौ—**डील-डौल में अधिक हो गया** । उ.—पुनि कमडल धरयौ, तहाँ सो बढ़ि गयौ—८-१६ ।

मुहा०—कहन लगी बढ़ि बढि बात—**घमण्डभरी या इतरानेवाली बात कहने लगी, छोटे मुँह बड़ी बात कहने लगी** । उ.—कहन लगी अब बढि बढि बात । ढोटा मेरौ तुमहि बँधायौ, तनकहि माखन खात—३५५ ।

बढ़िया—वि. [हि. बढना] **अच्छा, उत्तम।**
बढ़ी—क्रि. स [हि. बढना] **परिमाण, विस्तार या फैलाव मे अधिक हो गयी।** उ.—बीच बढी जमुना जलकारी—१०-११।
बढ़ै—क्रि. अ. [हिं. बढना] **बढ़ जाय, वृद्धि को प्राप्त हो।** उ.—(क) अज्ञानी-सँग बढै अज्ञान—५-२। (ख) कजरी कौ पय पियहु लाल, जासौं तेरी बेनि बढै—१०-१७४।
बढ़ैया—संज्ञा पुं [हिं बढई] **लकड़ी का काम करनेवाला, बढ़ई।** उ—पालनौ अति सुंदर गढि ल्याउ रे बढैया—१०-४१।
वि. [हिं. बढ़ना, बनाना] (१) **बढ़नेवाला।** (२) **बढ़ानेवाला।**
बढ़ैहै—क्रि. स. [हिं. बढाना] **बढ़ायँगे।** उ.—पचएँ बुध कन्या कौ जौ है, पुत्रनि बहुत बढ़ैहै—१०-८६।
बढ़ैहै—क्रि. स. [हिं बढ़ना] **बढ़ायगी।** उ.—गुप्त प्रीति काहे न करी हरि सो प्रगट किंए कछु नफा बढ़ैहै—११६२।
बढोतरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाढ़+उतर] **वृद्धि, उन्नति।**
बढ्यौ—क्रि. अ. [हिं. बढना] **अधिक प्रबल हो गया, बल और प्रभाव मे अधिक हो गया।** उ.—हिरनकस्यप बढ्यौ उदय अरु अस्त लौं—१-५।
बणिक—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **व्यापार करनेवाला, बनिया।** (२) **बेचनेवाला, विक्रेता।**
बत—सज्ञा स्त्री. [हिं. बात] **बात (यौगिक शब्द प्रयोग)।**
बतकहाव—संज्ञा पुं [हिं. बात+कहाव] (१) **बातचीत।** (२) **कहा-सुनी, तर्क-कुतर्क, विवाद।**
बतकही—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात+कहना] **बातचीत।**
बतख—संज्ञा स्त्री. [अ. बत] **एक बड़ी चिड़िया।**
बतचल—वि. [हिं. बात+चलना] **बकवादी, बकनेवाला, बक्की।** उ.—जानी जात सूर हम इनकी, बतचल चंचल लोल—३२६५।
बतबढ़ाव—संज्ञा पुं. [हिं. बात+बढ़ाव] **कहासुनी, विवाद।**
बतरस—संज्ञा पुं. [हिं. बात+रस] **बात करने का आनन्द।**
बतराति—क्रि. प्र. [हि. बतराना] **बात करती है।** उ.—हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहि बतराति—१८८७।
बतरान—संज्ञा स्त्री [हि बतराना] **बातचीत।**
बतराना—क्रि प्र. [हि. बात+आना] **बात करना।**
बतरौहाँ—वि [हि. बात] (१) **बात करने की चाह रखने वाला।** (२) **बात करता हुआ।**
बतलाना—क्रि. स. [हि बताना] **कहना, बताना।**
क्रि. अ. **बातचीत करना।**
बताइ—क्रि. स. [हि. बताना] **कहना, सूचित करना।**
प्र०—देहु बताई—**बता दो, सूचित करो।** उ—तुम बिनु साँकरै को काकौ। तुम ही देहु बताइ देवमनि, नाम लेउँ धौं ताकौ—१-११३।
बताई—क्रि. स. [हिं. बताना] **सूचित किया, जताया, निर्देश दिया।** उ.—मन-बच-क्रम हरि-नाम हृदय धरि, ज्यौं गुरु बेद बताई—१-३१८।
बताउ—क्रि. स. [हिं. बताना] **बताओ, सूचित करो, जनाओ।** उ—को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौं मोहि बताउ—१-१४५।
बताऊँ—क्रि. स. [हिं. बताना] **कहूँ, जानकारी कराऊँ, सूचित करूँ।** उ.—अंबर जहाँ बताऊँ तुमकौं, तौ तुम कहा देहुगी हमकौं—७६६।
बतात—क्रि. अ. [हिं. बताना] **बताते हो या बात करते हो।** उ.—टेढै कहा बतात, कंस कौं देहु कमल अब। कालिहिहि पठए माँगि पुहुप अब ल्याइ देहु जब—३८६।
बताना—क्रि. स. [हि. बात+ना] (१) **कहना, कहकर सूचित करना।** (२) **समझाना-बुझाना।** (३) **दिखाना, निर्देश करना।** (४) **काम के लिए कहना।** (५) **नाचने-गाने मे भाव प्रकट करना।** (६) **दण्ड देकर ठीक रास्ते पर लाना।**
क्रि अ.—**बोलना।**
बतानी—क्रि. अ. [हिं. बताना] **बोली, आवाज दी।** उ.—नंद महर घर के पिछवारे राधा आइ बतानी हो—१५५६।
बतायौ—क्रि. स. [हि. बताना] **दिखाया, प्रदर्शित या निर्देशित किया।** उ.—नंद घरनि तब मथि दह्यौ, इहि भाँति बतायौ—७१६।
बतावत—क्रि स. [हि. बताना] **सकेत करता है, सकेत से**

बात करता है। उ.—चितै रहै तब आपुन सासि-तन, अपने कर लै लै जु बतावन—१०-१८८।

बतावति—क्रि स. [हिं. बताना] (१) **सूचित करती है, निर्देश देती है, जताती है, दिखाती है**। उ.—प्रात समय रवि-किरनि-कोंवरी, सो कहि, सुतहि बतावति है—१०-७३। (२) **कहती या बताती है**। उ.—कबहुँ कहति बन गए, कबहुँ कहि घरहि बतावति—५८६।

बतावै—क्रि स. [हिं. बताना] (१) **बताता है, सूचित करता है, जताता है**। उ—अहंकार पटवारी कपटी, झूठी लिखत बही। लागै धरम, बतावै अधरम, बाकी सबै रही—१-१८५। (२) **संगीत या नृत्य के भाव बताता है**। उ.—कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नाना भाव बतावै—८७७।

बतावौ—क्रि स. [हिं. बताना] **बताओ, कहो, सूचित करो**। उ.—कत क्रीड़त कोउ और बतावौ, ताही के ह्वै रहिये—१-१३६।

बतास—संज्ञा स्त्री. [स. वातासह] (१) **वायु, हवा**। उ.—जबतैं जनम भयौ है तेरौ, तबहिं तै यह भाँति लला रे। कोउ आवति जुवती मिस करिकै, कोउ लै जात बतास-कला रे—६०८। (२) **वात-रोग, गठिया**।

बतासा—संज्ञा पुं [हि बतास=हवा] (१) **एक तरह की मिठाई**। (२) **बुलबुला, बुद्बुद**।

मुहा०—बतासा सा घुलना—(१) **शीघ्र नष्ट होना (कोसना, गाली)**। (२) **क्षीण होते जाना**।

बतासे—संज्ञा पुं. बहु. [हिं. बतासा] **बहुत से बतासे**। उ.—तिल चाँवरी बतासे, मेवा दियौ कुँवरि की गोद—७०४।

बतिअन, बतिअनि—संज्ञा स्त्री. सवि [हिं बात] **केवल बातो से, कोरा उपदेश देकर**। उ.—बतिअन सब कोऊ समुझावै—३३८१।

बतियाँ—संज्ञा स्त्री. [हिं. बात] **बात, बचन**। उ.—वै बतियाँ छतियाँ लिखि राखी जे नंदलाल कही—२८६६।

मुहा०—कहत बनाइ बतियाँ—**सिर्फ बात करने से, कोरी चर्चा से**। उ.—कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसैं धौ तम नासत—२-२५। झूठी बतियाँ जोरि—**मनमानी बातें गढ़कर**। उ.—उरहन लै जुवती सब आवतिं झूठी बतियाँ जोरि—८६८।

बतिया—संज्ञा पुं. [स. वर्त्तिका, प्रा बत्तिआ] **छोटा कच्चा फल**।

बतियाना—क्रि. अ. [हिं. बात] **बातचीत करना**।

बतियार—संज्ञा स्त्री. [हि बात] **बातचीत**।

बतू—संज्ञा पुं [हि. कलाबतू] **रेशम पर बटा हुआ सोने-चाँदीका तार**।

बतीस—वि. [हि बत्तीस] **बत्तीस**। उ.—द्वै पिक बिंब बतीस बज्रकन एक जलज पर थात—१६८२।

बतैए—क्रि. स. [हि बताना] **बताइए, समझाइए**। उ.—जेहि उपदेश मिलैं हरि हमको सो ब्रत-नेम बतैए—३१२४।

बतैहै—क्रि. स. [हिं. बताना] **बतायेंगे**।

मुहा०—कहा बतैहै—**क्या उत्तर देंगे, कैसे अस्वीकार करेंगे**। उ—खायो खेले संग हमारे याको कहा बतैहै—३४३६।

बतौर—क्रि. वि. [अ.] (१) **रीति से**। (२) **समान**।

बत्ती—संज्ञा स्त्री. [स. वर्त्ति, प्रा बत्ति] (१) **सूत, रुई, कपड़े आदि का बटा हुआ टुकड़ा जो दीपक में जलाया जाता है**। (२) **दीपक**। (३) **पलीता**। (४) **फूस का पूला**।

बत्तीसी—संज्ञा स्त्री. [हि. बत्तीस]। (१) **बत्तीस का समूह**। (२) **मनुष्य के दाँत जो बत्तीस होते है**।

मुहा०—बत्तीसी झड़ जाना [पड़ना]—**सब दाँत गिर जाना**। बत्तीसी दिखाना—**हँसना**। बत्तीसी बजना—**दाँत किटकिटाना**।

बत्यावई—क्रि. अ. [हि. बात, बतियाना] **बातचीत करती है, बतियाती है**। उ.—जसुमति भाग-सुहागिनी, हरि कौ सुत जानै। मुख-मुख जोरि बत्यावई, सिसुताई ठानै—१०-७२।

बत्स—संज्ञा पुं. [सं. वत्स] (१) **बछड़ा**। (२) **बालक**।

बत्सल—वि. [स. वत्सल] **अत्यन्त स्नेहवान् या कृपालु**। उ.—भक्त-बत्सल कृपानाथ, असरन-सरन, भार-भूतल हरन जस सुहायौ—१-११६।

बत्सलता—संज्ञा पुं [सं. वत्सल+हि. ता] (१) **प्रेम, स्नेह।** (२) **दया, कृपा।** उ.—सूर भक्त-बत्सलता बरनौ, सर्व कथा कौ सार—१-२६७।

बत्सासुर—संज्ञा पुं. [सं. वत्सासुर] **कंस का अनुचर एक राक्षस जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था।**

बथान—संज्ञा पुं. [सं. वत्स+स्थान] **गो-गृह।**

बथुआ—संज्ञा पुं [सं वास्तुक, पा० वात्थुअ] **एक साग।** उ.—बथुआ भली भाँति रचि राँध्यौ—२३२१।

बद—वि. [फ़ा.] (१) **बुरा।** (२) **दुष्ट, नीच।**

संज्ञा स्त्री. [सं. वर्त] **बदला, एवज।**

मुहा०—बद में—**बदले में, स्थान पर।** उ.—गुरुगृह जब हम बन को जात। तुरत हमारे बद में लकरी लावत सहि दुख गात।

क्रि. स [हि. बदना] **ठहराकर, स्थिर करके।**

मुहा०—बद कर (काम करना) (१) **दृढ़ता या हठ के साथ।** (२) **ललकारकर, चुनौती देकर।** बदकर कहना—**पूरी दृढ़ता से कहना।**

बदत—क्रि. स. [हिं. बदना] **गिनती में लाता है, समझता है, मानता है, बड़ा या महत्व का ख्याल करता है।** उ.—(क) सब तजि तुम सरनागत आयौ, दृढ करि चरन गहे रे। तुम प्रताप बल बदत न काहूँ, निडर भए घर-चेरे—१-१७०। (ख) सब आनंद-मगन गुवाल, काहूँ बदत नहीं—१०-२४। (ग) बदत काहू नहीं निधरक निदरि मोहि न गनत। (२) **कहते हैं, वर्णन करते हैं, गाते हैं।** उ—मनौ बेद-बंदीजन सूत-बृंद मागध-गन, बिरद बदत जै जै जै जैति कैटभारे—१०-२०५।

बदति—क्रि. स. [हिं. बदना] **समझती या मानती है।** उ.—जोबनदान लेउँ गो तुमसौं। जाके बल तुम बदति न काहुहि कहा दुरावति मोसो।

बदन—संज्ञा पुं. [फ़ा.] **शरीर, देह।**

संज्ञा पुं. [सं. वदन] **मुख।** उ.—गोपिनि के सो बदन निहारै—१०-३।

बदना—क्रि. स. [सं. वद=कहना] (१) **कहना, वर्णन करना।** (२) **स्वीकार करना।** (३) **स्थिर करना।**

मुहा०—भाग्य मे बदना—**भाग्य में लिखा होना।** काम करने को बदना—**दृढ़ता के साथ काम करने को कहना।**

(४) **बाजी या शर्त लगाना।** (५) **कुछ समझना, महत्व का मानना।**

बदनाम—वि. [फ़ा.] **कलंकित, निंदित।**

बदनामी—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **कलंक, निंदा।**

बदनियाँ—संज्ञा पुं. अल्प. [सं वदन] **छोटा मुख।** उ. निरखति ब्रज-जुवती सब ठाढी, नंद-सुवन-छबि चंद-बदनियाँ—१०-१०६।

बदबू—संज्ञा स्त्री. [फ़ा.] **दुर्गन्ध।**

बदमाश—वि. [फ़ा. बद+अ. मआश] **दुष्ट।**

बदमाशी—संज्ञा स्त्री. [हि बदमाश] **दुष्टता, नीचता।**

बदरंग—वि. [फ़ा.] (१) **बुरे या भद्दे रंग का।** (२) **जिसका रंग बिगड़ गया हो।**

बदर—संज्ञा पुं. [सं.] **बेर का पेड़ या फल।**

बदरन, बदरनि—संज्ञा पुं. बहु [हि बादल] **मेघ, बादल।** उ.—देखौ माई, बदरनि की बरियाई—६८५।

बदरा—संज्ञा पुं. [हि] **बादल, मेघ।**

बदराह—वि [फ़ा] **दुष्ट, कुमार्गी।**

बदरि—संज्ञा पुं. [सं.] **बेर का पेड़ या फल।**

बदरिकाश्रम, बदरिकासरम—संज्ञा पुं [सं. बदरिकाश्रम] **हिमालय पर स्थित वैष्णवों का एक श्रेष्ठ तीर्थ। यहाँ नर-नारायण और व्यास का आश्रम है। एक शृंग पर बदरी (बेर) वृक्ष होने के कारण इसका यह नाम पड़ा कहा जाता है।**

बदरिआ, बदरिया, बदरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदली] **छाये हुए बादल, बादल।** उ.—(क) बदरिआ बधन बिरहिनी आई—२८२१। (ख) जोबन-धन है दिवस चारि को ज्यों बदरी की छाहीं—२१६४।

बदरी—संज्ञा स्त्री. [सं.] **बेर का पेड़ या फल।**

बदरीनाथ—संज्ञा पुं. [सं.] **बदरिकाश्रम तीर्थ।**

बदरीनारायण—संज्ञा पुं [सं.] **नारायण जिनकी मूर्ति बदरिकाश्रम में है।**

बदरौह—वि. [फा. बद+रौ] **बदचलन, कुमार्गी।**

संज्ञा पु. [हि. बादर+औह] **बदली का आभास।**

बदरौला—संज्ञा स्त्री. [देश.] **वृषभानु की एक दासी।** उ.—नारि बदरौला रही वृषभानु घर रखवारि–६७६।

बदल—संज्ञा पुं. [अ.] (१) **हेर-फेर।** (२) **पलटा, एवज।**

बदलना—क्रि. अ. [अ. बदल + ना] (१) **हेर-फेर होना।** (२) **एक के स्थान पर दूसरा होना।** (३) **एक के स्थान पर दूसरा नियुक्त होना।**

क्रि. स.—(१) **हेर-फेर करना।** (२) **एक के स्थान पर दूसरा करना, कहना या रखना।** (३) **विनिमय करना।**

बदलवाना—क्रि. स. [हि. बदलना] **बदलने का काम कराना।**

बदला—संज्ञा पुं. [हिं बदलना] (१) **परस्पर लेना-देना, विनिमय।** (२) **हानि की पूर्ति-रूप में उपस्थित की गयी वस्तु।** (३) **पलटा, एवज।** (४) **प्रतीकार।** (५) **प्रतिफल, नतीजा।**

बदलाना—क्रि. स. [हि. बदलना] **बदलने का काम कराना।**

बदलि—क्रि. अ. [हि बदलना] **एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेकर, विनिमय करके, परिवर्तन करके।** उ.–इते मान यह सूर महा सठ, हरि-नग बदलि, बिषय बिष आनत—१-११४।

बदली—क्रि. अ [हि बदलना] **बदल गयी, भिन्न हो गयी परिवर्तित हो गयी।** उ.—मदनगोपाल बिना या तन की सबै बात बदली—२७३४।

सज्ञा स्त्री. [हि बादल] **छाये हुए बादल।**

संज्ञा स्त्री [हिं बदलना] **तबदीली, तबादला।**

बदले—संज्ञा पुं [हिं बदला] **एक के स्थान पर दूसरे को रखना।** उ.—नटि सुख-आसन नृपति सिधायौ। तहाँ कहार एक दुख पायौ। भरत पंथ पर देख्यौ खरौ। वाके बदले ताकौं धरौ—५-४। (२) **विनिमय।** उ.—मूरा के पातन के बदले को मुक्ताहल दैहै —३१०५।

बदलैं—सज्ञा पुं. सवि. [हि. बदला] **बदले में, स्थान पर, स्थान की पूर्ति में।** उ —(क) दच्छ-सीस जो कुंड मै जरयो। ताके बदलैं अज-सिर धरयौ—४-५। (ख) मम कृत इनके बदलै लेहु। इनके कर्म सकल मोहिं देहु—७-२।

बदलो, बदलौ—संज्ञा पुं. [हिं बदलना] **पलटा, एवज।** उ —(क) ताहि सूल पर सूली दयौ। ताकौ बदलौ तुमसौ लयौ—३-५। (ख) जेते मान सेवा तुम कीन्ही, बदलो दयो न जात—२६५७। (ग) हमसो बदलो लेन उठि धाए मनो धारि कर सूप—३१८२।

क्रि. स [हि. बदलना] **परिवर्तन करो।** उ.—ते अब वहन जटा माथे पर बदलो नाम कन्हाई—३१०६।

बदलौवल—सज्ञा स्त्री. [हिं. बदलना] **हेर-फेर।**

बदसूरत—वि. [फा. बद + सूरत] **कुरूप।**

बदाबदी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बदना] **लागडाँट, होड़।**

बदाम—सज्ञा पुं. [फा. बादाम] **एक मेवा, बादाम।** उ —खारिक, दाख, चिरौंजी, किसमिस, उज्वल गरी बदाम—८१०।

बदामी—वि. [हिं. बदाम] **बादाम के रंग का।**

बदि—सज्ञा स्त्री [स. वर्त] **बदला, एवज, पलटा।**

अव्य.—(१) **बदले या पलटे में।** (२) **लिए।**

बदिहै—क्रि. स. [हिं बदना] **मानेगी, स्वीकार करेगी।** उ.—मेरो प्रगट कह्यो बदिहै ब्रज ही देउँ पठाइ—२६१३।

बदिहौं—क्रि. स. [हि बदना] **मानूँगा, स्वीकार करूँगा, सकारूँगा।** उ.—जानिहौ अब बाने की बात। मोसौं पतित उधारौ प्रभु जौ, तौ बदिहौं निज तात—१-१७६।

बदी—संज्ञा स्त्री. [देश.] **कृष्ण पक्ष, अन्धेरा पाख।**

संज्ञा स्त्री. [फा.] **बुराई, अपकार।**

क्रि. स. [हि बदना] **निश्चित की, ठहराई, स्थिर करके।** उ —(क) स्याम गए बदि अवधि सखी री। (ख) नैननि होड़ बदी बरसा सो—३४५७।

बदौलत—क्रि. वि. [फा.] (१) **कृपा से।** (२) **कारण से।**

बद्दर, बद्दल—सज्ञा पुं [हि. बादल] **बादल।**

बद्ध—वि. [सं.] (१) **बँधा हुआ।** (२) **अज्ञान में फँसा हुआ।** (३) **जिस पर रोक या प्रतिबंध हो।** (४) **व्यवस्थित, परिमित।** (५) **निर्धारित।** (६) **बैठा या जमा हुआ।** (७) **सटा या जुड़ा हुआ।**

बद्धपरिकर—वि [सं.] **कमर कसे, तैयार।**

बद्धमूल—वि [सं.] **जमी जड़ का, दृढ** ।

बद्धी—संज्ञा स्त्री. [सं. बद्ध] **रस्सी, तसमा** ।

बध—संज्ञा पुं. [सं.] **हनन, हत्या** ।

बधक—वि [स.] **बध करनेवाला** ।

बधत—क्रि. स [हि बधना] **मार डालता है, बधता है, हत्या करता है** । उ —जैसै मगन नाद-रस सारँग, बधत बधिक बिन बान—१-१६६ ।

बधन—संज्ञा पुं. [सं. बध] **बध, हनन, हत्या** । उ.—बालक करि इनकौं जनि जान्यौ, कंस बधन येई करिहैं —१०-८५ ।

बधना—क्रि. स. [सं. बध + ना] **हत्या करना** ।

संज्ञा पुं [स. वर्द्धन] **टोंटीदार लोटा** ।

बधाइ, बधाई—संज्ञा स्त्री [हिं. बढना, बढाई] (१) **वृद्धि, बढती** । (२) **जन्म या मंगल अवसर का आनन्द या गाना बजाना** । उ.—(क) रिषभदेव तब जनमे आइ । राजा कै गृह बजी बधाइ—५-२ । (ख) महरि जसोदा ढोटा जायौ, घर घर होति बधाई—१०-२१ । (ग) आजु गृह नंद महर कैं बधाइ—१०-३३ । (३) **खुशी, चहल-पहल** । (४) **पुत्र-जन्म पर माता-पिता को आनन्द-सूचक संदेश, मुबारकबाद** । उ.—सुत के भऐं बधाई पाई—१०-३२३ । (५) **शुभ अवसर पर इष्ट-मित्र को दिया जानेवाला संदेश** । उ —एक परस्पर देत बधाई, एक उठत हँसि गाइ—१०-२० । (६) **शुभ या मगल अवसर पर दिया जानेवाला उपहार** ।

बधाए—संज्ञा पु. [हि. बधाई] **मगलाचार** । उ.—घर घर होत अनद बधाए, जहँ तह मगध-सूत—१०-३६ ।

बधाना—क्रि. स. [हि. बध] **बध कराना** ।

बधाया, बधायो—संज्ञा पुं. [हिं. बधाई] **बधाई** ।

क्रि. स. [हिं बधाना] **बध कराया** । उ —ए दोउ नीर खीर निरवारत इनहिं बधायो कस—३०४६ ।

बधावन, बधावना, बधावा—संज्ञा पुं. [हिं. बधाई] (१) **आनन्द-मगल, मगलाचार** । उ.—(क) बनि ब्रजसुंदरि चलीं, सु गाईं बधावन रे—१०-२८ । (ख) हरषि बधावा मन भयौ (हो) रानी जायौ पूत—१०-४० । (२) **मंगलोत्सव आदि का उपहार** ।

बधिक—संज्ञा पुं. [सं बध] (१) **बध करनेवाला** । (२) **प्राण लेनेवाला, जल्लाद** । (३) **व्याध, बहेलिया** ।

बधिर—संज्ञा पु. [स] **बहरा** ।

बधिरता—सज्ञा स्त्री [सं.] **बहरापन** ।

बधी—क्रि स. [हि. बधना] **हत्या की** ।

बधू—संज्ञा स्त्री. [सं वधू] (१) **नव विवाहिता स्त्री, दुलहन** । (२) **पत्नी, भार्या** । उ.—जितनी लाज गुपालहि मेरी । तितनी नाहिं बधू हौ जिनकी, अंबर हरत सबनि तन हेरी—१-२५२ । (३) **स्त्री, नारी** । उ.—(क) ज्यौं दूती पर-बधू भोरि कै, लै पर पुरुष दिखावै—१-४२ । (ख) भोर होत उरहन लै आवति, ब्रज की बधू अधूकनै—३७७ । (४) **अवस्था और पद मे छोटे पुरुष की पत्नी** ।

बधूटी—संज्ञा स्त्री [सं. वधूटी] (१) **नव बधू** । (२) **पुत्र की स्त्री, पतोहू** । (३) **सौभाग्यवती स्त्री** ।

बधूरा—सज्ञा पुं. [हि. बहुधूर] **अधड़, बवडर** ।

बधैया—संज्ञा स्त्री. [हि. बधाई] (१) **पुत्र-जन्म के शुभ अवसर पर हर्ष-सूचक वचन या सदेश** । उ.—सूरदास प्रभु की माइ जसुमति, पितु नँदराइ, जोइ जोइ माँगत सोइ देत है बधैया—१०-४१ । (२)**मंगलाचार** । उ.—गोपी-ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजति बधैया—१०-१५५ ।

बध्य—वि. [स.] **मारने के योग्य** ।

बन—सज्ञा पु. [स. वन] (१) **कानन, जंगल** ।

मुहा०—होत जो बन को रोयो—**ऐसी बात या प्रकार जिस पर कोई ध्यान न दे** । उ.—कत श्रम करत सुनत को इहाँ है, होत जो बन को रोयो—३०२१ । (२) **समूह** । (३) **जल, पानी** । (४) **बाग, बगीचा** । (५) **कपास का पेड़** ।

बनए—क्रि. स. [हि. बनाना] **बनाये** । उ.—मनौ । बिवि मरकत बीच महानग चतुर नारि बनए—६८४ ।

बनक—संज्ञा स्त्री [हिं. बनना] (१) **बनावट, सजधज** । (२) **बाना, भेस, वेश** ।

सज्ञा स्त्री. [स वन + क] **बन की उपज** ।

बनकोरा, बनकौरा—संज्ञा पुं. [देश.] **लोनिया का साग** । उ.—बनकौरा पिंडीक चिचिंडी—३९६ ।

बनखडी—पुं. [हिं. बन + खड] **बनवासी** ।

बनचर—संज्ञा पुं. [सं. बनचर] (१) **जंगली पशु।** (२) **जंगली मनुष्य।** (३) **जल के जीव।**

बनचारी—संज्ञा पुं. [सं. वनचारिन्] (१) **बनवासी।** उ.—तात बचन लगि राज तज्यौ तिन अनुज घरनि सँग भए बनचारी—१०-१९८। (२) **बन के जीव।** (३) **जल के जीव।**

बनचौर, बनचौरी—संज्ञा स्त्री. [सं. वन+चमर, चमरी] **सुरागाय जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।**

बनज—संज्ञा पुं. [सं. वाणिज्य] **व्यापार, व्यवसाय।**

संज्ञा पुं. [सं. वनज] (१) **कमल।** (२) **जल-जीव।** (३) **जल में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ।**

बनजात—संज्ञा पुं. [सं. वन+जात] **कमल।**

बनजारनि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनजारा] **बनजारा वर्ग की नारी।** उ.—लीन्हे फिरति रूप त्रिभुवन को ऐ नोखी बनजारनि—१०४१।

बनजारा—संज्ञा पुं. [हिं. बनिज+हारा] (१) **बैलों पर अनाज लादकर बेचनेवाला, टाँडा लादनेवाला।** (२) **व्यापारी।**

बनजी—संज्ञा पुं. [सं. वाणिज्य] (१) **व्यापार।** (२) **व्यापारी।**

बनत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] (१) **बनावट।** (२) **अनुकूलता।**

बनताई—संज्ञा स्त्री [हिं. बन+ताई] (प्रत्य.)] **बन की सघनता या भयंकरता।**

बनद—संज्ञा पुं [सं. वन+द] **बादल, जलद।**

बनदाम—संज्ञा स्त्री [सं. वन+दाम] **वनमाला।**

बनदेवी—संज्ञा स्त्री [सं. वनदेवी] **वन की अधिष्ठात्री देवी।**

बनधातु—संज्ञा स्त्री [सं. वनधातु] **गेरू या वैसी ही रंगीन मिट्टी।** उ.—स्याम अंग आनंद करत सब अंग अंग बनधातु चित्र करि।

बनना—क्रि. अ [सं. वर्णन] (१) **तैयार होना।** (२) **काम में आने योग्य होना।** (३) **ठीक रूप या स्थिति में आना।** (४) **एक पदार्थ से दूसरा तैयार होना।** (५) **संबंध हो जाना।** (६) **पद, अधिकार आदि प्राप्त करना।** (७) **उन्नत दशा में पहुँचना।** (८) **प्राप्त होना, मिलना।** (९) **पूरा या समाप्त होना।** (१०) **मरम्मत होना।** (११) **संभव होना।**

मुहा०—जान (प्राण) पर आ बनना—**प्राण संकट में पड़ जाना।**

(१२) **आविष्कार होना।** (१३) **आपस में निभना या पटना।** (१४) **सुन्दर लगना, स्वादिष्ट होना।** (१५) **सुयोग या सुअवसर मिलना।** (१६) **स्वरूप धारना, स्वाँग बनाना।** (१७) **मूर्ख सिद्ध होना।** (१८) **उच्च या बड़ा सिद्ध करने का प्रयत्न करना।** (१९) **खूब सजना, शृंगार करना।**

बननि—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] (१) **बनाव सिंगार, सजावट।** (२) **रचना, बनावट।**

बननिधि—संज्ञा पुं. [सं. वननिधि] **सागर, समुद्र।**

बनपट—संज्ञा पुं. [सं. वनपट] **छाल से बना कपड़ा।**

बनपथ—संज्ञा पुं. [सं. वनपथ] **जलमार्ग, सागर।**

बनपत्र—संज्ञा पुं. [सं. वनपत्र] **एक बाजा।** उ.—किनहु सुरंग कोउ बेनु किनहु बनपत्र बजाये—११०७।

बनपाती—संज्ञा स्त्री [हिं. बन+पत्ती] **बनस्पति।**

बनबाहन—संज्ञा पुं. [सं. वन+वाहन] **जलयान, नौका।**

बनमाल, बनमाला—संज्ञा स्त्री. [सं. वनमाला] **तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल—इन पाँच पौधों की पत्तियों और फूलों की बनी हुई ऐसी माला जो प्रायः गले से पैर तक लम्बी होती थी।** उ.—मुकुट सिर धरे, बनमाल कौस्तुभ गरे—४-१०।

बनमालाधर—संज्ञा पुं. [सं. वनमाला+हिं. धरना] **विष्णु और उनके राम-कृष्ण अवतार।** उ.—कंबु कंठधर, कौतुक-मनिधर, बनमालाधर, मुक्तमालधर—५७२।

बनमाली—संज्ञा पुं. [सं. वनमाली] (१) **बनमाला धारण करनेवाला।** (२) **श्रीकृष्ण।** उ.—अब ए बेली रूखन हरि बिनु छाँड़ि गए बनमाली—३२२८। (३) **विष्णु।** (४) **मेघ, बादल।** (५) **घने वनवाला प्रदेश।**

बनरखा—संज्ञा पुं. [हिं. बन+रखना] **वनरक्षक।**

बनरा—संज्ञा पुं [हिं. बंदर] **बानर, बंदर।**

संज्ञा पुं. [हिं. बनना] (१) **वर, दूलह।** (२) **विवाह का मंगलगीत।**

बनराई—संज्ञा पुं [सं. वनराज] (१) **बन का राजा,**

सिंह। (२) **तोता**। उ.—सजल लोचन चारु नासा, परम रुचिर बनाइ। जुगल खंजन करत अविनति, बीच कियौ बनराइ—१०-२२५।

बनराज, बनराजा, बनराय, बनराया—संज्ञा पुं. [सं. बनराज] (१) **सिंह**। (२) **तोता**।

बनरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनरा] **नववधू, दुलहिन**।

बनरुह—संज्ञा पुं. [सं. वनरुह] (१) **अपने आप उगनेवाले जंगली पेड़**। (२) **कमल**।

बनवना—क्रि. स. [हिं. बनाना] **रचना, बनाना**।

बनवसन—संज्ञा पुं. [सं. वनवसन] **छाल का कपड़ा**।

बनवाना—क्रि. स. [हिं. बनाना] **दूसरे को बनाने के काम में प्रवृत्त करना**।

बनवारी—संज्ञा पुं. [सं. वनमाली] **श्रीकृष्ण**।

बनबासी—संज्ञा पुं. [सं. वनवासी] **वन का निवासी**।

बनवैया—संज्ञा पुं. [हिं. बनाना+वैया] **बनानेवाला**।

बना—संज्ञा पुं. [हिं. बनना] **वर, दूलह**।

क्रि. स.—**रचा गया, तैयार हुआ**।

मुहा०—बना रहना—(१) **जीवित रहना**। (२) **उपस्थित रहना**।

बनाइ—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **रचकर, तैयार करके**। उ.—व्यास कहे सुकदेव सौं द्वादस स्कंध बनाइ—१-२२५। (२) **तैयार करके, व्यवहार-योग्य रूप देकर**। उ.—षटरस सौंज बनाइ जसोदा, रचि-कै कंचन थार—३९७। (३) **साजकर**। उ.—तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै—१-५२। (४) **गढ़ गढ़कर**। उ.—कहत बनाइ दीप की बतियाँ, कैसै धौं तम नासत—२-२५।

क्रि. वि.—(१) **निपट, नितांत**। उ.—यह बालक धौं कौन कौ, कीन्हौ जुद्ध बनाइ—५८९। (२) **भली-भाँति, अच्छी तरह**। उ.—आपु अपनौ घात निरखत खेल जम्यौ बनाइ—१०-२४४।

बनाइए—क्रि. स. [हिं. बनाना] **शृंगार कीजिए, सजाइए**। उ.—छूटे निहुर बदन कुँभिलानौ सुहथ सँवारे बनाइए—१६८८।

बनाई—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **रची, निर्मित की**। उ.—नाना भाँति पाँति सुंदर मनौ कंचन की है लता बनाई—६-५६। (२) **व्यवहार-योग्य रूप दिया**। उ.—अति ग्यौसर सरस बनाई—१०-१८२। (३) **सजाया, शृंगार किया**। उ.—लोचन ललित, ललाट भृकुटि बिच तकि मृगमद की रेख बनाई—६१६। (४) **रचकर, गढ़कर, गढ़ी, कल्पित की**। उ.—(क) हम जानी यह बात बनाई—७६६। (ख) देखे तब बोल्यौ कान्ह, उतर यौं बनाई—१०-२८४।

क्रि. वि.—(१) **बिलकुल, अत्यन्त**। उ.—हरि तासौं कियौ जुद्ध बनाई—७-२। (२) **भलीभाँति, अच्छी तरह**।

बनाउ—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **किसी पदार्थ को काट-छाँटकर और गढ़कर, सँवारकर, सुंदर रूप देकर**। उ.—सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ, बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया—१०-४१। (२) **बनाओ, निर्मित करो**। उ.—रिषि दधीचि हाड़ लै दान। ताकौ तू निज बज्र बनाउ—६-५।

संज्ञा पुं. (१) **बनावट**। (२) **सजावट**। (३) **युक्ति**।

बनाऊँ—क्रि स. [हिं. बनाना] **सजाऊँ**। उ.—तुमरे भूषन मोकौं दीजै अपने तुमहिं बनाऊँ—पृ. ३११ (११)।

बनाए—क्रि. स [हिं. बनाना] **रचे**। उ.—बालक बच्छ हरे चतुरानन, ब्रह्म-लोक पहुँचाए। सूरदास-प्रभु गर्व बिनासन, नव कृत फेरि बनाए—४३६।

बनागि, बनाग्नि—संज्ञा स्त्री. [सं. वनाग्नि] **दावानल**।

बनाना—क्रि. स. [हिं बनना] (१) **रचना, तैयार करना**। (२) **गढ़कर, सँवारकर या पकाकर तैयार करना**। (३) **ठीक या उचित रूप देना**। (४) **एक पदार्थ से दूसरा तैयार करना**। (५) **नया भाव या संबंध प्रदान करना**। (६) **पद, मान, अधिकार-विशेष प्रदान करना**। (७) **उन्नत दशा में पहुँचाना**। (८) **प्राप्त करना**। (९) **समाप्त करना**। (१०) **आविष्कार करना**। (११) **मरम्मत करना**। (१२) **हँसी उड़ाना**।

बनाबत, बनावनत—संज्ञा पुं. [हिं. बनना+अबनना]

विवाह के लिए लड़के-लड़की की जन्मपत्री का मिलान।

बनाम—अव्य. [फा.] **नाम पर, किसी के प्रति।**

बनाय—क्रि. वि. [हिं. बनाकर] (१) **नितांत।** (२) **भली-भाँति, अच्छी तरह।**

क्रि. स. [हिं. बनाना] **पकाकर, तैयार करके।** उ.—मधु-मेवा पकवान मिठाई व्यंजन बहुत बनाय—६१८।

बनायो—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **धारण किया, रखा।** उ.—नर-तन, सिंह-बदन बपु कीन्हौ, जन-लगि भेष बनायौ—१-१९०। (२) **रची, निर्मित की।** उ.—चंदन अगर सुगंध और घृत, बिधि करि चिता बनायौ—९-५०।

बनारसी—वि. [हिं. बनारस] **काशी का, काशी-वासी।**

बनाव—संज्ञा पुं. [हिं. बनना+आव] (१) **रचना, बनावट।** (२) **सजावट, शृंगार।** (३) **युक्ति, उपाय।**

बनावट—संज्ञा स्त्री. [हिं बनाना+वट] (१) **रचना, गढ़त।** (२) **आडंबर, ऊपरी दिखावा।**

बनावत—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) (**किसी पदार्थ का रूप परिवर्तित करके**) **नई वस्तु तैयार करता है, रूप परिवर्तित करता है।** उ.—मातु उदर मैं रस पहुँचावत। बहुरि रुधिर तैं छीर बनावत—२-२०। (२) **मनगढ़त करता है, उपहास करता है।** उ.—सूर सीस तृन दै बूझति हौ, साँच कहत की बनावत री—१५८५। (३) (**रूप**) **धरते हैं,** (**स्वाँग**) **बनाते है।** उ.—मनही मन बलबीर कहत है, ऐसे रंग बनावत। सूरदास-प्रभु-अगनित महिमा, भगतनि कैं मन भावत—१०-१२५।

बनावति—क्रि. स. [हिं. बनाना] **बनाती है।**

मुहा०—बुद्धि बनावति—**उपाय सोचती है, युक्ति निकालती है।** उ.—यह सुनिकै मन हर्ष बढायौ, तब इक बुद्धि बनावति—११७४।

बनावन—संज्ञा पु. [हिं बनाना] **बनाने का भाव, रचना।**

मुहा०—बात बनावन—**बात गढ़ने में।** उ.—बात बनावन कौ है नीकौ, बचन-रचन समुझावै—१-१८६।

बनावनहारा—संज्ञा पुं. [हिं. बनाना+हारा] (१) **बनानेवाला, रचयिता।** (२) **सुधारनेवाला, सुधारक।**

बनावनो—संज्ञा पुं. [हिं. बनावना] **बनावट, रचना।** उ.—पचरँग पाट कनक मिलि डोरी अतिही सुघर बनावनो—२२८०।

बनावै—क्रि. स. [हिं. बनाना] (१) **बनाता है, रचता है, तैयार करता है।** (२) **रूप धारण करता है, रूप धरता है।** उ.—दर-दर लोभ लागि लिये डोलति, नाना स्वाँग बनावै—१-४२। (३) **सुधारता है, पूर्णतः संपादन करता है, पूरा करता है।** उ.—मूक, निंद, निगोड़ा, भोंड़ा, कायर, काम बनावै—१-१८६।

बनासपति, बनासपती—संज्ञा स्त्री. [सं. वनस्पति] (१) **जड़ी, बूटी आदि।** (२) **साग-पात, फलफूल आदि।**

बनि—वि. [हिं. बनना] **पूर्ण, सब, समस्त।**

क्रि अ—(१) **बनकर, रचकर।**

प्र०—बनि जाइ—**काम बन जाय, इच्छा पूरी हो, दशा सुधर जाय।** उ.—उचित अपनी कृपा करिहौ, तबै तो बनि जाइ १-१२६। बनि आइहै—**करते-धरते बन पड़ेगा, कर सकोगे, सम्हाल सकोगे।** उ—तब न कछू बनि आइहै, जब बिरुझै सब नारि—११२५।

(२) **बन-ठनकर, सज-धजकर।** उ,—(क) बनि ब्रज सुंदरि चली—१०-२८। (ख) बन तैं बनि ब्रज आवत—४७९। (ग) जुवति बनि भई ठाढी और पहिरे चीर—१८५२।

बनिक—संज्ञा पुं [सं. वणिक] (१) **व्यापारी।** (२) **बनिया।**

बनिज—संज्ञा पुं [सं. वाणिज्य] (१) **व्यापार, वस्तुओं का क्रय-विक्रय।** उ—(क) प्रेम-बनिज कीन्हो हुतो नेह नफा जिय जानि—३१४६। (ख) सूरदास तेहि बनिज कवन गुन मूलहु माँझ गवाँए—३२०१। (ग) और बनिज मे नाहीं लाहा, होति मूल में हानि—१-३१०। (२) **व्यापार की वस्तु, सौदा।** (३) **धनी, मालदार।**

बनिजना—क्रि. स. [हिं. बनिज] (१) **व्यापार करना**। (२) **मोल लेना**।

बनिजति—क्रि. स. [हिं. बनिजना] **लेन-देन करती है**। उ.—यह बनिजति बृषभानु सुता तुम हम सों बैर बढ़ावति।

बनिजाहा—संज्ञा पुं. [हिं. बनजारा] **टाँड़ा लादनेवाला**।

बनिजारिन, बनिजारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनजारी] **बनजारा जाति की स्त्री**। उ.—लीन्हें फिरति रूप त्रिभुवन को ए नोखी बनिजारिनि।

बनित—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनना] **वेश, साजबाज**। उ.—चढ़ि जदुनन्दन बनित बनाय कै। साजि बरात चले जादव जाय कै।

बनिता—संज्ञा स्त्री. [सं. वनिता] (१) **स्त्री, नारी**।। उ.—सूर स्याम बनिता ज्यों चंचल पग नूपुर झनकार (२) **पत्नी**।

बनियाँ—क्रि. स. [हिं. बनना] **बन पड़ता है**।

प्र०—गावत नहिं बनियाँ—**गाते नहीं बन पड़ता है, गा नहीं पाता है**। उ.—सेस सहस आनन गुन गावत नहिं बनियाँ—१०-१४४। कहति न बनियाँ—**कही नहीं जाती, वर्णन नहीं की जा सकती**। उ.—आपुन खात, नंद-मुख नावत, सो छबि कहत न बनियाँ—१०-२३८।

बनिया—संज्ञा पुं. [सं. वणिक] (१) **व्यापारी**। (२) **वैश्य**।

बनिस्बत—अव्य. [फा.] **अपेक्षा, तुलना में**।

बनिहै—क्रि. अ. [हिं. बनना] **बनेगा, अच्छा रहेगा**। उ.—गेंद खेलत बहुत बनिहै, आनौ कोऊ जाइ—५३२।

बनी—संज्ञा स्त्री [हिं. बन] **बाग, वाटिका, वनस्थली**।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बना] (१) **दुलहिन**। (२) **नायिका**।

संज्ञा पुं. [सं. वणिक] **बनिया**।

क्रि. अ. [हिं. बनना] (१) **खूब पटती है, अच्छी तरह निभती है**। उ.—सूर कहत जे भजन राम कौं, तिनसौं हरि सौं सदा बनी—१-३९। (२) **शोभित है**। उ.—कंठ मुक्तामाल, मलयज, उर बनी बनमाल—१-३०७। (३) **योग्य या उचित थी, फबी, भली लगी**। उ.—ते दीनी बधुनि बुलाइ, जैसी जाहि बनी—१०-२४। (४) **फबती है, भली लगती है**। उ.—मुकुट कुण्डल जड़ित हीरा लाल सोभा अति बनी—१० उ०-२४। (५) **उपयुक्त है, योग्य है**। उ.—नन्द सुत बृषभानु-तनया रास में जोरी बनी—पृ० ३४५ (३)। (६) **प्रस्तुत हुई, तैयार हुई, निर्मित हुई**। उ.—हरि जू की आरती बनी—२-२८।

मुहा०—जिय आनि बनी—**जी में दृढ़ विश्वास हो गया है, धारणा बन गयी है**। उ.—मेरैं जिय ऐसी आन बनी—८९४। कठिन बनी है—**बड़ी विपत्ति आ पड़ी है**। उ.—निबाहौ बाँह गहे की लाज। द्रुपद-सुता भाषति नँदनंदन, कठिन बनी है आज—१-२५५।

बनीनी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बनी+ईनी] **वैश्य की स्त्री**।

बनीर—संज्ञा पुं. [सं. वानीर] **बेंत**।

बने—क्रि. अ. बहु. [हिं. बनना] **तैयार हुए, बनाये गये**।

मुहा०—बहुत बने हैं—**बहुत स्वादिष्ट हैं**। उ.—मिलि बैठे सब जेंवन लागे। बहुत बने कहि पाक—४६४।

बनै—क्रि. अ. [हिं. बनना] (१ **बनता है, काम देता है**। उ.—तेल-तूल-पावक-पुट भरि धरि, बनै न बिना प्रकासत—२-२५। (२) **बच सकोगे, रक्षा होगी**। उ.—(क) पहुप देहु तौ बनै तुम्हारी, ना तरु गये बिलाइ—५२६। (ख) गेंद दियैं ही पै बनै, छाँड़ि देहु मति-धूत—५८९।

मुहा०—खेलत बनै—**खेलते बनता है, ठीक तरह से खेला जाता है**। उ.—खेलत बनै घोष निकास—१०-२४४।

संज्ञा पुं. सवि. [हिं. बन+ऐं.] **बन में ही, बन ही को**। उ.—व्यंजन सहस प्रकार जसोदा बनै पठाए—४३७।

बनैया—संज्ञा पुं. [सं. बनाना+ऐया (प्रत्य.)] **बनानेवाला, गढ़नेवाला, निर्माण करनेवाला**। उ.—सीतल चंदन कटाउ, धरि खराद रंग लाउ, बिबिध चौकरी बनाउ, धाउ रे बनैया—१०-४१।

बनैला—वि. [हिं. बन+ऐला] **जंगली, वन्य**।

बनोवास—संज्ञा पुं. [सं. वनवास] **बन में रहना**।

बनौटी—वि. [हि. बन+औटी] **कपास के फूल जैसा, कपास का, कपासी ।**

बनौरी—संज्ञा स्त्री [सं बन+ओला] **वर्षा का ओला ।**

बनौआ, बनौवा वि. [हि. बनना+औवा] **बनावटी ।**

बन्यौ—क्रि. अ. [हि बनाना] (१) **शोभित हुआ, धारण किया ।** उ.—कटि लहँगा नीलौ बन्यौ, को जो देखि न मोहै (हो) ?—१-४५ । (२) **बनता है, होता है, (काम) चला करता है ।** उ.—या विधि कौ ब्योपार बन्यौ जग, तासौं नेह लगायौ - १-७६ ।

मुहा०— भलौ बन्यौ है संग—**अच्छा साथ हुआ है, खूब साथ बना है ।** उ.—प्रथम आजु मैं चोरी आयौ, भलौ बन्यौ है संग । आपु खात, प्रतिबिंब खवावत, गिरत कहत, का रंग—१०-२६५ ।

बन्हि—संज्ञा स्त्री. [सं. वह्नि] **आग, अग्नि ।**

बपंस—संज्ञा पुं [हि. बाप+अंश] **बपौती, दाय ।**

बप—संज्ञा पुं. [हिं. बाप] **पिता ।**

बपन—संज्ञा पुं [सं. वपन] (१) **केशमुंडन ।** (२) **बीज बोना ।**

बपना—क्रि. स [सं वपन] **बीज बोना ।**

बपु—संज्ञा पुं. [सं वपु] (१) **शरीर ।** उ—तात-मरन, सिय-हरन, राम बन-बपु धरि बिपति भरै—१-२६४ । (२) **अवतार ।** (३) **रूप ।**

बपुरा—वि. पुं. [हिं. बापुरा] **बेचारा, अनाथ, निरीह ।** उ.—बपुरा मोकौं कहति, तोहि बपुरी करि डारौं—५८६ ।

बपुरी—वि. स्त्री. [हिं बपु ा] **बेचारी, अनाथ, निरीह ।** उ —हमतैं भली जलचरी बपुरी अपनौ नेम निबाह्यौ—३१४६ ।

बपुरे—वि. [हिं बापुरा] (१) **तुच्छ, नगण्य, जिसकी कोई गिनती न हो ।** उ —इंद्र समान है जाके सेवक, नर बपुरे की कहा गनी—१-३ । (२) **अनाथ, निरीह ।**

बपुरैं—वि. सवि [हिं बपुरा] **बेचारे ने, गरीब ने, अनाथ ने ।** उ —मनमाकरि सुमिरयौ गज बपुरैं, ग्राह प्रथम गति पावै—१-१२२ ।

बपुरो, बपुरौ—वि. [हि. बपुरा] (१) **बेचारा, अनाथ, अशक्त ।** उ.—(क) केतिक जीव कृपिन मम बपुरौ, तजैं कालहू प्रान । सूर एकहीं बान बिदारै, श्री गोपाल की आन—१-२७५ । (२) **तुच्छ, क्षुद्र ।** उ.—कहा बपुरो कंस निदर्यौ तब मन सस करत हैं जी को—२५५६ ।

बपौती—संज्ञा स्त्री [हि बाप+औती] **पिता से प्राप्त धन-संपति और जायदाद ।**

बप्पा—संज्ञा पुं [हि. बाप] **पिता, जनक ।**

बफारा—संज्ञा पु [हिं भाप] **भाप से सेंकना ।**

बबकना—क्रि अ [अनु] **चिल्लाना, बमकना ।**

बबा—संज्ञा पुं [तु बाबा] (१) **पिता ।** उ.—मन मैं माष करत, कछु बोलत, नंद बबा पै आयौ—१०-१५६ । (ख) सिर कुलही, पग पहिरि पैंजनी, तहाँ जाहु जहँ नंद बबा रे—१०-१६० । (२) **बाबा, दादा ।**

बबुआ - संज्ञा पुं. [हि बाबू] **बेटा (प्यार का संबोधन) ।**

बबुई—संज्ञा स्त्री. [हि. बाबू] (१) **बेटी ।** (२) **छोटी ननद ।**

बबुर, बबूल—संज्ञा पुं [सं कीकर, हि. बबूल] **एक काँटेदार पेड़, बबूल ।** उ —बोवत बबुर दाख फल चाहत, जोवत है फल लागे—१-६१ ।

बबूला—संज्ञा पुं [हि बगूला] **बवंडर, अधड़ ।**

संज्ञा पुं [हि बुलबुला] **बुलबुला ।**

बमत—क्रि स. [सं. वमन] **उगलता है, कै करता है ।** उ —निरतत पद पटकत फन-फन प्रति, बमत रुधिर नहिं जात सम्हारयौ—५७४ ।

बमनहि—संज्ञा पु सवि. [सं. वमन+हि हिं] **वमन किये हुए पदार्थ को ।** उ — बमनहि खाइ, खाइ सो डारे, भाषा कहि कहि टेरा—१-१८६ ।

बमनना—क्रि. स [सं. वमन] **उगलना, कै करना ।**

बय—संज्ञा स्त्री [सं वय] **अवस्था, उम्र ।**

बयन—संज्ञा पुं [सं वचन] **वाणी, वचन ।** उ.—नरु ए प्रान जाहि ऐसे ही बयन होय क्या हीनों—३०३४ ।

बयना—क्रि स [सं वपन, प्रा. वयन] **बीज बोना ।**

क्रि स [सं वचन] **कहना, वर्णन करना ।**

संज्ञा पुं [हि बैना] **उत्सव पर दी गयी मिठाई ।**

बयनी —वि [हि बयन] **बोलनेवाली ।**

बय-प्रापत—वि [स. वय+प्राप्त] **युवावस्था को प्राप्त, युवक या युवती**। उ. (क) पारबती बय-प्रापत भई—४-७। (ख) मम पुत्री बय-प्रापत आहि—४-६।

बयर—सज्ञा पुं. [हिं. बैर] **झगड़ा, शत्रुता।**

बयस—सज्ञा स्त्री. [सं. वयस] **अवस्था, आयु, वय**। उ.—मैं तौ बृद्ध भयौ, वह तरुनी, सदा बयस इकसारी—१-१७३।

बयसवाला—वि. [स वयस+हि. वाला] **युवक।**

बयस-सिरोमनि—सज्ञा पुं. [वयस्+शिरोमणि] **अवस्थाओं मे श्रेष्ठ, युवावस्था।**

बया—सज्ञा पु. [स. वयन=बुनना] **एक पक्षी**।

सज्ञा पुं. [अ. बाय:] **अनाज तौलनेवाला**।

बयाई—संज्ञा स्त्री [हिं. बया+आई] **तौलने की मजदूरी**।

बयान—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **वर्णन**। (२) **विवरण।**

बयाना—सज्ञा पु, [अ. बै+फा. आना] **पेशगी, अगाऊ।**

बयार, बयारि—संज्ञा स्त्री. [स वायु] **हवा, पवन**। उ.—(क) विषय-बिकार-दवानल उपजी, मोह-बयारि लई—१-२६६। (ख) बेगिहिं नारि छोरि बालक कौं, जाति बयारि भराई—१०-३६। (ग) (तरु) गिरे कैसे, बड़ौ अचरज, नैंकु नहीं बयार—३८७।

मुहा०—बयार करना—**पंखा हाँकना।** बयारि न लागी ताती—**गरम हवा नहीं लगी, जरा भी कष्ट नहीं हुआ**। उ.—गोकुल बसत नदनंदन के कबहुँ बयारि न लागी ताती—२६७७। जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि—**जैसी हवा चले वैसी ही पीठि दीजिए, जैसी स्थिति हो, वैसा ही काम कीजिए।** उ.—सूरदास के पिय, प्यारी आपुही जाइ मनाय लीजै, जैसी बयारि बहै तैसी ओढिए जू पीठि—२०२५।

बयारा—संज्ञा पुं. [हि. बयार] **झोंका, अन्धड़, तूफान।**

बयारी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बयार] (१) **हवा, हवा का झोका**। उ.—असुर के तनहि को लग्यो कलपन तुरग गज उड़ि चले लागी बयारी—१० उ.—३१। (२) **वायु नामक तत्व**। उ.-सप्त पताल अध ऊर्ध्व पृथ्वी तल जल नभ बरुन बयारी—३२६१।

संज्ञा स्त्री [हि. बियारी] **रात का भोजन**।

बयाला—संज्ञा पुं. [स बाह्य+आला] (१) **दीवार का गोखा।** (२) **ताख, आला।** (३) **दीवाल से तोप का गोला निकालने का छेद।**

बयो, बयौ—क्रि. स. [हिं. बयना] **बीज बोया**। उ.—(क) अब मेरी-मेरी करि बौरे, बहुरौ बीज बयौ—१-७८। (ख) सूर सुरपति सुन्यौ, बयौ जैसो लुन्यौ प्रभु कह गुन्यौ गिरि सहित वेहैं—९४४।

बरंग—सज्ञा पु. [देश.] **कवच, बख्तर।**

बरगा—सज्ञा पुं. [देश.] **छत पाटने की लकड़ी, झाँप**।

बर—सज्ञा पु [स. वट] **बरगद का वृक्ष**।

सज्ञा पु. [स. वर] (१) **आशीर्वादात्मक वचन, बरदान, वर।** उ.—(क) ब्यास पुत्र-हित बहु तप कियौ तब नारायन यह बर दियौ—१-२२५। (ख) हम तीनौं है जग करतार। माँगि लेहु हमसौं बर सार—४ ३। (२) **दूल्हा।** उ—बर अरु बधू आवत जब जाने रुकमिनि करत बधाई।

वि.—(१) **अच्छा, उत्तम।** (२) **पूरा, पूर्ण**।

मुहा०—बर परना—**बढ़कर होना।**

सज्ञा पुं. [स. बल] (१) **शक्ति।** (२) **इच्छाशक्ति, मन**। उ.—अतिहि हठीलो, कह्यौ न मानति, करति आपने बर तैं—७४४।

अव्य० [फा.] **ऊपर।**

बरकत—सज्ञा स्त्री [अ.] (१) **बढ़ती, अधिकता**। (२) **लाभ**। (३) **समाप्ति।** (४) **धन-दौलत**। (५) **कृपा।**

बरकना—क्रि. अ. [हिं. बरकाना] (१) **बुरी बात न हो पाना।** (२) **दूर या अलग हटना।**

बरकाज—सज्ञा पुं. [स. वर+कार्य] **विवाह।**

बरकाना—क्रि. अ. [स. वारण, वारक] (१) **बुरी बात न होने देना**। (२) **बहलाना, फुसलाना**।

बरख—सज्ञा पुं [स. वर्ष] **बरस, साल।**

बरखना—क्रि. अ. [सं. वर्षण] **पानी बरसना।**

बरखा—सज्ञा स्त्री. [स वर्षा] (१) **बर्षा**। (२) **बर्षा होना**।

बरखाना—क्रि. स. [सं वर्षा] (१) **पानी बरसना**। (२) **छितराकर गिराना**। (३) **अधिकता से देना।**

बरखास, बरखास्त—वि. [फा. बरखास्त] (१) **सभा आदि**

जो समाप्त हो गयी हो । (२) जो नौकरी से हटा दिया गया हो ।

बरगद्—संज्ञा पुं. [सं. वट, हिं. बड़] **बड़ का पेड़ ।**

बरछा—संज्ञा पुं. [सं. व्रश्चन] **भाला नामक हथियार ।**

बरछैत—वि. [हिं बरछा+ऐत] **बरछा मारनेवाला ।**

बरजत—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करता है, रोकता है ।** उ.—लोक-वेद बरजत सबै (रे) देखत नैननि त्रास । चोर न चित चोरी तजै, (रे) सरबस सहै बिनास—**१-३२५ ।**

बरजना—क्रि. स. [सं. वर्जन] **मना करना ।**

बरजनि—संज्ञा स्त्री [हिं. बरजना] **रोक, मनाही ।**

बरजि—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करके, रोककर, निवारण करके ।** उ.—इहिं लाजनि मरिऐ सदा, सब कोउ कहत तुम्हारी (हो) । सूर स्याम इहिं बरजि कै, मेटौ अब कुल-गारी (हो)—१४४ ।

बरजिबैं—संज्ञा पु. सवि [हिं. बरजना] **रोकने या मना करने के लिए ।** उ.—फुरै न बचन बरजिबे कारन, रही बिचारि-बिचारि—१०-२८३ ।

बरजी—क्रि. स. [हिं बरजना] **मना किया, रोका ।** उ.—हम बरजी, बरज्यौ नहिं मानत—३६६ ।

बरजे—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना किया, रोका ।** उ.—मै बरजे तुम करत अचगरी । उरहन कैं ठाटी रहे सिगरी—३६१ ।

बरजे—क्रि. स. [हिं बरजना] **मना करते हैं, रोकते है ।** उ.—हाथ तारी देत भाजत, सबै करि करि होड़ । बरजै हलधर, स्याम, तुम जनि चोट लागै गोड—१०-२१३ ।

बरजो—क्रि स. [हिं बरजना] **रोको, मना करो ।** उ.—कोऊ खीझो कोऊ कितने बरजो जुवतिन के मन ध्यान—८७० ।

बरजोर—वि. [हिं. बल+फा जोर] (१) **बली, बलवान ।** (२) **बल का अनुचित प्रयोग करनेवाला ।**

क्रि वि—(१) **जबरदस्ती ।** (२) **बहुत जोर से ।**

बरजोरन—संज्ञा पु [सं बर+हिं जोडना] **विवाह ।**

बरजोरी—संज्ञा स्त्री. [हि. बरजोर] **बल प्रयोग, जबरदस्ती ।** उ—नंद बाबा की गऊ चरावो हमसो करो बरजोरी—२४०६ ।

क्रि. वि.—**बलपूर्वक, जबरदस्ती ।**

बरजौं—क्रि. स. [हिं बरजना] **मना करूँगी ।** उ.—करत अन्याय न बरजौं कबहूं अरु माखन की चोरी—**२७०८ ।**

बरजौ—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करो, रोको ।** उ.—सूर सुतहि बरजौ नँदरानी अब तोरत चोलीबँद-डोरि—१०-३२७ ।

बरज्यौ—क्रि. स. [हिं बरजना] **मना किया, रोका निषेध किया, निवारण किया ।** उ.—(क) ब्रह्म-पुत्र सनकादि गए बैकुण्ठ एक दिन । द्वारपाल जय-विजय हुते, बरज्यौ तिनकौ तिन—**३-११ ।** (ख) बार बार बरज्यौ, नहिं मान्यौ, जनक-सुता तै कत घर आनी—६-१६० ।

बरत—संज्ञा पुं. [सं. व्रत] (१) **व्रत, उपवास ।** उ.—दृढ बिस्वास बरत कौ कीन्हौ । गौरीपति-पूजन मन दीन्हौ—७६६ । (२) **निष्ठापूर्ण और अनन्य प्रीति ।** उ—सूर प्रभु पति बरत राखै, मेटि कै कुलकानि—८६५ ।

संज्ञा स्त्री. [हिं. बरना] (१) **रस्सी ।** (२) **नट की रस्सी ।**

संज्ञा पुं. [सं. व्रण] **(छड़ी आदि से) मारे जाने का उभरा या सूजा हुआ चिह्न ।**

वि. [हिं. बलना] **जलता-बलता हुआ ।** उ.—दसहु दिसा तै बरत दवानल आवत है ब्रज जन पर धायौ—५६१ ।

बरतत—क्रि अ. [हिं बरतना] **संबध रखते है, व्यवहार करते है, साथ निभाते हैं ।** उ—प्रभु तैं जन, जन तै प्रभु बरतत, जाकी जैसी प्रीति हिऐं—१-८९ ।

बरतन—संज्ञा पुं. [सं वर्तन] **पात्र, बर्तन ।**

संज्ञा पुं. [हिं बरतना] **बरताव, व्यवहार ।**

बरतना—क्रि. अ. [सं. वर्तन] **बरताव करना ।**

क्रि स—**काम या व्यवहार मे लाना ।**

बरताना—क्रि स. [हिं बरतना] **काम मे लाना ।**

क्रि. स [सं वितरण] **बाँटना, वितरण करना ।**

बरताव—संज्ञा पुं. [हिं. बरतना] **व्यवहार, बर्ताव ।**

बरतावै—क्रि. स. [हिं. बरताना] **भोग करे, व्यवहार में लाये।** उ.—अरु जो परालब्ध सौं आवै। ताहीं कौं सुख सौं बरतावै—३-१३।

बरति—क्रि. अ. [हिं. बलना] **बलती-जलती है।**

मुहा०—आँखि बरति है—**आँख जलती है, दुख और क्रोध होता है।** उ.—काहे को अब रोष दिवावत, देखो आँखि बरति है मेरी—३०१२।

क्रि. स. [हिं. बरना] **ब्याहती है।** उ.—मरे से अपसरा आइ ताकौ बरति भजिहैं देखि अब गेह नारी।

बरती—वि. [हिं. व्रती] **जिसने व्रत रखा हो।**

बरतोर—संज्ञा पुं. [हिं. बार+तोरना] **रोम या बाल उखड़ने से होनेवाला फोड़ा।**

बरदारि—वि. [फा.] (१) **ढोनेवाला।** (२) **माननेवाला।**

बरदौर—संज्ञा पुं. [सं. बरद+और] **गोशाला।**

बरध, बरधा—संज्ञा पुं. [सं. बलीबर्द] **बैल।**

बरन—वि. [सं. वर्ण] (१) **रंग, वर्ण।** उ.—ग्वालबाल सब बरन बरन के, कोटि मदन की छबि किए पाछे—५०७। (२) **भाँति-भाँति।** उ.—बरन बरन मंदिर बने लोचन नहिं ठहरात—२५६०।

बरनन—संज्ञा पुं. [सं. वर्णन] (१) **वर्णन।** (२) **विवरण।**

बरनना—क्रि. स. [सं. वर्णन] **वर्णन करना।**

बरना—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किया, कहा।** उ.—(क) काहूँ कह्यौ मंत्र-जप करना। काहूँ कछु, काहूँ कछु बरना—१,३४१। (ख) जड़ तन कौं है जनमऽरु मरना। चेतन पुरुष अमर-अज बरना—३-१३।

क्रि. स. [सं. वरण] (१) **ब्याहना, विवाह करना।** (२) **नियुक्त करना।** (३) **दान देना।**

क्रि. अ. [हिं. बलना] **जलना।**

बरनि—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन करके।** उ.—मुण्ड माल सिव-ग्रीवा कैसी? मोसौं बरनि सुनावौ तैसी—१-२२६।

प्र०—बरनि सकौं—**वर्णन कर सकूँ, बखान सकूँ।** उ.—ता रिस मैं मोहिं बहुतक मार्‌यौ, कहँ लगि बरनि सकौं—१-१५१।

बरनिऐ—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन कीजिए, बखानिए, कहिए।** उ.—सुनै याके उतपात कौं, सुक सनकादिक भागे (हो)। बहुत कहाँ लौं बरनिऐ, पुरुष न उबरन पावै (हो)—१-४४।

बरनी—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन की।** उ.—(क) तुम हनुमंत पवित्र पवनसुत, कहियौ जाइ जोइ मैं बरनी—९-१०१। (ख) सुता लई उर लाइ, तनु निरखि पछिताइ, बरनि गई कुम्हिलाइ, सूर बरनी—६९८।

प्र०—बरनी जाइ—**वर्णन की जाय, कही जाय।** उ.—हृदय हरि-नख अति बिराजत, छबि न बरनी जाइ—१०-२३४।

बरने—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किये।**

प्र०—बरने जाइ—**वर्णन किये (जाते हैं), बरने (जाते हैं) कहते (हैं)।** उ.—बाबर बरने नहिं जाई। जिहिं देखत अति सुख पाई—१०-१८३।

बरनेत—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरना+ऐत] **विवाह की एक रीति।**

बरनौं—क्रि. स. [सं. वर्णन] **वर्णन करूँ, कहूँ।** उ.—कहा गुन बरनौं स्याम, तिहारे—१-२५।

बरन्यौ—क्रि. स. [हिं. बरनना] **वर्णन किया, कहा।**

प्र०—बरन्यौ जाइ (जाई)—**वर्णन किया जा सकता है।** उ.—(क) मुख देखत मोहिनि सी लागी, रूप न बरन्यौ जाई री—१०-१३६। (ख) बृन्दावन ब्रज कौ महत कापै बरन्यौ जाइ—४९२।

बरफी—संज्ञा स्त्री. [फा. बरफ] **एक मिठाई।**

बरबंड—वि. [सं. बलवंत] (१) **बली।** (२) **प्रचंड।**

बरबर—संज्ञा स्त्री. [अनु.] **व्यर्थ की बात, बकवाद।**

बरबस—क्रि. वि. [सं. बल+वश] (१) **बलपूर्वक।** (२) **व्यर्थ, फिजूल।** उ.—खेलत मैं को काकौ गुसैयाँ। हरि हारे, जीते श्रीदामा, बरबस हीं कत करत रिसैयाँ—१०-२४५।

बरबाद—वि. [फा.] (१) **नष्ट।** (२) **व्यर्थ खर्चा हुआ।**

बरबादी—संज्ञा स्त्री. [फा.] **नाश, तबाही।**

बरम—संज्ञा पुं. [सं. वर्म] **कवच, जिरह बख्तर।**

बरम्हा—संज्ञा पुं. [सं. ब्रह्मा] **ब्रह्मा।**

बरम्हाना—क्रि. स. [सं. ब्राह्मण] **(ब्राह्मण का) आशीर्वाद देना।**

बरम्हाव—संज्ञा पुं. [सं. ब्रह्म+राव] (१) **ब्राह्मणत्व।** (२) **ब्राह्मण का आशीर्वाद।**

बरवा, बरवै—संज्ञा पुं. [देश.] **एक प्रसिद्ध छंद।**

बरष, बरस—संज्ञा पुं [स. वर्ष] **साल, वर्ष।** उ.—सहस बरस गज जुद्ध करत भए, दिन इक ध्यान धरे १-८२।

यौ० —बरष-बरषनि—**प्रति वर्ष, बहुत वर्षो तक।** उ.—कान्ह बरष-गाँठि उमँग, चहति बरष बरषनि—१०-६६।

बरषगाँठ, बरसगाँठ—संज्ञा स्त्री. [हि. बरस+गाँठ] **जन्म-दिन, सालगिरह।** उ.—सूर स्याम ब्रज-जन-मन-मोहन-बरष-गाँठि कौ डोरा खोल—१०-६४।

बरषत, बरसत—क्रि. स. [हिं. बरसाना] (१) **बरसाती हुई, गिराती या बहाती है।** उ.—इतनी सुनत कुंति उठि धाई, बरषत लोचन नीर—१-२६। (२) **बरसाते या गिराते हैं।** उ.—स्रवत स्रोनकन, तन सोभा, छबि-घन बरसत मनु लाल—१-२७३।

बरषना, बरसना—क्रि. अ [सं. वर्षण, हिं. बरसना] (१) **मेह पड़ना।** (२) **वर्षा-जल के समान ऊपर से गिरना।** (३) **अधिकता से प्राप्त होना।** (४) **अच्छी तरह झलकना।**

बरषा, बरसा—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] (१) **पानी बरसने की क्रिया, वृष्टि, वर्षा।** उ.—कीजै कृपा-दृष्टि की बरषा, जन की जाति लुनाई—१-१८५। (२) **वर्षा-काल, बरसात।**

बरषाइ, बरसाइ—क्रि. स. [हि बरसना] (१) **मेह गिराकर।** (२) **ऊपर से गिराकर।** उ.—जय जय धुनि नभ करत है हरषि पुहुप बरषाइ—४३१।

बरषाऊ, बरसाऊ—वि. [हि. बरसना] **बरसनेवाला।**

बरषात, बरसात—संज्ञा स्त्री. [स. वर्षा] **वर्षाकाल।**

बरषाती, बरसाती—वि. [हि. बरसात] **बरसात-सबधी।**

बरषाना, बरसाना—क्रि स. [हिं बरसना] (१) **मेह गिराना।** (२) **ऊपर से मेह की तरह गिराना।** (३) **खूब प्राप्त करना।**

बरषावति, बरसावति—क्रि. स. [हिं. बरसाना] (१) **बरसाती है।** (२) **वर्षा के जल के समान (कोई वस्तु) गिराती है।** उ—आनँद उर अंचल न सम्हारति, सीस सुमन बरषावति—१०-२३।

बरषासन, बरसासन—सज्ञा पुं [स. वर्षासन] **एक मनुष्य या एक परिवार के लिए पर्याप्त एक वर्ष की भोजन-सामग्री।**

बरषी, बरसी—संज्ञा स्त्री [हि. बरस] **वार्षिक श्राद्ध।**

बरषावै, बरसावै—क्रि स [हि बरसाना] **वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिराते हैं।** उ—व्योम-जान फूल अति गनि बरसावै री—६६।

बरषै, बरसै—क्रि. स. [हि बरसना] **बरसता है, मेह पड़ता है।** उ—निसि अँधेरी, बीजु चमकै सघन घ सै मेह—१०-५।

बरष्यौ, बरस्यौ—क्रि स. [हिं बरसना] **बरसा, जल गिरा (गिराया), मेह पड़ा।** उ—देवराज मख-भग जानि कै बरष्यौ ब्रज पर आई—१-१२२।

बरह—संज्ञा पुं. [हिं बरही] **मोर, मयूर।** उ—बरह-मुकुट कैं निकट लसति लट, मधुप मनौ रुचि पाए—१०-४१७।

बरहहिं—सज्ञा पुं. सवि. [हिं. बरह+हि (प्रत्य.)] (१) **वृक्ष के पत्ते।** (२) **वृक्ष की पतली सींक या डाल को, तिनके को।** उ.—सोवत काग छुयौ तन मेरौ, बरहहि कीनौ बान। फाग्यौ नयन, काग नहिं छाँड्यौ सुरपति के बिदमान—६-८३।

बरहा—संज्ञा पुं [हि. बहना] **खेती की छोटी नाली।**

संज्ञा पुं [हि बरही] **मोर, मयूर।** उ—बरहा पिक चातक जै जै निसान बाजै—२८१६।

बरही—संज्ञा पुं [सं. बर्हि] (१) **मोर, मयूर।** उ.—बरही-मुकुट इंद्रधनु मानहुँ तड़ित दसन-छबि लाजनि—६३८। (२) **'साही' नामक जंतु।** (३) **मुरगा।** (४) **आग।**

सज्ञा स्त्री [देश.] **मोटा रस्सा।**

सज्ञा पुं. [हि. बारह] **जन्म का बारहवाँ दिन।**

बरहीपीड़—संज्ञा पुं. [सं. बर्हिपीड] **मोरमुकुट।** उ—बरहीपीड़ दाम गुंजानि अद्भुत वेष बनावन—सारा० ४७५।

बरहीमुख—संज्ञा पुं. [सं. बर्हिमुख] **देवता।**

बरहौ—सज्ञा पुं [हिं. बरही] **जन्म का बारहवाँ दिन।**

बरा—संज्ञा पुं [हि. बरा, बड़ा] **एक पकवान जो उर्द की मसालेदार पीठी की टिकियों को घी या तेल में तल कर बनता है, (वही) बड़ा** । उ.—दधि दूध बरा दहिरौरी । सो खात अमृत पककौरी—१०-१८३ ।

संज्ञा पुं. [सं. बट] **बरगद का पेड़** ।

वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, जो छोटा न हो** । उ.—बरा कौर मेलत मुख भीतर, मिरिच दसन टकटौरै—१०-२२५ ।

संज्ञा पुं. [देश.] **भुजदंड का भूषण, टॉड़** ।

बराई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बड़ाई] **बड़ाई, प्रशसा** ।

बराक—संज्ञा पुं [सं. वराक] (१) **शिव** । (२) **युद्ध** ।

वि.—(१) **नीच, अधम** । (२) **बापुरा, बेचारा** ।

बरात—संज्ञा स्त्री. [सं. बरयात्रा] (१) **बर का संबंधियो और इष्टमित्रो-सहित सजधजकर कन्या के यहाँ जाना, जनेव** । उ.-(क) जनकराज तब बिप्र पठाये बेग बरात बुलाई—सारा. २२६ । (ख) सो बरात जोरि तहँ आयो—१० उ.-७ । (२) **बहुत से लोगों का सजधज कर साथ जाना** । (३) **शव ले जाने वालों का समूह** ।

बराती—संज्ञा पुं. [हि. बरात+ई (प्रत्य.)] (१) **विवाह के अवसर पर वर-पक्ष की ओर से सम्मिलित होनेवाले** । उ.—(क) तेरी सौ, मेरी सुनि मैया, अबहिं बियाहन जैहौ । सूरदास ह्वै कुटल बराती, गीत सुमगल गैहौं—१०-१६३ । (ख) भए जो मन्मथ सैन्य बराती—पृ ३४५ (५) । (२) **शव के साथ जानेवाला** ।

बराना—क्रि. अ. [सं. वारण] (१) **बेमतलब की बात बचा जाना** । (२) **बहुत सी बातों या विचारों में कुछ को बचा जाना** । (३) **रक्षा करना** ।

क्रि. स. [सं. वरण] **चुनना, छाँटना** ।

क्रि. स. [हिं. बलाना] **जलाना, बताना** ।

बराबर—वि. [फा. बर] (१) **समान, तुल्य, एक सा** । (२) **समान पद या मर्यादावाला** । (३) **समतल** ।

मुहा०—बराबर करना—**समाप्त कर देना** ।

क्रि. वि.—(१) **लगातार** । (२) **एक साथ, साथ** । (३) **सदा** ।

बराबरि, बराबरी—संज्ञा स्त्री. [हि. बराबर] (१) **बराबर होने की क्रिया या भाव, समानता** । उ.—हरि, हौं सब पतितनि कौ राउ । को करि सकै बराबरि मेरी, सो धौ मोहिं बताउ—१-१४५ । (२) **सादृश्य** । (३) **सामना, मुकाबला** ।

वि.—(१) **सम, समान, तुल्य** । उ.—ज्वाला देखि अकास बराबरि, दसहुँ दिसा कहुँ पार न पाइ—५६४ । (२) **समान रूप, गुण, मूल्यवाला** । उ.-सूरदास प्रभु पारस परसै लोहौ कनक बराबरी—३३३१ ।

बरामद—संज्ञा स्त्री. [फा] **निकासी, आमदनी** । उ.—बढ़ौ तुम्हार बरामद हूँ कौ लिखि कीनौ है साफ—१-१४३ ।

वि.—(१) **सामने आया हुआ** । (२) **खोज निकाला हुआ** ।

बराम्हण, बराम्हन—संज्ञा पुं. [स. ब्राह्मण] **ब्राह्मण** ।

बराय—अव्य. [फा.] **लिए, वास्ते, निमित्त** ।

बरायन—संज्ञा पुं. [सं. बर+आयन] **दूल्हे का लोहे का छल्ला जिसमें गुंजा लगे रहते है** ।

बराव—संज्ञा पुं. [हि. बराना+आव] **बचाव, निवारण** ।

बराह—संज्ञा पुं. [सं. वराह] **सुअर (पशु)** ।

बरि—क्रि. अ. [हिं. बलना] **जल-बलकर** । उ.—देती अबहिं जगाइ कै, जरि बरि होत्यौ छार—५८६ ।

बरिआई—क्रि. वि [सं. बलात्] **जबरदस्ती, बलात्** । उ.—कृषि आइहै सब लैहै बरिआई—१२-३ ।

संज्ञा स्त्री.—**बल-प्रयोग, जबरदस्ती** । उ.—(क) अपनी ओर देखि धौ लीजै ता पाछे करियै बरिआई—११३४ (ख) सूरस्याम जो देखिहैं करिहैं बरियाई—पृ. ३१७ (६१) ।

बरिआत—संज्ञा पुं. [हिं. बरात] **बरात** ।

बरिया—क्रि. वि. [हि. बलात्] **जबरदस्ती** । उ.—हरि हौ महा अधम संसारी । आन समुझ मैं बरिया ब्याही, आसा कुमति कुनारी—१-१७३ ।

बरियाईं—क्रि. वि. [हि. बलात] **जबदस्ती, बल से** ।

बरियाई—संज्ञा स्त्री. [हिं. बलात्] (१) **जबरदस्ती** । (२) **धृष्टता, अन्याय** । उ.—देखौ माई बदरनि की बरियाई—६८५ ।

बरियार—वि. [हि. बल+आर] **बली, बलवान्** ।

बरिल—संज्ञा पुं. [हिं. बड़ा] **'बड़े' जैसा एक पकवान।**

बरिबंड—वि. [सं. बलवंत] (१) **बलवान, बली प्राणी।** उ.—आगर इक लोह जटित लीन्ही बरिबंड। दुहूँ करनि असुर हयौ, भयौ मांस पिंड—९-९६ (२) **प्रचंड।**

बरिष, बरिस—संज्ञा पुं. [सं. वर्ष] **साल, वर्ष।**

बरिषा, बरिसा—संज्ञा स्त्री. [सं. वर्षा] **वर्षा।**

बरिष्ठ—वि. [सं. बरिष्ठ] **बड़ा, श्रेष्ठ।**

बरी—संज्ञा स्त्री. [सं. बटी, बड़ी] (१) **टिकिया, बरी।** (२) **उर्द या मूँग की पीठी की सुखायी हुई छोटी पकौड़ियाँ।** उ.—(क) पापर बरी अचार परम सुचि। (२) कूटबरी काचरी पिठौरी—३९६। (३) **वह मेवा, मिठाई, आदि जो वर के यहाँ से कन्या के यहाँ जाय।**

क्रि. स. स्त्री. [हिं. बरना] **विवाही, ब्याह किया।** उ.—(क) बहुरि हिमाचल कैं अवतरी। समय पाइ सिव बहुरौ बरी—४-५। (ख) जद्यपि रानी बरी अनेक—९-५।

वि. [हिं. बली] **बलवान्, बली।**

वि. [फा.] **जिसे मुक्त किया गया हो, मुक्त।**

बरीस—संज्ञा पुं. [हिं. बरस] **वर्ष, साल, बरस।** उ.—नंदराइ कौ लाड़िलौ, जोवै कोटि बरीस—१०-२७।

बरु—अव्य. [सं. वर=श्रेष्ठ, भला] (१) **भले ही, चाहे, कुछ हर्ज नहीं, ऐसा भले ही हो जाय।** उ.—(क) बरु मेरी परतिज्ञा जाय—१-२७३। (ख) सूरदास बरु उपहास सहौंई, सुर मेरे नद-सुवन मिलै तो पै कहा चाहियै। (ग) बरु मरि जाइ चरै नहि तिनका सिंह को इहै सुभाइ रे—३०७०। (२) **प्रत्युत, बल्कि।** उ.—तब कत कंस रोकि राख्यौ पिय, बरु वाही दिन काहे न मारी—१०-११। (३) **अब तो।** बरु ऐ बदरौ बरषन आए—३९२६।

बरुआ—संज्ञा पुं. [हिं. बटु] (१) **ब्रह्मचारी।** (२) **जनेऊ।**

बरुक—अव्य. [हिं. बरु] (१) **चाहे।** (२) **प्रत्युत।**

बरुन—संज्ञा पुं. [सं. वरुण] **वरुण देवता।**

बरुनी—संज्ञा स्त्री. [सं. वरण=ढाँकना] **पलक के बाल।**

बरुवा—संज्ञा पुं [हि. वरुआ] (१) **ब्रह्मचारी।** (२) **जनेऊ।**

बरूथ—संज्ञा पुं. [सं. वरूथ] **सैन्य, सेना।** उ.—इतनी बिपति भरत सुनि पावैं आवैं साजि बरूथ—९-१४७।

बरूथी—संज्ञा स्त्री. [सं. वरूथ] **एक नदी।**

बरेंड़ा—संज्ञा पुं. [सं. वटडक=गोल लकड़ी] (१) **खपरैल या छाजन की आधार गोल लकड़ी।** (२) **खपरैल या छाजन का बिचला ऊँचा भाग।**

बरे—क्रि. वि. [स बल] (१) **बलपूर्वक, जबरदस्ती से।** (२) **ऊँचे स्वर मे।**

अव्य. [हिं. बद] (१) **बदले में।** (२) **निमित्त।**

क्रि अ [हि. वलना] **जल-बल गये।** उ.—कै वह स्याम सिखाय प्रबोधे कै वह बीच बरे—२९८२।

बरेखी, बरेषो—संज्ञा स्त्री. [हिं. बाँह+रखना] **बाँह का एक गहना।**

संज्ञा स्त्री. [हि बर+देखना] **विवाह के लिए वर या कन्या को देखना, ठहरौनी।**

बरैं—क्रि अ. बहु. [हिं. बलना] **जल-बल जायँ।**

मुहा०—जरैं-बरैं वै आँखि—**आँखें नष्ट हो जायँ। या फूट जायँ।** उ.—डीठि लगावति कान्ह को जरैं-बरैं वै आँखि—१०९९।

बरै—क्रि. अ. [हि. बलना] **बल जाय, नष्ट हो जाय।** उ.—बरै जेंवरी जिहिं तुम बाँधे, परै हाथ भहराइ—३८९।

क्रि. स. [हि बरना] **विवाह करे।** उ.—अंत पुर भीतर तुम जाहु। बरै तुम्है, तिहिं करौं बिवाहु—९-८।

बरों—क्रि. स. [हि. बरना] **वरण करूँ।**

बरो—क्रि. स. [हि. बरना] **वरण करो।**

बरोक—संज्ञा पुं. [हिं. बर+रोक] **वह धन जो कन्या पक्ष वाले विवाह-संबंध को पक्का करने के लिए वर को उसी कन्या के लिए रोक रखने को देते है, बरच्छा, फलदान।**

संज्ञा पुं. [स. बलौक] **सेना, दल।**

बरौं—क्रि. स. [हि. बरना] **वरण करूँ, वर या वधू के रूप में स्वीकार करूँ।** उ.—(क) देखि सुर असुर सब दौरि लागे गहन, कह्यौ मैं बर बरौं आपु-भायौ—८-८। (ख) कन्या एक नृपति की बरौं—९-८।

बरौ—क्रि. स [हिं. बरना] वरण करो, वर या वधू-रूप मे स्वीकार करो। उ.—या कन्या कौ प्रभु तुम बरौ—९-३।

वि. [हिं. बड़ा] **बड़ा, श्रेष्ठ।**

बरोठा—संज्ञा पु. [हिं. बार+कोठा] (१) **द्वार।** (२) **बैठक।**

मुहा०—बरोठा-चार—**द्वार-पूजा।**

बरोरु—वि स्त्री. [सं बरोरु] **सुडौल जाँघवाली।**

बरोह—संज्ञा स्त्री. [हि वट+रोह] **बरगद की जटा।**

बरौनी—संज्ञा स्त्री. [सं वरण] **पलक के बाल।**

बरौरी—संज्ञा स्त्री. [हिं. बरी] **बड़ी या बरी (पकवान)।**

बर्ज—वि [सं. वर्य] **वर, श्रेष्ठ।**

बर्जना—क्रि. स. [हिं. बरजना] **मना करना, रोकना।**

बर्णना—क्रि स. [हिं. वर्णन] **वर्णन करना।**

बर्त—संज्ञा पुं. [सं. व्रत] **व्रत, उपवास।**

बर्तना—क्रि. स. [सं. वर्तन] **(१) व्यवहार करना।** (२) **काम, उपयोग या व्यवहार में लाना।**

बर्ताव—संज्ञा पु. [हिं. बरताव] (१) **काम।** (२) **व्यवहार।**

बर्द—संज्ञा पु. [सं. बलद] **बैल।**

बर्नना—क्रि. स. [हिं वर्णन] **वर्णन करना।**

बर्फ—संज्ञा स्त्री. [फा. बर्फ] **(१) पाला, हिम, तुषार।** (२) **जमाया हुआ दूध आदि।** **(३) ओला।**

बर्बर—वि. [सं.] **असभ्य, उद्दंड।**

संज्ञा पु.—(१) **घुँघराले बाल।** (२) **असभ्य मनुष्य।**

बर्यौ—क्रि. स. [हि. बरना] **वर या वधू के रूप में स्वीकार किया, बरा, ब्याहा।** उ.—(क) पारबती सिव-हित तप कर्यौ। तब सिव आइ तहाँ तिहि बर्यौ—४-७। (ख) हरि करि कृपा ताहि तब बर्यौ—१० उ.-७।

बर्राना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **व्यर्थ बकना।** (२) **स्वप्न या अति ज्वर की अवस्था मे बकना।**

बर्रै—संज्ञा पुं. [सं. बरट] **भिड़, ततैया (कीड़ा)।**

बलंद—वि. [फ़ा.] **ऊँचा।**

बल—संज्ञा पुं. [स.] (१) **शक्ति, सामर्थ्य।** उ.—अति बल करि करि काली हार्‍यौ—५७४। (२) **भार उठाने की शक्ति।** **(३) सहारा, आश्रय।** उ.—मुनि-मन-हंस-पच्छ-जुग, जाकै बल उड़ि ऊरध जात—१-६०। **(४) आसरा, भरोसा।** **(५) सेना, दल।** (६) **बलराम।** उ.—जबहि मोहिं देखत लरिकनि सँग तबहिं खिझत बलभैया—१०-२१७। **(७) बगल, पहलू, पार्श्व।**

संज्ञा पुं. [स. वलय] **(१) ऐंठन, मरोड़।** (२) **फेरा, लपेट।** (३) **लहरदार घुमाव।** (४) **टेढ़ापन।** **(५) सिकुड़न।** (६) **लचक।** (७) **कमी, कसर।**

बलकत—क्रि. अ. [हि. बलकना] (१) **उमग, आवेश या जोश में आता है।** उ—पियें प्रेम बर बारुनी बलकति बल न सँभार। पग डगमग जित तित धरति मुकुलित अलक लिलार—११८२।

बलकना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **उबलना, उफनना।** (२) **उमग, आवेश या जोश में आना।**

बलकर—वि. [सं.] **बलकारक।**

बल्कल—संज्ञा पुं. [स. वल्कल] **वृक्ष की छाल।**

बलकाना—क्रि. स. [हि. बलकना] (१) **उबालना, खौलाना।** (२) **उभारना, उत्तेजित करना।**

बलकि—क्रि. अ. [हि. बलकना] **आवेश में आकर, जोश में आकर।** उ.—सखा कहत है स्याम खिसाने। आपुहिं आपु बलकि भए ठाढे, अब तुम कहा रिसाने—१०-२१४।

बलद—संज्ञा पुं. [सं.] **बैल।**

वि.—**बल देनेवाला, बलकारी।**

बलदाउ, बलदाऊ—संज्ञा पुं. [सं. बल+हि. दाऊ=दादा=बड़ा भैया] **बलदेव, बलराम, जो रोहिणी के पुत्र थे।** उ.—कछु बलदाऊ कौ दीजै। अरु दूध अघावट पीजै—१-१८३।

बलदेव—संज्ञा पुं. [सं.] **बलराम।**

बलना—क्रि. अ. [सं० वर्हण] **जलना, दहकना।**

बलनिधि—वि. [स.] **बली, बलवान।** उ.—इंद्रजीत बलनिधि जब आयौ, ब्रह्मअस्त्र उन डारे-सारा. २८४।

बलबलाना—क्रि. अ. [अनु.] (१) **ऊँट का बोलना।** (२) **व्यर्थ बकना।** **(३) निरर्थक शब्द बोलना।**

बलबलाहट—संज्ञा स्त्री. [हि. बलबलाना] (१) **ऊँट की बोली।** (२) **बकवाद।** (३) **उमग।** (४) **घमंड।**

बलबीर, बलबीरा—संज्ञा पुं. [सं. बल=बलराम+हि. बीर=भाई] **बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।** उ.—है कर्‍यौ सिरावन सीरा। कछु हठ न करौ बलबीरा—

१०-१८३ । (ख) छहौ रागिनी गाय रिझावत अति नागर बलबीर ।

वि.—**बली, बलवान ।** उ.—जनि पूछौ तुम कुसल नाथ की, सुनौ भरत बलबीर—६-१५१ ।

बलभद्र—संज्ञा. पुं. [सं.] **बलदेव ।**

बलभी—संज्ञा स्त्री. [सं वलभि] **मकान की ऊपरी कोठरी ।**

बलम—संज्ञा पुं. [सं. वल्लभ] (१) **पति ।** (२) **प्रेमी ।**

बलय, बलया—संज्ञा पुं. [सं. वलय] **चूड़ी ।** उ.—(क) कनक-वलय, मुद्रिका मोदप्रद, सदा सुभग सतनि काजै —१-६६ । (ख) छूटी लट भुज फूटी बलया टूटी लर फटी कचुकी भीनी—३४४६ ।

बलराम—संज्ञा पुं. [सं.] **रोहिणी-पुत्र बलराम ।**

बलवंड—वि [सं बल+वतः] **बली ।** उ—आगर इक लोह जटित लीनी बरिबंड । दुहू करनि असुर हयो भयो मास पिंड—६-६६ ।

बलवत—वि. [सं. बलवत] (१) **प्रधान ।** उ.—भरम ही बलवंत सबमैं, ईसहू कैं भाइ—१-७० । (२) **बली ।** उ.—जो ऐसे बलवत हौ मथुरा काहे न जात—११३६ ।

बलवा—संज्ञा पुं. [फा.] (१) **दगा ।** (२) **विद्रोह ।**

बलवाई—वि. [हि बलवा] (१) **उपद्रवी ।** (२) **विद्रोही ।**

बलवान—वि. [सं. बलवान्] (१)**बली, सशक्त** (२)**दृढ़ ।**

बलवीर—संज्ञा पुं. [हिं. बलबीर] **श्रीकृष्ण ।**

बलशाली, बलसार—वि. [हि. बलशाली] **बली ।** उ.—कुंभकरन पुनि इंद्रजित यह महाबली बलसार—सारा. २६२ ।

बलशील, बलसील—वि. [सं. बलशील] **बली, सशक्त ।**

बला—संज्ञा स्त्री. [अ.] (१) **विपत्ति ।** (२) **दुख ।** (३) **भूत-प्रेत ।** (४) **रोग, व्याधि ।**

मुहा०—बला का—**गजब का ।** बला से—**कुछ चिंता नहीं ।**

बलाइ—संज्ञा पुं. [अ. बला] (१)**आपत्ति, विपत्ति, बला ।** उ.—बालगोपाल लगौ इन नैननि रोग-बलाइ तुम्हारी—१०-६१ । (२) **दुख, कष्ट ।**

मुहा०—लेत बलाइ—**दूसरे के दुख को अपने ऊपर लेती है, मंगल-कामना करते हुए प्यार करती है ।** उ.—निकट बुलाइ बिठाइ निरखि मुख, अचर लेत बलाइ । चिरजीवौ सुकुमार पवन-सुत, गहति दीन ह्वै पाइ—६-८३ ।

(३) **दुखदायी वस्तु या प्राणी ।** उ.—स्याम सौ वै कहन लागे, आगै एक बलाइ—४२७ ।

बलाक—संज्ञा पुं. [सं.] **बक, बगुला ।** उ—(क) मुक्ता-दाम बिलोकि, बिलखि करि, अवलि बलाक बनावत ६६५ । (ख) मनहु बलाक पाँति नव घन पर यह उपमा कछु भाजै री—१३४३ ।

बलाका—संज्ञा स्त्री. [सं.] (१) **बगुली ।** (२) **बगुलों की पंक्ति ।** (३) **कामुकी नारी ।**

बलात्—क्रि. वि. [सं.] (१) **बलपूर्वक ।** (२) **हठपूर्वक ।**

बलात्कार—संज्ञा पुं [सं.] (१) **बलपूर्वक काम करना ।** (२)**अत्याचार ।** (३) **स्त्री से बलपूर्वक संभोग ।**

बलाध्यक्ष—संज्ञा पुं. [सं.] **सेनापति ।**

बलाय—संज्ञा पुं. [अ. बला] (१) **विपत्ति ।** उ.—बाल गोपाल लगौ इन नैननि रोग-बलाय (बलाइ) तुम्हारी —१०-६१ । (२) **दुख, कष्ट ।** (३) **भूत-प्रेत की बाधा** (४) **रोग, व्याधि ।** (५) **शत्रु, दुखदायी प्राणी ।**

मुहा०—बलाय करे—**स्वयं नहीं कर सकता ।** बलाय लेना—**किसी का रोग-दुख अपने ऊपर लेने को प्रस्तुत होकर उसकी मंगल-कामना करते हुए प्यार करना ।** लेति बलाय—**मंगलकामना करके प्यार करती है ।** उ.—(क) निकट बुलाय बिठाय निरखि मुख आँचर लेति बलाय । (ख) लेति बलाय रोहिनी नारि के सुंदर रूप निहारी—सारा. ४५७ ।

बलाहक—संज्ञा पुं. [सं.] **मेघ, बादल ।** उ.—कहा कहौ वर्षा रबि-तमचुर-कमल-बलाहक कारे—२८६२ ।

बलि—संज्ञा पुं. [सं] (१) **राजकर ।** (२) **उपहार, भेंट ।** (३) **पूजा की सामग्री ।** (४) **देवता को उत्सर्ग किया गया खाद्य पदार्थ ।** (५) **भक्ष्य, अन्न ।** उ.—हम सेवक वै त्रिभुवनपति, कत स्वान सिंह-बलि खाइ—६-४७ । (६) **चढ़ावा, नैवेद्य ।** उ.—(क) सक्र कौ दान-बलि-मान ग्वारनि लियो, गह्यौ गिरि पानि, जस जगत छायौ—१-५ । (ख) पर्वत सहित धोइ ब्रज डारौ देउँ समुद्र बहाई । मेरी बलि औरहिं लै अर्पत इनकी करौं सजाई । (७) **वह पशु जो किसी देवी-देवता पर भेंट**

चढ़ाने के लिए मारा जाय।

मुहा०—बलि चढना—**मारा जाना।** बलि चढाना —(१) **मारना।** (२) **देवता के लिए मारना।** बलि-बलि जाना—**निछावर होना।** बलि जाइ—**निछावर होता है।** उ.—यह सुख निरखि मुदित सुर-नर-मुनि, सूरदास बलि जाइ—९-२६।

(८) **प्रहलाद का पौत्र और विरोचन का पुत्र जिसे छलकर वामन भगवान ने पाताल भेजा था।** उ.—जुग जुग बिरद इहै चलि आयो भए बलि के द्वारे प्रतिहार—२६२०।

संज्ञा स्त्री. [सं. बला=छोटी बहन] **सखी।**

बलिकर्म—संज्ञा पुं. [सं.] **बलिदान।**

बलित—वि. [हिं. बलि] **बलि चढ़ाया हुआ।**

वि. [सं. वलित] **घूमा या मुड़ा हुआ।**

बलिदान—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **देवी-देवता को नैवेद्य चढ़ाना।** (२) **पशु को देवी-देवता के नाम पर मारना।**

बलिनंदन—संज्ञा पुं. [सं.] **बाणासुर।**

बलिपशु—संज्ञा पुं. [हिं. बलि+पशु] **वह पशु जो देवी-देवता पर भेंट चढ़ाने के लिए मारा जाय।**

बलिष्ठ—वि. [स.] **बहुत बली या सशक्त।**

बलिहारना—क्रि. स. [हिं. बलि+हारना] **निछावर करना।**

बलिहारी—संज्ञा स्त्री. [हि. बलि+हारना] **निछावर, अपने को उत्सर्ग कर देना।** उ.—बेर मेरी क्यौ ढील दीन्ही, सूर बलिहारी—१-१७६।

मुहा०—बलिहारी जाना—**निछावर होना, बलैया लेना।** बलिहारी लेना—**प्रेम दिखाना।** लेन लगी बलिहारी—**बलैया लेने लगीं।** उ.—दरसन करि जसुमति-सुत को सब लेन लगीं बलिहारी। बलिहारी है —(१) **इतना सुंदर है कि मै अपने को निछावर करने को प्रस्तुत हूँ (प्रशसा)।** (२) **इतना बुरा या बेढगा है कि धन्य है (व्यंग्य)।**

बलिहि—संज्ञा पुं. सवि. [स. बलि+हिं. हि] **भोजन से निकाला हुआ ग्रास।** उ.—पिक चातक बन बसन न पावहिं बाइस बलिहि न खात—३४६०।

बली—वि. [सं. बलिन्] **बलवान, पराक्रमी।** उ.—काल बली तै सब जग काँप्यौ—१-५२।

बलीमुख—सज्ञा पुं [सं. वलिमुख] **बंदर।**

बलुआ—वि. [हिं. बालू] **रेतीला।**

बलैया—संज्ञा स्त्री. [हि. बलाय] **बला, बलाय।** उ.—(क) फोरतौ बासन सब, जानति बलैया—३७२। (ख) यह सुनिकै हरि हँसे, कालिह मेरी जाय बलैया—४३७।

मुहा०—बलैया लेना—**मगल कामना करते हुए प्यार करना।** लेति बलैया—**मगल-कामना करते हुए प्यार करती है।** उ.—(क) सिखवति चलन जसोदा मैया। ......। कबहुँक सुंदर बदन बिलोकति उर आनँद भरि लेति बलैया—१०-११५। (ख) सूर निरखि जननी हँसी, तब लेति बलैया—६६६।

बल्कल—संज्ञा पुं. [सं. वल्कल] **वृक्ष की छाल के वस्त्र जिन्हें तपस्वी पहनते थे।** उ—पात्र स्थान हाथ हरि दीन्हे। बसन-काज बल्कल प्रभु कीन्हे—२-२०।

बल्कि—अव्य. [फा.] (१) **प्रत्युत।** (२) **अच्छा हो यदि।**

बल्लभ—संज्ञा पुं. [सं. वल्लभ] (१) **पति।** (२) **प्रेमी।**

बल्लम—सज्ञा पुं. [हिं. बल्ला] (१) **सोटा।** (२) **भाला।**

बल्लव—संज्ञा पुं. [सं.] (१) **चरवाहा।** (२) **रसोइया।**

बल्ला—सज्ञा पु. [सं. वल=लट्ठा] (१) **डंडा।** (२, **डाँड़ा।**

बल्लिन, बल्लिनि—संज्ञा स्त्री. बहु. [स. वल्ली] **लताएँ, बेलें।** उ.—पुहुप गए बहुरौ बल्लिन के नेक निकट नहि जात—३३५४।

बल्ली—संज्ञा. स्त्री [हि. बल्ला] (१) **खभा।** (२) **डाँड़।**

संज्ञा स्त्री. [सं. वल्ली] **लता, बेल।**

बवँडत—क्रि. अ. [हि. बवँडना] **मारा-मारा फिरता है।** उ.—इत उत है तुम बवँडत डोलत करत आपने जी की।

बवँडना—क्रि. अ. [स. व्यावर्त्तन, प्रा. व्यावट्टन] **घूमना।**

बवडर—संज्ञा पुं. [सं. वायु+मंडल] (१) **बगूला, चक्रवात।** (२) **आँधी, तूफान।**

बवघूरा—संज्ञा पुं. [हिं. वायु+घूर्णन] **बगूला, बवडर।**

बवना—क्रि. स. [स. वपन] (१) **बोना।** (२) **बिखराना।**

क्रि. अ.—**छिटकना, बिखरना।**

सज्ञा पुं. [सं. वामन] **वामन अवतार।**

बवरना—क्रि. अ. [हिं. बौरना] **आम मे बौर लगना।**

बसंत—संज्ञा पुं. [सं. वसंत] **वसंत ऋतु।**

क्रि. अ. [हिं. बसना] **बसते हो।** उ.—ब्रज-बनिता के नयन प्रान बिच तुमही स्याम बसंत।

बसंती—वि. [हिं. बसंत] (१) **बसंत ऋतु संबंधी।** (२) **सरसो के रंग का, खुलते पीले रंग का।**

संज्ञा पुं. (१) **हलका पीला रंग।** (२) **पीला कपड़ा।**

बसंदर—संज्ञा पुं. [स. वैश्वानर] **आग।**

बस—संज्ञा पुं. [सं. वश] (१) **अधिकार, काबू।** (२) **वशीभूत, विवश, अधीन।** उ.—(क) जिहि जिहिं जोनि फिर्‌यौ संकट-बस तिहि-तिहि यहै कमायौ—१-१११। (ख) सदा सुभाव सुलभ सुमिरन बस, भक्तनि अभै दियौ—१-१२१। (३) **किसी बात को अपने अनुकूल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति, काबू।** उ.—गर्भ परिच्छित रच्छा कीनी, हुतौ नही बस माँ कौ—१-११३।

वि. [फा.] **पर्याप्त, बहुत काफी।**

मुहा०—बस या बस करो—**इतना पर्याप्त है।**

अव्य.—(१) **पर्याप्त।** (२) **केवल, इतना मात्र।**

बसत—क्रि. अ. [हिं. बसना] (१) **बसा है, स्थिति है।** उ.—कालिंदी कै कूल बसत इक मधुपुरि नगर रसाला—१०-४। (२) **बसते हैं, रहते हैं।** उ.—जाति-पाँति हमतै बड़ नाही, नाही बसत तुम्हारी छैयाँ—१०-२४५।

मुहा०—प्रान बसत है—**इन्ही को देखकर जीवित हूँ।** उ.—इनहीं में मेरे प्रान बसत है, तेरे भाएँ नैकु न माई—७१०।

बसति—क्रि. स. [हि. बसना] **बसती है, वास करती है।** उ.—(क) परम कुबुद्धि, अजान ज्ञान तै, हिय जु बसति जड़ताई—१-१८७। (ख) नाहिन बसति लाल कछु तुम्हरै—७३५।

बसतै—क्रि. अ. [हि बसना] **बसता, निवास करता।**

प्र०—बसतै रहियै—**निवास कर सकूँ, बसूँ, बसा रहूँ।** उ.—सोइ करौ जु बसतै रहियै, अपनौ धरियै नाउँ—१-१८५।

बसन—संज्ञा पुं. [सं. वसन] **वस्त्र।** उ.—कमलनैन काँधे पर न्यारो पोत बसन फहरात—२५३६।

बसना—क्रि. अ. [हिं. वसन] (१) **रहना, वास करना।** (२) **आबाद होना।**

घर बसना—**विवाह करके गृहस्थ बनना।** घर में बसना—**घर बनाकर सुख से रहना।**

(३) **टिकना, ठहरना, डेरा डालना।**

मुहा०—मन मे बसना—**हर समय ध्यान रहना।**

क्रि. अ. [हिं. बास] **सुगंधित हो जाना।**

संज्ञा पुं. [सं. वसन] (१) **बेठन।** (२) **थैली।**

बसनि—संज्ञा स्त्री. [हि. बसना] **बास, निवास।**

बसवास—संज्ञा पुं. [हिं. बसना + वास] (१) **निवास।** उ.—(क) मथुरा मे बसवास तुम्हारौ। (ख) जौ तुम पुहुप पराग छाँड़ि कै करौ ग्राम बसवास। (२) **रहने का ढग, स्थिति।** (३) **रहने का डौल या ठिकाना।** उ.—अब बसवास नही लखौ यहि तुव ब्रज नगरी।

बसर—संज्ञा पुं. [फा.] **गुजर, निर्वाह।**

बसह—संज्ञा पुं. [स. वृषभ, प्रा बसह] **बैल।** उ.—अमरा सिव रवि ससि चतुरानन हय गय बसह हंस मृग जावत।

बसा—संज्ञा स्त्री. [देश] **बरें, भिड़, ततैया।**

बसाइ—क्रि. अ. [सं. वश] **वश, जोर या अधिकार चलता है।** उ.—(क) तौ हम कछु न बसाइ पार्थ जौ श्रीपति तोहिं जितावै—१-२७५। (ख) जहाँ तहाँ सोइ करत सहाइ। तासौ तेरौ कछु न बसाइ—७-२। (ग) यासौ हमरौ कछु न बसाइ—७-७।

बसाई—क्रि स. [हिं. बसाना] **बसने या रहने को प्रवृत्त किया।** उ.—पृथी सम करि प्रजा सब बसाई—४-११।

क्रि. अ. [सं वश] **वश, जोर या अधिकार चलता है।** उ.—चाहत बास कियो बृन्दाबन बिधि सौ कछु न बसाई—१० उ०-१०६।

बसाए—क्रि. स. [हि. बसाना] **बस जाने दिया, रहने दिया, रहने को ठिकाना दिया।** उ.—नूपुर कलरव मनु हंसनि सुन रचे नीड़, दै बाँह बसाए—१०-१८४।

बसात—क्रि अ. [हि. बस] **वश या जोर चलता है।** उ.—नाहिन बसात लाल कछु तुमसौ सबै ग्वाल इकठैयाँ।

बसाना—क्रि. स. [हिं. बसना] (१) **रहने को स्थान देना।**

(२) **आबाद करना।**

मुहा०—घर बसाना—**विवाह करके गृहस्थ बनना।**

(३) **टिकने देना, ठहराना, स्थित करना।**

मुहा०—मन में बसाना—(१) **हर समय ध्यान बनाये रखना।** (२) **प्रेम करना।**

क्रि. अ—**रहना, बसना, ठहरना।**

क्रि. स. [सं. वेशन] (१) **बैठाना।** (२) **रखना।**

क्रि. अ. [हि. बस] **वश या जोर चलना।**

क्रि. अ. [हि. बास] **महकना, सुगंध देना।**

बसायो, बसायौ—क्रि स. [हि. बसना] (१) **बसाया, टिकाया।**

मुहा—हृदय बसायौ—**चित्त में इस प्रकार जमाया कि सदैव ध्यान बना रहे, हृदय मे (सदा के लिए) अंकित किया, हृदयगम किया।** उ.—ब्यासदेव जब सुकहि पठायौ। सुनि कै सुक सो हृदय बसायौ—१-२२७।

(२) **स्थित किया।** उ.—हरि जी कियौ बिचार, सिंधु-तट नगर बसायौ—१० उ०—३।

क्रि. अ. [हिं. बस] **वश, जोर या अधिकार चल सका।** उ.—उनसौं हमरौ कछु न बसायौ। तातैं तुम कौं आनि सुनायौ—६-४।

बसावै—क्रि. अ [हिं. बस] **बस, जोर या अधिकार चलता (है)।** उ.—कह्यौ, इंद्रानी मोपै आवै। नृप सौं ताकौ कहा बसावै—६-७।

बसाही—क्रि. अ. [हि. बसना] **बसते है।** उ.—सूरदास प्रभु टरत न टारे नैननि सदा बसाही—१४३६।

बसिऐ—क्रि. अ. [हि बसना] **रहिए, वास कीजिए।** उ.—गोकुल होत उपद्रव दिन प्रति, बसिऐ बृन्दावन मे जाई—४०२।

बसियाना—क्रि. अ. [हिं. बासी] **बासी हो जाना।**

बसिबे, बसिबो, बसिबौ—संज्ञा पुं [हिं. बसना] **रहना, बास करना।** उ—(क) नगर आहि नागर बिनु सूनो कौन काज बसिबे सौ—३३६५। (ख) वहाँ के बासी लोगन को क्यों ब्रज को बसिबो भावै री—१० उ०—८४। (ग) या ब्रज कौ बसिबौ हम छाँड्यौ—१०-३३७।

बसियै—क्रि. अ. [हि. बसना] **बसते या रहते है, वास है, रहना है।** उ.—बसियै एकहि गाँउ कानि राखत हैं ताते—११२५।

बसियै—क्रि. अ. [हिं बसना] **बास कीजिए, रहिए।** उ.—सूर कहि क्र तैं दूर बसियै सदा, जमुन कौ नाम लीजै जु ल्हानै—१-२२३।

बसिष्ठ—संज्ञा पुं [सं. वसिष्ठ] **वसिष्ठ मुनि जो राजा दशरथ के कुल-गुरु थे।**

संज्ञा पु [हिं. बसीठ] **संदेशवाहक, दूत।** उ.—तुम सारिखे बसिष्ठ पठाए कहिए कहा बुद्धि उन केरी—३०१२।

बसी—क्रि. अ. [हि. बसना] (**प्रजा**) **सुख से रहने लगी।** उ.—सुबस बसी मथुरा ता दिन ते उग्रसेन बैठायौ—सारा ५३३।

बसीकर—वि [सं. वशीकर] **वश में करनेवाला।**

बसीकरन—संज्ञा पुं. [सं. वशीकरण] **तंत्र के चार प्रकारो (मारण, मोहन, वशीकरण और उच्चाटन) मे एक, मणि, मत्र या औषध द्वारा किसी को वश में करने का प्रयोग।** उ.—मोहन, मुर्छन, बसीकरन पढि अग मिति देह बढाऊँ—१०-४६।

बसीठ—संज्ञा पु. [स अवसृष्ट, प्रा. अवसिट्ठ = भेजा हुआ] **दूत, संदेशवाहक।** उ—(क) अति सठ ढीठ बसीठ स्याम को हमैं सुनावत गीत। (ख) मैं कुल कानि किये राखति हौ, ये हठ होत बसीठ—पृ. ३३४ (३६)।

बसीठि, बसीठी—संज्ञा स्त्री. [हि. बसीठ] **दूत-कर्म, संदेश देने का कार्य।** उ.—(क) नैननि निरखि बसीठी कीन्ही मनु मिलियो पय पानी—११६७। (ख) हारि जोहारि जो करत बसीठी प्रथमहि प्रथम चिन्हारि—१३५२।

बसीना, बसीनो—संज्ञा पुं. [हि. बसना] **रहना, बसना।** उ—इनही ते ब्रजवास बसीनो—१०८६।

बसु—संज्ञा पुं. [स. वसु] (१) **आठ वैदिक देवताओ का एक गण।** (२) **आठ की सख्या।**

बसुदेव—संज्ञा पुं. [सं. वसुदेव] **श्रीकृष्ण के पिता।**

बसुधा, बसुधाऊ—संज्ञा स्त्री. [सं. वसुधा] **वसुधा, पृथ्वी।** उ.—बामन रूप धरयौ बलि छलि कै, तीनि परग बसुधाऊ—१०-२२१।